महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997, क्रमांक 3 के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)
Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha
(A Central University Established by Parliament by Act No.3 of 1997)

एमएसडब्ल्यू पाठ्यक्रम (80 क्रेडिट)
द्वितीय सेमेस्टर

दूर शिक्षा निदेशालय
महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा
पोस्ट – हिंदी विश्वविद्यालय, गांधी हिल्स, वर्धा – 442001 (महाराष्ट्र)

मार्ग निर्देशन समिति

प्रो. गिरीश्वर मिश्र
कुलपति
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. आनंद वर्धन शर्मा
प्रतिकुलपति
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

प्रो. अरबिंद कुमार झा
निदेशक (दूर शिक्षा निदेशालय)
म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

पाठ्यचर्या निर्माण समिति

प्रो. मनोज कुमार
निदेशक – म.गां.फ्यू. गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. मिथिलेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर , म.गां.फ्यू. गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. शिवसिंह बघेल
असिस्टेंट प्रोफेसर , म.गां.फ्यू. गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

श्री अमोद गुर्जर
असिस्टेंट प्रोफेसर , म.गां.फ्यू. गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. शंभू जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं पाठ्यक्रम संयोजक, दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

संपादन मंडल

प्रो. मनोज कुमार
निदेशक – म.गां.फ्यू. गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. मिथिलेश कुमार
असिस्टेंट प्रोफेसर
म.गां.फ्यू. गु. समाज कार्य अध्ययन केंद्र, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

डॉ. शंभू जोशी
असिस्टेंट प्रोफेसर एवं पाठ्यक्रम संयोजक
दूर शिक्षा निदेशालय, म.गां.अं.हिं.वि., वर्धा

इकाई लेखन

खंड-1
डॉ. शिवसिंह बघेल

खंड- 2
डॉ. शिवसिंह बघेल

खंड– 3
डॉ. शिवसिंह बघेल

खंड-4
डॉ. शिवसिंह बघेल

कार्यालयीन एवं संपादकीय सहयोग

श्री विनोद वैद्य
अनुभाग अधिकारी, दू.शि. निदेशालय

सुश्री शिल्पा एवं श्री प्रवेश कुमार
सहायक, दू.शि. निदेशालय

श्री हरीश चंद्र शाह
तकनीकी सहायक, दू.शि. निदेशालय

श्री महेन्द्र प्रसाद
संपादकीय सहायक, दू.शि. निदेशालय

सुश्री मेघा आचार्य
प्रूफ रीडर, दू.शि. निदेशालय

सुश्री राधा
टंकक, दू.शि. निदेशालय

आवरण पृष्ठ
सुश्री मेघा आचार्य

अनुक्रम

क्र.सं.	खंड का नाम	पृष्ठ संख्या
1	**खंड - 1 - सामाजिक समूह कार्य का परिचय**	3
	इकाई - 1 सामाजिक समूह: विशेषताएँ और महत्व	4-15
	इकाई - 2 समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास	16-30
	इकाई - 3 भारत में सामाजिक समूह कार्य का इतिहास	31-42
	इकाई - 4 समाजकार्य की प्रणाली के रूप में सामाजिक समूह कार्य	43-57
2	**खंड - 2 - समूह कार्य सक्रियता**	58
	इकाई - 1 सामाजिक समूह कार्य के सिद्धांत एवं प्रारूप	59-68
	इकाई - 2 समूह विकास की अवस्थाएँ	69-83
	इकाई - 3 समूह निर्माण की प्रक्रिया	84-92
	इकाई - 4 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य और सिद्धांत	93-102
3	**खंड - 3 - सामाजिक कार्य में नेतृत्व और कौशल विकास**	103
	इकाई - 1 नेतृत्व और शक्ति/अधिकार	104-113
	इकाई - 2 सामाजिक समूह कार्य के कौशल और तकनीकें	114-121
	इकाई - 3 सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता	122-129
	इकाई - 4 सामाजिक समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन	130-139
4	**खंड - 4 - विभिन्न स्थापनों में सामाजिक समूह कार्य**	140
	इकाई - 1 भारतीय संदर्भ में स्व सहायता समूहों की संकल्पना और सक्रियता	141-148
	इकाई - 2 सामुदायिक स्थापनों में समूह कार्य	149-155
	इकाई - 3 संस्थागत स्थापनों में समूह कार्य	156-165
	इकाई - 4 शैक्षिक स्थापनों में समूह कार्य	166-173
	इकाई - 5 समूह कार्य में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका	174-185

MSW 07 सामाजिक समूह कार्य

खंड परिचय

प्रिय विद्यार्थियों,

एमएसडब्ल्यू पाठ्यक्रम (द्वितीय सत्र) के प्रश्नपत्र **MSW 07 सामाजिक समूह कार्य** में आपका स्वागत है। इस प्रश्नपत्र को चार खंडों में विभाजित किया गया है।

पहले खंड में सामाजिक समूह कार्य का परिचय दिया गया है। सामाजिक समूह की विशेषताओं,महत्व पर प्रकाश डालते हुए इसके ऐतिहासिक विकास क्रम को बताया गया है। भारत में सामाजिक समूह कार्य के इतिहास को रेखांकित करते हुए समाजकार्य की प्रणाली के रूप में इसे स्पष्ट किया गया है।

दूसरे खंडमें सामाजिक समूह कार्य के सिद्धातों,प्रारूपों एवं अवस्थाओं का उल्लेख किया गया है। समूह निर्माण की प्रक्रिया को बताते हुए सामाजिक समूह कार्य में मूल्यऔर सिद्धांतों का उल्लेख किया गया है।

तीसरे खंड में सामाजिक कार्य में नेतृत्व और कौशलविकास पर ध्यान केंद्रित किया गया है। इसमें नेतृत्व और शक्ति को रेखांकित करते हुए सामाजिक समूह कार्य के कौशल और तकनीकों को स्पष्ट किया गया है। साथ ही इसमें जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता का बताते हुए कार्यक्रम नियोजन पर प्रकाश डाला गया है।

चौथे खंड में विभिन्न स्थापनों में सामाजिक समूह कार्य को बताया गया है। भारतीय संदर्भ में स्वसहायता समूहों की संकल्पना का समझाते हुए सामुदायिक,संस्थागत,शैक्षिक स्थापनों में समूह कार्य को स्पष्ट किया गया है। साथ ही समूह कार्य में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका पर भी चर्चा की गई है।

खंड - 1

सामाजिक समूह कार्य का परिचय

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई - 1 सामाजिक समूह: विशेषताएँ और महत्व

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ
1.3 सामाजिक समूह की विशेषताएँ
1.4 समूह का वर्गीकरण और महत्व
1.5 समूहों के लाभ
1.6 सारांश
1.7 बोध प्रश्न
1.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. समूह क्या होता है एवं समूह का मनुष्य के जीवन में क्या महत्व है?
2. समूह का अर्थ एवं परिभाषाएँ
3. सामाजिक समूह की विशेषताएँ।
4. समाज में समूह के प्रकार एवं उनकी विशेषताएँ।
5. व्यक्तित्व विकास पर समूहों के प्रभाव को रेखांकित कर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर ही अपना जीवन-यापन कर सकता है। समाज के बिना मनुष्य का जीवन असंभव नज़र आता है । समाज का दायरा कितना बड़ा है यह बता पाना मुश्किल है, इसलिए समूह मनुष्य के जीवन में एक अत्यंत महत्वपूर्ण वास्तविकता है। वह जन्म से मृत्युपर्यंत न केवल विभिन्न प्रकार के समूहों में रहता है, बल्कि निरंतर नए समूहों का निर्माण भी करता है। समूहों के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समूहों से पृथक व्यक्ति के अस्तित्व की साधारणतः कल्पना नहीं की जा सकती। विभिन्न समूहों के माध्यम से ही व्यक्ति का समाजीकरण और व्यक्तित्व का विकास होता है। प्रत्येक काल में चाहे वह वर्तमान काल हो या भूतकाल, प्रत्येक समाज में समूहों का अपना योगदान रहा है, जिससे मनुष्य ने अपना जीवन निर्वाह किया है । मनुष्यों के अलावा हमें पशुओं में भी समूह के प्रतीक नज़र आते हैं, जैसे उनका कतार बनाकर चलना, साथ-साथ भागना, चारागाहों में एक साथ चरना आदि। मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि व्यक्ति अपनी एक मूलप्रवृत्ति 'ग्रिगेरियस इन्सटिक्ट' (Gregarious Instinct) के कारण ही समूह में रहता है। समूहों के माध्यम से ही एक पीढ़ी के विचारों तथा अनुभवों को दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। आमतौर पर समूह शब्द का प्रयोग कुछ व्यक्तियों के संगठन, जैसे- परिवार, भीड़, सामाजिक वर्ग, धार्मिक वर्ग, व्यावसायिक वर्ग, विभिन्न प्रजातियां, आदि के लिए किया जाता है। (समूहों को और अधिक स्पष्ट) विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं से किया जा सकता है-

1.2 सामाजिक समूह का अर्थ एवं परिभाषा

अर्थ

सामाजिक समूह ऐसे व्यक्तियों का एक संग्रह या संगठन है जिनके बीच किसी-न-किसी प्रकार का संबंध पाया जाता है। समूह का अर्थ स्पष्ट करते हुए मेकाइवर एवं पेज ने लिखा है "समूह से तात्पर्य व्यक्तियों के किसी भी ऐसे संग्रह से है, जो एक-दूसरे के साथ संबंध स्थापित करते हैं" टी.बी.बाटोमोर ने कहा है कि, "सामाजिक समूह व्यक्तियों के उस संकलन को कहते हैं, जिसमें विभिन्न व्यक्तियों के बीच निश्चित संबंध होते है और प्रत्येक व्यक्ति समूह और उसके प्रतीकों के प्रति सचेत होता है।" अन्य शब्दों में, एक सामाजिक समूह का कम-से-कम प्रारंभिक ढाँचा और संगठन (नियमों, संस्कारों सहित) होता है और उसके सदस्यों की चेतना का मनोवैज्ञानिक अधिकार होता है। इस प्रकार एक परिवार, गांव, राष्ट्र, मजदूर संगठन अथवा राजनीतिक दल एक सामाजिक समूह है।

आर.बी.केटल ने अनुसार है कि समूह व्यक्तियों के उस एकत्रीकरण को कहते हैं, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति की कुछ आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए सभी का सहयोग लिया जाए। हेरी एम. जॉनसन भी समूह के निर्माण के लिए व्यक्तियों मे आपसी सहयोग को आवश्यक मानते हैं।

मर्टन के अनुसार, समूह के लिए निम्नलिखित बातों का होना आवश्यक है:

1) दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना।
2) इनमें सामाजिक संबंध का पाया जाना। यह संबंध व्यक्तियों में बारम्बार अंत: क्रिया से ही बनता है।
3) व्यक्ति को किसी समूह का सदस्य माना जाने के लिए यह आवश्यक है कि वह स्वयं अपने को किसी समूह विशेष का सदस्य समझे, उसके प्रति 'हम की भावना' रखे। साथ ही यह भी आवश्यक है कि समूह के अन्य सदस्य तथा दूसरे समूह भी उसे उस समूह विशेष का सदस्य समझें।

कुछ विद्वानों द्वारा समूह को निम्न प्रकार से परिभाषित किया गया है-

विलियम के अनुसार:- "एक सामाजिक समूह व्यक्तियों के उस निश्चित संग्रह को कहते हैं, जो परस्पर संबंधित क्रियाएं करते हैं और जो इस अंत:क्रिया की इकाई के रूप में ही स्वयं या दूसरे के द्वारा मान्य होते हैं।"

सेण्डरसन के अनुसार :- "समूह दो या दो से अधिक उन व्यक्तियों का संग्रह है जिनके मध्य मनोवैज्ञानिक अंत:क्रिया का निश्चित प्रतिमान पाया जाता है। वे अपने एक विशिष्ट सामूहिक व्यवहार के कारण अपने सदस्यों तथा सामान्य रूप से दूसरे के द्वारा ही एक वास्तविक वस्तु माने जाते है।'

सैरिफ एवं सैरिफ के अनुसार :- "समूह एक सामाजिक इकाई है, जिसका निर्माण ऐसे व्यक्तियों से होता है, जिनके बीच (न्यूनाधिक) निश्चित परिस्थिति एवं भूमिका विषयक संबंध होतथा व्यक्ति-सदस्यों के आचरण को, कम-से-कम समूह के लिए महत्वपूर्ण मामलों में, नियमित करने के लिए जिसके अपने कुछ मूल्य या आदर्श-नियम हों।"

आर.एम.विलियम के अनुसार – 'एक सामाजिक समूह मनुष्य के उस निश्चित समुदाय को कहते हैं, जो अंत:संबंधित भूमिकाओं को अदा करते हैं और जो अपने या दूसरों के द्वारा अंत:क्रिया की इकाई के रूप में स्वीकृत होते हैं।'

अत: इन समस्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि सामाजिक समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का संकलन है जो एक-दूसरे से अंत:क्रिया करते हैं। उपुर्यक्त परिभाषाओं को और बेहतर तरीके से विभिन्न विशेषताओं के माध्यम से समझा जा सकता है।

1.3 सामाजिक समूह की विशेषताएँ

आगबर्न एवं निमकाफ ने सामाजिक समूहों के संदर्भमें कहा था कि जब कभी दो या दो से अधिक व्यक्ति एक साथ मिलते हैं और एक-दूसरे को प्रभावित करते हैंतो वे एक सामाजिक समूह का निर्माण करते हैं। सामाजिक समूहों की विशेषताओं को निम्नलिखित तथ्यों केमाध्यम से स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है-

1. **व्यक्तियों का समूह :-** किसी भी समूह का निर्माण एक अकेले व्यक्ति द्वारा नहीं हो सकता। इसके लिए दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होना आवश्यक है।
2. **उद्देश्य पूर्ति :-** प्रत्येक समूह का निर्माण किसी-न-किसी उद्देश्य के कारण ही होता है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए समूह के सदस्यों में कार्य-विभाजन कर दिया जाता है।
3. **सामान्य रुचि :-** किसी भी समूह की स्थापना उन्हीं व्यक्तियों द्वारा होती है, जिनकी रुचि एक समान होती है जैसे- एक सी पसंद का होना, खेलना-कूदना आदि।
4. **एक समान हित :-** जब व्यक्ति का हित समान होता है तो वह समूह का निर्माण करना आरंभ कर देता है। विरोधी हितों वाले व्यक्तियों के समूह का निर्माण करना असंभव हो जाता है।
5. **लक्ष्य :-** कोई समूह, समूह के रूप में उसी समय तक कायम रह सकता है जब तक वह किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक साथ मिलकर प्रयास करते है। यदि लक्ष्य प्राप्ति न हो तो समूह में एकता की भावना नहीं रह पाएगी और समूह टूट जाएगा।
6. **ऐच्छिक सदस्यता :-** समूह की सदस्यता ऐच्छिक होती है। इसका तात्पर्य यह है कि सदस्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समूह को स्वीकारता है। व्यक्ति सभी समूहों का सदस्य नहीं बनता वरन उन्हीं समूहों की सदस्यता ग्रहण करता है, जिनमें उसके हितों, आवश्यकताओं एवं रुचियों की पूर्ति होती हो।
7. **स्तरीकरण :-** समूह में सभी व्यक्ति समान पदों पर नहीं होते, वरन वे अलग-अलग प्रस्थिति एवं भूमिका निभाते है। अतः समूहों में पदों का उतार-चढ़ाव पाया जाता है।
8. **सामूहिक आदर्श :-** प्रत्येक समूह में सामूहिक आदर्श एवं प्रतिमान पाए जाते हैं जो सदस्यों के पारस्परिक व्यवहारों को निश्चित करते हैं एवं उन्हें एक स्वरूप प्रदान करते हैं। प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समूह के आदर्शों एवं प्रतिमानों जैसे प्रथाओं, कानूनों, लोकाचारों, जनरीतियों आदि का पालन करें।
9. **स्थायित्व :-** समूह में थोड़ी बहुत मात्रा में स्थायित्व भी पाया जाता है। यद्यपि कुछ समूह अपने उद्देश्यों की पूर्ति के बाद ही समाप्त हो जाते हैं, फिर भी वे इतने अस्थिर नहीं होते कि आज बने और कल समाप्त हो जाएं, इसलिए समूह में स्थायित्व पाया जाता है।
10. **समझौता:-** किसी भी समूह की स्थापना तभी संभव है, जब उसके सदस्यों में समूह के उद्देश्यों, कार्य-प्रणाली, स्वार्थ पूर्ति, नियमों आदि को लेकर आपस में समझौता हो।
11. **ढाँचा :-** प्रत्येक समूह की एक संरचना या ढाँचा होता है। अर्थात् उसके नियम, कार्यप्रणाली, अधिकार, कर्तव्य, पद एवं भूमिकाएंआदि तय होते हैं और सदस्य उन्हीं के अनुसार आचरण करते हैं।
12. **अंतर्वैयक्तिक संबंध :-** एक समूह में परस्पर अंत:क्रिया का होना अत्यंत ही आवश्यक होता है। जब तक वह किसी अन्य व्यक्ति के साथ अंत:क्रिया नहीं करेगा, तब तक वह समूह का सदस्य नहीं कहला सकता।
13. **आदान-प्रदान :-** एक समूह के सदस्य अपने विचारों का ही आदान-प्रदान नहीं करते वरन एक-दूसरे के कष्ट में सहयोग एवं सहायता भी करते हैं। सहयोग एवं आदान-प्रदान से ही समूह के सदस्य अपने सामान्य हितों की पूर्ति कर पाते हैं

14. **स्पष्ट संख्या :-** एक सामाजिक समूह में सदस्यों की संख्या स्पष्ट होनी चाहिए, जिससे उसके आकार एवं प्रकार को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।
15. **हम-भावना :-** समूह के सदस्य एक-दूसरे की सहायता करते है तथा अपने हितों की प्राप्ति हेतु ही वे इकट्ठे होते हैं।
16. **एकता की भावना :-** समूह के सदस्य एकता तथा सहानुभूति की भावना से बंधे होते हैं

उपर्युक्त विशेषताओं से स्पष्ट होता है कि समूह का निर्माण अकारण ही नहीं होता है इसके पीछे अनेक कारण होते हैं। मनुष्य की स्वार्थता एक समूह निर्माण में प्रभावी कारणनज़र आता है। समूह का निर्माण क्यों और कैसे होता है? इस संदर्भ में मैकाइवर ओर पेज ने समूह में निम्नलिखित विशेषताओं की ओर ध्यान आकर्षित किया है उनका मानना है कि सामान्यहित ही सामूहिकता की भावना को जन्म देता है इसका स्पष्टीकरण देते हुए उन्होंने तीन बातों को मुख्य रूप से कहा है –

1. मनुष्य स्वयं ही आवश्यकता की पूर्ति कर सकता है पर वह व्यावहारिक नहीं है।
2. व्यक्ति समाज के अन्य सदस्यों से संघर्ष करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है पर वह मानव समाज के लिए विघटनकारी है।
3. व्यक्ति कुछ लोगों के साथ सहयोग करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। अतः मैकाइवर और पेज के अनुसार यह तीसरा तरीका ही समूह निर्माण का कारक बनता है।

1.4 समूहों का वर्गीकरण एवं महत्व

सामाजिक समूह वर्गीकरण के संदर्भ में अनेक विद्वानों ने अनेक प्रकार के मत दिए हैं। कुछ ने साधारण तरीके से व्यक्त किया है तो किसी ने व्यापक रूप से वर्गीकृत किया है। विभिन्न विद्वानों द्वारा किए गए समूह वर्गीकरण को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है-

❖ **कूले का वर्गीकरण -** चार्ल्स कूले ने समूहों को दो रूपों में वर्गीकृत किया है प्रथम प्राथमिक समूह (Primary Group) और द्वितीय, द्वितीयक समूह (Secondry Group), यद्यपि कूले ने' द्वैतीयक समूह' शब्द का प्रयोग नहीं किया है।

प्राथमिक समूह (Primary Group) - कूले ने अपनी पुस्तक 'सोशल आर्गनाइजेशन' (Social Organization) में सन 1909 में प्राथमिक समूह की अवधारणा को प्रस्तुत किया। कूले ने प्राथमिक समूह को स्पष्ट करते हुए कहा कि जिन सदस्यों में आमने-सामने के संबंध पाए जाते हो अर्थातसदस्य एक-दूसरे केसंपर्क में प्रत्यक्ष रूप से आते हों, उस समूह को प्राथमिक समूह के नाम से जाना जाता है। जैसे- मित्र, पड़ोसी, साथी, परिवार के सदस्य तथा सदैव मिलने वाले लोग आते हैं। चार्ल्स कूले ने सर्वप्रथम खेल-कूद के साथियों, परिवार तथा पड़ोस की प्रकृति को स्पष्ट करने हेतु ही 'प्राथमिक समूह' शब्द का प्रयोग किया है। कूले ने प्राथमिक समूहों के संदर्भ में कहा है कि ये समूह प्राथमिक समूह इसलिए है क्योंकि ये महत्व एवं प्रभाव की दृष्टि से व्यक्ति के जीवन में प्राथमिक है।

प्राथमिक समूह को परिभाषित करते हुए चार्ल्स कूले ने लिखा है कि प्राथमिक समूहों से मेरा तात्पर्य ऐसे समूहोंसे है जिनकी विशेषता आमने-सामने के घनिष्ठ संबंधऔर सहयोग है। वे अनेक अर्थों में प्राथमिक है, परंतु मुख्यतः इस बात में कि वे व्यक्ति की सामाजिक प्रकृति और आदर्शों के निर्माण में मौलिक है। घनिष्ठ संबंधोंका परिणाम यह होता है कि एक सामान्य संपूर्णतामें वैयक्तिकताओं का इस प्रकार एकीकरण हो जाता है जिससे प्रायः कई प्रयोजनों के लिए व्यक्ति का अहम समूह का सामान्य जीवन और उद्देश्य बन जाता है। इस संपूर्णताके वर्णन के लिए अति सरल विधि 'हम' कहना हैं, क्योंकि यह अपने में उस प्रकार की सहानुभूति और पारस्परिक

एकात्मीकरण (Mutual Identification) को समाविष्ट करता है, जिसके लिए 'हम' ही स्वाभाविक अभिव्यक्ति है। प्राथमिक समूहों को परिभाषित करते हुए, जिसबर्ट ने कहा कि *प्राथमिक समूह व्यक्तिगत संबंधोंपर आधारित होता है, जिसमें सदस्य तुरंत एक-दूसरे के साथ व्यवहार करते हैं*। अन्य समाजशास्त्री किम्बाल यंग ने प्राथमिक समूहों के संदर्भ में कहाहै कि प्राथमिक समूह में परस्पर घनिष्ठ आमने-सामने के संपर्क होते हैं और सभी व्यक्ति समरूप कार्य करते हैं। ये ऐसे केंद्र-बिंदु हैं। जहां व्यक्ति का व्यक्तित्व विकसित होता है। इन सभी परिभाषाओं के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि कूले ने परिवार, क्रीड़ा समूह व पड़ोस को प्राथमिक समूह माना है, जबकि मैकाइवर व पेज ने परिवार, क्रीड़ा-समूह, मित्र-मंडली, गपशप समूह, साझेदारी, स्थानीय भाईचारा, अध्ययन समूह, गैंग, जनजाति परिषद् आदि को इस श्रेणीमें रखा है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि किसी समूह को प्राथमिक समूह कहलाने के लिए भौतिक एवं आन्तरिक विशेषताओं का होना आवश्यक है। इस प्रकार से कुछ विशेषताओं के माध्यम से प्राथमिक समूहों को समझा जा सकता है-

1. शारीरिक समीपता (Physical Proximity)

प्राथमिक समूह के लिए प्रो. डेविस शारीरिक समीपता को महत्व देते हैं, ताकि व्यक्तियों में घनिष्ठ संबंधस्थापित हो सके। व्यक्ति के एक-दूसरे के निकट होने, साथ-साथ, उठने-बैठने, खाने-पीने, साथ-साथ पढ़ने तथा बातचीत करने से उनमें विचारों तथा भावनाओं का सरलता से आदान-प्रदान हो जाता है। निकट संपर्क से व्यक्तियों में परिचय बढ़ता है तथा एक-दूसरे के प्रति आदर, सहानुभूति एवं सहयोग पनपता है। प्राथमिक संबंधके लिए केवल शारीरिक समीपता ही काफ़ी नहीं है। शारीरिक निकटता प्राथमिक समूहों के निर्माण का अवसर प्रदान करती है, लेकिन अवसर का लाभ उठाना संभव हो सकेगा या नहीं, यह परिस्थिति पर निर्भर करता है। यह परिस्थिति संस्कृति के द्वारा परिभाषित होती है।

2. समूह का लघु आकार(Small Size of the Group)

एक ही समय में अनेक व्यक्तियों के साथ संवेदनात्मक संपर्कबनाए रखना बड़ा मुश्किल हो जाता है। अंतः समूह जितना छोटा होगा, सदस्यों में उतनी ही अधिक मात्रा में निकटता और घनिष्ठता होगी। यदि समूह का आकार बड़ा है तो उसके सभी सदस्य एक-दूसरे सेनहीं मिल पाएंगे, उनमें अंतःक्रिया की मात्रा कम होगी। समूह के बड़े आकार के होने पर व्यक्ति इसकी एक इकाई मात्र बनकर रह जाता है। समूह का आकार छोटा होने से सदस्यों के मध्य निकटता एवं घनिष्ठता अधिक होती है।

3. संबंधोंकी अवधि (Duration of Relationship)

जब अधिक समय सदस्य एक-दूसरे के साथ बिताते हैं तो उनके मध्य संबंधोंमें घनिष्ठता आ जाती है क्योंकि सदस्य एक-दूसरे के हाव-भाव, आचरण से परिचित हो जाते हैं एवं घनिष्ठता बढ़ती जाती है। अतः संबंधोंकी अवधि का घनिष्ठता के साथ सीधा संबंधपाया जाता है। संबंधोंमें घनिष्ठता का होना प्राथमिक संबंधोंकी स्थापना के लिए आवश्यक है।

विभिन्न विशेषताओं के आधार पर प्राथमिक समूह के महत्वको निम्न प्रकार से समझा जा सकता है –

1. **प्राथमिक समूहों का महत्व (Importance of Primary Group)**
2. प्राथमिक समूह का सामाजिक जीवन में अत्यंत ही महत्व है, जिसके आधार पर मनुष्य का समस्त सामाजिक जीवन प्रभावित होता है। निम्नलिखित प्रमुख महत्वों के आधार पर प्राथमिक समूहों को स्पष्ट किया जा सकता है-
3. **गुणों का विकास :-** प्राथमिक समूहों का सर्वप्रमुख महत्व मनुष्य के गुणों में होता है। प्राथमिक समूह संपूर्णमानव जीवन का एक लघु रूप प्रस्तुत करते हैं। जन्म के पश्चात शिशु अपने जीवन के प्रारंभिक वर्ष

परिवार में माता-पिता तथा अन्य बच्चे/बच्चियों के संपर्क में ही व्यतीत करता है, अपने जीवन के प्रारंभिक वर्षों (निर्माणकाल) में प्रत्येक व्यक्ति प्राथमिक समूह में ही अंतःक्रिया के द्वारा व्यवहारों के मौलिक प्रतिमान सीखता है।

4. **मनोवैज्ञानिक सुरक्षा :-** प्राथमिक समूहों का महत्व इस दृष्टि से भी है कि ये अपने सदस्यों को मनोवैज्ञानिक सुरक्षा प्रदान करते है। ऐसे समूह का प्रत्येक सदस्य भली-भांति जानता है कि संकट के समय उसे इसी समूह से सहायता मिल सकती है। इस प्रकार व्यक्ति प्राथमिक समूह के माध्यम से अपने व्यक्तित्व में सुरक्षा-व्यवस्था को एकीकृत कर लेता है।
5. **मनोरंजन प्रदान करता है :-** मनोरंजन व्यक्ति के जीवन में एक महत्वपूर्ण साधन है जिनके अभाव में व्यक्ति अनेक प्रकार की मानसिक समस्याओं से जूझता रहता है। प्राथमिक समूह के माध्यम से व्यक्ति मनोरंजन इत्यादि गतिविधियों के माध्यम से स्वस्थ एवं सकुशल जीवन-यापन करता है।
6. **सामाजिक प्रतिमानों के पालन एवं नियंत्रण में योगदान:-** प्राथमिक समूह सामाजिक नियंत्रण बनाए रखने की दृष्टि से भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। प्राथमिक समूह सामाजिक नियमों के पालन में भी अपूर्व योगदान देते हैं। व्यक्ति अपने परिवारजनों, मित्रों, साथियों और पड़ोसियों की दृष्टि में गिरना नहीं चाहता है। अतः वह साधारणतः कोई ऐसा कार्य नहीं करना चाहता जिसे लोग अनुचित समझते हों। इसलिए सामाजिक रीति-रिवाज, परंपराओं और सामाजिक नियंत्रण जैसी गतिविधियों की प्राथमिक समूह में भूमिका होती है।
7. **व्यक्ति की कार्यक्षमता में वृद्धि :-** शिल्स ने अपने अध्ययन के आधार पर यह कहा कि, बड़े व्यापारिक समूहों में जब प्राथमिक समूह बन जाता है तो ये व्यक्ति के कार्य करने की क्षमता को सकारात्मक रूप से प्रभावित करते है। प्राथमिक समूह व्यक्ति की कार्यक्षमता को बढ़ाने में अपूर्व योगदान देते है। ऐसे समूहों में व्यक्ति सब चिंताओ से मुक्त होकर मानसिक दृष्टि से संतुष्टि का अनुभव करता है। यहां उसकी थकान दूर हो जाती है और वह पहले से अधिक उत्साहवर्धक काम करने को तैयार हो जाता है।
8. **व्यक्ति व समाज के बीच कड़ी :-** प्राथमिक समूह व्यक्ति और समाज के बीच प्रमुख कड़ी का काम करते हैं।
9. **व्यक्तित्व निर्माण में योग :-** प्राथमिक समूह व्यक्ति के व्यक्तित्व निर्माण में सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं। जन्म से लेकर निरंतर ही वह निर्माण की प्रक्रिया में भागीदारी होता है। समाजीकरण की प्रक्रिया द्वारा परिवार, पड़ोस, मित्र-मंडली एवं अन्य प्राथमिक समूह उसके व्यक्तित्व का निर्माण कर उसे एक सामाजिक प्राणी बनाते हैं।
10. **पशु प्रवृत्तियों का मानकीकरण :-** प्राथमिक समूह अपने सदस्यों की पशु प्रवृत्तियों का मानवीकरण करते हैं। कूले लिखते हैं, पशु प्रवृत्तियों का मानवीकरण ही संभवतः सबसे बड़ी सेवा है जो प्राथमिक समूह करते हैं।

अतः मनुष्य के सामाजिक जीवन में प्राथमिक मूल्य अपनी महती भूमिका को अदा करते हैं जो प्रत्येक व्यक्ति के संपूर्ण जीवन में महत्व रखता है।

द्वितीयक समूह (Secondry Group)

चार्ल्स कूले ने प्राथमिक समूह की अवधारणा का उल्लेख किया है न कि द्वितीयक समूह की। इतना अवश्य है कि प्राथमिक समूह की अवधारणा के कारण ही द्वितीयक समूह की अवधारणा का विकास हो सका है। द्वितीयक समूह सभ्य और विकसित समाज की देन है। जहाँ संबंधों में आत्मीयता एवं घनिष्ठता का अभाव पाया जाता है तथा

जीवन औपचारिकताओं से भरा होता है।सामाजिक जटिलता में वृद्धि ने द्वैतीयक समूहों को जन्म दिया है। अनेक विद्वानों द्वारा द्वितीयक समूह को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है-

बीरस्टीड के अनुसार- "वे सभी समूह द्वितीयक है जो प्राथमिक नहीं है।" इस परिभाषा से स्पष्ट है कि प्राथमिक समूह में पाई जाने वाली विशेषताओं के विपरीत प्रकार की विशेषताओं को व्यक्त करने वाले समूह हीद्वितीयक समूह है।

ऑगबर्न एवं निमकॉफ ने द्वितीयक समूह के संदर्भ में कहा है कि 'द्वितीय समूह उन्हें कहते हैं, जिनमें प्राप्त अनुभवों में निष्ठता का अभाव होता है। आकस्मिक संपर्क ही द्वितीयक समूह का सारतत्व है।''

उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार परद्वितीयक समूहों की निम्नलिखित विशेषताएँ बताई जा सकती है -

1. द्वितीयक समूह जान-बूझकर कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए संगठित होकर बनाए जाते हैं।
2. इन समूहों में सदस्यों का एक-दूसरे को व्यक्तिगत रूप से जानना आवश्यक नहीं है। अपनी आवश्यकताओं के अनुसार ये अपने समूह का निर्माण करते हैं और संचार जैसे साधनों के संपर्क में आकर समूह का निर्माण करते हैं।
3. इन समूहों मे आवश्यक नहीं है कि शारीरिक निकटता रहे।
4. द्वितीयक समूह का आकार प्राथमिक समूह की तुलना में काफ़ीविस्तृत होता है।
5. इन समूहों में सदस्यों के उत्तरदायित्व सीमित होते हैं।
6. द्वितीयक समूह में जिन संबंधो का निर्माण होता है उसके पीछे कुछन-कुछ समझौते आवश्यक होते हैं।
7. द्वितीयक समूह में संबंधोंमें औपचारिकता पाई जाती है। यहां व्यक्ति के बजाए प्रस्थिति का महत्व अधिक होता है।
8. द्वितीयक समूह का निर्माण किसी विशिष्ट उद्देश्य के आधार पर होता है। उद्देश्य पूर्ण होते ही इनकी प्रकृति में बदलाव आ जाता है और यह समाप्त हो जाते हैं। इन संबंधोंमें घनिष्ठता का भी अभाव होता है।

अतः ये सभी विशेषताएँ द्वितीयक समूहों में पाई जाती है। इन विशेषताओं के आधार पर सामाजिक जीवन में द्वितीयक समूह के महत्व को निम्न प्रकार से समझा जा सकता है-

द्वितीयक समूहों का महत्व

वर्तमान समय में द्वितीयक समूहों का महत्व भी दिनों-दिन बढ़ता जा रहा है। छोटे समूहों के स्थान पर अब बड़े समूहों का निर्माण हो रहा है। छोटे उद्योगों के स्थान पर अब बडे उद्योगों में कार्य करने वाले सदस्यों की संख्या में निरंतर वृद्वि हो रही है आज के समय में लोग प्राथमिक समूहों की अपेक्षा द्वितीयक समूहों पर अधिक निर्भर रहने लगे है। द्वितीयक समूहों के विकास ने जहाँ एक ओर विविध समस्याओं को जन्म दिया है वहीं दूसरीओर कुछ महत्वपूर्ण महत्वों को स्पष्ट किया है, जिन्हें निम्न बिंदु ओं के माध्यम से समझा जा सकता है

1. **दक्षता** - द्वितीयक समूह का संगठन सावधानीपूर्वक सोचविचार कर किया जाता है। मुख्य बल कार्य की उपलब्धि पर होता है। भावना उपलब्धि के अधीन होती है। भौतिक सुखों में उन्नति, लक्ष्य-निर्देशित द्वितीयक समूहों के उत्थान के बिना असंभव होगा।
2. **अवसर के माध्यम** - द्वितीयक समूहों में प्राथमिक समूहों की अपेक्षा अवसर के महत्व अधिक होते हैं। पूर्व में केवल कुछ सीमित कार्यों, जैसे- कृषि एवं लघु उद्योग के आधार पर व्यवसाय आधारित कार्य होते थे पर आज के वर्तमान दौर में अनेक व्यवसाय आधारित कार्य होने लगे है जो विशेष निपुणता प्राप्त व्यक्तियों के लिए खुले हुए हैं।
3. **विस्तृत दृष्टिकोण** - द्वितीयक समूह अपने सदस्यों के दृष्टिकोण को विस्तृत कर देता है। प्राथमिक समूह स्वार्थी हितों का समूह होता है। इसके सदस्य किसी विशेष स्थान के निवासी होते हैं तथा इसका आकार लघु होता है। पड़ोस-समूह के सदस्य पड़ोस के हितों की ही देखभाल करते हैं, इसी प्रकार परिवार अपने

हितों की ही चिंता करता है। दूसरी ओर, द्वितीयक समूह के सदस्य बिखरे हुए होते हैं, उसकी सीमाएं प्राथमिक समूह से परे होती है।

4. **सामाजिक परिवर्तन एवं प्रगति में सहायक-** द्वितीयक समूह ने व्यक्ति के सामाजिक परिवर्तन हेतु मार्गप्रशस्त किया है। इन समूहों द्वारा व्यक्ति की सोचने समझने की शक्ति में बदलाव आया है। अब व्यक्ति भाई-भतीजावाद से कुछ सीमा तक मुक्त होता है और प्रथाओं, रुढ़ियों एवं अंधविश्वासों से छुटकारा प्राप्त करता है। द्वितीयक समूहों के माध्यम से व्यक्ति विभिन्न प्रकार के व्यवहारों से परिचित होता है और उन्हें ग्रहण करने का प्रयत्न करता है।
5. **व्यक्ति में जागरुकता पैदा करते है** - द्वितीयक समूह व्यक्ति और समाज में जागरुकता उत्पन्न करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका का वहन करते है। इन समूहों के माध्यम से व्यक्ति में अपने अधिकारों के प्रति सजग रहने की भावना का विकास होता है। द्वितीयक समूह के माध्यम से स्त्रियों के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक जीवन में अंतरदेखने को मिल रहा हैं। लोग अब अपने अधिकारों के प्रति जागरूक हो रहें हैं।
6. **सामाजिक नियंत्रण में सहायक-** द्वितीयक समूहों के माध्यम से आज के जटिल औद्योगिक समाजों में सामाजिक नियंत्रण बनाए रखा जा सकता है। प्रथाएँ, परंपराएँ, रुढ़ियाँ और धर्म आदि के माध्यम से आज के समय में समाज में नियंत्रण स्थापित करना असंभव है अतः यहाँ पुलिस, अदालत, कानून तथा प्रशासनिक संगठनों के माध्यम से ही व्यवस्था बनाए रखी जा सकती है जो द्वितीयक समूहों के माध्यम से ही संभव है।
7. अतः इस प्रकार से वर्तमान समय में द्वितीयक समूह के महत्व को समझा जा सकता है, जिसने वर्तमान समय में अपनी महती भूमिका को अदा किया है।

समनर का वर्गीकरण

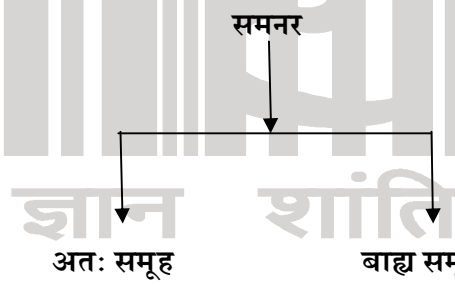

समनर ने समूहों को मुख्यतः दो भागों में विभक्त किया है–

अंत:समूह एवं **बाह्य समूह**।

समनर ने अंत:समूहों के संदर्भ में कहा है कि जिन समूहों में संबंध पाया जाता है वह अंतःसमूह कहलाते।इसके अलावा जो समूह शेष बच जाते हैं, वे बाह्य समूह के अंर्तगत आते हैं इस प्रकार परिवार, कबीला, कॉलेज जिनका वह सदस्य है, उसके अंत:समूह हैं। अंत:समूहों की भावना अंत:समूहों के सदस्यों को अन्य सभी लोगों से अलग करती है। दूसरे सब लोग अंत: समूह के सदस्यों के लिए या अनेक बाह्य समूह होते हैं। व्यक्ति बाह्य समूह की परिभाषा अंत: समूह के संदर्भ में करता है। बाह्य समूह उन व्यक्तियों का समूह है, चाहे वह औपचारिक तौर पर संगठित हों अथवा न हों। जिन समूह के विरूद्ध हम प्रतिस्पर्धा, संघर्ष एवं घृणा की भावना रखते हैं, वे बाह्य समूह के अंर्तगत आते हैं।

यदि एक शब्द में कहा जाए तो अंतः समूह को 'हम' कहा जाता है और बाह्य समूह को 'वे' अथवा 'दूसरे' से संबोधित किया जाता है। अतः समनर ने समूहों को हम और वे के रूप में वर्गीकृत किया हैं।

जार्ज हासन (George Hasen) का वर्गीकरण

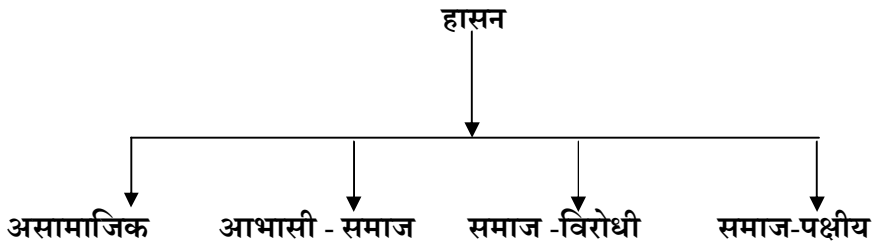

जार्ज हासन ने समूहों का वर्गीकरण दूसरे समूहों के साथ उनके संबंधोंके आधार पर किया है। इस प्रकार उसने **असामाजिक, आभासी-समाज, समाज-विरोधी** एवं **समाज-पक्षीय** समूहों का उल्लेख किया है। हासन ने **असामाजिक समूह** उन्हें कहा है जो समाज में केवल अपना हित चाहते है एवं उन्हें दूसरों केहित से कोई मतलब नहीं होता हैं न ही वह किसी सामाजिक समूह में कोई भागीदारी रखता है। **आभासी-समूह**, समाज में तो भाग लेता है। परंतु केवल अपने हित की ही सोचता है। **समाज-विरोधी** समूह समाज के हितों के विरूद्व कार्य करता है और **समाज-पक्षीय** समूह वह है जो समाज के हितों के लिए कार्य करता है। वह निर्माणकारी कार्य करता है तथा लोगों के कल्याण के बारे में चिंतित रहता है।

मिलर का वर्गीकरण

मिलर ने सामाजिक समूहों को **क्षैतिज एवं उदग्र** में विभक्त किया है। क्षैतिज समूह विशाल एवं अंतःमुखी होते हैं, जैसे- राष्ट्र, धार्मिक संगठन एवं राजनैतिक दल। क्षैतिज समूह के दूसरे प्रकार में आर्थिक वर्ग आदि आते हैं चूँकि उदग्र समूह क्षैतिज समूहों का भाग है अतएव व्यक्ति दोनों का ही सदस्य होता है।

चार्ल्स ए. एलवुड का वर्गीकरण

चार्ल्स ए. एलवुड ने समूहोंको तीन रूपों में विभक्त किया है-

- ऐच्छिक एवं अनैच्छिक समूह।
- संस्थागत एवं असंस्थागत समूह।
- अस्थाई एवं स्थाई समूह ।

गिलिन एवं गिलिन का वर्गीकरण –

- गिलिन एवं गिलिन ने समूहों को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया है-
- खून के रिश्ते के आधार पर ।
- शारीरिक विशेषताओं के आधार पर।
- भौतिक सामीप्य के आधार पर।
- सांस्कृतिक रूप से व्युत्पन्न हितों के आधार पर ।

संदर्भ-समूह (Reference Group)

संदर्भ समूहों को परिभाषित करते हुए, **न्यूकॉब तथा टर्नर** ने कहा है कि एक संदर्भ-समूह वह समूह है जिसका व्यक्ति तुलना के लिए एक प्रामाणिक समूह के रूप में प्रयोग करता है, अर्थात एक ऐसा समूह जिससे व्यक्ति अपने मूल्य प्राप्त करता है।

डॉ.एस.सी.दुबे के अनुसार:- संदर्भ-समूह वह समूह होता है, जिसके नियमों, व्यवहार-प्रतिमानों, मनोवृत्तियों, आदर्शों एवं मूल्यों को व्यक्ति आदर्श मानकर अपने आचरण या व्यवहार में ढालने का प्रयत्न करता है। यह वह समूह है, जिसका अस्तित्व प्रायः व्यक्ति के मस्तिष्क में होता है।

अतः इन परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि वर्तमान समय में मनुष्य को अनेक समस्याओं एवं परिस्थितियों का सामना करना पड़ता है। आज व्यक्ति यह चाहता है कि वह अपने को किसी ऐसे समूह से संबंधित कर ले जिसकी समाज में प्रतिष्ठा हो तथा साथ ही जिसके माध्यम से उसकी आवश्यकताओं और अभिलाषाओं की पूर्ति हो सके। संदर्भ-समूह व्यक्ति की उच्च अभिलाषाओं का ही परिणाम है। इसी प्रकार व्यक्ति के व्यवहार पर उसके संदर्भ-समूह (Reference-Group) का भी काफी प्रभाव पड़ता है। यह बात अवश्य है कि अलग-अलग व्यक्तियों के संदर्भ समूह भिन्न -भिन्न होते हैं। यह भी संभव है कि कई व्यक्तियों का एक संदर्भ-समूह हो। इतना निश्चित है कि वह संदर्भ समूह जिससे व्यक्ति अपने को संबंधितमानता है अर्थात जिसका वह सदस्य तो नहीं है परंतु जिसका सदस्य बनने की वह आकांक्षा या अभिलाषा रखता है, उसके सम्मुख एक व्यवहार-प्रतिमान प्रस्तुत करता है।

संदर्भ समूह का महत्व

संदर्भ समूहों का मानव जीवन में अत्यंत ही महत्व है । संदर्भ समूह के महत्व को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है -

1. **व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाने में सहायक:-** संदर्भ समूह व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठाने में अधिक सहायक होता है। समाज में व्यक्ति किसी-न-किसी समूह का सदस्य अवश्य ही रहता है, इसलिए वह अपने लिए किसी संदर्भ-समूह को चुन लेता है और उसके मूल्यों, आदर्शों एवं आचरणों को अपने व्यक्तित्व में ढालने का प्रयत्न करता है तो इस बात कीसंभावना रहती है कि कालांतर में उसकी सामाजिक स्थिति ऊँची उठ जाए। अतः इस प्रकार संदर्भ समूह के माध्यमसे वह अपनी सामाजिक स्थिति को ऊँचा उठा सकता है।
2. **सामाजीकरण हेतु-** सामाजीकरण प्रक्रिया मनुष्य के जन्म के साथ ही प्रारंभ हो जाती है वह जन्म से ही ऐसा व्यवहार करना प्रारंभ कर देता है जैसा व्यवहार उसका समूह कर रहा होता है। व्यक्ति अपने संदर्भ-समूह की अभिवृत्तियों, मूल्यों, आदर्शों, आचरणों एवं व्यवहारो-प्रतिमानों को अपना लेता है। वह उसी प्रकार का व्यवहार करने लगता है जिस प्रकार के व्यवहार की उसके संदर्भ -समूह के सदस्यों से अपेक्षा की जाती है।
3. **सामाजिक गतिशीलता -** समाज को गतिशीलता प्रदान करने में संदर्भ समूह का अत्यंत ही महत्व होता है।एक समाज विशेष में सामाजिक गतिशीलता को बढ़ाने में संदर्भ समूह सिद्धांत सहायक प्रमाणित हुआ है।

तथापि इस सिद्वांत का महत्व इस तथ्य में है कि यह हमें समाज के समूह-व्यवहार तथा उस दिशा, जिसमें किसी विशेष सामाजिक पर्यावरण में व्यक्ति का व्यवहार बदल सकता है, के विषय में ज्ञान कराता है। यह वर्तमान औद्योगीकृत एवं जटिल समाज में वर्तमान खिंचावों एवं दबावों की मनोवैज्ञानिकव्याख्या में सहायक हो सकता है।

1.6 समूहों के लाभ

सामाजिक जीवन में ही मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति से लेकर समस्त सामाजिक आर्थिक एवं राजनैतिक कार्य समूहों के माध्यम से ही संपन्न हो पाते हैं। इसके अतिरिक्त समूहों के अन्य लाभों को निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

- मानव अपनी लगभग सभी आवश्यकताओं की पूर्ति समूह के माध्यम से ही करता है। चाहें वह मनोरंजन संबंधी होया रोज़गार संबंधी।

1. यदि किसी समस्या का समाधान समूह के माध्यम से किया जाए तो उस समस्या को बेहतर तरीके से हल किया जा सकता है।
2. समूह सदस्यता के माध्यम से हम दान-धर्म, परोपकार, दया, करूणा, उत्तरदायित्व तथा इसी तरह के अन्य कार्यों को कर सकते है।
3. चाहें मित्रता हो, प्रेम हो, दुःख हो या सुख हो इन सभी कार्यों हेतु समूह अपनी भूमिका निभाते हैं

वर्तमान समय में सरकारी एवं गैरसरकारी योजनाओं/परियोजनाओं में समूह संबंधी कार्यों को अधिक प्रधानता दी जा रही है। स्वयं सहायता समूह (Self Help Group) आदि कार्यक्रमों के माध्यम से महिलाओं में समूह की भावना जाग्रत कर उन्हें सशक्त करने का प्रयास किया जा रहा है। साथ ही मिल-जुलकर समस्याओं का समाधान एवं आजीविका के साधन को कैसे खोजा जाता है? यह समूह के माध्यम से पूर्ण किया जा रहा है। अनेक अध्ययन करने के पश्चात यह निर्णय निकलकर सामने आ रहे हैं कि व्यक्ति और समाज के विकास में समूहों का अत्यंत ही महत्व है और इन समूहों को और अधिक सशक्त बनाने की आवश्यकता है। समाज कार्य अभ्यास में भी समूह की समझ प्रत्येक कार्यकर्ता को होनी चाहिए, जिससे कि वह समाज में जाकर समस्याओं का समाधान उचित प्रकार से कर सके।

1.7 सारांश

विश्व के प्रत्येक भाग में किसी-न-किसी प्रकार के समूह अवश्य पाए जाते है। व्यक्ति का व्यवहार बहुत कुछ इस बात पर निर्भर करता है कि वह किस समूह का सदस्य है अथवा किस समूह से अपने को संबंधित मानता है। प्राथमिक समूहों (जैसे- परिवार, पड़ोस, मित्र-मंडली, आदि) के सदस्यों के व्यवहार में आत्मीयता, सहानुभूति व सहयोग देखने को मिलता है, उनके संबंधों में घनिष्ठता एवं आंतरिकता पाई जाती है। दूसरी ओर द्वितीयक समूह जैसे किसी मिल, फैक्ट्री, राजनीतिक दल, आदि के सदस्यों के व्यवहारों में इन बातों का अभाव पाया जाता है। उनके संबंध अप्रत्यक्ष, अवैयक्तिक तथा औपचारिक प्रकार के होते हैं। यहां संबंधोंका उतना महत्व नहीं है जितना व्यक्ति द्वारा किए जाने वाले कार्य का। यहाँ व्यक्ति का एक-दूसरे के प्रति व्यवहार दूर केरिश्ते के समान होता है, जिसमें निकटता और आत्मीयता का अभाव पाया जाता है। भीड़ और श्रोता-समूह के सदस्यों के व्यवहार में भी रात-दिन का अंतर देखने को मिलता है।

समूहों का मानव जीवन में अत्यंत ही महत्व है और इन्हीं महत्वों के कारण कई प्रकार के लाभ समूहों से होते है। समूह की सबसे अधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि समूह व्यक्ति के व्यक्तित्व को आदर्श रूप में ढालने का एक साधन है जो कि समस्या-समाधान, आत्म-प्रतिष्ठा का निर्माण, दृढ़ संकल्प तथा समाज में व्यक्ति के समाजीकरण के मामलों के लिए अवसर उपलब्ध कराता है। अंत में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक समूह कार्य अभ्यास के लिए समूह बहुत ही महत्वपूर्ण अंग है जिसको समूह कार्य प्रक्रिया प्रारंभ होने के पूर्व इसका अध्ययन अत्यंत ही आवश्यक है।

1.8 बोध प्रश्न

प्रश्न 1. समूह को परिभाषित कीजिए।

प्रश्न 2. मैकाइवर एवं पैज ने समूह को किस प्रकार से समझाया है? उल्लेख कीजिए।

प्रश्न 3. मनुष्य के समूह निर्माण के पीछे क्या-क्या कारण होते है? स्पष्ट कीजिए।

प्रश्न 4. समूह की विशेषताओं को रेखांकित कीजिए।

प्रश्न 5. समूहों के विभिन्न प्रकारों को वर्गीकृत कीजिए।

प्रश्न 6. समूहों के महत्व को स्पष्ट कीजिए।

1.7 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

- सचदेवा, डी .आर., भूषण, विद्या. (2012) ***समाजशास्त्र.*** लखनउ : डॉर्लिंग किंडरस्ले (इंडिया) प्रा.लि.।
- कूले, सी. एच. (1937). *सोशल आर्गनाइजेशन*. न्यूयार्क : चार्ल्स स्क्राइबनर्स संस।
- कोरी, एम.एस. (2002). *ग्रुप प्रोसेस एंड प्रैक्टिस*. न्यूयार्क : ब्रुक्स कोले।
- फैरीस, ई. (1937). *दि नेचर आफ ह्युमन नेचर*न्यूमार्क : मैकग्राव हिल बुक।
- होमैन, जी.सी. (1950). *दि ह्युमन ग्रुप*. न्यूयार्क : हारकोर्ट. ब्रास एंड वर्ल्ड।
- जोनसन, डी. डब्ल्यू एंड जॉनसन् पी. एफ. *जोइनिग टुगेदर*, न्यूजर्सी : प्रिंटिस हाल।
- शाह, एम.ई. (1977) *ग्रुप डाइनामिक्स*. नई दिल्ली : टाटा-मैकग्रा हिल।
- सिंह, ए.एन. एवं सिंह, ए.पी. (2008). *समाज कार्य*. लखनऊ– प्रकाशक।
- Mishra, P.D. & Mishra Bina (2008). *Social Group Work Theory and Practice.: Lucknow :*
- मिश्रा, प्रयागदीन. (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य*. लखनऊ : हिंदी संस्थान।
- सिंह,ए.एन., सिंह, नीरजा,संजय,मिश्रा,सुषमा (2012). *सामूहिक कार्य*. हल्दानी : उत्तरायन प्रकाशन।

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई-2 समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास

इकाई रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 इंग्लैंड में सामाजिक समूहकार्य का ऐतिहासिक विकास
2.3 अमेरिका में सामाजिक समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास
2.4 भारत में सामाजिक समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास
2.5 सामाजिक समूह कार्य का शिक्षात्मक विकास क्रम
2.6 सांराश
2.7 बोध प्रश्न
2.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. सामाजिक समूह कार्य के आरंभ होने का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य
2. इंग्लैंड में सामाजिक समूह कार्य का प्रारंभ, उसके चरण और विकास
3. अमेरिका में सामाजिक समूह कार्य का प्रारंभ, उसके चरण और विकास
4. भारत में सामाजिक समूह कार्य का प्रारंभ

2.1 प्रस्तावना

सामाजिक समूह कार्य को समाजकार्य की एक प्राथमिक प्रणाली के रूप में जाना जाता है, जिसका उद्देश्य व्यक्तियों की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक समस्याओं का निराकरण करके उनका विकास करना है। संपूर्ण विश्व में इस प्रकार के कार्य सदियों से होते आ रहे हैं । किंतु व्यावसायिक समाज कार्य के रूप में सामाजिक समूह कार्य का विकास अधिक लंबा नहीं है। पूर्व में इस प्रकार के कार्य करने की मनुष्य की भावना धर्म के आधार पर थी। जिससे मनुष्य दूसरों की सहायता भावानात्मक आधार पर करता थी, लोग असहायों, अनाथों, रोगग्रस्त व्यक्तियों को सुरक्षा प्रदान करने के लिए आगे आए, जिसका स्वरूप दान पद्धति थी।

प्रारंभिक काल में धर्म के आधार पर लोग दूसरों की सहायता करना अपना कर्तव्य समझते थे, परंतु मध्य काल में यह कार्य पादरी करने लगे। वृद्धों, गरीबों तथा रोगियों के लिए संस्थाओं की स्थापना की गई। गाई डी मान्टे पोतियनि (Gvy De Monteselliers) द्वारा स्थापित क्रान्सिसिकन्स ने निर्धनों, अपाहिजों, पीड़ितों की चिकित्सा तथा आश्रय देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। फ्रांस के श्रेष्ठ समाज सुधारक फादर विन्सेंट डी पाल ने इस दिशा में महत्वपूर्ण कार्य किया। 1663 में भिक्षा लड़कियों Daughters for Charity का सामान्य ढंग का संगठन बनाया गया। जो सामान्य वर्ग की महिलाओं को जोड़कर बनाया गया था। ये महिलाएं कृषि आधारित कार्य करती थीं। भिक्षा का कार्य भी करती थीं और साथ ही साथ गरीबों की सहायता भी करती थीं। उन्होंने इस कार्य के लिए राज दरबार की महिलाओं कोभी व्यक्तिगत रूप से अनाथों और बीमारों की सेवा करने के लिए

प्रोत्साहित किया। भिक्षा की महिलाएं जो निर्धन परिवारों में भोजन और वस्त्रों का वितरण करती थी इन दोनों संगठनों ने मिलकर समूह कार्य के क्षेत्र में महती भूमिका निभाई।
फादर विन्सेंट डी पाल के विचारों ने समूह कार्य के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन को जन्म दिया जिससे फ्रांस में ही नहीं, बल्कि अन्य देशों में भी इस प्रकार में कार्यों को वैज्ञानिक आधार प्राप्त हुआ।
सामाजिक समूह कार्य के विकास को मुख्यत: 3 खंडों में विभाजित किया जा सकता है, जिससे इसके विकास क्रम को समझने में आसानी होगी।

2.2 इंग्लैंड में सामाजिक समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास

इंग्लैंड में सामाजिक समूह कार्य के इतिहास को चार चरणों में विभाजित किया जा सकता है :

1. आवश्यकता ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता का काल
2. सामुदायिक सेवाओं के आधार परसहायता का काल
3. श्रम कल्याण के आधार पर सहायता का काल
4. सुधारात्मक सेवाओं के आधार पर सहायता का काल

2.2.1 आवश्यकता ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता का काल- 14 वीं शताब्दी तक आवश्यकताग्रस्त व्यक्तियों की सहायता करना पुण्य का कार्य समझा जाता था। चर्च का प्रमुख उद्देश्य ही गरीबों को दान देना और उनकी सहायता करना था। चर्च के काफ़ी प्रयत्नों के बावजूद भी गरीबों और बेसहारों की स्थिति में कोई संतोष जनक परिवर्तन नज़र नहीं आया। चर्च द्वारा अनेकानेक प्रयत्न किए गए, किंतु कोई स्थायी समाधान प्रस्तुत नहीं किया गया, जिससे जरूरतमंदों की सहायता कर उनका निश्चित विकास किया जा सके।
1349 में किंग एडवर्ड ने यह आदेश पारित किया कि प्रत्येक स्वस्थ शरीर वाला व्यक्ति कोई-न-कोई कार्य अवश्य करेगा, जिससे लोगों की बेरोज़गारी को कम किया जा सके। एडवर्ड द्वारा किया गया यह प्रथम प्रयास था, जिसमें यह बात निकलकर सामने आई कि गरीबी के लिए व्यक्ति स्वयं ही ज़िम्मेदार है तथा इसके लिए किसी दूसरे को ज़िम्मेदार नहीं ठहराया जा सकता। इस प्रकार से इस नियम द्वारा सक्षम को काम करने के लिए बाध्य किया गया।
1561 में हैनरी नियमावली में भिक्षा माँगने वालों के लिए पंजीकरण आवश्यक कर दिया। इस कानून के अंतर्गत महापालिका अध्यक्ष तथा न्यायाधीशों के लिए यह आदेश जारी किया गया कि वे ऐसे आवश्यकता ग्रस्त व्यक्तियों (जैसे वृद्ध, निर्धन, अनाथ इत्यादि) के प्रार्थना पत्रों की जाँच करें जो वास्तविक रूप से काम करने में अक्षम है। यह इस प्रकार का पहला अधिनियम था, जिसके द्वारा जरूरतमंदों के प्रति ज़िम्मेदारी का आभास हो सके।
1536 में गरीबों एवं जरूरतमंदों की सहायता के लिए एक सरकारी योजना का भी निर्माण किया गया, जिसमें यह नियम बनाया गया कि गरीबों का उनकी चैरिटियों में पंजीकरण अवश्य हो, लेकिन वे वहाँ कम से कम 3 वर्षों से रह रहे हों। स्वस्थ शरीर वाले भिक्षा माँगने वाले व्यक्तियों को काम करने के लिए बाध्य किया गया। तथा जो 5 से 14 वर्ष के आयु के बीच में ऐसे बच्चे जो बेकार एवं आवारा घूमते थे, उनको उनके माता-पिता के साथ प्रशिक्षण दिया जा सके, ऐसा प्रावधान किया गया। 1572 में ''एलिजाबेथ क्वीन'' ने गरीबों की सहायता के लिए एक सामान्य कर लगा दिया। साथ-साथ नया कानून पालन करने हेतु ओवरसियर नियुक्त किए गए। यह भी मान लिया गया कि सरकार ऐसे व्यक्तियों को आश्रय प्रदान करेगी जो स्वयं अपनी सहायता करने में असमर्थ हैं। 1576 में सुधारगृह (House of corrections) बनाए गए जहाँ पर ऐसे व्यक्तियों को रखा गया जो काम करने के लिए सक्षम थे, किंतु कार्य नहीं कर रहे थे। खास कर युवकों को ऐसे काम करने के लिए बाध्य किया गया। **1601 में धनहीनों के लिए एक कानून बना जो कि 43 एलिजाबेथ के नाम से जाना जाता था। इस कानून में**

निर्धनों को 3 वर्गों में विभाजित कर दिया गया, जिसमें सर्वप्रथम पुष्ट शरीर वाले निर्धन, शक्तिहीन निर्धन, आश्रित बच्चों को शामिल किया गया। पुष्ट शरीर वाले निर्धन (Abue Bodied Pear) पुष्ट शरीर वाले निर्धनों के अंतर्गत ऐसे निर्धनों को रखा गया जो कि हृष्ट-पुष्ट हो एवं कार्य करने योग्य हों इनसे सुधारग्रहों में काम लिया जाता था। कोई भी व्यक्ति इन्हें भिक्षा नहीं दे सकता था । यदि कोई व्यक्ति कार्य के लिए मना कर देता उसे कारागृह में डाल दिया जाता था। शक्ति हीन निर्धन के अंतर्गत वे व्यक्ति आते थे जो कि रोगी, वृद्ध, अंधे, बहरे, गूंगे, लंगडे, पागल हों और महिलाएं जिनके पास छोटे-छोटे बच्चे थे इसके अंतर्गत आते थे। ये लोग काम करने में असमर्थ होते थे। ऐसे व्यक्तियों के लिए बाहर से सहायता का प्रबंध किया गया था, जिससे इनकी मूलभूत आवश्यकताओं जैसे- रोटी-भोजन, वस्त्र, मकान आदि को पूरा किया जा सके। आश्रित बच्चे ऐसे बच्चे जिनके माता-पिता नहीं थे या फिर उनके माता-पिता ने उन्हें घर से निकाल दिया था या फिर इतने गरीब थे कि उनके माता-पिता उनकी सहायता नहीं कर सकते थे ऐसे बच्चे उन नागरिको को दे दिए जाते थे जो उनका भरण-पोषण कर सके। इस प्रकार से यह कानून अत्यंत ही महत्वपूर्ण एवं सार्थक साबित हुआ। इसके अलावा लॉ ऑफ सेटेलमेंट 1662 का कानून बना, 1795 में 1662 के कानून का पुनः संशोधन किया गया ये कानून सामाजिक समूह कार्य के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण माने जाते हैं। 1832 में निर्धन कानूनों की प्रशासनिक तथा व्यावहारिक कार्यविधि संबंधी जाँचकरने के लिए एक राजकीय आयोग बनाया गया। इस आयोग की प्रमुख सिफारिश निम्नानुसार थी-

1. स्पिनहम लैंड तरीके के अंतर्गत दी जाने वाली आंशिक सहायता को कम किया जाए।
2. सहायता चाहने वाले सभी समर्थ प्रार्थियों को कार्यगृहों में रखा जाए।
3. केवल रोगी, वृद्ध, अशक्त एवं नवजात शिशुओं सहित विधवाओं को ही बाहर सहायता दी जाए।
4. विभिन्न पैरिसो में सहायता संबंधी प्रशासन का एक ''निर्धन कानून संघ' के रूप में समन्वय हो।
5. निर्धन सहायता प्राप्त करने वालों की स्थिति समुदाय में निम्न वेतन पाने वाले मजदूरों की तुलना मेंकम हो।
6. नियंत्रण के लिए केंद्रीय परिषद की स्थापना की जाए।

14 अगस्त, 1834 में एक नया निर्धन कानून 'द न्यू पूअर लॉ' लाया गया, किंतु इससे भी कोई खास सफलता प्राप्त नहीं हुई। सन 1847 में निर्धन कानून कमीशन के स्थान पर निर्धन कानून बोर्ड गठित किया गया, जिसका कार्य निर्धनता के कारणों तथा सामाजिक सुधार के प्रभावशाली साधनों के लिए किए गए कारणों का निरीक्षण करना था। 1834 के नवीन गरीब कानून के प्रति एडविक चड़विक ने असंतोष प्रकट किया। इस कारण से आयोग के स्थान पर परिषद का गठन किया गया और एड़विक चड़विक को इसका महाआयुक्त नियुक्त किया गया। उन्होंने निर्धनता के कारणों की खोज करने का प्रयत्न किया। सामाजिक सुधार के प्रभावशाली साधनों की खोज की। आवास गृहों की कमी के कारण कई लोग एक साथ पलंग पर सोते थे, जिससे बाल अपराध, लड़ाई-झगड़ा, अनैतिकता, छुआ-छूत की बीमारी बढ़ती थी। पीने के पानी के कारण भी लोग बीमार होते थे। अतः इस कारण चड़विक ने अपना ध्यान स्वास्थ्य की ओर अधिक आकृष्ट किया। उन्होंने संक्रामक रोग से बचने के लिए एक कार्यक्रम बनाया। जिसमें नि:शुल्क टीके लगाए जाने लगे,पार्कों तथा बगीचों को बनाने में रुचि दिखाई। अतः उनके प्रयास के परिणामस्वरूप सन 1898ई. में जन स्वास्थ्य एक्ट की स्थापना हुई। चाड़विक इसके सदस्य बने। अतः समूह कार्य के इतिहास में चाड़विक का नाम भी लिया जाता है। औद्योगिक क्रांति के आने से समाज के अनेक क्षेत्रों में विकास हुआ। किंतु इसके साथ-साथ अनेक समस्याओं का भी जन्म हुआ। इस प्रकार कीसमस्याओं से निपटने के लिए क्रिश्चियन सोसायटी तथा श्रम संघ ने महत्त्वपूर्ण कार्य किए। 1844 में चार्टिस्टों ने पहला सहकारी भंडार खोला, जिसके मालिक श्रमिक थे। इस प्रयास के उपरांत अन्य नगरों में भी इस प्रकार के प्रयास किए गए।

चार्टिस्ट की शक्ति में कमी होने पर फ्रेडरिक हेन्सन मारिस, चार्ल्स क्रिम्सके तथा जे. एम.लुडलो के निर्देशन में मजदूरों की शैक्षणिक, आध्यात्मिक तथा सामाजिक दशाओं में सुधारकरने का प्रयास किया गया। श्रमिकों के लिए रात्रि पाठशालाएँ खोली गई। कैनन सेमुअल, अगस्टस, वाटनेट 1937 ई. में लंदन के हाइट चौपल स्थित सेंट जूड गिरजाघर में उस क्षेत्र में रहने लगे जिसमें निर्धन रहते थे। वे उनके पादरी बने। वाटनेट ने पाया कि हाइट-चौपल के 8000 निवासियों में अधिकांशतः दीन-दुखी असहाय, अपाहिज, बेकार थे। वे दुर्गंधयुक्त जगहों में रहते थे। उनकी दशा अत्यंत ही दयनीय थी। वाटनेट आक्सफोर्ड तथा कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय में गए तथा उनको वहाँ के लोगों के दयनीय स्थिति से अवगत कराया। उन्होंने विधार्थियों को इनके वैयक्तिक अध्ययन (Case Work) तथा शैक्षिक सहायता देने के लिए प्रोत्साहित किया। उनके प्रयास से विश्व का प्रथम व्यवस्था गृह बना। इस व्यवस्था गृह के तीन मुख्य उद्देश्य थे–

1. निर्धनों की शिक्षा और संस्कृति का विकास करना। सामाजिक सुधार की अत्यंत आवश्यकता के संबंधमें विद्यार्थी तथा व्यवस्था गृह के अन्य निवासियों को जानकारी देना। सामाजिक तथा स्वास्थ्य समस्याओं का निराकरण और सामाजिक विधि निर्माण में व्यापक हितों की सामान्य जागृति उत्पन्न करना। इन उद्देश्यों को बढ़ाने के अतिरिक्त, सांस्कृतिक प्रभाव भी डालना था। अतः भाषण तथा वाद-विवाद, गोष्ठियों आदि का आयोजन करना भी शामिल था।
2. निर्धनों की दशा सुधारने हेतु सामाजिक सुधारकरना अत्यंत आवश्यक होता है, अतः इस संबंध में विद्यार्थियों तथा व्यवस्था गृह के अन्य-निवासियों को जानकारी देना।
3. समस्याओं के निराकरण और सामाजिक विधि निर्माण में व्यापक परिवर्तन हेतु सामाजिक तथा स्वास्थ्य समस्याओं के प्रति लोगों में जनजागृति उत्पन्न करना।

समूह कार्य के इतिहास के परिप्रेक्ष्य में यदि हम ध्यान आकर्षित करें तो इसका विकास व्यवसाय के रूप में 20 वीं शताब्दी में ही प्रारंभ हुआ है। परंतु इसके सिद्धांतों तथा व्यावहारिक दक्षताओं का उपयोग बहुत पहले से होता चला आ रहा है। इसी विकास क्रम में चैरिटी ऑर्गेनाइजेशन सोसायटी (Charity Origination Society) ने अपनी विशेष भूमिका अदा की।

जॉन एडम्स हिल तथा डिवाइन आदि ऐसे समाज सुधारक थे जिन्होंने मानवीय आवश्यकताओं की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया। इन्होंने उन सामाजिक समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जो सामाजिक वातावरण से उत्पन्न होती थी। किंतु जैसे-जैसे सामाजिक समस्याएँ गंभीर होती गई सामाजिक संगठनों ने भी सेवाओं में परिवर्तन करना प्रारंभ कर दिया। अब समूहों की सहायता व्यक्ति, संगठित होकर करने लगे, जिससे समस्याओं के हल खोजने में सहायता मिली। इस प्रकार से इंग्लैंड में आवश्यकताग्रस्त व्यक्तियों की सहायता उपयुक्त कानूनों एवं नियमों के माध्यम से समूह कार्य के रूप में की जाती थी।

2.2.2 सामुदायिक सेवाओं के आधार पर सहायता का काल - सामुदायिक स्वास्थ्य सेवाओं के अंतर्गत लगभग 500 से अधिक स्वास्थ्य अभ्यागतों की नियुक्ति की गई जो रोगों को रोकने का प्रबंध करते थे। इसी तारतम्य में 1886 में बीमार तथा अपंग बच्चों के लिए अपंग बालकोंका सहायता संघ (Invalid children And Association)बनाया गया। इसके कुछ ही दिनों के बाद विद्यालय बच्चे-देखभाल कमिटी (स्कूल चिल्ड्रन केअर कमिटी) तथा क्षय रोगियों के लिए डिस्पेंसरी खोली गई।

1895 में मिस स्टेवार्ट को रॉयल फ्री हॉस्पीटल में अल्मोनर के रूप में नियुक्त किया गया। इसी अल्मोनर के प्रयास से चिकित्सीय समाज कार्य का प्रारंभ हुआ। भोजन के क्षेत्र में भी एक नया प्रावधान 1906 में पास किया गया जिसे

(The Proposition of meal act) के नाम से भी जाना जाता है, जिससे भोजन का प्रावधान अधिनियम भी कहा जाता है। इस अधिनियम के पास होने के पश्चात विद्यालय में नि:शुल्क स्वल्पाहार की सुविधाएँ प्रदान की गई।

1844 ई. में यंग मैन क्रिश्चन एसोसिएसन (Yong men's Christian association) की स्थापना जॉर्ज विलियम्स नामक बस विक्रेता ने समस्त युवक और युवतियों को इस उद्देश्य के साथ प्रेरित करने के लिए किया कि वे ईसाई जीवन पद्धति पर चलने की प्रेरणा प्राप्त कर सके। सन 1860 में एक महिला द्वारा डैस ''अलो-क्लब'' की स्थापना कनेक्टीकट में की गई, जिसे चर्च महिला समूह के नाम से जाना जाता है। इस क्लब के माध्यम से खेल-कूद, नृत्य, संगीत नाटक आदि अनेक प्रकार के कार्यक्रमों का प्रबंध था। इसी के परिणाम स्वरूप अन्य क्लबों की भी स्थापना इस उद्देश्य के साथ की जाने लगी कि इसमें बच्चे भाग ले सकें और उनकी दशाओं में सुधार हो सकें। 1865 में ही कॉमन्स समाज की स्थापना सुविधाओं के लिए एवं पार्कोंउद्यानों की स्थापना के लिए की गई। इस कामन्स समाज का उद्देश्य ऐसे लोगों की मुख्य रूप से सहायता करना था जो मानसिक रूप से कमजोर हैं और जिनको रहने के लिए स्थानों का अभाव है।

1844 में पहला सहकारी भंडार चार्टिस्टो द्वारा रोजडेल में खोला गया, जिसके मालिक श्रमिक थे। मानवतावादी रॉबर्ट ओवेन ने सहकारी उपभोक्ता भंडारों को प्रारंभ कर एक उदाहरण प्रस्तुत किया। उन्होंने ऐसे औद्योगिक समुदाय की स्थापना की जहाँ पर कम कीमत पर स्वास्थ्य सुविधाएँ आवास सुविधाएँदी जातीं थीं जो स्वच्छता से भरपूर थी। मजदूरों तथा उनके परिवारों के लिए खेल के मैदान के साथसाथ पुस्तकालय एवं अन्य मनोरंजन की सुविधाएँ उपलब्ध थी।

2.2.3 श्रम कल्याण के आधार पर सहायता का काल - इंग्लैंड में सन 1802 ई. में स्वास्थ्य एवं सदाचार कानून बनाया गया। इस कानून के अंतर्गत दिनभर में12 घंटे काम करना निश्चित कर दिया गया जो प्रातः 6 बजे से लेकर 9 बजे रात तक कार्य कर सकते थे। तथा बच्चों से रात में काम लेना बंद कर दिया गया। 1833 में डाक, कारखाना, अधिनियम बना उस समय कारखानों में 9 वर्ष से कम उम्र के बच्चों से काम कराना वर्जित कर दिया गया। 13 वर्ष के बच्चे दिन में सिर्फ 9 घंटे तथा पूरे सप्ताह केअंतर्गत 48 घंटे काम कर सकते थे। इस समय तक निरीक्षकों की नियुक्ति भी केंद्रीय तथा राष्ट्रीय कार्यालय के अंतर्गत करना प्रारंभ कर दिया गया। कारखाना अधिनियम में सुधार करते हुए1847 में एक आदेश जारी किया गया कि औरतों तथा 18 वर्ष से कम उम्र के बच्चे प्रत्येक दिन में अधिक से अधिक काम 10 घंटे का काम कर सकते हैं।

2.2.4 सुधारात्मक सेवाओं के आधार पर सहायता का काल- जेल की दशाओं में सुधार करने के लिए श्रीमती एलिजाबेथ फ्राई नाम की महिला ने जेल के अंदर बच्चों को शिक्षित करने के उद्देश्य से एक विद्यालय की शुरूआत की और अध्यापक के रूप में जेल में बंद अपराधी औरतों में से एक का चुनाव किया गया। प्रौढ़ महिलाओं के लिए जेल में बुनाईकढ़ाई का काम भी उनके द्वारा शुरू किया गया। बाल अपराधियों के सुधार हेतु सन 1912 में काल अधिनियम पास हुआ। 1950 में दूसरा काल अधिनियम पास किया गया। तथा इस अधिनियम के तहत काल समितियाँ एवं काउन्टी काउंसिल बनाई गई जिसका उत्तरदायित्व काल का भी देखभाल करना था। इंग्लैंड में 20वीं शताब्दी के पूर्व समूह कार्य का उद्देश्य सामाजिक चेतना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना था। परंतु 1920 के पश्चात इसका उपयोग व्यक्ति के व्यक्तित्व में सकारात्मक परिवर्तन तथा उसके विकास के लिए किया जाने लगा। द्वितीय विश्व युद्ध के समय इग्लैंड के शिक्षा मंत्रालयद्वारा युवा सेवाओं के रूप में समूह समाज कार्य को मान्यता प्राप्त हुई। युवाओं के प्रशिक्षण में समूह कार्य का ज्ञान कराया जाने लगा और इस संदर्भ में अनेक कार्यक्रम आयोजित किए जाने लगे और इसके साथ ही 1960 तक जो समूह कार्य शिक्षा

अपर्याप्त थी 1960 के बाद इसमें व्यापक परिवर्तन हुआ और अनेक विद्यालयों/महाविद्यालयों/विश्वविद्यालयों में समूह कार्य शिक्षा में तेज़ी से विस्तार हुआ।

अतः इस प्रकार से इंग्लैंड में सामाजिक समूह कार्य के ऐतिहासिक विकास को मुख्य बिंदुओं द्वारा प्रदर्शित करने का प्रयास किया गया है एवं यह भी स्पष्ट किया गया है कि इंग्लैंड में किस प्रकार से कानूनों का निर्माण हुआ और उन्हें किस प्रकार से प्रभावी बनाने के लिए समयानुसार उसमें परिवर्तन किया गया।

इग्लैंड में बनाए गए कुछ महत्वपूर्ण विधान एवं कार्य एकनज़र में-

1. इंग्लैंड में भी अन्य यूरोपीय देशों की भाँति गरीबों की देख-रेख का कार्य चर्च करते थे।
2. प्रारंभ में क्लेश, दुख, गरीबी तथा अन्य समस्याओं के लिए ईसाई लोग एकदूसरे की सहायता करते थे।
3. मध्यकाल में क्लेश, दुख, गरीबी तथा अन्य समस्याओं के लिए पादरी कार्य करते थे।
4. गाई डी मान्टेपेलियर्स (Guy De Montepelliers)ने हास्पिटल की तथा सेंटफ्रैंसिस डि एसिसी ने (Saint Francis de Assisi) फ्रैंसिस कैन्स (Francis Cans) की स्थापना की, जिसका उद्देश्य निर्धन, अपाहिजों, पीड़ितों को शिक्षा देना तथा रोगियों की चिकित्सीय सहायता तथा निराश्रितों को आश्रय देना था।
5. सोलहवीं शताब्दी के सुधार काल में भिक्षावृत्ति को रोकने का प्रयास किया गया तथा सामान्य दान पेटियों (Common Chests) की स्थापना की गई।
6. 1523 ई0 में ज्यूरिख तथा स्विटजरलैंड में अलरिक ज्वीगली ने सहायता के लिए प्रभावकारी योजना प्रस्तुत की।
7. सर्वप्रथम 1531 में हेनरी अष्टम ने स्टैट्यूट ऑफ हेनरी VIII पास किया।
8. सन 1536 ई0 में अंग्रेज़ सरकार ने निर्धनों को पंजीकृत कराके उनकी चर्च द्वारा सहायता की योजना बनाई।
9. 1576 ई0 में सुधारगृह (House of Correction) स्थापित हुए जहाँ पर गरीबों को व्यावसायिक प्रशिक्षण दिया जाता था।
10. सन 1601 ई0 में एलिजाबेथ का धनहीनों के प्रति कानून बना।
11. फादर विंसेन्ट ने 1633 में 'भिक्षा की लड़कियाँ' नामक संघ की स्थापना की जिनमें महिलाएँ भिक्षा का कार्य करती थीं
12. अतः 14 अगस्त, सन् 1834 ई0 को नवीन गरीब कानून (The New Poor Law) बना।
13. सन 1844 ई0 में चार्टिस्टों ने पहला सहकारी भंडार खोला जिसके मालिक श्रमिक ही थे।
14. सन 1844 ई0 में जार्ज विलियम्स नामक वस्त्र विक्रेता ने युवकों तथा युवतियों को ईसाई जीवन पद्धति पर चलने की प्रेरणा दी और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए नवयुवक ईसाई संघ (Young Men Christian Association) की स्थापना की।
15. सन 1848 ई0 में चडविक के प्रयास से जनस्वास्थ्य ऐक्ट The Public Health Act की स्थापना हुई और चडविक उसके सदस्य बने।
16. सन 1860 ई0 में एक चर्च महिला समूह ''डैस अवे क्लब'' की स्थापना कनेक्टीकट में की गई।
17. 1874 ई0 में प्रौढ़ शिक्षा का कार्यक्रम प्रारंभ हुआ।
18. प्रथम सेटलमेंट टायनबी हाल (Toynbee Hall)सन 1884 ई0 में कैनन बारनेट (Canon Barnett)द्वारा स्थापित किया गया।

19. 1886 ई0 में सेटेलमेंट हाउसेज आरंभ हुआ।

20. सन 1886 ई0 में स्वच्छता सहायता समिति (Sanitary Aid Committee) की स्थापना संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए की गई। गृहों की दशा सुधारने का प्रयत्न किया।

21. सन 1895 ई0 में मिस स्टेवार्ट (Stewart) ने हास्पिटल सोशल सर्विस का प्रारंभ किया।

22. डब्ल्यू मोरे इडे (W. Moore Ede) ने 1896 ई0 ने सेटलमेंट आंदोलन का दर्शन प्रस्तुत किया।

23. वेथनाल ग्रीन में आक्सफोर्ड हाउस, साउथवार्क में वीमेन्स यूनिवर्सिटी सेटलमेंट, केनिंग टाउन में मान्सफील्ड हाउस आदि की स्थापना की गई।

24. सामाजिक वैयक्तिक समाज कार्य तथा सामूहिक समाज कार्य लगभग समान परिस्थितियों में औद्योगिक क्रांति के फलस्वरूप इंग्लैंड और अमेरिका में विकसित हुआ।

25. कैनन वारनेट ने सेटलमेंट के लिए उन सिद्धांतों को प्रतिपादित किया जो आगे चलकर समाज कार्य की सभी प्रणालियों के आधारभूत सिद्धांत माने जाने लगे। उन्होंने व्यक्ति के महत्व को, मान, संबंध, आत्म निश्चय पर बल दिया।

26. कैनन की विचारधारा को आधार मान कर ही सामूहिक समाज कार्य पद्धति का आधुनिक रूप से विकास संभव हो सका।

2.3 अमेरिका में सामाजिक समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास

अमेरिका में सामाजिक समूह कार्य का विकास पिछले लगभग 60 वर्षों में ही प्रतीत होता है। प्रारंभ में इसका स्वरूप केवल मनोरंजनात्मक था। लोग इसे केवल खेल-कूद, सांस्कृतिक गतिविधियों के परिप्रेक्ष्य में ही समझते थे। समय के साथ-साथ इनकी कार्य प्रणालियों और उनके उद्देश्यों में बदलाव आया। अमेरिकी सामाजिक समूह कार्य इंग्लैंड के समूह कार्य की तरह ही प्रतीत होता है। 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में दोनों की कार्य प्रणालियाँ लगभग समान ही नज़र आती है। परंतु 1935 के बाद इनकी कार्य प्रणालियों में कुछ अंतर देखा जा सकता है। अमेरिका के सामाजिक समूह कार्य और इतिहास को निम्नलिखित बिंदुओं द्वारा स्पष्ट रूप से समझा जा सकता है:

2.3.1 स्वकीय दान संगठन समितियाँ(प्राइवेट चैरिटी)

इंग्लैंड के समूह समाज कार्य और अमेरिका के समूह समाज कार्य में जो प्राथमिक भिन्नताएँ नज़र आती हैं उसमें सर्वप्रथम स्वकीय दान संगठन पद्धति को देखा जा सकता है। इंग्लैंड में निर्धनों को जो सहायता प्रदान की जाती थी, उसके अंतर्गत निर्धनों को निवास हेतु Poor House or Work House प्रदान किए जाते थे। जबकि अमेरिका में निर्धनों, अनाथों और आश्रितों को उनके रहने एवं उनमें कुछ सुधार लाने हेतुभिक्षागृह एवं सुधार गृह बनवाए गए थे। अमेरिका में पहला भिक्षागृह 1657 में न्यूयॉर्क के अंतर्गत खोला गया। कुछ समय पश्चात ऐसे कई भिक्षागृह अन्य नगरों में भी खोले जाने लगे।

इंग्लैंड में वैयक्तिक रूप से निर्धनों एवं आश्रितों को जो सहायता प्रदान की जाती थी उसमें अस्पतालों का अत्यधिक महत्व था एवं इसी प्रकार के माध्यमों से निर्धनों की सहायता की जाती थी। जबकि अमेरिका में जो वैयक्तिक दान पद्धति थी उसका स्थान बहुत ही कम था। जो कुछ थोड़ी-बहुत दान पद्धति थी, उसे 18 वीं शताब्दी तक बंद कर दिया गया था। एक ऐसी ही गैर सरकारी चैरिटी का भी अमेरिका में निर्माण कराया गया था जो राष्ट्रीयता पर आधारित थी। ऐसी अन्य समितियों के लिए इनकी दशाओं को सुधारने के लिए नियम-कानूनों का निर्माण भी कराया गया।

अत: इस प्रकार के कार्यों को सुचारू रूप से क्रियान्वित करने के लिए 1898 में न्यूयॉर्क नगर में पहला समाज कार्य पाठ्यक्रम संगठित किया गया। जितने भी गैर-सरकारी संगठन कार्य कर रहे थे उनको भी ठीक से संचालित करने के

लिए Council of Social Agencies की स्थापना भी की गई। समस्त समूह कार्यों को किस प्रकार क्रियान्वित किया जाए एवं उनके सफल संचालन के लिए किस प्रकार से संयुक्त होकर धन को एकत्रित किया जाए इसके लिए Community Chest की भी स्थापना की गई, जिसके अंतर्गत समस्त एकत्रित धन को संगठित रूप से रखने की व्यवस्था थी।

अमेरिका में समूह समाज कार्य के विकास में एक और महत्वपूर्ण विकास तब नज़र आया जब The Settlement House movement को चलाया गया। इस आंदोलन का उद्देश्य उन गंदे एवं भीड़-भाड वाले इलाके, जहाँ अत्याधिक लोग निवास करते थे, हटाकर उन्हें एक अन्य प्रकार की संस्था, जिसका नाम Settlement House था, के अंतर्गत उन्हें रखा जाता था। इस संस्था में रहने वाले जितने भी व्यक्ति थे उनमें से अधिकतर समाज सुधारक बन गए और उन्होंने गंदी बस्तियों की सफाई, बाल अपराधियों के विशेष न्यायालय, आवास के लिए उचित विधान व्यवस्था के लिए कालांतर में माँग रखीं। इस प्रकार से अमेरिका में समूह समाज कार्य का प्रारंभ नज़र आता है।

2.3.2 युवाओं के साथ कार्यकरने का काल

अमेरिका में युवाओं के साथ कार्य करने का शु उस समय प्रारंभ हुआ जब जॉर्ज विलियम द्वारा स्थापित Young men's christian Association (YMCA) की स्थापना इंग्लैंड में हुई और इसने निरंतर युवाओं के क्षेत्र में कार्य किया। इसकी सफलता को ध्यान में रखते हुए अमेरिका में भी एस.जे.वी. सुलिवान द्वारा बोस्टन शहर में सन 1851 में Young men's christian Association की स्थापना इसी उद्देश्य के साथ की गई, जिससे युवाओं के क्षेत्र में कुछ प्रगतिशील कार्यक्रम को क्रियान्वित किया जाए। इसी तरह की एक और अन्य संस्था 1866 में बोस्टन में ही लुक्रेटिया बोयड के द्वारा Young men's christian Association स्थापित की गई जिससे महिलाओं के क्षेत्र में भी प्रगतिशील कार्य हो सके। इसके लिए YMCA नामक संस्था को संचालित किया गया। इसके उपरांत अमेरिका में युवाओं के क्षेत्र में कार्य करने के लिए निरंतर नई संस्थाओं का गठन किया गया, जैसे - 1910 American boys Scout. 1911 में Camfire Girls इस प्रकार से अमेरिका में युवाओं के सर्वांगीण विकास हेतु इन उपर्युक्त संस्थाओं का निर्माण और विकास किया गया।

ज्ञान शांति मैत्री

2.3.3 आवश्यकता ग्रस्त व्यक्तियों के साथ कार्य करने का युग

अप्रवासी भारतीय जो अमेरिका में जाकर निवास कर रहे थे उनकी स्थिति अत्यंत दयनीय एवं विचारणीय थी। न उनके भाषा का मेल-जोल था और न ही विचारधाराओं का मेल। भिन्नभिन्न भाषा समूह के कारण उन्हें व्यक्तिगत रूप से इंगित करने की आवश्यकता थी। सर्वप्रथम कैनन सॅमुअल (Cannonannon Samuels) द्वारा अप्रवासी भारतीयों के उत्थान के लिए कदम उठाए गए। इन्होंने इनकी गंदी बस्तियों, आपस में पड़ोस भावना, अच्छे ढंग से जीवन-यापन करने के तौर तरीके पर विशेष ध्यान दिया। इस कार्य हेतु सैमुअल का दृष्टिकोण यह था कि इन अप्रवासी भारतीयों के बीच शिक्षित लोगों को रखा जाए, ताकि जीवन शैली एवं पड़ोस भावना का विकास किया जा सके। इस व्यवस्था को सर्वप्रथम अमेरिका में स्टैन्टन क्वाइट (Stanton Coit) और (Charles B. Stover) (चार्ल्स बी. स्टोवर) ने लागू किया। इनके द्वारा 1857 में न्यूयॉर्क शहर में ''पड़ोस संघ'' की स्थापना की गई। चूँकि यह व्यवस्था दलितों के सुधार हेतु स्थापित की गईतत्पश्चात इसने ''विश्वविद्यालय बंदोबस्त आवास'' का रूप ले लिया। इसी तरह एक और संस्था का आरंभ किया गया जिसका नाम ''हल हाऊस'' था। इसे शिकागो में स्थापित किया गया, जिसकी नींव जीन एडम्स (Jane Adems) एवं एलेन गेट्स (Allen

Gates) ने डाली। विभिन्न देशों से अप्रवासी, जिनमें इटैलियन, जर्मन, ग्रीक, पोलिस तथा रूसी आदि थे, इनके लिए सेटलमेंट हाऊस खोला गया। बालक एवं बालिकाओं के लिए दैनिक नर्सरी एवं किंडर गार्डन स्थापित किए गए।

महिलाओं केलिए 1889 में न्यूयार्क में कॉलेज सेटेलमेंट, 1892 में बोस्टन में तथा 1894 में शिकागो कॉमर्स की स्थापना की गई। हेनरी स्ट्रीट सेटेलमेंट की स्थापना भी 1894 में न्यूयॉर्क में की गई। इन संस्थाओं का निर्माण सामाजिक तथा सामूहिक सुधार हेतु किया गया। इन सभी में सेटेलमेंट हाउस के लोगों का सर्वांगीण विकास हुआ।

2.3.4 कल्याण सेवाओं के संगठन का युग

समाज समूह कार्य के प्रचार प्रसार की दृष्टि से संयुक्त राज्य अमेरिका में1917 से 1929 की अवधि महत्वपूर्ण है। इस समय में विभिन्न राज्य कल्याण सेवाओं के महत्व को समझ कर आगे आए। कल्याण सेवाओं के संगठनों का एवं संपूर्णराज्य प्रणाली के प्रयास का समन्वय किया गया। परिणाम स्वरूप राज्य में गवर्नर द्वारा कल्याण विभाग एवं सलाहकार बोर्ड की स्थापना की गई।

2.3.5 संघीय सहायता एवं अनुदान का युग

समाज में रहने वाले लोगों की सहायता एवं आवश्यक सामग्री को प्रदान करने हेतु ''संघीय कार्यक्रम'' अत्यधिक प्रभावी रहा है। इस प्रकार अनुदान में भूमि प्रदान की जाती थी। वृहत भूमि के विक्रय से जो राशि प्राप्त होती उसे संघीय कार्यक्रम में व्यय किया जाता। संघीय कार्यक्रम में निम्न प्रकार के कार्य महत्वपूर्ण है:

-विकलांग लोगों के लिए व्यवस्था उत्पन्न करना।

-लड़कियों की शिक्षा।

-असमर्थ व्यक्तियों की सहायता।

बाद में सरकार द्वारा प्राप्त अनुदान में कार्यों की संख्या में वृद्धि हुई और संघीय सहायता एवं अनुदान का प्रसार व्यापक हुआ।

2.3.6 जन कल्याण (1929 उपरांत) युग

1. समाज कल्याण के विषय में समस्याओं का सामना करते हुए इसे राष्ट्रीय स्तर पर समझना अति आवश्यक था। यह तब संभव हुआ जब सरकारी एवं गैरसरकारी संगठनों ने समाज कल्याण कार्यक्रम में भाग लिया।
2. समाज कल्याण करने के लिए राज्य सरकार द्वारा प्रदत्त सेवाएँ एवं केंद्र सरकार द्वारा अन्य समूहों को भी प्रेरित किया गया।

सरकारी एवं गैर-सरकारी संस्था की भागीदारी 1930 तक कुछ पहलुओं में देखने को मिलती है। राष्ट्रीय स्तर के संगठनों का कार्य-भार भी गैर सरकारी संस्था के नेतृत्व में था। ये संगठन निम्नलिखित थे-

1. 1876 की American Association on Mental Deficiency.
2. 1895 की National Society for the Study of Education.
3. 1899 की National Consumers league-
4. 1904 की National Child Labour Committee.

2.3.7 कार्यक्रम एवं क्रियान्वयन का युग

अमेरिका में सामाजिक समूह कार्य के क्षेत्र में अनेक कार्यक्रमों का आयोजन जैसे मनोरंजन के क्षेत्र शिक्षा के क्षेत्र, स्वास्थ्य, धार्मिक आदि क्षेत्रों में किया गया। जिससे समूह कार्य को और प्रभावी बनाया जा सके। ये कार्यक्रम निम्नानुसार थे-

1. ***मनोरंजनात्मक एवं शिक्षात्मक कार्यक्रम*** - इसके संदर्भ में प्रौढ़ शिक्षा एवं विद्यालयी शिक्षा को अधिक महत्व दिया गया। 1866 में इसी तारतम्य में पहले खेल-मैदान का निर्माण किया गया जो बालक बालिकाओं के लिए उनके मनोरंजन एवं शिक्षा के क्षेत्र में सहायक हो सके। इसकी प्रभावशीलता को देखते हुए 1885 में राष्ट्रीय स्तर पर इसे प्रारंभ किया गया। आगे चलकर इन्हीं कार्यक्रमों के अंतर्गत खेल-कूद व शारीरिक क्रियाओं को भी शामिल किया गया जिसमें कला संगीत, अभिनय, नृत्य आदि थे।
2. शिक्षा के कार्यक्रम के अंतर्गत प्रौढ़ शिक्षा को अधिक महत्व प्रदान करने के लिए 1870 एवं 1880 के मध्य प्रौढ़ शिक्षा आंदोलन भी चलाया गया। इस आंदोलन का यह परिणाम निकला कि सार्वजनिक पुस्तकालयों एवं विश्वविद्यालयों में निःशुल्क प्रसार सेवाएँ प्रारंभ हुई।
3. ***व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम*** - युवकों के व्यवहार में परिवर्तन हेतु कई प्रकार के मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों तथा शिक्षात्मक कार्यक्रमों को शामिल किया गया जिससे युवकों के चरित्र का निर्माण हो सके। इस आवश्यकता को ध्यान में रखते हेतु 1875 से 1895 के मध्य बड़े प्रोटेस्टेन्ट समुदाय ने अपना युवक कार्यक्रम संगठित किया। धार्मिक भावनाओं के विकास के साथसाथ चरित्र निर्माण एवं व्यवहार निर्माण के लिए भी ब्याज़ स्काउट, गर्ल्स स्काउट, कैम्फायर गर्ल्स आदि संगठनों का विकास हुआ। इस प्रकार की और अन्य संस्थाओं ने भी इस बात पर जोर दिया कि व्यक्ति का समुदाय तथा सामाजिक परिस्थितियों से संबंधहोता है जो कि उसके व्यवहार को प्रभावित करती है। अतः इन्हीं उद्देश्यों के साथ उपर्युक्त व्यवहार एवं चरित्र निर्माण कार्यक्रमों को संचालित किया जाता है।
4. ***उपचार के क्षेत्र में मनोरंजनात्मक कार्यक्रम*** - किसी भी बीमारी के क्षेत्र में व्यक्ति का वातावरण प्रमुख भूमिका निभाता है। अत: इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उपचार के क्षेत्र में मनोरंजन कार्यक्रमों को भी शामिल किया गया। ये कार्यक्रम व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक तथा सांवेगिक व्याधियों से मुक्ति दिलाने या प्रभाव को कम करने का प्रयास करते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हृदय रोग, तनाव ग्रस्त बच्चे, मानसिक रोगी, बाल अपराधी आदि क्षेत्रों में मनोरंजन उपचार के साथ इसका प्रयोग किया जाता है। वर्तमान समय में इस क्रियाविधि का उपयोग अस्पतालों में मुख्य रूप से किया जाने लगा है। जिसमें अनेक गतिविधियों के माध्यम से व्यक्ति के सामूहिक संबंधोंको दृढ़ता प्रदान होती है। जिससे रोगों का निदान करने में आसानी होती है।
5. ***अन्य कार्यक्रम*** - समूह कार्य के क्षेत्र में ऐसे कई संगठन हैं, जिसके माध्यम से सामूहिक गतिविधियों को कराया जाता है। जैसे- राजनीतिक पार्टियाँ, औद्योगिक संस्थाएँ, श्रमिक संघ इत्यादि। इन संगठनों का उद्देश्य मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों द्वारा व्यक्तियों को अपनी रुचियों के अनुसार शिक्षा मनोवृत्ति तथा व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करना है। अतः इस प्रकार से समूह के कार्यक्रमों को देखा जा सकता है।

2.3.8 अमेरिका में समूह कार्य का व्यावसायिक रूप

अमेरिका में सामूहिक कार्यकर्ताओं में व्यावसायिक चेतना जागृत करने के लिए 1935 में समाज कार्य की राष्ट्रीय कांफ्रेंस में सामाजिक समूह कार्य को एक भाग के रूप में अलग से एक अनुभाग बनाया गया। ''सोशल वर्क ईयर

बुक'' में भी समूह कार्य के लिए एक खंड प्रदान किया गया, जिसमें समूह कार्य के कई लेख प्रकाशित हुए। 1935 में ही समाज कार्य के राष्ट्रीय कांफ्रेंस में शिक्षा प्रक्रिया के रूप में समूह कार्य को परिभाषित किया गया।

सन 1937 में ग्रेस क्वाइल ने समूह कार्य के संदर्भ में कहा कि, ''सामाजिक समूह कार्य का उद्देश्य सामूहिक स्थितियों में व्यक्ति की पारस्परिक क्रिया द्वारा व्यक्तियों का विकास कर ऐसी सामूहिक स्थितियों को उत्पन्न करना जिससे सामान्य उद्देश्यों के लिए एकीकृत, सामूहिक क्रिया हो सके। (Cogle Gravel Social Group Work Social Work year Book] 1957 NASW)

अमेरिका में बनाए गए कुछ महत्वपूर्ण विधान एवं कार्य एकनज़र में-

1. सन 1911 ई0 में नेशनल फेडरेशन ऑफ सेटलमेंट की स्थापना समरूपता बनाए रखने के लिए की गई।
2. सन 1896 ई0 में प्रथम बाल क्लब की स्थापना की गई।
3. सन 1906ई0 तक अनेक क्लबों का निर्माण हुआ और सलाह तथा सहयोग के लिए राष्ट्रीय संगठन बनाया गया।
4. सन 1910 में सर बेडेन पावेल द्वारा अमरीकी बाल स्काउट संघ का संगठन किया गया।
5. सन 1912 में लड़कियों के लिए समान संगठन जूलियट लॉ द्वारा बनाया गया, जिसका नाम बालिका गाइड रखा गया।
6. कैम्प फायर गर्ल्स का गठन सन् 1918 में डा0 लूथर गुलिक के नेतृत्व में हुआ। जिसका उद्देश्य पैदल सैर, खेल, गाना, मनोविनोद, प्रयोग शाला, विचार विमर्श, सांस्कृतिक तथा शैक्षिक क्रियाओं में भाग लेने के लिए अवसर प्रदान करना था।
7. प्रथम विश्व युद्ध के समय वाई. एम.सी. ए. तथा साल्वेशन आर्मी को भी नियुक्त किया गया।
8. सन 1923 में क्लीवलैंड में समाजकार्य के स्कूल में प्रथम प्रशिक्षण कोर्स समूह अनुभव कार्य के नाम से प्रारंभ हुआ।
9. सन 1926 में एक प्रयोगात्मक सेटलमेंट की नींव प्रशिक्षण के उद्देश्य से रखी गई।
10. सन1930 तक सामूहिक कार्य विकास के लिए अनेक कदम उठाए गए तथा संबंधित संगठनों का विकास हुआ।
11. पिट्सबर्ग में 4 व 5 नवम्बर 1933 ई0 को विभिन्न संस्थाओं के समूह नेताओं की एक बैठक हुई। यह अपने प्रकार की प्रथम बैठक हुई, जिसमें विभिन्न प्रकार की समितियो का निर्माण हुआ, जैसे- अनुसंधान समिति, प्रशिक्षण समिति, स्तर निर्धारण समिति इत्यादि।
12. सन 1935 राष्ट्रीय समाज कार्य कांफ्रेंस का आयोजन।
13. सन 1936 में अमेरिकन एसोसिएशन फार द स्टडी आफ द ग्रुप वर्क का गठन, जिसको आज अमेरिकन एसोसिएशन आफ ग्रुप वर्क्स के नाम से जानते हैं।

सन 1935 ई0 में प्रथम बार समूह कार्य अनुभव, जो कि नेशनल कांफ्रेंस आफ सोशल वर्क था, अलग संगठित हुआ। इसने सामूहिक कार्य के विकास में बहुत योगदान दिया और समाज कार्य के लिए सामूहिक कार्य को एक आवश्यक प्रणाली बताया। उसके पश्चात् अमेरिकन एसोसिएशन फार द स्टडी आफ ग्रुप वर्क को संगठित किया गया। इसके लगभग वे ही सदस्य थे जो कि नेशनल कांफ्रेंस ऑफ सोशल वर्क में थे। सन् 1936 में जो अमेरिकन एसोसिएशन फार द स्टडी आफ ग्रुप वर्क बना था वह व्यावसायिक ढाँचे पर आधारित नहीं था। इसमें ऐच्छिक तथा व्यवसायी दोनों प्रकार के कार्यकर्ता थे। प्रारंभिक अवस्था में यह समस्या बनी रही कि सामूहिक कार्यकर्ता समाज कार्य संगठन में सम्मिलित हो या शिक्षा संगठन में। आगे चलकर देश की परिस्थितियों ने सामूहिक कार्य के महत्व को बढ़ा दिया और इसकी गणना व्यावसायिक स्तर पर की जाने लगी। सन् 1946 में सामूहिक कार्यकर्ताओं का अलग संगठन बना और उसका नाम अमेरिकन एसोसिएशन ऑफ ग्रुप वर्क्स रखा गया। उपर्युक्त महत्वपूर्ण

विधानों एवं व्यक्तियों के प्रयत्नों के कारण सन् 1950 तक 21 विश्वविद्यालयों में सामूहिक कार्य अध्ययन प्रारंभ हो गया।

2.4 भारत में सामाजिक समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास

भारत में सामाजिक समूह कार्य

भारत में सामाजिक समूह कार्य के वास्तविक रूप को 20 वीं शताब्दी के प्रारंभ में देखा जा सकता है। जब 1936 में सर दोराबजी टाटा स्कूल ऑफ सोशल वर्क द्वारा समाज कार्य की व्यावसायिक शिक्षा प्रारंभ हुई। उसी समय से ही देश के अन्य महाविद्यालयों, विश्वविद्यालयों में समाज कार्य देखा जा सकता है। समूह कार्य का भारत में प्रयोग आज इस आधार पर किया जाता है व्यक्तियों को किस प्रकार से समूह के माध्यम से उनकी आवश्यकताओं को पूरा किया जाए और समस्याओं कोकैसे दूर किया जाए? अतः इस हेतु समूह कार्य प्रक्रिया के माध्यम से इसे दूर करने का प्रयास किया जाता है। समूह कार्य के पाठ्यक्रम को और अधिक सुविधाजनक बनाने हेतु 1979 में विद्यालय एसोशिएसन द्वारा 1979 में स्वदेशी सामग्री तैयार करने का प्रयास किया गया। इसके पूर्व 1960 के दशक में भी समूह कार्य के क्षेत्र में सामग्री तैयार करने के लिए एसोसिएशन और तकनीकी सहकारी मिशन (USA) ने संयुक्त रूप से समूह कार्य व्यवसाय केलिए न्यूनतम मानकों का निर्धारण किया। इसके अलावा भारत में समूह कार्य का ऐतिहासिक विकास खोजने के प्रयास करने वालों में बीडी मेहतार (1987) और हेलन जोसिक (1997) इससे सहमत है कि भारत में समाजकार्य के क्षेत्र में विद्यालयों में सैद्धांतिक रूप से विद्यार्थियों को परिपक्वता तो प्रदान कराई जाती थी, लेकिन व्यावसायिक रूप से सशक्त नहीं बनाया जाता था। लेकिन धीरे-धीरे समूह कार्य के क्षेत्र में प्रगति हुई और कुछ विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में समूह कार्य को क्षेत्र कार्य के रूप में प्रयोग में लाया जाने लगा और अनेक माध्यमों जैसे नुक्कड़ नाटक, रैलियाँ, आम सभाओं, स्वच्छता कार्यक्रमों आदि के माध्यम से कार्य करना प्रारंभ हो गया।

भारत में सामाजिक समूह कार्य के इतिहास की ओर मजूमदार, मेहता, गोरे, राजा राम शास्त्री, पाठक आदि सामाजिक कार्यकर्ताओं ने अपनेअपने लेखों द्वारा समूह कार्य को स्पष्ट करने का प्रयास किया है। यदि हम भारतीय साहित्य की ओर नज़र डालें तो समाज सुधार तथा समूह कार्य के क्षेत्र में राजाराम मोहन रॉय का योगदान अत्यधिक नज़र आता है। इसके अलावा मुस्लिम तथा मराठाओं का भी साहित्यउपलब्ध होता है। लेकिन प्राचीन ग्रंथों के अध्ययनों से स्पष्ट हो जाता है कि भारत में समूह कार्य की जड़ें काफ़ी प्राचीन है। समूह कार्य का प्राचीन इतिहास और अन्य इतिहास के लिए आगे की इकाई में इसका वर्णन किया जाएगा।

2.5 सामाजिक समूह कार्य का शिक्षात्मक विकास क्रम

समूहकार्य के शिक्षात्मक विकास के क्षेत्र में सर्वप्रथम पहला पाठ्यक्रम क्लेवलैंक वेल्टर्न रिजर्व विश्वविद्यालय में स्कूल ऑफ सोशल वर्क में क्लेश केसर द्वारा प्रस्तुत किया गया। जब क्लेश केसर पहली बार 1935 में न्यूयॉर्क गई तो क्रेश कोली ने पाठ्यक्रम को और आगे विस्तारित किया। समूह कार्य को पद्धति और क्षेत्र अभ्यास के रूप में पेश किया जाता था। इससे समूह कार्य को आगे बढ़ाते हुए लगभग 10 विश्वविद्यालयों ने 1937 तक विशेष पाठ्यक्रम प्रदान किया। 1930 के दशक के आरंभ में उस समूह कार्य को अधिक पहचान मिली जब समूह कार्यकर्ताओं का 10-15 लोगों का एक लघु समूह वर्ग न्यूयॉर्क में मिला। इस समूहने NCSW में समस्त समूह कार्यकर्ताओं को प्रतिस्थापित किया। इसके बाद1936 में समूह कार्य के अध्ययन हेतु अमेरिकन एसोसिएशन की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य समूह कार्य के अभ्यास और सिद्धांत में सुधार करना था जिससे कि धर्म के प्रचार-प्रसार को आगे बढ़ाया जा सके।

1936 में समूहकार्य के क्षेत्र में एक विशिष्ट उपलब्धि तब प्राप्त हुई जब समूह कार्य को राष्ट्रीय समाज कार्य सम्मेलन के प्रभाव के कारण समूह कार्य को एक विशिष्ट विषय के रूप में माना जाने लगा। इसके बाद 1940 तक समूह कार्य और मजबूत हो गया और इनके माध्यमसे मनोरंजन, प्रौढ़, शिक्षा आदि कार्यक्रम संचालित होने लगे। 1955 में सामूहिक कार्यकर्ताओं द्वारा राष्ट्रीय समाज कार्यकर्ता एसोसिएसन (NCSW)बनाने के लिए अन्य व्यावसायिक समूह के साथ कार्य करना प्रारंभ कर दिया। द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात अनेक समस्याएँ समाज के सामने उत्पन्न हो गई। इन उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए भी सामूहिक कार्यकर्ताओं ने अपनी महती भूमिका अदा की। 1940-1950 के दशक तक इन्होंने सेवा निवृत्त सैनिकों और युद्ध से प्रभावित व्यक्तियों की सहायता करने का प्रयास किया। द्वितीय विश्व युद्ध के बाद समूहकार्य के क्षेत्र में साहित्य लिखने वालों की संख्या में अत्यंत वृद्धिहुई और अनेक विद्वानों ने समूहकार्य के संदर्भ में अनेक पुस्तकों का प्रकाशन दो वर्ष के अंदर ही कर दिया। ये पुस्तकें निम्न थी:

''सोयायटी ऑफ ग्रुप वर्क प्रैक्टिस'' (1949), हलैट बी ट्रैकर्स की ''सोशियल ग्रुपवर्क'' (1949), ग्रस कोली की ''ग्रुप वर्क विद अमेरिकन यूथ'' (1949) और जिस्ला कोनाप्का की ''थ्रेपटिक ग्रुप वर्क विथ चिल्ड्रन (1949) प्रमुख है।

इन सभी पुस्तकों का मुख्य उद्देश्य समाजकार्य में समूहकार्य को एक सहायक प्रणाली के रूप में स्पष्ट किया। किंतु 1960 के दशक में समूह कार्य के क्षेत्र में कमी को देखा गया। और सामुदायिक संगठन को अधिक महत्ता प्रदान की गई। यह क्रम आगे बढ़ता गया और इसे 1970 के दशक में महसूस किया गया। लेकिन 1978 तक आते-आते इसने पुनः अपना स्थान प्राप्त कर लिया और 1978 में समूह कार्यकर्ताओं ने एक वार्षिक सम्मेलन का आयोजन किया जिसे मुख्य रूप से समूह कार्य को आरंभ करने वाली ग्रेस कोली के सम्मान में रखा गया था। (नॉर्दन कुलेड 2001) सम्मेलन योजना समिति सदस्यता अभियान संगठन The association advancement of social work with group में रूपान्तरित हो गया। (SWG, 2006)

समूह कार्य को कैसे आगे बढ़ाया जाए? इस संबंधमें जागरूकता लाने और वृद्धि करने के लिए संपूर्णUSA और Comasa में संगठित होकर प्रयास किया। 1979 में समूह कार्य के क्षेत्र में सामूहिक विकास हेतु सर्वप्रथम विचारगोष्ठी का आयोजन किया गया। तब से लेकर आज तक हर साल व्यवसाय साधन के रूप में समूह कार्य पर विचार गोष्ठी का आयोजन किया जा रहा है।

चीन में भी समाज कार्य को बढ़ावा देने के लिए वर्ष 2006 में सामाजिक नीति प्रयासों की एक श्रृखंला प्रारंभ की जो समाज कार्य के क्षेत्र में अत्यंत ही सार्थकता प्रदान करती है। धीरे-धीरे समाज कार्य के क्षेत्र में विशेषज्ञता प्राप्त की।

अतः इस प्रकार से समूह कार्य के विकास क्रम को शिक्षा एवं व्यवसायिकता के क्षेत्र में जोड़कर देखा जा सकता है। समूह कार्य शिक्षा के क्षेत्र में निम्नलिखित पुस्तकों का भी प्रकाशन हुआ है, जिससे समूहकार्य को और अधिक स्पष्ट रूप से समझा जा सके:

1. 1990 में मोरगैनेट द्वारा युवा किशोरों में लिए पुस्तक का प्रकाशन किया।
2. 2008 में राबर्ट सलमान द्वारा एन साइक्लोपीडिया ऑफ सोशल ग्रुप वर्क विद ग्रुप्स1 का प्रकाशन किया गया।
3. 2007 में ग्राविन,चार्ल्स डी, लॉरी एम गुलियर द्वारा - ए हैंड बुक ऑफ सोशल वर्क विद ग्रुप्स का प्रकाशन किया गया।
4. 2005 में मार्क डोयल द्वारा - यूजिंग ग्रुप वर्क का लेखन किया गया॥
5. 2003 में डोयल, मार्क व सवडा, कैथरिन द्वारा - द एसेंसिएल्स ऑफ ग्रुप वर्कर का लेखन किया गया॥

6. 2001 में रोनाल्ड टोसलैंड व राबर्ड रिवास द्वारा - एन इंट्रोडक्शन टू ग्रुप वर्क प्रैक्टिस का प्रकाशन किया गया।
7. 2001 अलीसी एलबर्ट एस द्वारा सोशल वर्क विथ ग्रुप वर्क प्रैक्टिस का प्रकाशन किया गया।
8. 2000 में हेलन नार्दन व रोसली करलैंड द्वारा सोशल वर्क विथ ग्रुप वर्क का लेखन कार्य किया गया।
9. 997 में नोरको ए तथा वलैस आर ने समाज कार्य समूह में लिंग आधारित विषयों पर प्रकाश डाला।
10. 1996 में हर्लेट ने युवा अवस्था से अधिक उम्र के व्यक्तियों हेतु उपचारी समूह कार्य पर विशेष बल दिया।
11. 1995 में टोसलैंड द्वारा लिखित पुस्तक को बडों और परिवार की देखभाल कार्यकर्ता के लिए प्रकाशित किया।
12. 1994 में ब्राउन ए तथा मिस्ट्री टी ने जाति और लिंग आधारित विषयों पर प्रकाश डालते हुए मिश्रित समूह वाले समाज कार्य पर अपना ध्यान आकर्षित किया।
13. 1994 में काक्स व पार्सन्स ने वृध्दों को सशक्त बनाने वाले समूह कार्य पर अपने सिध्दांत प्रस्तुत किए।
14. 1994 में ही ब्रेटन ने सोशल वर्क विद ग्रुप में एम्पावरमेंट ओरिएंटिड ग्रुप वर्क की संकल्पना की
15. 1993 में कैरेल एस ने बच्चों के लिए समूह अनुभवों के बारे में पुस्तक का प्रकाशन किया।
16. 1992 में पहरूजी ने सोशल वर्क विद ग्रुप पुस्तक के माध्यम से समूह कार्य के अद्दर्श प्रस्तुत किए।
17. 1991 में रोज एस व एडिल्सन ने भी बच्चों और किशोरों के लिए विशिष्ट समूह कार्य अभ्यास पर पुस्तक का लेखन किया।
18. 1990 में मोरगैनेट द्वारा युवा किशोरों के लिए जीवन निपुणता और समूह परामर्श पर एक पुस्तक लिखी।
19. 1990 में ही ग्लासमैन यू तथा केट्स एल द्वारा समूह कार्य में मानवीय विचारधारा पर लेखन कार्य किया।

2. 6 सारांश

समूह समाजकार्य के शिक्षा एवं व्यवसाय के स्तर में हुए विकास को उपर्युक्त कार्यो के माध्यस से समझा जा सकता है। यह भी कहा जा सकता है कि समूह कार्य का प्रारंभ अनेकानेक कारणों से हुआ है, जिसने आज वर्तमान समय में इसकी महती भूमिका को प्रकट किया है। किंतु अनेक प्रयासों के वाबजूद भी समूह कार्य को एक स्पष्ट व्यावहारिक रूप अभी तक प्राप्त नहीं हो पाया है । इस कारण से समूह कार्यकर्ताओं का एक अभाव ही नज़र आता है। आज आवश्यकता है कि समाज कार्य में समूहकार्य जैसी विधा को महत्व दिया जाए और इसका अलग से संगठन बनाकर इसे विकसित किया जाए तब ही समाज में उत्पन्न होने वाली सामूहिक समस्याओं का उचित निराकरण प्रस्तुत किया जा सकता है।

2. 7 बोध प्रश्न

प्रश्न 01.शिक्षा एवं व्यवसाय में स्तर पर समूह कार्य के क्षेत्र मेंआए विकास की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 02. इंग्लैड में समूहकार्य के विकास क्रम की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 03. अमेरिका में सामाजिक समूहकार्य में किस प्रकार परिवर्तन है ? वर्णन कीजिए।

प्रश्न 04. अमेरिका में सामाजिक समूह कार्य के माध्यम से किस प्रकार के कार्यक्रमों का क्रियान्वयन किया गया? उल्लेख कीजिए ।

प्रश्न 05.सामाजिक समूह कार्य के शिक्षात्मक विधान क्रम का उल्लेख कीजिए।

2. 8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1) सचदेवा, डी .आर. भूषण विद्या, (2012). ***समाजशास्त्र***. लखनऊ: डॉर्लिग किंडरस्ले (इंडिया) प्रा.लि.

2) डीवे, जे. थिंक हाऊवी (1933). *ए रीस्टेटमैंट ऑफ द रिलेशन ऑफ रिफलैक्टिव थिंकिंग टु द एजूकेटिव प्रासेस (संशोधित संस्करण)*. बॉ स्टोन डी.सी. हीथ.

3) फैरिस, एल्यवर्थ (1937). *द नेचर आफ ह्युमैन नेचर* मैकग्रा-हिल : बुक कं.इंक.

4) इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त क्षिवविद्यालय (2010). *समूहों के साथ कार्य करना.*दिल्लीः समाज कार्य विद्यापीठ।

5) सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य*. लखनऊ: (इंडिया) प्रा.लि.

6) मिश्रा, प्रयागदीन (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य.* लखनऊ : हिंदी संस्थान

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई-3 भारत में सामाजिक समूह कार्य का इतिहास

इकाई रूप रेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 प्राचीन काल में समूह कार्य का विकास
3.3 मध्यकाल में समूह कार्य का विकास
3.4 आधुनिक काल में समूह कार्य का इतिहास
3.5 अन्य क्षेत्रों के साथ समूह कार्य
3.6 सारांश
3.7 बोध प्रश्न
3.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1) नियोजन ढंग से भारत में समूह कार्य का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य।
2) प्राचीन काल में समूह कार्य का रूप एवं विकास क्रम।
3) मध्य काल में समूह कार्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों का अध्ययन।
4) स्वतंत्रता पश्चात अर्थात आधुनिक काल में समूह कार्य का विकासात्मक एवं किए गए कार्यों का अध्ययन।
5) भारत में समूह कार्य शिक्षा का प्रारंभ।
6) अन्य संस्थाओं एवं समुदायों के साथ समूह कार्य की प्रक्रिया।

3.1 प्रस्तावना

भारत में यदि हम समूह कार्य में संदर्भ में अध्ययन करते हैं तो स्पष्ट होता है कि इसका इतिहास प्राचीन है। आदिकाल में समूह कार्य के कुछ हिस्से नज़र में आते हैं, इसके बाद मध्ययुगीन काल में समूह कार्य को स्पष्ट देखा जा सकता है। आधुनिक काल में समूह कार्य में कार्यक्रमों एवं क्रियान्वयन में अंतर स्पष्ट होता है। समूह कार्य को समाज कार्य की एक प्रणाली के रूप में जाना जाता है। आधुनिक समाज में समूह कार्य को व्यावसायिकता के क्षेत्र से भी जोड़कर देखा जा रहा है, जिसकी उत्पत्ति वर्तमान में ही हुई है।

आदिकाल और आधुनिक काल में जो समूह कार्य की स्थिति थी और इसका जो वास्तविक स्वरूप है उसी को केंद्रित करते हुए इस इकाई को प्रस्तुत किया जा रहा है, जो सामाजिक समूह कार्य के विकास एवं स्वरूप को आपके सामने प्रस्तुत करेगा, जिससे समूह कार्य के प्रति आपकी समझ मजबूत होगी।

3.2 प्राचीन काल में समूह कार्य का विकास

प्राचीन काल में समूह कार्य आधुनिक समूह कार्य से एकदम भिन्न था। पूर्व में समूह कार्य व्यवस्थित नहीं था और इसे केवल व्यक्ति की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु किया जाता था। समूह कार्य को अन्य सामाजिक संस्थाओं द्वारा किया जाता था और ये संस्थाएँ लोगों के जीवन पर अपना प्रभाव डालती थीं। कालांतर में आगे चलकर इन संस्थाओं द्वारा पुनःदेखा स्थितियों एवं अनुभव को उपलब्ध कराया गया। जिसके फलस्वरूप उनके ही सदस्यों को

लाभ प्राप्त हुआ। प्रो. राजाराम शास्त्री ने वैदिक काल की सामुदायिक समाज की व्यवस्था का वर्णन करते हुए लिखा है कि इस व्यवस्था में समुदाय के आवश्यकताओं को पूरा करने का दायित्व प्रत्येक व्यक्ति का था। व्यक्ति की आवश्यकताओं को सामूहिक प्रयास से पूरा किया जाता था। इस काल में विशिष्ट सहायता की आवश्यकता रखने वाले व्यक्तियों का उत्तरदायित्व शासक, धनी तथा साधारण समुदाय के सदस्यों द्वारा आपस में बाँट लिया जाता था। (शास्त्री,राजाराम ओपीसिट, वर्ष 4)

प्राचीन काल में सहायता का कार्य धर्म के आधार पर था। मंदिरों और आश्रमों की स्थापना, संत-महात्मा के लिए निवास स्थान, मंदिरों में रहने वालों के लिए भोजन, कपड़े आदि अन्य वस्तुओं के द्वारा समूह कार्य किया जाता था। जिनके पास स्वयं का घर नहीं था, उन्हें मंदिरों में रखने की व्यवस्था थी। जो वृद्ध एवं बीमार हो, उनकी सहायता करने का उत्तरदायित्व भार जाति और समुदाय परिषदों पर था। (Garg –MS sourse E. Historical background of social work in india , in social welfare in india op.cit.p.2) मठों और मंदिरों के माध्यम से समूह सहायक की परंपरा का संचालन किया जाता था। संघ तथा गुण शब्द ऋग्वेद तथा अथर्ववेद में समूह कार्य को प्रतीत करते थे।

आगे चलकर संघ का नाम बौद्ध भिक्षुओं ने अपनाया जो अपने आपको सामूहिक रूप से भिक्षु संघ कहते थे। पौराणिक कथाओं से प्रतीत होता है कि प्राचीन काल में दो प्रकार की संन्यासी बस्तियाँ थीं-प्रथम आवास और दूसरा आराम। ऐसी बस्तियों को गाँव के बाहर बनाया जाता था जिसे भिक्षु स्वयं बनाते थे और उनकी मरम्मत स्वयं करते थे इसे आवास कहा जाता था। जब कोई धनी व्यक्ति इन भिक्षुओं को दान में देता था तथा उसकी स्वयं देखभाल करता था उसे 'आराम' कहा जाता था। आराम की सभी संपत्ति सामूहिक होती थी। इसका उपयोग संघ में सभी सदस्य द्वारा किया जाता था। संघ को दी जाने वाली कोई भी संपत्ति किसी भी व्यक्ति द्वारा व्यक्तिगत रूप से अधिकार में नहीं ली जा सकती थी। बोधिसत्व ने मगध में ही गाँव के तीस व्यक्तियों को एकत्र किया और गाँव की भलाई एवं उन्नति के लिए कार्य करने को प्रेरित किया, जिससे गाँव की सड़कों का निर्माण, बांधों का निर्माण, तालाब आदि कार्यों को किया गया। मौर्य वंश के काल में जनता को ध्यान में रखते हुए उनकी भलाई के लिए अनेक सामूहिक कार्यों को किया गया। (डॉ. पी. मिश्र, वर्ष, पृ.25)। हड़प्पा संस्कृति से लेकर बौद्र काल तक जनता की भलाई के लिए उपदेश दिए जाते थे। मौर्य काल में भी जनता की भलाई के लिए उपदेश दिए गए। अशोक ने भी कहा कि सहायता के लिए मेरी प्रजा किसी भी समय मुझसे आकर मिल सकती है। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्राचीन काल में गुरूजनों द्वारा शिक्षा देने की परंपरा को देखा जा सकता है। बौद्ध काल में शिल्प संघों का निर्माण कर आर्थिक व्यवस्था को मजबूती प्रदान की गई। लोगों को आभास हो गया कि संयुक्त रूप से कार्य करके अधिक धन अर्जन किया जा सकता है।

अतः प्राचीन काल में इन समस्त उपर्युक्त उदाहरणों के माध्यम से समूह कार्य को समझा जा सकता है। मध्य काल में इसके अंतर्गत अनेक परिवर्तन दिखेंगे।

3.3 मध्य काल में समूह कार्य का इतिहास

समूह कार्य के क्षेत्र में मध्य काल या स्वतंत्रता के पूर्व के काल को उस समय से देखा जा सकता है जब18वीं शताब्दी के प्रारंभ में ही अनेक सामूहिक प्रयास समाज की आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक और धार्मिक व्यवस्था के सुधार हेतु किए गए।

यह कोशिश बंगाल से रामपुर मिशन के रूप में देखी जा सकती है जिसकी स्थापना1780 में की गई थी। समाज के क्षेत्र में कार्यरत व्यक्तियों एवं समाज सुधारकों का मत था कि हिंदुओं की सामाजिक दशा में सुधार तब ही लाया जा सकता है जब इनका बालविवाह निषेध कराया जाए, बालिकाओं की भ्रूण हत्या पर रोक लगाई जाए, सती

प्रथा को समाप्त किया जाए और विधवाओं का पुर्नविवाह कराया जाए।(prishevar Prasad .Bandage and freedam ,Rajesh public cation,new delhi 1977 p.441)

इन्हीं सामाजिक बुराईयों के क्षेत्र में कार्य करने वाले कुछ प्रमुख व्यक्तियों एवं संस्थाओं को समूह कार्य के क्षेत्र में इस प्रकार देखा जा सकता है-

राजाराम मोहन राय (1774-1843)- एक साधारण परिवार में जन्में राजाराम मोहन राय, जिन्होंने सर्वप्रथम सामाजिक कुरीतियों की ओर समस्त जनता का ध्यान आकर्षित कराया। सन 1828 में ब्रह्म समाज की स्थापना की। इस ब्रह्म समाज की स्थापना का उद्देश्य था कि किस तरह से जाति बंधनों को तोड़ा जाए किस प्रकार सती प्रथा को तोड़ा जाए, बाल विकास के लिए शिक्षा की व्यवस्था की जाए, किस प्रकार से बाल विधवाओं की स्थिति में सुधार किया जाए और इसके अलावा दान तथा संयम को उत्साहित करने के उद्देश्य से इस संस्था का निर्माण किया गया था। इन सभी कार्यों को करने के लिए सामूहिकता की भावना अनिवार्य थी तथा इसी कारण इन सभी समाज सुधार कार्यों में समूह कार्य का प्रयोग किया जाता था।

स्वामी दयानंद सरस्वती (1824-1883) - दयानंद सरस्वती को 19वीं शताब्दी के प्रमुख समाज सुधारवादी के रूप में जाना जाता है । इनका जन्म काठियावाड़ के टंकारा नामक गाँव में हुआ था। दयानंद मूर्ति पूजा के कट्टर विरोधी थे। उनका मानना था कि एक पत्थर जो स्वयं की रक्षा नहीं कर सकता वो हमारी रक्षा कैसे कर सकता है? सन 1875 में इन्होंने आर्यसमाज की स्थापना बंबई में की सामूहिक कार्य के सिद्धांतों तथा प्रविधियों का उपयोग करते हुए जाति प्रथा, बाल विवाह , धर्म परिवर्तन लोगों के लिए गृह प्रवेश-निषेध नीति आदि के विरोध में आवाज उठाई जाए।

स्वामी विवेकानंद (1863-1902) - 12 जनवरी 1863 को जन्मे नरेंद्र, जो आगे चलकर स्वामी विवेकानंद कहलाए, दलितों की व्यवस्था को देखकर दुःखी होते थे। इसी कारण 1897 में रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। जिसका उद्देश्य दलितों का कल्याण एवं उनका सामाजिक शैक्षिक विकास करना था । इन्होंने अलग-अलग व्यक्तियों के समूह बनाकर देश सेवा का कार्य किया ।

एनी बिसेन्ट (1847- 1933)- शिक्षा और समाज सुधार के क्षेत्र में एनी बिसेन्ट का नाम अत्यंत ही आदर के साथ लिया जाता है। उनका जन्म 1847 में लंदन में हुआ। वे सामाजिक समस्याओं के प्रति अत्यंत ही चिंतित थी। इसी कारण उन्होनें नेशनल रिफार्मर के संपादक ब्राडलो के साथ मिलकर समाज सुधार के क्षेत्र में अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य किया । उन्होंने आबादी का नियम एक परिपत्र लिखा, जिसमें जनन-नियंत्रण की आवश्यकता पर अत्यधिक बल दिया गया। सन 1881 में मैडम बलावस्की तथा कर्नल आलकट ने मद्रास में ब्रह्म समाज की स्थापना की। बिसेन्ट ने सारा जीवन इसी में लगा दिया। थियोसोफिकल सोसाइटी की स्थापना और प्रारंभिक कार्यक्रम में इनका मुख्य योगदान था । सन 1907 में वे भारत में थियोसोफिकल सोसाइटी की अध्यक्षा बन गई। थियोसोफिकल सोसाइटी ने निम्न उद्देश्यों को लेकर समाज में कार्य किया -

1) मानव जाति के लिए एक ऐसे सार्वभौमिक भ्रातृत्व का आधार-बिंदु तैयार करना, जिसमें जाति, धर्म, लिंग, वर्ण आदि का कोई भेद-भाव न हो।
2) धर्म, दर्शन और विज्ञान के तुलनात्मक अध्ययन को प्रोत्साहित करना।
3) प्रकृति के रहस्यपूर्ण नियमों तथा मनुष्य की अंतर्निहित शक्तियों के विषय में अन्वेषण करना।

एनी बिसेंट ने शिक्षा के क्षेत्र में भी अत्यधिक कार्य किया और शिक्षा के महत्त्व को बताते हुए व्यापक प्रचार-प्रसार किया । 1917 में ऐनी बिसेंट को इंडियन नेशनल कांग्रेस की अध्यक्षा बना दिया गया । उनकी प्रमुख पुस्तकों में 'आत्म कथा', 'प्राचीन ज्ञान', उपनिषदों का ज्ञान' आदि मुख्य हैं।

महात्मा गांधी (1869-1947) -गांधी जी ने हमेशा ही समूह कार्य प्रविधि के माध्यम से आंदोलनों को क्रियान्वित किया। यदि हम कहें कि समूह कार्य का वास्तविक रूप गांधी के आंदोलनों से स्पष्ट होता है तो यह गलत नहीं

होगा। गांधी जी ने मानव को एवं मानव गरिमा और आत्मसम्मान को विशेष महत्त्व दिया । आज वे ही मूल्य सामूहिक समाज कार्य के मूल्य माने जाते हैं। गांधी द्वारा अनेक प्रशिक्षण केंद्रों की स्थापना की गई जिसमें लोग साथ-साथ कार्य किया करते थे । गांधी स्वयं ही रोगियों, अछूतों, ग्रामीणों के बीच उनके साथ मिलकर कार्य करते थे ।

उपर्युक्त प्रमुख व्यक्तियों एवं संस्थाओं के अतिरिक्त कुछ अन्य महत्त्वपूर्ण व्यक्ति एवं संस्थाओं को समूह कार्य योगदान के क्षेत्र में शामिल किया जा सकता है-

1. सन 1815 में राजाराम मोहन राय द्वारा आत्मीय समाज की स्थापना की गई जो बाद में चलकर बह्म समाज कहलाया । यह समाज सती प्रथा के विरूद्ध से रामपुर मिशनरियों द्वारा प्रारंभ किया गया।
2. ईश्वर चंद्र विद्यासागर ऐसे प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होंने विधवा विवाह विरोध के खिलाफ आंदोलन चलाया। उनके सतत प्रयासों से ही हिंदू विधवा पुनर्विवाह अधिनियम1856 पारित किया गया ।
3. सन 1861 में न्यायमूर्ति रानाडे ने विधवा पुर्नविवाह के कारणों और हितों को ध्यान में रखते हुए विधवा विवाह एसोसिएशन की स्थापना की जिसका उद्देश्य विधवा पुर्नविवाह को प्रोत्साहन देना था।
4. केशवचंद्र सेन ने स्त्री शिक्षा पर अधिक जोर दिया ।
5. सन 1867 में प्रार्थना समाज की स्थापना की गई।
6. आर्य समाज की स्थापना 1875 में की गई जिसका उद्देश्य मूर्ति पूजा, जाति-प्रथा, बाल-विवाह, छुआ-छूत प्रथा के विरूद्ध तथा विधवा पुनर्विवाह करने के पक्ष में था।
7. सन 1882 में शशिपद बेनर्जी द्वारा बंगाल में हिंदू विधवाओं के लिए एक विधवा गृह की नींव डाली ।
8. सन 1882 में पंडित रमाबाई ने आर्य महिला समाज का गठन किया। इसके साथ भारतीय ईसाई मिशनरियों के दृष्टिकोण और उनकी सोच के समर्थन में महिलाओं की स्थिति के सुधार में कार्य किया ।
9. स्त्रियों की शिक्षा पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता पर जनता का ध्यान आकर्षित कराते हुए 1883 में केश्वचन्द्र सेन द्वारा शिक्षा पर विशेष बल दिया गया।
10. सन 1896 में कार्वे द्वारा पूना में विधवा गृह की स्थापना की गई ।
11. सन 1892 में युवा सुधारकों ने मद्रास में मद्रास हिंदू समाज सुधार संघ की स्थापना की।
12. सन 1905 में गोपाल कृष्ण गोखले द्वारा 'सर्वेन्ट ऑफ इंडिया सोसाइटी' की नींव डाली गई । इसके द्वारा राजनैतिक कार्यों के साथ-साथ सामाजिक, आर्थिक, शैक्षिक और दलित वर्ग के लिए कार्य आरंभ किए गए।
13. 1906 में वी.आर.शिंदे द्वारा बंबई में भारत दलित वर्ग मिशन समाजकी स्थापना की गई ।
14. 1908 में बंबई संघ द्वारा सेवा सदन की स्थापना की गई । इसका उद्देश्य महिला कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित करना था।
15. 1917 में समाज सेवा सम्मेलन की पहली बैठक की गई ।
16. 1917 में ही एनी बिसेंट एवं मारगैरेट कासिन्स द्वारा मद्रास में प्रांतीय महिलासंघ की स्थापना की ।
17. 1925 में राष्ट्रीय स्तर पर महिलाओं की राष्ट्रीय सभा की गई।
18. एन.एम.जोशी तथा चंद्रावरकर ने बंबई में सोशल सर्विस लीग की स्थापना की जो मिल में काम करने वाले लोगों के लिए तथा उनके बच्चों के लिए मनोरंजन का प्रबंध करती थी व रात्रि पाठशालाएँचलाती थी ।

उर्पयुक्त विद्वानों ने मध्य काल में समूह कार्य को लेकर अनेक प्रयास किए जिनके परिणामस्वरूप आज समूह कार्य को काभी हद तक मान्यता प्राप्त हो रही है किंतु यह कार्य अधिकतर अवैज्ञानिक ज्ञान के आधार पर ही थे। यह कार्य वर्तमान आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर ही किए जाते थे। इन प्रयासों में कोई स्पष्ट सिद्धांत प्रणालियाँ

नहीं थी। इस दृष्टिकोण को सहायता करने वाले लोगों ने बाद में संशोधित किया जब पश्चिमी देशों में एक व्यवसाय के रूप में समाज कार्य विकसित हुआ और इसका प्रभाव भारत में भी देखा गया।

3.4 आधुनिक काल में समूह कार्य का इतिहास

स्वतंत्रता प्राप्ति पश्चात के काल को हम आधुनिक काल के रूप में देख रहे हैं। इस काल के प्रारंभ से ही सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक एवं शारीरिक विकास जैसे अनेक कार्यक्रमों को समूह कार्य के क्षेत्र में प्रारंभ किया गया। बच्चों, युवाओं एवं वृद्धों के लिए अनेक प्रकार के कार्यक्रमों को चलाया गया ।बच्चों के लिए एन.सी.सी., एन.एस.एस., गर्ल्स स्काउट, ब्वायज स्काउट आदि संगठनों को बनाया गया। युवाओं के कल्याण हेतु,युवा कल्याण निदेशालय एवं नगरों में युवक कल्याण समितियाँ बनायी गई। जो महिलाएँ नौकरी करने के लिए जाती थी उनके लिए अलग से मनोरंजन गृहों का निर्माण किया गया। वृद्धों के लिए दिवा केंद्रों का निर्माण किया गया जिसके माध्यम से वृद्ध एक-दूसरे के साथ मिलकर जीवन-यापन कर सकें, तो इस प्रकार से अनेक कार्य स्वतंत्रता के पश्चात होने लगे। यदि व्यावसायिक एवं औपचारिक रूप से देखा जाए तो समाज समूह कार्य का प्रारंभ बीसवीं शताब्दी में ही हुआ जब बंबई में एक संस्था सोशल सर्विस लीग ने छह सप्ताह का संक्षिप्त पाठ्यक्रम समाज कार्यकर्ताओं के लिए चलाया। उन्हें प्रशिक्षण देकर समाज की वर्तमान समस्याओं से लड़ने के लिएसक्षम बनाया। तत्पश्चात 1936 में सर दोराबजी ग्रेजुएट स्कूल ऑफ सोशल वर्क की स्थापना बंबई के एक स्लम क्षेत्र देवनार में की गई। इस संस्था का मुख्य उद्देश्य समाज कार्य को एक व्यावसायिक सेवा प्रदान करने वाले यंत्र के रूप में विकसित करना है, जिससे समाज कार्य को एक व्यावसायिक रूप प्रदान किया जा सके और कार्यकर्ताओं में एक व्यावसायिक के गुण को विकसित किया जा सके। समाज कार्य करते समय समाज कार्य की मुख्य प्रणालियों (सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, सामाजिक समूह कार्य, सामुदायिक संगठन, सामाजिक क्रिया, समाज कल्याण प्रशासन और सामाजिक शोध) को प्रयोग कर समाज में व्यक्ति, समूह और समुदाय की समस्याओं का उचित समाधान किया जा सके। वर्तमान में यह विद्यालय टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्स के नाम से जाना जाता है और यहाँ समाज कार्य से संबंधित बीएस.डब्ल्यू., एम.एस.डब्ल्यू., एम.फिल. एवं पीएच.डी. तक की समाज कार्य संबंधी औपचारिक शिक्षा प्रदान की जाती है। इसके साथ स्वंतत्र भारत में संस्थाओं का खुलना प्रारंभ हो गया और 1947 में दिल्ली स्कूल ऑफ सोशल वर्क की स्थापना की गई। इसी वर्ष काशी विद्यापीठ में समाज विज्ञान संकाय के अतंर्गत समाज कार्य विभाग खुला, जिसमें बी.एस.डब्ल्यू., एम.एस.डब्ल्यू., एम.फिल. एवं पीएच.डी. तक संपूर्ण अध्ययन कार्य कराया जाता है।1949 में लखनऊ विश्वविद्यालय में समाज कार्य में शिक्षा प्रारंभ हुई। इसके पश्चात देश के अन्य विश्वविद्यालयों, जैसे - आगरा, इंदौर, मद्रास, पटना, कलकत्ता, जबलपुर, महाराष्ट्र (बंबई, नागपुर, वर्धा इत्यादि) जगह पर समाज कार्य पाठ्यक्रमों को प्रारंभ किया गया, जिसमें औपचारिक शिक्षा के माध्यम से व्यावसायिक एवं क्षेत्र कार्य आधारित शिक्षा प्रदान की जाती है। 1960 में यूनिवर्सिटी ग्रान्ट्स कमीशन ने अपनी एक समिति नियुक्त की जिसने अपने प्रतिवेदन में यह संस्तुति की है कि समाज कार्य की शिक्षा अन्य विद्यालयों में पूर्वस्नातक स्तर पर भी होनी चाहिए।

भारत में समाजकार्य के विद्यालयों का विकास मुख्य रूप से स्वतंत्रता के पश्चात हुआ है। 1948 तक केवल टाटा इन्स्टीट्यूट ऑफ सोशल साइन्स में ही समाज कार्य संबंधी शिक्षा दी जाती थी, परंतु 1958 में समाज कार्य के 6 विद्यालय, 1958 में 13, 1961 में 20 और अब लगभग 25 विद्यालय है जिनमें से 17 में केवल समाज कार्य की शिक्षा दी जाती है और 8 में अन्य प्रकार की संबंधी शिक्षा भी प्रदान की जाती है।(पाण्डेय तेजस्कर, तेज संगीता समाज कार्य लखनऊ, 2010 पेज क्रं. 60)। वर्तमान समय में समाज समूह कार्य के क्षेत्र में अब नया पन आने लगा है और समूह कार्य क्षेत्र में जाकर अभ्यास कार्य कराया जाने लगा है, जिससे विद्यार्थियों को समूह कार्य के संबंध में व्यावहारिक ज्ञान भी प्राप्त हो सके। वे समाज में उत्पन्न समस्याओं का समाधान करने में सक्षम बन सके। किंतु

अनेक प्रयासों के बावजूद भी भारत में समूह कार्य की अलग से कोई शिक्षा प्रदान नहीं की जाती इसे केवल समाज कार्य की प्रणाली के रूप में ही समझा जाता है। इसमें अलग से कोई विशेष रूप से शिक्षा का प्रावधान नहीं किया गया है। तमाम प्रयासों के बावजूद आज भी इसका व्यावहारिक पक्ष मजबूत नहीं है । आज आवश्यकता है कि समूह कार्य जैसी प्रणालियों का व्यावहारिक पक्ष मजबूत किया जाए और इसे अलग से एक विशेषीकरण के रूप में पढ़ाया जाए जिससे व्यावसायिक समाज कार्य को भी एक मजबूती प्राप्त होगी ।

3.5 अन्य क्षेत्रों के साथ समूह कार्य

समाज कार्य दिन-प्रतिदिन अनेक क्षेत्रों में विस्तारित होते जा रहा हैं, आज समाज का कोई ऐसा भाग नहीं है जहाँ समाज कार्य हस्तक्षेप नहीं कर रहा है। इसके कार्य को देखते हुए अन्य क्षेत्रों में भी इसकी उपयोगिता महसूस की जा रही है। समाजकार्य में समूहकार्य के माध्यम से यह अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर व्यक्तियों एवं समूहों की समस्या को ज्ञात कर उनके समाधान का प्रयास करता है। विभिन्न क्षेत्रों में समूह कार्य के माध्यम से निम्न प्रकार के कार्य किए जाते हैं।

3.5.1 विद्यालयों में समूह कार्य- वर्तमान समय में विद्यालय समाज कार्य एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण कार्य समझा जाने लगा है । विद्यालय समाज कार्य के माध्यम से छात्र-छात्राओं में व्यक्तित्व विकास जैसे पक्षों पर विशेष बल दिया जा रहा है। साथ ही साथ जो विद्यार्थी किसी अन्य समस्या से ग्रस्त रहता है समूह कार्यकर्ता के माध्यम से, शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ मिलकर इसे हल करने का प्रयास किया जाता है। आज के समय में विद्यार्थियों का सामंजस्य भी एक प्रमुख समस्या बनकर सामने आ रही है। विद्यार्थी कक्षा में, सहपाठियों के साथ एवं और तो और अपने परिवार में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है, जिससे वह गलत रास्तों को ग्रहण कर लेता है, जिससे अनेक बाल-अपराध जैसी समस्याएँ दिनों-दिन बढती जा रही है। समूह कार्यकर्ता ऐसे बच्चों के सामंजस्य हेतु अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों को इस प्रकार से आयोजित करता है कि समूह गतिविधियों के माध्यम से समूह लक्ष्य तथा इसी तरह से व्यक्तिगत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक साथ मिलकर कार्य करें। समूह कार्य का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं को अपने स्वयं के कार्यों से सीखना है इन समस्त कार्यों हेतु समूह कार्यकर्ता विद्यालयी कार्य के माध्यम से उन्हें समाज में सामंजस्य स्थापित करने हेतु सहायता करता है।

3.5.2 चिकित्सा के क्षेत्र में समूह कार्य - चिकित्सीय समाज कार्य आधुनिक समय में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाने लगा है। विभिन्न अस्पतालों के माध्यम से यह कार्य विभिन प्रकार की प्रणाली के माध्यम से कार्यकर्ता द्वारा दिया जाने लगा है। मानव समाज एक परिवर्तनशील समाज है। इसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। बढ़ते औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं संयुक्त परिवार के पतन ने दिनोंदिन कई प्रकार की आर्थिक सामाजिक एवं मनोसामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। परिणाम स्वरूप इन समस्याओं के निवारण एवं निराकरण हेतु चिकित्सीय समाज कार्य की महत्त्वपूर्ण उपयोगिता को देखा जा रहा है। प्रोफेसर राजाराम शास्त्री ने चिकित्सीय समाज कार्य को परिभाषित करते हुए कहा था कि चिकित्सीय समाज कार्य का मुख्य उद्देश्य चिकित्सीय सहूलियतों का उपयोग रोगियों के लिए अधिकाधिक फलप्रद एवं सरल बनाने तथा चिकित्सा में बाधक मनोसामाजिक दशाओं का निराकरण करना है। चिकित्सीय समाज कार्य के इतिहास पर यदि नज़र डाला जाए तो इसकी शुरूआत व्यवस्थित रूप से अमेरिका के मैसाचुसेट जनरल अस्पताल में हुई। डॉ रिचर्ड सी केवट पहले व्यक्ति थे, जिन्होंने यह स्वीकार किया कि रोगों का सामाजिक ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इसकी सामाजिक स्थिति का प्रभाव रोगी पर पड़ता है। 1920 के दशक में समाज कार्यकर्ताओं की चिकित्सा के क्षेत्र में भर्ती बढ़ती हुई नज़र आई है, जिसके माध्यम से अपाहिज एवं आवश्यकता ग्रस्त व्यक्ति के उपचार हेतु कार्यकर्ताओं को

नियुक्त किया गया। भारत में चिकित्सीय समाज कार्य के इतिहास पर यदि नज़र डाली जाए तो 1946 में सर्वप्रथम चिकित्सा समाज कार्यकर्ता की नियुक्ति मुंबई के जेजे. अस्पताल में हुई। समूह कार्यकर्ता अपनी निपुणताओं से संभावित रोगियों के लिए समूह कार्य तकनीकों का प्रयोग मनोचिकित्सीय प्रकार से करता है एवं उनके परिवारों को भावनात्मक सहयोग उपलब्ध कराने के लिए मदद करता है। समूह कार्यकर्ता द्वारा इस प्रकार का प्रयास किया जाता है कि सेवार्थी को किस प्रकार की चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराई जाए, जिससे वह अपने परिवार में सामंजस्य स्थापित कर पाए। समूह कार्य के माध्यम से रोगी और उनके परिवारों के सदस्यों को सहयोगात्मक चिकित्सा उपलब्ध कराई जाती है। समूह कार्य दुश्चिता, तनाव एवं एकाकीपन जैसी स्थिति को दूर करने में सहायता करता है। समूह कार्य प्रक्रिया, सहज प्रक्रिया में तथा चिकित्सा प्रक्रिया में उनको भागीदारी के योग्य बनाते हैं। आज के समय में यदि देखा जाए तो राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन.आर.एच.एम) जैसे सरकारी कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यकर्ताओं कीनियुक्ति होने लगी है। जिसमें बच्चों एवं माताओं के पोषाहार से लेकर उनके संपूर्ण रोगों का अध्ययन किया जा रहा है। वर्तमान में चिकित्सीय समूह कार्य का क्षेत्र अत्यधिक बढ़ता जा रहा है और यह सरकारी एवं निजी अस्पताल में देखा जा सकता है।

3.5.3 नशाबंदी केंद्रों में समूह कार्य - नशा करना या व्यसन करना आज के समाज में एक चुनौतीपूर्ण गंभीर सामाजिक समस्या बनती जा रही है जिसने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है चाहे वह पुरूष हो या महिला, वृद्ध हो या जवान या फिर बच्चे और उच्च, निम्न या मध्यम वर्ग। प्रत्येक समाज के वर्ग को इस नशाखोरी जैसी भयावह समस्या ने अपने चंगुल में कर लिया है। समूह कार्यकर्ताओं के माध्यम से इसे दूर करने का प्रयास किया जा सकता है जिससे व्यक्ति समाज में कुशल जीवन-यापन कर सके। समूह कार्यकर्ता द्वारा नियंत्रण, रोकथाम और उपचार के माध्यम से इस कार्य को किया जाता है। यदि हम एक उदाहरण के रूप में समझें तो यदि समूह कार्यकर्ता एक शराबी व्यक्ति का अध्ययन करेगा तो सर्वप्रथम वह व्यक्ति के शराब पीने के कार्य-कारणों का अध्ययन व्यक्ति से जुड़े समस्त पहलुओं से करेगा। जिसमें व्यक्ति के परिवार, आस-पडो स एवं मित्रगणों की अहम भूमिका होगी। तश्चपात निदान की योजना तैयार करेगा और फिर उपचार के माध्यम से शराब को नियंत्रित करने का प्रयास करेगा। इस प्रकार कार्यकर्ता द्वारा नशाखोरी जैसी भयानक समस्या से व्यक्ति को निजात दिलाई जा सकती है जिसने संपूर्ण समाज को प्रभावित किया है।

3.5.4 युवा के क्षेत्र में समूह कार्य - कहते है युवा देश का निर्माता होता है और आज भारत की लगभग आधी आबादी युवा है। युवा को यदि उलट दिया जाए तो वह वायु बन जाता है। युवा शक्ति, ऊर्जा, क्षमता, कुशलता एवं परिश्रम से भरपूर होता और यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो यह समाज के निर्माण में एक आवश्यक रूप में नज़र आते हैं। किंतु वर्तमान समय में युवाओं को भी अनेक समस्याओं जैसे बेरोज़गारी, नशाखोरी एवं अपराध जैसी कुव्यवस्थाओं ने जकड़ लिया है जिससे उनका एवं राष्ट्र का विकास रूका हुआ नज़र आ रहा है। युवाओं की भागीदारी की ओर यदि नज़र डालें तो राजनैतिक दल से लेकर हर कोई युवाओं के महत्त्व को स्वीकार कर रहा है एवं विद्यार्थी नेतृत्व को महत्त्व दे रहे हैं। सभी विश्वविद्यालयों और कालेजों में विद्यार्थी विंग स्थापित किए गए थे। ये समूह संगठित प्रयासों के माध्यम से विद्यार्थी समुदाय की सामान्य आवश्यकताओं और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित कर उनका समाधान निकालते हैं। भारत सरकार ने 1988 में निर्मित राष्ट्रीय युवा नीति को वर्ष 2003 में और अधिक व्यापक व सशक्त रूप प्रदान किया है, जिससे युवाओं का सर्वांगीण विकास किया जाए। अनेक संस्थाओं जैसेयुवा समाज, एन.सी.सी., ग्रामीण युवा क्लबों की स्थापना कराई गई है। कुछ गैर-सरकारी युवा और विद्यार्थी संगठनों जैसे एम.सी.ए. वाई, डब्ल्यू.सी.ए., स्काउट्स और गाइड्स इत्यादि का उदगम हुआ है। नेहरू युवा केंद्र की स्थापना 1972 में हुई। यह छठी पंचवर्षीय योजना का एक भाग था, जिसका भारत में समूह कार्य के

ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में वर्णन किया जा सकता है। इस केंद्र के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को प्रशिक्षण देकर उनमें सामूहिक भावना को उत्पन्न कर सामुदाय आधारित कार्यों को करना एव युवा नेतृत्व का निर्माण करना था जो अत्यंत ही प्रभावी साबित हुआ। 1969 में गैर-सरकारी मंच पर विश्व युवक केंद्र का निर्माण कर युवा संगठन तथा युवा सेवाओं को विकसित करने की आवश्यकता एवं उनमें जागरूकता लाने के लिए प्रशिक्षण देकर कार्यकर्ता तैयार करने पर बल दिया गया।

3.5.5 महिला एवं बाल-विकास के क्षेत्र में समूह कार्य - समाज कार्य के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण कार्य महिला एवं बाल विकास का है जो आज के दौर में समूह कार्यकर्ताओं द्वारा आवश्यक रूप से किया जा रहा है। प्राचीन काल से ही महिलाओं को अधिक कमजोर माना जाता रहा है। उनके साथ हमेशा से ही भेदभाव किया जाती रहा है। हमेशा ही लिंगभेद होते आ रहा है, जिस कारण से वे हमेशा पिछड़ी रही। जबकि यह सर्वविदित है कि महिलाओं की भागीदारी के बिना राष्ट्र व समाज का विकास असंभव है। समूह कार्य के माध्यम से आवश्यकता ग्रस्त महिलाओं को शिक्षण प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जाता है। यदि कहें तो महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु सरकार द्वारा भी कुछ पहल की जा रही है, जिनमें प्रमुख रूप से वर्ष 1990 को बालिका वर्ष के रूप में मनाना, वर्ष 2001 को महिला वर्ष के रूप में मनाना, यू.एन.ओ.द्वारा 1975 को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष और 1975-76 को अंतरराष्ट्रीय महिला दशक के रूप में घोषित करना और हमारे देश में 8 मार्च को महिला दिवस के रूप में मनाना शामिल है। भारत सरकार द्वारा प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में भी महिलाओं को लेकर अनेक कार्यक्रमों को संचालित किया जा रहा है। सरकार द्वारा मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रमुख योजनाएँ चलाई जा रही है जिनमें प्रमुख हैं –

डवाकारा योजना 1982 में एकीकृत ग्राम्य विकास योजना की सहायक योजना के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं एवं बच्चों के लिए प्रारंभ की गई। महिला विकास निगम(1986-87) में महिला विकास निगम को इस उद्देश्य के साथ बनाया गया कि महिलाओं में अधिक रोज़गार के साधन प्रदान किए जाए। महिलाओं को स्वरोज़गार हेतु वित्तीय सहायता-महिलाओं में उद्यम को बढ़ावा देने के लिए निगम अपने फंडों में से3 प्रतिशत से 7 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण देता है। इसके अतिरिक्त विशेष केंद्रीय सहायता के अधीन अनुसूचित जाति की पीले कार्ड धारक महिलाओं को स्वीकृत ऋण का25 से 35 प्रतिशत तक की पूँजी में सब्सिडी दी जाती है। महिला समाख्या कार्यक्रम के (1988) के माध्यम से समाज एवं अर्थव्यवस्था में महिलाओं द्वारा अपने योगदान की उपयोगिता पहचान सकने में उनकी सहायता करना एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नए जीवन का संचार करना एवं यह विश्वास दिलाना कि महिलाएँ स्वयं अपनी एवं अपने बच्चों की देखभाल कर सकती है। इस प्रकार सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रमों को महिलाओं के विकास हेतु चलाया जारहा है, जिसमें समूह कार्यकर्ता समूह कार्य के माध्यम से इन कार्यक्रमों को संचालित करने में सहायता करता है। महिलाओं को ज़्यादासे-ज़्यादा सहभागी होने के लिए प्रेरित करता है। दूसरी ओर बालकों के विकास हेतु समूह कार्य को समझें तो भारत सरकार द्वारा वर्ष1974 में बाल-नीति का निर्माण किया गया जिसमें अनेक प्रावधान बच्चों के लिए किए गए और साथ-ही-साथ प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में भी बच्चों के कल्याण हेतु कार्यक्रमों को सुनिश्चित किया गया है। विभिन्न संचालित योजनाओं जैसे महिला एवं बाल विकास तंत्रालय की स्थापना 1985 में की जाता इन दोनों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया जा रहा है। समेकित बाल विकास सेवाएँ जिसे आईसीडीसी भी कहा जाता है को 2 अक्टूबर 1975 से इस उद्देश्य के साथ बनाया गया कि 0-6 वर्ष के बच्चों के पोशाहार और स्वास्थ्य में सुधार लाया जाए। धारा 21 ए में भी 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है।1995 से मध्यान्ह भोजन को प्रारंभ किया गया है। इन सभी कार्यक्रमों में गैर-सरकारी संगठन और समूह कार्यकर्ता अपने स्तर से कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने में सहायता करते हैं और समूह प्रयास से यह तय करते हैं कि कैसे इन योजनाओं को सफल

बनाया जाए जिससे कि महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में भी समूह कार्यकर्ता अपनी अहम भागीदारी को सुनिश्चित कर सकें।

3.5.7 वृद्धों के क्षेत्र में समूह कार्य

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 में वर्णित राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अंतर्गत देश के विभिन्न राज्य सरकारों तथा संघीय क्षेत्रों ने वृद्ध व्यक्तियों की सहायता हेतु वृद्धावस्था पेंशन योजना को प्रारंभ किया है। सर्वप्रथम इस योजना को उत्तर प्रदेश सरकार ने वर्ष 1957 में प्रारंभ किया। इसके अलावा हैल्पेज न्यासकोष, हैल्पेज इंडिया (1978), एज-केयर-इंडिया (1980) एवं दिवा केंद्र इत्यादि को स्थापित कर वृद्धों की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है। जिसमें समूह कार्यकर्ता वृद्धों के कार्यों को सृजनात्मक कार्यक्रमों के रूप में बदलने का प्रयास करता है। उनमें उत्पन्न सांवेगिक समस्याओं को दूर करने का भी प्रयास करता है। परिवार में समायोजन स्थापित करने में सहायता करता है और संगठित मनोरंजन के साधन को उपलब्ध कराने में सहायता करता है।

3.5.8 विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्तियों के क्षेत्र में समूह कार्य

विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति, जिन्हें पूर्व में बाधित व्यक्ति कहा जाता था, ऐसे व्यक्ति जो अपनी व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक सीमाओं एवं परिस्थितियों के कारण अपना जीवन सामान्य रूप सेबिताने में असमर्थ हैं, को विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति कहा जाता है। ऐसे व्यक्तियों को भारत सरकार के समाज कल्याण विभाग ने 4 भागों में बाँटा है-प्रथम शारीरिक दृष्टि से विकलांग- ऐसे व्यक्ति जिनकी शारीरिक क्षमता उनके किसी भी शारीरिक अंग द्वारा ह्रास विकृति या किसी अन्य कारण से खराब हो गई है। दूसरे नेत्रहीन, तीसरे मूक-बधिर और चौथे मानसिक दृष्टि से मंदित/ कुष्ठ रोगी। इन सभी व्यक्तियों के साथ सामाजिक कार्यकर्ता समस्याओं को समझकर उनका उपचार करता है तथा उसे संस्था में समुदाय में उपलब्ध साधनों के उपयोग में सहायता करता है साथ ही वह परिवार के सदस्यों को सहयोग एवं मनोसामाजिक समस्याओं का समाधान करने में सहयोग प्रदान करता है । विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्तियों के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण संस्थाओं को बनाया गया है जिसमें इन व्यक्तियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इनका निर्माण किया गया है ।

संस्थान	मंत्रालय	स्थान	वर्ष
राष्ट्रीय दृष्टि विकलांग संस्थान (NIVH)	केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन	देहरादून	1950
राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान (NIOH)	कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित	कलकत्ता	1978
अली यावर जंग राष्ट्रीय श्रवण विकलांग संस्थान (AYJNIHN)	कल्याण मंत्रालय के अधीन	मुंबई	9 अगस्त 1983
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान (NIMH)	कल्याण मंत्रालय के अधीन	स्वायत्त संस्था	1984

उपर्युक्त क्षेत्रों के साथ मिलकर समूह कार्यकर्ता द्वारा समाज की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है जिसमें व्यक्ति समाज में अपना स्थान सुचारू रूप से कर पाए। इन क्षेत्रों के अतिरिक्त कुछ अन्य समुदाय आधारित क्षेत्रों में भी समूह कार्यकर्ता, कार्य करता है जिससे समुदाय आधारित क्षेत्रों की समस्या का समाधान किया जा सके।

3.5.9 गैर-सरकारी संगठनों द्वारा समूह कार्य

वर्तमान प्रकाशित आँकड़ों के आधार पर भारत में गैर-सरकारी संगठनों की संख्या लगभग33 लाख है, जिसमें से 40 हजार संगठनों को विदेशी फंड (एफ.सी.आर.ए.) प्राप्त है। इन संख्याओं को देखकर अंदाजा लगाया जा सकता है कि भारत में गैर-सरकारी संगठनों की कितनी उपयोगिता है। गैर-सरकारी संगठन संस्थानीकरण की प्रक्रिया और समुदायों के माध्यम से विशेष लक्ष्य वाले समूहों को सेवा उपलब्ध कराने में हमेशा से ही प्रयत्नशील रहे हैं एवं उनके कार्यों को भी सराहा गया है। इनके माध्यम से महिलाएँ, बच्चे वृद्ध, मानसिक या शारीरिक विकलांग जैसे लोगों को विभिन्न माध्यमों से सेवाएँ उपलब्ध कराई जाती हैं । इन सभी केंद्रों में, समाज कार्यकर्ता कौशल विकसित करना, आत्मविश्वास पैदा करना, और आत्मप्रतिष्ठा, प्रोत्साहन, उपलब्धि का लक्ष्य, जागरूकता निर्माण करना इत्यादि कार्य करता है।

3.5.10 आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ समूह कार्य - 1975 में बाल-नीति के बनने के बाद से ही आगंनवाड़ी कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है। यह कार्यक्रम एकीक्रत बाल विकास सेवाएँ (Integrated Child Development Services .ICDS) का ही एक मुख्य भाग है। इसके माध्यम से ग्रामीण समुदाय में बच्चों और महिलाओं की शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधी आवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। आंगनवाड़ी में बच्चों/बच्चियों को प्राथमिक शिक्षा और भोजन उपलब्ध कराया जाता है। आंगनवाड़ी के कार्यकर्ता द्वारा स्थानीय क्षेत्र की महिलाओं के समूहों को स्वास्थ्य शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है। ये गर्भवती महिलाओं और सात वर्ष की आयु तक के बच्चों/बच्चियों के लिए स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान देते हैं। स्थानीय क्षेत्र में समूह कार्यकर्ता द्वारा किशोर बालिकाओं के लिए जागरूक कार्यक्रमों और विकासात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कार्यकर्ता इस क्षेत्र में अनेक रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बच्चों एवं महिलाओं के क्षेत्र में कार्य करता है।

3.5.11 स्व-सहायता समूह एवं समूह कार्यकर्ता

स्व-सहायता समूह (Self Help Group) भारत सरकार द्वारा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोज़गार योजना के अंर्तगत1 अप्रैल 1999 से प्रारंभ किया गया है। इस योजना के अंर्तगत गरीब परिवारों को स्वरोज़गार की सहायता देना है। ऐसे ग्रामीण जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करते हैं तथा जिनकी आपस की आय और गतिविधियाँ एक हो स्व-सहायता समूह के अंर्तगत आते हैं। इस समूह के सदस्य अपनी दैनिक आय अथवा मासिक आय से कुछ बचत कर समूह के पास जमा करते हैं तथा समूह आवश्क्कता पड़ने पर जरूरतमंद सदस्य को ऋण देती है, जिससे सदस्य अपनी आवश्यकता पूरी कर ऋण राशि आसान किश्तों में वापस जमा कर सकें। ब्याज से आय समिति के कार्यकलापों में खर्च किया जाता है। स्व-सहायता समूह में 10 से 20 सदस्य हो सकते हैं जो अपनी गतिविधियों के अनुसार समूह का नामरख सकते हैं। स्व-सहायता समूह के माध्यम से लोग अपनी मूलभूत आवश्क्कताओं की

पूर्ति करने में सक्षम होते है। स्व-सहायता समूह के लिए मुख्य रूप से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है, जैसे -

1. स्व-सहायता समूह गठन के बाद नियमित बैठक आवश्यक है।
2. समूह के सदस्यों को बैठक में भाग लेना आवश्यक है।
3. बैठक में समूह की गतिविधियों, समूह को सुदृढ़ करने समूह की आय बढ़ाने सदस्यों को ऋण की आवश्यकता, गाँव की समस्या, बच्चों/बच्चियों को पढ़ने/बढ़ने पर चर्चा आदि पर विचार करना चाहिए ।
4. बैठक में की गई चर्चा का ब्यौरा कार्यवाही रजिस्टर में दर्ज करना आवश्यकतानुसार ऋण दिया जा सके।
5. समिति से प्राप्त ऋण का सही उपयोग करें, जैसे- अपने व्यवसाय में लगाएँ, बच्चों/बच्चियों के पढ़ने-बढ़ने पर खर्च करें अथवा अपने अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगावें ।
6. समिति से प्राप्त ऋण समिति की शर्तों के अनुसार समय के अंदर दें।
7. समूह के छह माह सफल संचालन के उपरांत समिति सदस्य अथवा अध्यक्ष अपने ग्राम के ग्राम सहायक, विस्तार अधिकारी अथवा विकास खंड अधिकारी से संपर्क कर समिति के चयनित व्यवसाय के ऋण के लिए संपर्क करें।

तो इस प्रकार उपर्युक्त स्व-सहायता समूह की गतिविधियों को संचालित किया जा सकता है । स्वसहायता समूह, समूह कार्य प्रणाली का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उदाहरण है जिसके माध्यम से संपूर्ण विधि को संचालित किया जा सकता है। स्व सहायता समूह के कुछ महत्त्वपूर्ण अभिलेख भी होते हैं, जिनके माध्यम से इसका संचालन किया जाता है जिनमें मुख्य रूप से रोकड़ पंजी का संधारण, समूह की रोकड़ पूँजी, सदस्य खाता, सदस्य का व्यक्तिगत पास बुक, समूह की कार्यवाही, पूँजी, ग्राम सभा में अनुमोदन, इत्यादि होते हैं। इस प्रकार समूह कार्य में स्व-सहायता समूह गतिविधि एक महत्त्वपूर्ण कार्य विधि हो सकती है। जिस प्रकार स्व-सहायता समूह में कार्यों को संचालित किया जाता है उसी प्रकार समूह कार्यों को भी एक निश्चित लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाता है।

ज्ञान शांति मैत्री

3.6 सारांश

आदिकाल से ही संपूर्ण विश्वमें एक-दूसरे की सहायता करने की परंपरारही है चाहे उसका माध्यम या विधि कोई भी क्यों न हो। समाजकार्य का आज स्वरूप बदलते जा रहा है और इसमें दिन-प्रतिदिन नए-नए आयामों के साथ कार्यविधियों में परिर्वतन देखने को मिल रहा है। इनमें से समूह कार्य भी एक प्रणाली के रूप में विकसित हुआ है। जिसमें समाज कार्य के क्षेत्र में समूह गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तियों की समस्या समाधान हेतु प्रयास किए हैं। इस विधि द्वारा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संबंधी समस्याओं में व्यक्तियों को मनोरंजन प्रदान कर समस्याओं का निराकरण करके व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जाता है। समूह कार्य हेतु इंग्लैंड, अमेरिका एवं भारत में अनेक प्रयास किए गए है। जिसके सर्वांगीण आज समूह कार्य की विकसित रूप हमारे सामने दिखाई पड़ रहा है। व्यासायिक रूप से इसका संपूर्ण विकास अभी शेष है जो आज के व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के लिए चुनौती है।

3.7 बोध प्रश्न

प्रश्न 01. भारत में समूह कार्य के ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य पर प्रकाश डालिए।

प्रश्न 02. प्राचीन काल में समूह कार्य का रूप एवं विकास क्रम को विस्तार से समझाएँ।

प्रश्न 03. स्वतंत्रता के पूर्व समूह कार्य के क्षेत्र में किए गए कार्यों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 04. स्वतंत्रता पश्चात अर्थात आधुनिक काल समूह कार्य का विकासात्मक एवं किए गए कार्यों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न 05. भारत में समूह कार्य शिक्षा के विकास पर लेख तैयार कीजिए।

प्रश्न 06. भारत में समूह कार्य के क्षेत्र में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की चर्चा कीजिए।

प्रश्न 07. अन्य संस्थाओं एवं समुदायों के साथ समूह कार्य की प्रक्रिया को समझाइएँ।

3.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. संकलन विकास योजना पर आधारित मार्गदर्शिका 2010।
2. झा.जे.के. (2001).*इनसाइक्लोपीडिया ऑफ सोशल वर्क.* नई दिल्ली :अनमोल पब्लिकेशन्स ।
3. डीवे, जे एवं थिंक हाऊवी (1933). *ए रीस्टेटमैंट ऑफ द रिलेषन ऑफ रिफलैक्टिव थिंकिंग टु द एजूकेटिव प्रासेस* (संषोधित संस्करण). बॉ स्टोन डी.सी. हीथ
4. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्तविश्वविद्यालय (2010).*सामाजिक समूह कार्य:समूहों के साथ कार्य करना.*नई दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ ।
5. सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य. लखनऊ*: हिंदी संस्थान।
6. मिश्रा, प्रयागदीन (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य.* लखनऊ : हिंदी संस्थान ।
7. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010*). समाज कार्य.* लखनऊ : जुबली एच फाउंडेशन।
8. सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012). *सामूहिक कार्य.* हल्दानी : उत्तरायन प्रकाशन।

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई - 4 समाज कार्य की प्रणाली के रूप में सामाजिक समूह

इकाई रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 प्रणाली से आशय
4.3 समाज कार्य की अन्य प्रणालियों के साथ समूह कार्य का अंत:संबंध।
4.3.1 सामाजिक वैयक्तिक कार्य प्रणाली के साथ संबंध
4.3.2 सामाजिक समूह कार्य प्रणाली के साथ संबंध
4.3.3 सामुदायिक संगठन कार्य प्रणाली के साथ संबंध
4.3.4 समाज कल्याण प्रशासन प्रणाली के साथ संबंध
4.3.5 सामाजिक शोध प्रणाली के साथ संबंध
4.3.6 सामाजिक क्रिया प्रणाली के साथ संबंध
4.4 सारांश
4.5 बोध प्रश्न
4.6 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. समाज कार्य की अन्य प्रणालियों के साथ समूह कार्य का किस प्रकार अंत: संबंधहै ?
2. सामाजिक समूह कार्य का वैयक्तिक सेवा कार्य के साथ किस प्रकार का अंत संबंध पाया जाता है?
3. सामाजिक समूह कार्य किस प्रकार एक प्रणाली के रूप में कार्य करता है ?
4. सामाजिक समूह कार्य एवं सामुदायिक संगठन प्रणाली के साथ अंतसंबंधको रेखांकित करसकेंगें।
5. समाज कल्याण प्रणाली के साथ यह किस प्रकार कार्य करता है ?
6. समाजिक शोध कार्य में इसकी उपयोगिता किस प्रकार की है ?
7. सामाजिक क्रिया और सामाजिक समूह कार्य के अंत संबंधको जाना जा सकता है।

4.1 प्रस्तावना

सामाजिक समूह कार्य को वर्तमान समय में समाज कार्य की मुख्यत: दो प्रणालियों (प्राथमिक एवं द्वितीयक) में से प्राथमिक प्रणाली के रूप में जाना जाता है। समाज कार्य की यह प्रणाली वास्तविक रूप से वर्तमान समय में समाज की भिन्न-भिन्न समस्याओं के निराकरण हेतु विभिन्न प्रणालियों के साथ मिलकर कार्य कर रही है। यह प्रणाली मुख्य रूप से विभिन्न प्रकार के समूहों के साथ मिलकर उनकी समस्या समाधान का प्रयास कर रही है जो स्पष्टत: प्रतीत होता है कि यह किस प्रकार समाज कार्य का एक मजबूत हिस्सा बनकर हमारे सामने प्रस्तुत हो रही है। इस इकाई के माध्यम से आप जान सकेंगे कि किस प्रकार सामाजिक समूह कार्य अन्य प्रणालियों के साथ कार्य करता है और समस्या समाधान हेतु किस प्रकार से सहायक के रूप में कार्य करता है।

4.2 प्रणाली से आशय

किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित एवं सुचारू रूप से कार्य करने की पद्धति को प्रणाली कहा जा सकता है। यह कौशल एवं तकनीकों का संग्रह है। प्रत्येक कार्य को करने की एक विशिष्टप्रणाली होती है जिससे उस कार्य के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सके। प्रत्येक कार्य एवं व्यक्ति की अपनी विशिष्ट प्रणाली होती है जिसका उपयोग करके वह अपना संपूर्ण कार्य करता है। प्रणाली की विशेषताओं को निम्नानुसार समझा जा सकता है

1. यह किसी भी कार्य को करने का एक सुव्यस्थित और सुनियोजित तरीका है।
2. यह व्यावसायिक कार्य की एक मुख्य पद्धति है जो सभी को सर्वमान्य होती है।
3. किसी भी प्रणाली का उपयोग किसी भी कार्य को करने के लिए सूझ-बूझ के साथ किया जाता है।
4. प्रणालियों का जन्म अनेक अनुसंधानों के पश्चात होता है इसलिए इसे अनेक विद्वानों द्वारा स्वीकारा जाता है।
5. प्रणाली के माध्यम से वैयक्तिक, समूह व समाज की सहायता की जाती है।

अतः उक्त विशेषताओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि प्रणालियों की सहायता से किसी भी कार्य को सरलता के साथ संपन्न किया जा सकता है। समाज कार्य एक व्यवसाय आधारित कार्य है जो एक वैज्ञानिक पद्धति के साथ संपन्न किया जाता है। इसी संदर्भ में मिलरसन ने व्यवसाय की निम्नलिखित विशेषताओं का वर्णन किया है-

1. सैद्धांतिक ज्ञान पर आधारित निपुणताएँ।
2. प्रशिक्षण तथा वृत्ति का प्रावधान।
3. सदस्यों की सक्षमता का परीक्षण।
4. संगठन
5. व्यावसायिक आचरण संहिता एवं
6. परोपकारी सेवा

इस प्रकार से मिलर द्वारा दी गई विशेषताओं से यह कहा जा सकता है कि समूह कार्य एकव्यवसाय आधारित कार्य है, जो एक समाज कार्य की प्रणाली के रूप में कार्य करती है।

समाज कार्य में कार्यों को करने की कुछ प्रणालियाँ होती हैं जिनके माध्यम से कार्यों को क्रमबद्ध एवं वैज्ञानिकरूप से किया जाता है इसमें कुछ निपुणताओं एवं यंत्रों के साथ समाज कार्य की संपूर्ण प्रक्रिया को किया जाता है। आगे आप यह जानने का प्रयास करेंगे कि समाज कार्य की कौन-कौन सी प्रणालियाँ होती हैं और यह किस प्रकार अंर्तसंबद्धता के साथ कार्यों को करती है।

4.3 समाज कार्य की अन्य प्रणालियों के साथ समूह कार्य का अंर्तसंबद्ध

समाज कार्य के संबंध में ब्राउन ने कुछ उद्देश्योंको स्पष्ट करते हुए कहा था कि –

1. समाज कार्य उन व्यक्तियों को भौतिक सहायता प्रदान करता है जो गंभीर आर्थिक संकट में हों, या पराश्रित हों।
2. व्यक्तियों को अपने आर्थिक एवं सामाजिक पर्यावरण से सामाजिक समायोजन स्थापित करने में सहायता देना।
3. सेवार्थियों की मानसिक समस्याओं के समाधान में सहायता देना।
4. आर्थिक दृष्टि से कमज़ोर वर्गों के लिए मनोविद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अच्छे अवसर, स्वास्थ्य, शिक्षा एवं अन्य सुविधाओं को उपलब्ध कराना भी एक अच्छे जीवन स्तर के लिए अनिवार्य होता है। इसी तारतम्य में फ्रीडलेण्डर ने समाज कार्य के उद्देश्यों को स्पष्ट करते हुए कहा था कि, व्यक्तियों के कल्याण

और समाज कल्याण में मेल-मिलाप करना है। समाज कार्य का उद्देश्य व्यक्तियों को सामाजिक दशाओं के प्रति जागरूक कराना, इनको वास्तविकता का सामना करने और इन सामाजिक दशाओं में सुधार करने के प्रयासों में सहायता करना है। समाज कार्य मुख्य रूप से 6 प्रणालियों के साथ कार्य करता है जिसमें प्राथमिक एवं द्वितीयक प्रणाली के रूप में इसे विभक्त किया जाता है। प्राथमिक प्रणाली के अंर्तगत सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य, सामाजिक समूह कार्य, सामुदायिक संगठन को लिया जाता है एवं द्वितीयक प्रणाली में समाज कल्याण प्रशासन, सामाजिक अनुसंधान् सामाजिक क्रिया शामिल होती है। द्वितीयक प्रणालियों को सहायक प्रणाली के रूप में भी जाना जाता है, क्योंकि ये प्रणालियाँ मुख्य रूप से अप्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है और प्राथमिक प्रणालियों को सहायता करने का कार्य करती है। उक्त चित्र क्रं.01 के माध्यम से समाज कार्य की प्राथमिक प्रणालियों एवं चित्र क्रं.002 के माध्यम से द्वितीयक या सहाय

5. क प्रणालियों को समझा जा सकता है।

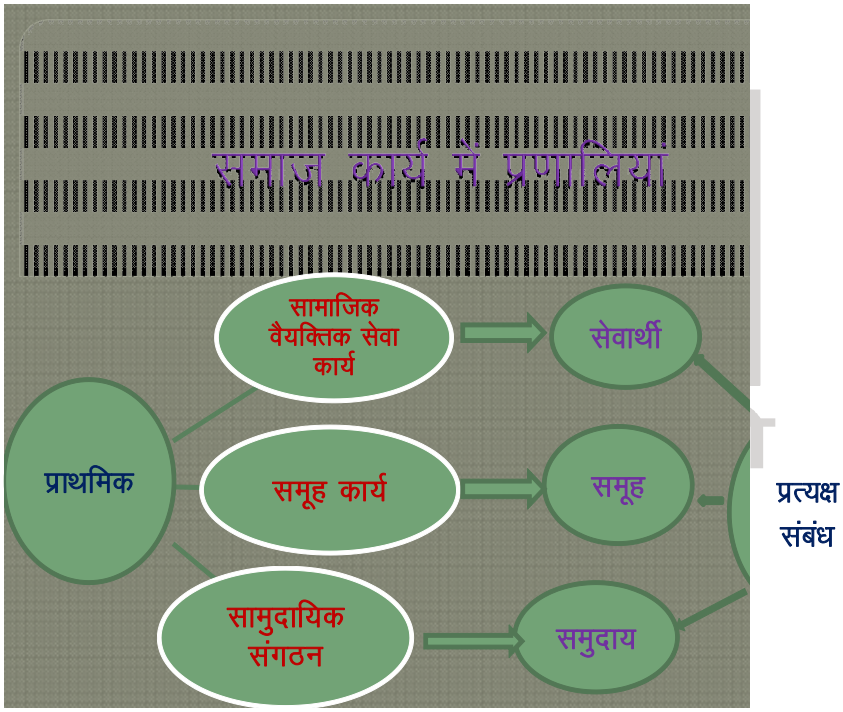

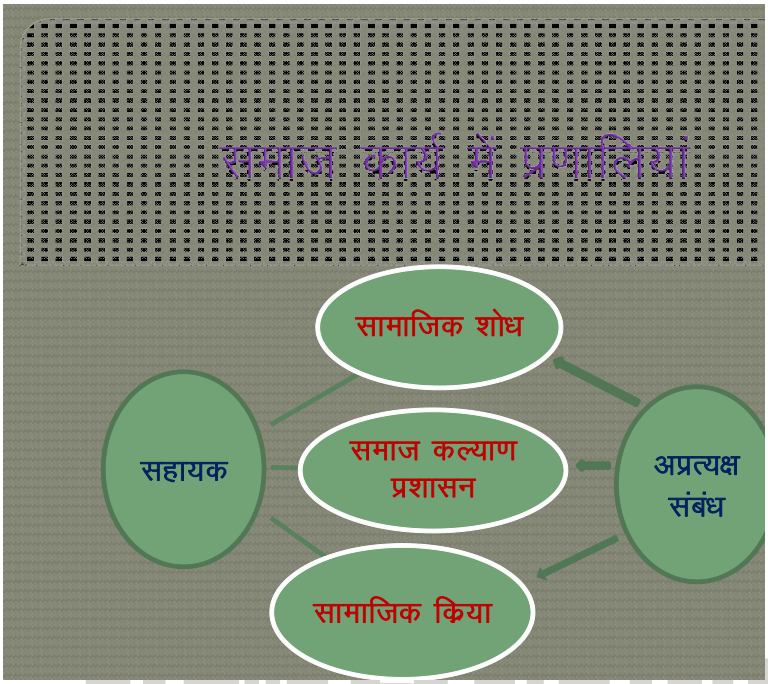

चित्र क्रं.002

व्यक्ति की अनेक प्रकार की समस्याएँ होती है जिन्हें किसी एक प्रणाली के माध्यम से हल नहीं किया जा सकता। इस कारण से ये समस्त प्रणालियाँ भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में अपनी आवश्यकता अनुसार कार्य करती हैं और व्यक्ति, समाज एवं समुदाय कोआवश्यकतानुसार सहायता कर सक्षम बनाने का प्रयास करती है।

समूह कार्य प्रणाली प्राथमिक प्रणाली है जिसके अंर्तगत व्यक्ति की समस्या का समाधान समूहनिर्माण के माध्यम से किया जाता है। यह समूह आवश्यकतानुसार भिन्न-भिन्न लक्ष्यों के अनुरूप तैयार किए जाते हैं और इन समूहों को लक्ष्यों के अनुरूप ही प्रणालियों के सहयोग से आगे बढ़ाया जाता है। यदि हम समाज कार्य के मुख्यक्षेत्रों की तरफ ध्यान आकर्षित करते हैं तो हमें विद्यालयी समाजकार्य, चिकित्सीय एवं मनोचिकित्सीय समाज कार्य, अपराध-सुधार, अन्य पिछड़े वर्गों का कल्याण, श्रम कल्याण, पिछड़ी जाति एवं वर्ग कल्याण, विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्तियों का कल्याण, महिला कल्याण, बालकल्याण, युवा कल्याण, वृद्ध कल्याण, ग्रामीण विकास, शहरी विकास, जनजातीय विकास इत्यादि क्षेत्र मुख्यतः नज़र आते हैं जो कि समाज कार्य के मुख्य क्षेत्र भी कहलाते हैं। समाज एवं समूह कर्ता इन क्षेत्रों में अपनी महती भूमिका अदा करता है और अन्य प्रणालियों के साथ अंतःसंबंध स्थापित कर सहायता करने का प्रास करता है। समाज कार्य समूह कार्य एवं अन्य प्रणालियों के साथ किस प्रकार कार्य करता है इसे आगे समझा जा सकता है।

4.3.1 सामाजिक वैयक्तिक कार्य प्रणाली के साथ संबंध

सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य समाज कार्य में एक प्राथमिक प्रणाली के रूप में कार्य करता है यद्यपि यह एक व्यक्ति के साथ कार्य करता है किंतु यह उसी तक सीमित नहीं रहता वरन सेवार्थी के आवश्यकतानुसार उसके प्रत्येक आंतरिक एवं बाह्य रूप से भी कार्य करता है। मैरी रिचमंड ने 1915 में प्रकाशित अपनी पुस्तक में इसका वर्णन करते हुए लिखा था कि 'विभिन्न व्यक्तियों के लिए उनके साथ मिलकर उनके सहयोग से विभिन्न प्रकार के

कार्य करने की एक कला हैं जिसमें एक ही साथ स्वयं अपनी एवं समाज की उन्नति की जाती है।' मैरी रिचमंड ने प्रारंभ में वैयिक्तक सेवा कार्य में समस्या का तो उल्लेख किया था परंतु यह उल्लेख नहीं किया था कि व्यक्ति की समस्या का समाधान कैसे किया जाए। अतः 1922 में प्रकाशित दूसरी परिभाषा में उन्होनें इन कमियों को दूर करते हुए स्पष्ट किया और कहा कि 'सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य में वे प्रक्रियाएँ आती हैं जो एक-एक करके व्यक्तियों एवं उनके सामाजिक पर्यावरण के बीच सचेतन रूप से समायोजन स्थापित करती हैं।' सामाजिक वैयक्तिक सेवा कार्य को एक प्रक्रिया के रूप में भी देखा जा सकता है जिसमें पर्लमैन द्वारा 1957 में दिए गए 4 अंगों को उल्लेखित किया जाता है ये अंग है- व्यक्ति, समस्या, स्थान और प्रक्रिया। इन अंगों के माध्यम से वैयक्तिक कार्य को स्पष्ट करते हुए कहा गया है कि व्यक्ति, इस प्रक्रिया में सबसे महत्त्वपूर्ण माना जाता है, उसकी आंतरिक एवं बाह्य समस्या एवं उसकी आवश्यकता की पहचान कर कार्यकर्ता द्वारा उसकी समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जाता है। दूसरा महत्त्वपूर्ण अंग समस्या है,समस्या के कई कारण और कई रूप हो सकते हैं परंतु कार्यकर्ता द्वारा यह निर्धारित किया जाता है कि व्यक्ति की व्यक्तित्व से संबंधित कौनसी समस्या है और इसका निराकरण किस प्रकार से किया जाए। तीसरा अंग स्थान है, स्थान कार्यकर्ता एवं सेवार्थी के लिए एक महत्त्वपूर्ण अंग है जिससे माध्यम से कार्यकर्ता एक संस्था का चयन कर इसका उपयोग कर सेवार्थी को सेवाएँ प्रदान करने हेतु करता है। जो सेवार्थी की सहायता कर सकें, ये संस्थाएँ मुख्य रूप से- बाल निदेशन केंद्र, मंत्रणा केंद्र, परिवार कल्याण केंद्र , व्यावसायिक मंत्रणा केंद्र इत्यादि होती है जो सेवार्थी की सहायता भिन्न-भिन्न प्रकार से आवश्यकता अनुसार करती है। चौथा अंग जिसे प्रक्रिया के रूप में जाना जाता है इसमें कार्यकर्ता द्वारा सेवार्थी की समस्या के कार्यकारण संबंधों का अध्ययन कर तथ्य संकलन किए जाते हैं समस्या का वैयिक्तक विधियों द्वारा निदान किया जाता है और प्रक्रिया के प्रमुख तीन विभिन्न अंगों अध्ययन, निदान एवं मूल्यांकन और चिकित्सा के आधार पर इसका समाधान प्रस्तुत किया जाता है। इस प्रकार से इन परिभाषाओं एवं अंगों के अध्ययन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि वैयिक्तक कार्य प्रणाली के माध्यम से व्यक्ति की समस्या का समाधान किया जा सकता है जिसमें केंद्र बिंदु सेवार्थी (व्यक्ति) होता है। समाजिक कार्यकर्ता इस प्रकार से इस प्रणाली का प्रयोग कर व्यक्ति को समायोजन करने में सहायता करता है और यह प्रणाली समूह कार्य के साथ भी मुख्य प्रयोग में लाई जाती है।

4.3.2 सामाजिक समूह कार्य प्रणाली के साथ संबंध-

मानव समाज के इतिहास में सभी देशों एवं युगों में निर्धन, निराश्रित, अपंग, अनाथ, बेरोजगार, रोगी व्यक्ति रहे है तथा ऐसी अनेक समस्याएँ आई है जहाँ इन व्यक्तियों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। अतः इन व्यक्तियों की समस्याओं का समाधान करने तथा इसके परेशानियों को समझने के लिए आदिकाल से प्रयास किए जा रहे हैं। समाज कार्य की उत्पत्ति इन्हीं प्रयासों के फलस्वरुप हुई है। मानव और समाज पूर्ण रुप से एक-दूसरे पर आश्रित है। जिस प्रकार समाज ने मनुष्य को अनेक प्रकार के मानवीय अस्तित्व प्रदान किए हैं, वहीं समाज में अनेक प्रकार की समस्याएँ जैसे बेरोज़गारी आदि भी व्याप्त हैं। अतः इन सभी समस्याओं को दूर करने हेतु अनेक प्रयास किए जा रहे हैं। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरुप कार्यों को समाजकार्य के नाम से जाना जाता है। आज समाजकार्य के लिए केवल दया,करुणा, प्रेम की भावना ही पर्याप्त नहीं है। आज समाजकार्य ने व्यवसाय का रूप ले लिया है। सामाजिक समूह कार्य को समाज कार्य की एक प्रणाली के रूप में प्रयुक्त किया जाता है जो वैयक्तियों की सहायता समूह के माध्यम से कुछ रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से एवं व्यक्तियों में नेतृत्व का विकास कर उन्हें सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है। विभिन्न विद्वानों द्वारा समूह कार्य के क्षेत्र में कुछ परिभाषाएँ दी गई हैं- न्यूज टेट्र के द्वारा 1935 में दी गई परिभाषा में कहा गया है कि - 'स्वैच्छिक संघ द्वारा व्यक्ति के विकास तथा सामाजिक समायोजन पर बल देते हुए तथा एक साधन के रूप इस संघ का उपयोग सामाजिक इच्छित उद्देश्योंको आगे बढ़ाने के लिए शिक्षा प्रक्रिया के रूप मे सामूहिक कार्य को परिभाषित किया जा सकता है।'

क्वायल, ग्रेस ने 1939 में कहा कि - 'सामाजिक सामूहिक कार्य का उद्देश्य सामूहिक स्थितियों में व्यक्तियों की अंत: क्रियाओं द्वारा व्यक्तियों का विकास करना तथा ऐसी सामूहिक स्थितियों को उत्पन्न करना जिससे समान उद्देश्यों के लिए एकीकृत, सहयोगिक सामूहिक क्रिया हो सके।' विल्सन एण्ड राइलैंड (1949) -'सामाजिक सामूहिक सेवा कार्य एक प्रक्रिया और एक प्रणाली है, जिसके द्वारा सामूहिक जीवन एक कार्यकर्त्ता द्वारा प्रभावित होता है जो समूह की परस्पर संबंधी प्रक्रिया को उद्देश्य प्राप्ति के लिए सचेत रूप से निर्देशित करता है। जिससे प्रजातांत्रिक लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सके।' हैमिल्टन ने सामाजिक समूह कार्य को 1949 में स्पष्ट करते हुए कहा कि - 'सामाजिक सामूहिक कार्य एक मनोसामाजिक प्रक्रिया है, जो नेतृत्व की योग्यता और सहकारिता के विकास से उतनी ही संबंधित है जितनी सामाजिक उद्देश्य के लिए सामूहिक अभिरूचियों के निर्माण से है।' कर्ले, आड्म (1950) - ''सामूहिक कार्य के एक पक्ष के रूप में, सामूहिक सेवा कार्य का उद्देश्य, समूह के अपने सदस्यों के व्यक्तित्व परिधि का विस्तार करना और उनके मानवीय संपर्कों को बढ़ाना है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके माध्यम से व्यक्ति के अंदर ऐसी क्षमताओं का विकास किया जाता है जो उसके अन्य व्यक्तियों के साथ संपर्क बढ़ाने की ओर निर्देशित होती है।' ट्रैकर - 'सामाजिक सामूहिक कार्य एक प्रणाली है। जिसके द्वारा व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं के अंतर्गत समूहों में एक कार्यकर्ता द्वारा सहायता की जाती है। यह कार्यकर्ता कार्यक्रम संबंधी क्रियाओं में व्यक्तियों के परस्पर संबंधी प्रक्रिया का मार्ग दर्शन करता है जिससे वे एक-दूसरे से संबंधी स्थापित कर सके और वैयक्तिक, सामूहिक एवं सामुदायिक विकास की दृष्टि से अपनी आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुसार विकास के सुअवसरों का अनुभव कर सकें।

कोनोप्का - सामाजिक सामूहिक कार्य समाजकार्य की एक प्रणाली है जो व्यक्तियों की सामाजिक कार्यात्मकता बढ़ाने मे सहायता प्रदान करती है, उद्देश्यपूर्ण सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्तिगत सामूहिक और सामुदायिक समस्याओं को प्रभावकारी ढ़ंग से सुलझानें मे सहायता प्रदान करती है।' उपर्युक्त समस्त परिभाषाओं के विश्लेषण के पश्चात यही कहा जा सकता है कि -

न्यूज ने ट्रेट परिभाषा दी है उसमें केवल सामूहिक कार्य को एक शिक्षात्मक प्रक्रिया बताया है और कहा कि स्वैच्छिक संघ ही इस दिशा में काम करते है। अनेक परिभाषाओं से स्पष्ट हो जाता है कि यह केवल केवल शिक्षात्मक कार्य ही नहीं करता बल्कि इसके द्वारा सेवा प्रदान की जाती है। यह कार्य स्वैच्छिक एवं सार्वजनिक संगठनों दोनों के माध्यम से किया जाता है।

हैमिल्टन ने अपनी परिभाषा में सबसे अलग प्रकार से समूह कार्य को प्रस्तुत किया है और बताया है कि सामूहिक कार्य एक मनोसामाजिक प्रक्रिया है। उनका मानना है कि इसके द्वारा व्यक्ति को मानसिक रूप से तथा सामाजिक रूप से दोनो प्रकार से प्रभावित किया जाता है। यह सामाजिक उद्देश्यों की पूर्ति के लिए सामूहिक अभिरूचियों के विकास का प्रयत्न करता है। साथ ही साथ उनके नेतृत्व एवं सहकारिता की भावना के विकास पर बल देता है। टैकर ने सामाजिक सामूहिक कार्य की सबसे उपर्युक्त परिभाषा दी है। उनके अनुसार सामाजिक सामूहिक सेवाकार्य को एक प्रणाली या पद्धति कहा गया है जो एक विशेष प्रणाली द्वारा योजनाबद्व व सुव्यवस्थित कार्यक्रम से समूह को सेवा प्रदान की जाती है। इसमें सेवा प्रदान करने के दौरान वैज्ञानिक ज्ञान, समूह बोध सिद्धांत एवं कौशल का समावेश होता है। ट्रेकर ने सामाजिक समूह कार्य को और आगे स्पष्ट करते हुए कहा है कि सामूहिक कार्यकर्त्ता स्वीकृति, वैयक्तिकरण, कार्यक्रम एवं उद्देश्य निर्धारण में समूह की सहायता, प्रेरणा व निर्देशन ,संगठन तथा साधनों के उपयोग पर आधारित संबंधों द्वारा समूह का मार्गदर्शन करता है। उन्होंने कार्यक्रम नियोजन पर भी बल प्रदान किया है इसमें उन्होंने स्पष्ट किया कि कार्यक्रम का आयोजन समूह सदस्यों की योग्यता एवं क्षमता के अनुसार किया जाना चाहिए। आगे उन्होंने और विस्तृत रूप से कहा कि व्यक्ति एवं समूह के व्यवहार में इस प्रकार सुपरिवर्तन लाया जाना चाहिए जिससे वे प्रजातांत्रिक सिद्धांतों जैसे समानता स्वतंत्रता,सौहार्द्र, व्यक्ति का आदर, व्यक्ति की योग्यता में विश्वास, कर्त्तव्य एवं अधिकार, व्यक्ति की आत्म विकास की क्षमता के विश्वास और इस

संबंध में अवसर प्रदान करने में विश्वास किया जा सके। अत: उपर्युक्त तथ्यों से समाज कार्य में समूह कार्य की उपयोगिता एवं इसके एक प्रणाली के रूप में कार्य करने को समझा जा सकता है।

4.3.3 सामुदायिक संगठन कार्य प्रणाली के साथ संबंध

सामुदायिक संगठन की उत्पत्ति19 वीं शताब्दी में दान संगठन समिति आंदोलन से हुई यही दान संगठन समितियों के चलते आज आधुनिक सामुदायिक संगठन का विकास हुआ है। सामुदायिक संगठन को समाज कार्य की एक प्रणाली के रूप में भी प्रयोग में लाया जाता है। यह समुदाय में उत्पन्न समस्याओं का निराकरण एक प्रविधि के माध्यम से करता है जिसमें समुदाय के प्रत्येक सदस्यों की आवश्यकता को महत्त्व दिया जाता है। सामुदायिक संगठन प्रमुख रूप से समुदाय के हितों को ध्यान में रखकर कार्य करता है। समुदाय में मुख्य रूप से 'हम' की भावना का बोध होता है, लोगों का यह विश्वास होता है कि यह समुदाय हमारा है और यही लोग हमारे सुख-दु ख में साथ देते हैं। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखते हुऐं लोगों में आपसी स्नेह और सहयोग की भावना होती है। कुछ विद्वानों ने सामुदायिक संगठन को अपने-अपने विचारों से व्यक्त करने का प्रयास किया है। लिण्डमैन 1921 ने सामुदायिक संगठन को परिभाषित करते हुए कहा कि 'सामुदायिक संगठन सामाजिक संगठन का वह स्तर है जिसमें समुदाय द्वारा चेतन प्रयास किए जाते हैं तथा जिसके द्वारा वह अपने मामलों को प्रजातांत्रिक ढ़ंग से नियंत्रित करता है तथा अपने विशेषज्ञों ,संगठनों, संस्थाओं तथा संस्थानों से जानेपहचाने अंतर संबंधियों के द्वारा उनकी उच्च कोटि की सेवाएँ प्राप्त करता है।

पैटिट (1925) के अनुसार - 'सामुदायिक संगठन एक समूह के लोगों तथा उनकी सामान्य आवश्यकताओं को पहचानने तथा इन आवश्यकताओं की पूर्ति में सहायताकरने के रूप में उत्तम प्रकार से परिभाषित किया जा सकता है।' सैण्डरसन एण्ड पोल्सन ने 1993 में वर्तमान स्थिति के ध्यान में रखते हुए सामुदायिक संगठन को परिभाषित किया और कहा कि, ' सामुदायिक संगठन का उददेश्य समूहों तथा व्यक्तियों के मध्य ऐसे संबंध विकसित करना है जिससे उन्हें सुविधाओं का निर्माण तथा समस्याओं का निराकरण करने तथा उन्हें बनाए रखने के लिए एक साथ कार्य करने में सहायता मिलेगी तथा जिसके माध्यम से समुदाय के सभी सदस्यों के समान कल्याण में अपने उच्चतम मूल्यों का अनुभव कर सके।

एम.जी.रौस ने 1956 में सामुदायिक संगठन को स्पष्ट करते हुए - सामुदायिक संगठन के कार्यकर्ता द्वारा समुदायों की सहायता करने की एक प्रक्रिया कहा है। उनके अनुसार 'सामुदायिक संगठन एक प्रक्रिया है। जिसके द्वारा समाज कार्यकर्ता अपनी अंतर्दृष्टि एवं निपुणता का प्रयोग करके समुदायों(भौगोलिक तथा कार्यात्मक) को अपनी-अपनी समस्याओं को पहचानने और उनके समाधान हेतु कार्य करने में सहायता देता है। उपर्युक्त परिभाषाओं के माध्यम से यह कहा जा सकता है कि सामुदायिक संगठन वैयक्तिक सेवा कार्य समूह कार्य के समान ही कार्य करती है एवं यह भी एक प्रत्यक्ष रूप से कार्य करने वाली प्रणाली है जिसके उद्देश्य समूह एवं वैयक्तिक कार्य जैसे ही हैं जिसमें समुदाय की समस्या का समाधान किया जाता है। समुदाय कार्यकर्ता निम्न चरणों के माध्यम से समुदाय की सहायता करने का प्रयास करता है जो मुख्य रूप से लिण्डमैन द्वारा दी गई है – सर्वप्रथम, वह समुदाय में चेतना जाग्रत करने का प्रयास करता है, दूसरे चरण में वह समुदाय में आवश्यकता की चेतना का प्रसार करता है, तीसरे चरण में आवश्यकता की चेतना का प्रक्षेपण करता है, चौथे चरण में वह आवश्यकता की पूर्ति के लिए समाधानों का प्रस्तुतीकरण करता है, पाँचवे चरण में वह आवश्यकता पूर्ति के लिए समस्याओं को समाप्त करने का प्रयास करता है, छठवें चरण में समस्या के विषय में वाद-विवाद विशाल सभा या कुछ व्यक्तियों के सामने परियोजना या समस्या को रखा जाता है और जो समूह अधिक प्रभाव रखते हैं, अपनी योजनाओं की स्वीकृति लेने का प्रयास करते हैं, सातवें चरण में कार्यकर्ता द्वारा समाधानों का एकीकरण कर उचित समाधान प्रस्तुत किया जाता है एवं आठवें चरण में अस्थायी प्रगति के आधार पर समझौता कराया जाता है। अनेक विद्वानों द्वारा चरणों को भिन्न रूप

से प्रयोग में लाने हेतु बताया गया हैं, यह आवश्यक नहीं है कि एक ही चरण को समस्त परियोजनाओं में लागू किया जाए इस प्रकार से सामुदायिक संगठन प्रणाली के माध्यम से समाज कार्य की प्रक्रिया को किया जाता है।

4.3.4 समाज कल्याण प्रणाली के साथ संबंध

समाज कल्याण प्रशासन प्रणाली समाज कार्य में प्रमुख रूप से द्वितीयक या सहायक प्रणाली के रूप में कार्य करती है। समूह कार्य में तीन अंगों का होना अत्यंत आवश्यक होता है समूह, संस्था और कार्यकर्ता यह प्रणाली मुख्यतः संस्थाओं के सहयोग में अहम भूमिका को अदा करती है जिसका उपयोग कर कार्यकर्ता समूह की आवश्यकताओं एवं लक्ष्य की पूर्ति कर सकें। सामाजिक अभिकरण या सरकारी कल्याण-कार्यक्रमों से संबंधित प्रशासन को समाज कल्याण प्रशासन के अंर्तगत रखा जाता है। समाज कल्याण प्रशासन को एक परिभाषा से समझाना अत्यंत कठिन कार्य है। विभिन्न विद्वानों ने समाज कल्याण प्रशासन को भिन्न-भिन्न प्रकार से परिभाषित करने का प्रयास किया है जिनमें मुख्य रूप से आर्थर डनहम ने कहा है कि 'इसका अर्थ उन सहारा देने वाले एवं सुविधा देने वाले या सुविधाजनक या सरल बनाने वाले क्रियाकलापों से है जो किसी संस्था द्वारा प्रत्यक्ष सेवा प्रदान करने के लिए आवश्यक होते हैं एवं जिनका संपादन एक सामाजिक संस्था द्वारा प्रत्यक्ष सेवा के लिए दिए जाने के साथ-साथ होता रहता है।'

जान किडनाई के अनुसार : 'समाज कल्याण प्रशासन सामाजिक नीति को सामाजिक सेवाओं में बदलने की एक प्रक्रिया है।' प्रो0 राजाराम शास्त्री के अनुसार , 'सामाजिक अभिकरण तथा सरकारी या गैरसरकारी कल्याण कार्यक्रमों से संबंधित प्रशासन को समाज कल्याण कहते हैं। यद्यपि इसकी विधियाँ-प्रविधियाँ या तौर-तरीके इत्यादि भी लोक-प्रशासन या व्यापार-प्रशासन की ही भाँति होते हैं किंतु इसमें एक बुनियादी भेद यह होता हैकि इसमें सभी स्तरों पर मान्यता और जनतांत्रिकता का अधिक से अधिक ध्यान रखकर ऐसे व्यक्तियों या वर्ग से संबंधित प्रशासन किया जाता है जो कि बाधित होते हैं।'

समाज कल्याण प्रशासन में मुख्य रूप से लूथर गूलिक द्वारा प्रारूप को ध्यान में रखकर कार्य किया जाता है जिसमें उन्होंने पोस्डकार्ब (POSDCORB) का उल्लेख किया है, जिसमें P से Planning अर्थात नियोजन, O से Organising अर्थात संगठन, S से Staff अर्थात कर्मचारी, D से Direction अर्थात निर्देशन, Co से Coording अर्थात समन्वय एवं B से Budgeting अर्थात बजट बनाने को निर्धारण किया गया है।

समाज कार्य मुख्य रूप से सामाजिक संस्थाओं या विभागों या संबंधित संगठनोंजैसे -विद्यालयी चिकित्सीय एवं मनोचिकित्सीय विभाग, अपराध-सुधार संस्थाएँ अन्य पिछड़े वर्गों का कल्याण संबंधी संस्थाएँ श्रम कल्याण संबंधी संस्थाएँ ,पिछडी जाति एवं वर्ग कल्याण करने वाली संस्थाएँ इत्यादि संस्थाओं के साथ मिलकर कार्य करती है एवं कार्यकर्ता द्वारा इन संस्थाओं का प्रयोग कर समुदाय की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है।

4.3.5 सामाजिक शोध प्रणाली के साथ संबंध

सामाजिक अनुसंधान वर्तमान समय में एक अंत्यंत ही प्रभावी रूप से समाज कार्य अनुसंधान के रूप में कार्य कर रहा है। समाज कार्य अनुसंधान एक वैज्ञानिक प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समाज में घटित होने वाली घटना का अध्ययन एवं उसके कार्य-कारणों की खोज एक वैज्ञानिक प्रक्रिया के अंर्तगत की जाती है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की समस्याओं का ध्यान कर एक उचित समाधान प्रस्तुत किया जाता है। समाज कार्य शोध के माध्यम से व्यक्ति समूह एवं समुदाय के विभिन्न पक्षों को ध्यान में रखकर विभिन्न प्रकार के तथ्य संकलन की प्रविधियों के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया जाता है और उसके पश्चात कार्य योजना का निर्माण कर समाधान की संपूर्ण प्रक्रिया को क्रियान्वित किया जाता है। अनेक विद्वानों द्वारा समाज कार्य अनुसंधान को

परिभाषित करने का प्रयास किया गया है- पीवी यंग के अनुसार, 'हम सामाजिक अनुसंधान को एक वैज्ञानिक कार्य के रूप में परिभाषित कर सकते हैं, जिसका उद्देश्य तार्किक एवं क्रमबद्ध पद्धतियों द्वारा नवीन तथ्यों की खोज या पुराने तथ्यों को और उनके अनुक्रमों, अंतर्संबंधों, कारणों एवं संचालित करने वाले प्राकृतिक नियमों को खोजना है।'

सी.ए. मोज़र ने सामाजिक शोध को स्पष्ट करते हुए लिखा है कि, 'सामाजिक घटनाओं एवं समस्याओं के संबंध में नए ज्ञान की प्राप्ति हेतु व्यवस्थित अन्वेषण को हम सामाजिक शोध कहते हैं।' वास्तव में देखा जाए तो, 'सामाजिक यथार्थता की अंतरसंबंधित प्रक्रियाओं की व्यवस्थितजाँच तथा विश्लेषण सामाजिक शोध है।' (पी.वी. यंग 1960 पेज क्रं. 44)।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्ट है कि सामाजिक शोध विभिन्न घटनाओं का ध्यान अपने वैज्ञानिक ज्ञान से करती है जिससे नए ज्ञान के साथ समस्या का समाधान प्रस्तुत किया जा सके।

समूह कार्य को समाज कार्य में एक प्रणाली के रूप में जाना जाता है। यह समूह गतिविधियों के माध्यम से समाज में उत्पन्न समस्याओं का निराकरण करने का प्रयास करती है। समाज कार्य अनुसंधान प्रविधि इस प्रविधि के साथ मिलकर एक सहायक प्रणाली के रूप में कार्य करती है जिससे समूह की समस्या का निर्धारण कर उससे समाधान का प्रयास किया जाए। सामाजिक अनुसंधान के मुख्यतः वैसे ही उद्देश्यहोते हैं जो समूह कार्य के भी होते हैं जिनमें प्रमुख रूप से - सामाजिक समस्याओं का अध्ययन, सामाजिक तथ्यों के संबंध में फैली भ्रांतियों को दूर करने का प्रयास, सामाजिक प्रगति एवं विकास हेतु योजना का निर्माण एवं क्रियान्वयन, सामाजिक नियंत्रण में सहायक सामाजिक संगठनों को दृढ़ता व स्थिरता प्रदान करने में सहायक एवं समूह एवं समुदाय में समाज कार्य सेवाओं की आवश्यकता का मापन एवं मूल्यांकन करना शामिल होता है। इन उद्देश्योंको ध्यान में रखकर कार्यकर्ता निम्न चरणों के माध्यम से इन उद्देश्यों को पूर्ण करने का प्रयास करता है - सर्वप्रथम समस्या का निर्धारण एवं निरूपण कर समस्याओं के मूल कारणों को जानने का प्रयास करता है फिर समस्या से संबंधित उपलब्ध साहित्यों का अध्ययन करता है, अनुसंधान के क्षेत्र का निर्धारण किया जाता है, अध्ययन इकाइयों का चयन किया जाता है, अनुसंधान के उद्देश्यों का निर्धारण किया जाता है, प्राक्कल्पना का निर्माण किया जाता है, सूचना स्त्रोंतों का अध्ययन किया जाता है, सूचना एकत्र करने की प्रविधियों का निर्धारण किया जाता है, तथ्यों का संकलन किया जाता है, संकलित तथ्यों का वर्गीकरण किया जाता है, वर्गीकृत तथ्यों का विश्लेषण व विवेचन किया जाता है, सामान्यीकरण व सिद्धांतों का प्रतिपादन किया जाता है एवं प्रतिवेदन का निर्माण किया जाता है, इस प्रकार से कार्यकर्ता द्वारा शोध के चरणों का उपयोग कर समस्त शोध प्रक्रिया को किया जाता है और यही प्रक्रिया कहीं-न-कहीं समूह कार्य प्रक्रिया में भी लागू की जाती है।

पी.वी.यंग ने एक सामाजिक कार्यकर्ता के लिए विभिन्न क्षेत्रों का उल्लेख किया है जिनमें वह कार्य करता है-

1. यह उन कारकों का अध्ययन करता है जो व्यक्ति के सामाजिक व्यवस्था में समस्या उत्पन्न करती है।
2. सामाजिक संस्थाओं का विभिन्न इकाइयों के साथ अंतर्संबंध को ज्ञात करता है।
3. सामाजिक कार्यकर्ता की स्थिति का अध्ययन करता है।
4. समाज में चल रही विभिन्न प्रक्रियाओं का अध्ययन प्रस्तुत करता है।
5. समाज में व्यक्ति, समूह एवं समुदाय की आवश्यकता का अध्ययन कर उन्हें पूर्ण करने का प्रयास करता है।
6. समाज कार्य क्रिया के प्रभावों का परीक्षण एवं मूल्यांकन कर समाज कार्य व्यवहार हेतु उपयोगी साधनों को ज्ञात करता है।
7. समाज कार्य में व्यक्ति, समूह एवं समुदाय के व्यवहार प्रक्रिया का अध्ययन करता है।
8. समूह एवं समुदाय में सामाजिक समूहों के मूल्यों तथा वरीयता का अध्ययन जिनके ऊपर समाज कार्य के व्यावहारिक रूप को समर्थन तथा सहयोग के लिए निर्भर होना पड़ता है।

9. समाज की विविध प्रक्रियाओं का अध्ययन करता है।
10. इस प्रकार से समाज कार्य शोध के क्षेत्रों को देखा जा सकता है जो वैयक्तिक, समूह एवं समुदाय में उनके समस्या समाधान के लिए कार्य करते हैं।

समाज कार्य अनुसंधान की कुछ विशेषताओं को यदि ध्यान पूर्वक देखा जाए तो इससे यह प्रतीत होता है कि यह किस प्रकार समूह कार्य के साथ अंतर्संबंध रखते हुएएक सहायक प्रणाली के रूप में कार्य करती है।

1. सामाजिक अनुसंधान सामाजिक घटनाओं सेसंबंधित तथ्यों का अध्ययन करता है। समूह कार्य प्रक्रिया में समूह सदस्य में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का अध्ययन कर उसे दूर करने का प्रयास किया जाता है
2. समाज कार्य अनुसंधान की प्रकृति वैज्ञानिक होती है, समूह कार्य भी एक प्रक्रियाबद्ध प्रणाली के साथ किया जाता है।
3. समाज कार्य अनुसंधान अनुभवपरक होते हैं,वहीं कार्यकर्ता अपने अनुभवों से ही समूह का निर्माण करता है एवं गतिविधियों को संचालित करता है।
4. सामाजिक अनुसंधान में घटनाओं के कार्यकारणों का अध्ययन किया जाता है, जबकि समूह कार्य में समूह में उत्पन्न होने वाली समस्याओं के कार्यकारणों का अध्ययन किया जाता है।
5. सामाजिक अनुसंधान द्वारा व्यक्ति की सहायता अप्रत्यक्ष रूप से की जाती है तो वही समूह कार्य द्वारा इसे प्रत्यक्ष रूप में दिया जाता है।
6. सामाजिक अनुसंधान में समस्याओं को ज्ञात कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाताहै तो समूह कार्य में भी समूह की समस्याओं को ज्ञात कर उन्हें दूर करने का प्रयास किया जाता है।
7. सामाजिक अनुसंधान एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है, समूह का निर्माण भी विशिष्ट उद्देश्य की पूर्ति के लिए किए जाते हैं और यह भी एक उद्देश्य पूर्ण प्रक्रिया है।

इस प्रकार से कहा जा सकता है कि सामाजिक अनुसंधान समाज कार्य की एक सहायक प्रणाली के रूप में कार्य करती है और समूह कार्य प्रक्रिया के साथ इसका अंतर्संबंधमुख्य रूप से होता है, जिसके माध्यम से कार्यकर्ता अपने लक्ष्यों की प्राप्ति करता है।

4.3.6 सामाजिक क्रिया प्रणाली के साथ संबंध

सामाजिक क्रिया प्रणाली का उपयोग समाजकार्य की द्वितीयक प्रणाली के रूप में किया जाता है । इस प्रणाली का वर्तमान स्वरूप मेरी रिचमंड द्वारा 1922 में दिया गया । 1940 में जॉन फिच द्वारा एक कान्फ्रेंस में सामाजिक क्रिया की प्रकृति के ऊपर एक महत्त्वपूर्ण लेख प्रस्तुत किया गया जिसने सामाजिक क्रिया को समाज कार्य के क्षेत्र में एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बताया । 1945 में केनिथ एलियम ने सोशल वर्क एण्ड एक्शन नामक लेख लिखा जिसके अनुसार यह माना जाने लगा कि सामाजिक क्रिया सामुदायिक संगठन का एक अंग नहीं है,बल्कि यह समाज कार्य की एक अलग विधि है। कुछ विद्वानों ने सामाजिक क्रिया की निम्नलिखित परिभाषाएँ दी हैं-

मेरी रिचमंड (1922) के अनुसार, 'सामाजिक क्रिया प्रचार एवं सामाजिक विधान के माध्यम से जन समुदाय के कल्याण को प्रोत्साहित करती है।'

ग्रेस क्वायल (1937) के अनुसार, 'समाज कार्य के एक भाग के रूप में सामाजिक क्रिया सामाजिक पर्यावरण को इस प्रकार बदलने का प्रयास है जो हमारे विचार में जीवन को अधिक संतोषजनक बनाएगा। यह मात्र व्यक्ति विशेष को ही प्रभावित नहीं करता वरन् सामाजिक संस्थाओं, कानूनों, प्रथाओं और समूहों एवं समुदायों को भी प्रभावित करता है।'

सैनफोर्ड सोलेण्डर (1957) के अनुसार, 'समाज कार्य के परिप्रेक्ष्य में सामाजिक क्रिया वैयक्तिक, सामूहिक या अंतरसामूहिक प्रयास की प्रक्रिया है जो समाज कार्य के दर्शन, ज्ञान और निपुणताओं की सीमा के अंदर संपादित

की जाती है। इसका उद्देश्य सामाजिक नीति और सामाजिक संरचना में संशोधन करके समुदाय के कल्याण को प्रगति के पथ पर अग्रेसित करना है एवं कार्यक्रमों और सेवाओं की प्राप्ति के लिए कार्य करना है।

फ्रीडलैंडर ने सामाजिक क्रिया को स्पष्ट करते हुए कहा था कि, 'सामाजिक क्रिया एक वैयक्तिक, सामूहिक एवं सामुदायिक प्रयास है जिसे समाज कार्य के दर्शन एवं व्यवहार की संरचना के अंतर्गत किया जाता है।

उपर्युक्त परिभाषाओं से स्पष्टहै कि सामाजिक क्रिया सामाजिक उद्देश्यों और मानवीय आवश्यकताओं की पूर्ति नीति के निर्माण में आवश्यक परिवर्तन हेतु जनसमुदाय के सह्योग के साथ प्रयोग में लाई जाती है।

सामाजिक क्रिया की विशेषताएँ -

1. सूदन के अनुसार सामाजिक क्रिया की निम्नलिखित विशेषताएँ हैं-
2. सामाजिक क्रिया के उद्देश्य स्पष्ट होते हैं।
3. सामाजिक क्रिया के कार्यक्रमों की प्राथमिकता एवं रूपरेखा स्पष्टहोती है।
4. संस्था के संगठन के अनुसार ही सामाजिक क्रिया का रूप परिभाषित किया जाता है।
5. सामाजिक क्रिया में कार्यक्रमों का निर्धारण करने के लिए समाजिक कार्यकर्ता को सेवाएँ एवं सुविधाएँ प्रदान कराई जाती हैं।
6. सामाजिक क्रिया के माध्यम से अन्य संस्थाओं के साथ सहयोग स्थापित किया जा सकता है।
7. सामाजिक क्रिया समाज में व्यापक परिवर्तन हेतु प्रयोग में लाई जाती है।
8. प्रमुख सरकारी विभागों और अधिकारियों से निरंतर कार्यात्मक संबंध स्थापित किया जाता है।
9. सामाजिक क्रिया के माध्यम से व्यापक कार्यक्रम निर्धारित किए जाते हैं।
10. सामाजिक क्रिया एक सामूहिक गतिविधि है, जिसके माध्यम से व्यक्ति, समूह या समुदाय के माध्यम से इसे प्रारंभ किया जा सकता है।
11. सामाजिक क्रिया में सदस्यों के बीच आपसी सामंजस्य होता है।
12. सामाजिक क्रिया के माध्यम से नीतियों में परिवर्तन लाया जाता है।

सामाजिक क्रिया के उद्देश्य

1. समाज में किसी व्यापक समस्या के निदान हेतु नीति का निर्माण करना एवं व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करना।
2. समाज में स्वस्थ जनमत तैयार करना।
3. समाज के अनेक क्षेत्रों हेतु स्थानीय, प्रांतीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर किए जा रहे कार्यों को संपादित करना
4. समाज, संस्थाओं और सरकार के मध्य आपसी समझौता कराने का प्रयास करना।
5. समाज के प्रत्येक व्यक्ति तक आवश्यक सूचनाओं को सुलभता के साथ पहुँचाना।
6. समाज के कमजोर वर्गों के लिए आवश्यक सुविधाएँ उपलब्ध कराना।
7. सामाजिक आँकड़ों को एकत्रित करते हुए सूचनाओं का विश्लेषण करना।
8. सामाजिक समस्याओं के प्रति समुदाय में जागरूकता और प्रबोध का विकास करना, और सामुदायिक नेताओं का समर्थन प्राप्त करना
9. समाज कार्य के मूल्यों की मान्यता और सरकारी तथा गैर-सरकारी कार्यक्रमों के विकास एवं सरकार द्वारा समाज कार्य का प्रयोग कराने के लिए समर्थन प्राप्त करना।
10. सामाजिक क्रिया की परिभाषाओं, विशेषताओं एवं उद्देश्योंके आधार पर कहा जा सकता है कि सामाजिक क्रिया समाज में व्याप्त समस्याओं के समाधान करने का एक संगठित रूप है। समूह कार्य में यह प्रक्रिया किस प्रकार से अपनी भूमिका को अदा करती है और किस प्रकार इसमे अंत:संबंध पाया जाता इसे निम्नलिखित तथ्यों के माध्यम से स्पष्ट किया जा सकता है-

उद्देश्यों के आधार पर अंतर्संबंध

समाज कार्य का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति की समस्या का समाधान कर उसे समाज में समायोजन स्थापित करने में सहायता करना है। समाज कार्य की जितनी भी प्रणालियाँ हैं यदि हम उनके समस्त उद्देश्य का अध्ययन करें तो प्रतीत होता है कि इनके उद्देश्य लगभग समान ही है बस इतना अंतर है कि कुछ प्रणालियाँ प्रत्यक्ष रूप से कार्य करती है तो कुछ प्रणालियाँ अप्रत्यक्ष रूप से सेवार्थी की सहायता करती है। समूह कार्य प्रणाली के माध्यम से कार्यकर्ता द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि किस प्रकार समूह का निर्माण कर व्यक्ति के शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक स्तर पर, किस प्रकार उसका विकास किया जाए जिससे कि व्यक्ति अपनी समस्या के समाधान हेतु स्वयं सक्षम बन जाए और उसे पुनः किसी की आवश्यकता न पडे, इस प्रक्रिया में कार्यकर्ता का केंद्रबिंदु समूह होता है। सामाजिक क्रिया प्रणाली के उद्देश्य की ओर यदि हम ध्यान डालें तो यही प्रतीत होता है कि इसका उद्देश्य सामाजिक समस्याओं के प्रति समुदाय में जागरूकता और प्रबोध का विकास करना और सामुदायिक नेताओं का समर्थन प्राप्त करना है और साथ ही साथ समाज में किसी व्यापक समस्या के निदान हेतु नीति का निर्माण करना एवं व्यापक दृष्टिकोण प्रदान करना है। सामाजिक क्रिया और समूह कार्य के उद्देश्यों में समानता ही नज़र आती है दोनों का कार्य समस्याग्रस्त विषय को लेकर समस्या समाधान का प्रयास किया जाता है तो इस प्रकार से कहा जा सकता है कि समूह कार्य और सामाजिक क्रिया में उद्देश्यों के आधार पर अंतर्संबंध पाया जाता है।

चरणों के आधार पर अंतर्संबंध

समाज कार्य की समस्त प्रणालियों के अपने चरण होते हैं, जिनकी सहायता से ही वह किसी कार्य को क्रमबद्ध रूप से क्रियान्वित कर पाते हैं। यही चरण एक मार्ग प्रशस्त करते हैं, कि किस प्रकार से कार्य किया जाए और लक्ष्यों की प्राप्ति की जाए। सामाजिक क्रिया के कुछ महत्त्वपूर्ण चरण होते हैं, जो इस क्रिया विधि के लक्ष्य प्राप्ति हेतु मार्गदर्शक का कार्य करते हैं, जैसे- प्रथम चरण के माध्यम से सर्वप्रथम सामाजिक क्रिया में समस्या की पहचान की जाती है। इस चरण के माध्यम से यह समझने का प्रयास किया जाता है कि समस्या का प्रकार क्या है और इसकी प्रकृति क्या है? इस संदर्भ में जानकारी एकत्रित की जाती है। सामाजिक क्रिया के दूसरे चरण में संरचनात्मक कार्यात्मक विश्लेषण किया जाता है। इस चरण के माध्यम से यह पता लगाने का प्रयास किया जाता है कि समस्या का जन्म कहाँ से हुआ है, अतः इसका मूल क्या है ? इसके साथ-साथ यह भी प्रयास किया जाता है कि समुदाय की संरचना कैसी है? तीसरे चरण के माध्यम से कार्यकर्ताओं के द्वारा रणनीतियाँ को बनाया जाता है । ये रणनीतियाँ इस प्रकार तैयार की जाती है जिससे कि समस्त जनसमुदाय उसमें अपनी सहभागिता दे सके। चौथे चरण में रणनीति बनाने के पश्चात समस्त जनसमुदाय की सहभागिता पर बल दिया जाता है, क्योंकि यह एक सहभागी प्रक्रिया है और बिना जनसमुदाय के इसे नहीं किया जाता। पाँचवें चरण में योजना का निर्माण किया जाता है कि किस प्रकार से अब आगे की गतिविधियों को संचालित किया जाएगा जिसमें लागत, समय, परिणाम इत्यादि पर गहन अध्ययन किया जाता है। छठवें चरण में जब पाँचवे चरण के माध्यम से योजना का निर्माण किया जाता है उसके पश्चात अब इस चरण द्वारा जो कार्य योजना बनाई गई थी, उसी प्रकार से उसका कार्यान्वयन किया जाता है और यह ध्यान दिया जाता है कि इसमें समाज का प्रत्येक सदस्य भागीदार हो। अंतिम चरण जिसे हम मूल्यांकन का चरण भी कहते हैं इस चरण के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया जाता है कि संपूर्ण क्रिया विधि में क्या सकारात्मक और नकारात्मक पक्ष रहे हैं। सकारात्मक पक्ष को आगे बढाया जाता है और नकारात्मक पक्ष की खामियों को दूर करने काप्रयास किया जाता है। समूह कार्य के चरणों में, प्रथम अवस्था या प्राथमिक जिसे हम प्रारंभिक चरण भी कहते हैं इस चरण के माध्यम से योजना और समूह निर्माण (आरंभ चरण) किया जाता है जिसमें योजना और समूह निर्माण के आरंभिक चरण में कार्यकर्ता द्वारा समूह निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया जाता है और समूह निर्माण के लिए पहल की जाती है। जब समूह कार्यकर्ता समूह निर्माण की आवश्यकता की पहचान कर लेता है तो वह समूह निर्माण की योजना तैयार करता है। इसके लिए कार्यकर्ता को अपनी

व्यावसायिक पृष्ठभूमि के साथ कुछ प्रश्नों के उत्तर अत्यंत ही सावधानीपूर्वक और क्रमबद्ध ढंग से देनेपड़ते हैं। प्रथम अवस्था में समूह निर्माण और योजना के निर्माण पश्चात द्वितीय अवस्था में जिसे समूह का आरंभिक सत्र भी कहा जाता है। इस सत्र में पर्यवेक्षण का कार्य किया जाता है। पर्यवेक्षण कार्य के माध्यम से समूह सदस्यों में दिशा निर्धारण का कार्य किया जाता है। यह चरण सदस्यों में संबद्धता और एकात्मकता की भावना विकसित करने की शुरूआत करता है। तृतीय अवस्था निष्पांदन(कार्य चरण)- प्रथम एवं द्वितीय चरण को पूर्ण कर लेने के पश्चात अब समूह परिपक्व स्थिति में नज़र आने लगता है और समूह अपने क्रियाशील चरणों की ओर बढने लगता है। अतः तृतीय चरण में वह निष्पादन कार्य आरंभ कर देता है जिसे कार्य चरण भी कहा जा है और निम्न गतिविधियों के माध्यम से चरण को पूर्ण करता है। चतुर्थ अवस्था मूल्यांकन(विश्लेषण चरण)-मूल्यांकन एक सतत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समूह के प्रत्येक पहलू का अध्ययन किया जाता है मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए हैमिल्टन, गार्डन (1952) ने कहा है कि , मूल्यांकन निर्णय करने वाली एक प्रक्रिया है जो निश्चित करती है कि व्यक्ति, कार्यकर्ता तथा संस्था का क्या उत्तरदायित्व है, उनको पूरा करने की कितनी क्षमता है, क्या-क्या शक्तियाँ है, कौन-से कार्य रचनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं तथा कौन-से कार्य समस्या को जटिल बनाते हैं। पंचम अवस्था समापन होती है (अंतिम चरण)। इस चरण के माध्यम से समूह का लक्ष्य पूर्ण होने पर इसे समापन कर दिया जाता है । इस प्रकार से हम देखते हैं तो समूह कार्य एवं सामाजिक क्रिया के चरणों में हमें अत्यधिक समानता के साथ-साथ अंतसंबंध भी दिखाई पडता है।

सिद्धांत के आधार पर समानता एवं अंतर्संबंध

समाज कार्य की संपूर्ण प्रणालियों के सिद्धांत भी लगभग समान होते हैं जिनका प्रयोग कर कार्यकर्ता समस्याओं के समाधान का प्रयास करता है । चाहे वह वैयक्तिक कार्य के सिद्धांत हो या समूह कार्य के या फिर समुदाय संगठन के इन सब प्रणालियों में सिद्वांत का अपना विशेष महत्त्व होता है । समूह कार्य और सामाजिक क्रिया में सिद्धांतों के आधार पर यदि अध्ययन किया जाए तो सामाजिक क्रिया में मुख्य रूप से विश्वसनीयता का सिद्वांत सर्वप्रथम प्रयोग में लाया जाता है । इस सिद्धांत के उपयोग से कार्यकर्ता समूह एवं समुदाय के मध्य विश्वास पैदा करता है । दूसरा सिद्धांत होता है जिसे हम स्वीकृति के सिद्धांत के नाम से जानते हैं। इस सिद्धांत के माध्यम से कार्यकर्ता द्वारा प्रयास किया जाता है कि वह समूह एवं समुदाय के सदस्य जैसे है वैसे ही उन्हें स्वीकार करें और समूह एवं समुदाय भी कार्यकर्ता के प्रति विश्वास रखे। इस प्रकार स्वस्थ जनमत को तैयार किया जा सकता है। तीसरे सिद्धांत के रूप में हम वैधता के सिद्धांत को लेते हैं, इस सिद्धांत के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि जिस समूह एवं समुदाय के लिए जिन कार्यक्रमों का कार्यान्वयन किया जा रहा है उनको विश्वास हो कि कार्यक्रम नैतिक एवं सामाजिक उत्थान के लिए उचित है। संवेगात्मक सिद्धांत के माध्यम से कार्यकर्ता द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि जनसमुदाय भावात्मक रूप से कार्यक्रम के साथ जुड़े। बहुआयामी रणनीति के सिद्धांत के माध्यम से संपूर्ण क्रिया की रणनीतियों को तैयार किया जाता है एवं मूल्यांकन के सिद्धांत का प्रयोग कर कार्यक्रम की सफलता एवं असफलता को ज्ञात किया जाता है । इस प्रकार सामाजिक क्रिया में सिद्धांत का परिपालन किया जाता है । समूह कार्य के भी कुछ विशिष्ट सिद्धांत होते हैं जिनका उपयोग कर समूह कार्य की संपूर्ण प्रक्रिया को किया जाता है ये सिद्धांत हैं।

नियोजन का सिद्धांत:- नियोजन किसी भी कार्य को करने का एक सुव्यवस्थित और सुनियोजित तरीका है जिससे लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकें। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा संभावित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपरेखा तैयार की जाती है जिससे भविष्य की परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुरूप नियंत्रित, निर्देशिष्त तथा संशोधित किया जा सके । लक्ष्यों की स्पष्टता का सिद्धांत के माध्यम से समूह के लक्ष्यों को स्पष्ट किया जाता है। सोद्देश्य संबंध के सिद्धांत के माध्यम से समूह के सदस्य निश्चित किए जाए तथा उन्हीं के आधार पर संबंधों की स्थापना एवं विश्लेषण हों। निरंतर

व्यक्तिकरण का सिद्धांत सामाजिक समूह कार्य में एक महत्त्वपूर्ण सिद्वांत के रूप में जाना जाता है जिसके माध्यम से समूह कार्यकर्ता ऐसे समूह के सदस्यों की सहायता करता है, जो सदस्य समूह में सामंजस्य स्थाफ्ति नहीं कर सकते हैं। उन्हें समूह के सदस्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रेरित करता हैं। इसके अलावा समूह सदस्यों की विभिन्न इच्छाओं और आवश्यकताओं को भी वह निरंतर व्यक्तिकरण के माध्यम से जान सकता है। निर्देशित सामूहिक

अंतःक्रिया का सिद्धांतः- संपूर्ण समूह कार्य प्रक्रिया सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से नियोजित की जाने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से ही संपूर्ण कार्य संपंन्नकिए जाते हैं। यह सामूहिक प्रक्रिया कार्यकर्ता और समूह सदस्यों के मध्य होने वाली अंतःक्रियाओं पर ही निर्भर करती है। सदस्यों में आपसी संबंध सकारात्मक रूप में हो तथा अंतःक्रिया का प्रभाव एक ही दिशा में हो अन्यथा नकारात्मक अंतःक्रिया समूह कार्य प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है। **जनतंत्रीय सामूहिक आत्मनिश्चयीकरण का सिद्धांतः-** जनतंत्रीय सामूहिक क्रिया में कार्यकर्ता समूह का, समूह के लिए, समूह के द्वारा कार्य करने का कार्यकर्ता द्वारा बल प्रदान किया जाता है। लोचदार कार्यात्मक संगठन के सिद्धांत के माध्यम से समूह कार्यकर्ता इस प्रकार का प्रयास करता है कि किसी भी गतिविधि को इतना सरल व आसान बनाया जाए जिससे प्रत्येक सदस्य गतिविधियों का हिस्सा बन जाए और समय व आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में परिवर्तन संभव हो सके। प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों का सिद्धांत प्रत्येक स्तर पर समूह को कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करता है, जिससे कि प्रत्येक सदस्य कार्यक्रम का हिस्सा बन जाए और सदस्यों में आत्मनिर्णय की क्षमता का विकास हो। संपूर्ण प्रक्रिया प्रगतिशील समूह एवं कार्यकर्ता की योग्यता पर निर्भर करता है, अतः प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों के सिद्धांत को समूह कार्य में एक विशिष्ट स्थान दिया जाता हैं।

साधनों के उपयोग का सिद्धांतः- साधनों के उपयोग कुशलतापूर्वक करना चाहिए जिससें कि किसी भी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न न हो और साधनों का उचित उपयोग किया जा सके। संस्था एवं संपूर्ण वातावरण और समुदाय मिलकर बहुत से साधन रखते हैं जिनका प्रयोग इस सिद्वांत के माध्यम से किया जाता है। मूल्यांकन का सिद्धांत एक महत्त्वपूर्ण सिद्वांत है जो प्रत्येक प्रणाली में अपनी महती भूमिका को अदा करता है इस सिद्वांत के माध्यम से समूह की अंतःक्रियाओं, समूह की शक्तियों, सदस्यों की कमज़ोरियों, समूह के अनुभव एवं उनकी क्षमताओं का आँकलन किया जाता है। इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाजिक क्रिया एवं समूह कार्य के सिद्वांतों में सिद्धांत पाया जाता है जो कि उनके सिद्धांत से स्फ्ट होता है।

अतः संक्षेप में कहा जाए तो यह प्रतीत होता है कि सामाजिक क्रिया का समूह कार्य के साथ सिद्धांत तो है ही इसके साथ-साथ समाज कार्य की अन्य प्रणालियों के साथ आपस में अंतर्संबंध पाया जाता है और इसी के आधार पर यह एक साथ मिलकर कार्य करती है और समस्याग्रस्त व्यक्ति की समस्या का समाधान प्रस्तुत कर उसे समाज में सामंजस्य स्थापित करना सिखाती है।

4.4 सारांश

समाज कार्य एक व्यवसाय आधारित कार्य विधि बन गया है जिसको एक वैज्ञानिक प्रविधि के साथ किया जाता है। इस कारण से इसमें अनेक प्रविधियाँ, तकनीकें, कुशलताएँ और प्रणालियाँ होती हैं जिनकी सहायता से लक्ष्य आधारित कार्यों को किया जाता है। ये प्रणाली एवं अन्य प्रविधियाँ आपस में किसी-न-किसी रूप में अंतर्संबंध रखती हैं, कहीं इनमें समानताएँ पाई जाती हैं तो कहीं इनके बीच कुछ असमानताएँ भी होती हैं। चाहे वैयक्तिक सेवा कार्य की बात हो या समूह कार्य हो या समुदाय संगठन हो या समाज कल्याण प्रशासन हो या सामाजिक शोध हो या फिर सामाजिक क्रिया हो, इन सबमें आपस में किसी-न-किसी रूप में जुड़ाव होता ही है। वैयक्तिक कार्य प्रणाली जहाँ व्यक्ति (सेवार्थी) की समस्या का समाधान करने में सहायता करती है तो वहीं समूह कार्य समूह के

माध्यम से व्यक्ति की सहायता करने का प्रयास करती है। जिसमें केंद्रबिंदु समूह होता है। सामुदायिक संगठन के माध्यम से समुदाय की समस्या को ज्ञात कर उसे समाधान करने का प्रयास किया जाता है, कहीं-न-कहीं इन सबमें व्यक्ति की ही सहायता किसी-न-किसी रूप में की जाती है। अतः इस प्रकार कहा जा सकता है कि समाज कार्य की ये प्रणालियां आपस में किसी-न-किसी रूप में जुडी हुई हैं और इनका विकास निरंतर समाज के क्षेत्र में किया जाने लगा है, किंतु आज आवश्यकता है कि इन प्रणालियों के विकास एवं विस्तार हेतु सामाजिक कार्यकर्ताओं को एक पहल करनी आवश्यकता होगी जिससे की इन्हें और अधिक बेहतर बनाया जा सके जिनका प्रयोग समाज कार्य के क्षेत्र में ही नही वरन समस्या ग्रस्त प्रत्येक क्षेत्र में किया जाए।

4.5 बोध प्रश्न

1. सामाजिक समूह कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली है इस कथन की पुष्टि कीजिए।
2. सामाजिक समूह कार्य एवं समाज कार्य की अन्य प्रणालियों के साथ किस प्रकार अंतसंबंध रखती है? समझाइए।
3. वैयिक्तिक कार्य प्रणाली और सामाजिक समूह कार्य प्रणाली के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
4. समाज कार्य की अन्य प्रणालियाँ किस प्रकार से एक-दूसरे के साथ जुड़ी हुई है स्पष्टकीजिए।
5. समाज कार्य की सहायक प्रणालियों के साथ समूह कार्य को स्पष्ट कीजिए।

4.6 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. Brown.E.L.(1942)*Social work as a Profession*,New York : russel Sage Foundation,.p.24.
2. रिचमंड ,मेरी (1917). *हाट इज़ सोशल वर्क*. न्यूयोर्क: रसेलसेल फाउंडेशन।
3. पर्लमैन,हेलिन हेरिस,(1957). *सोशल केस वर्क, ए प्रावलम साल्विंग प्रोसेस.* शिकागों: दि यूनिवर्सिटी आफ प्रेस।
4. डनहम, आर्थर, (1947). *एडमिनिस्ट्रेशन आफ सोशल एजेन्सीज*. न्यूयोर्क :सोशल वर्क इयर बुक,ऐसोसिएशन।
5. शास्त्री,राजाराम (1970). *समाज कार्य*. लखनऊ: हिन्दी समिति सूचना विभाग।
6. Millerson,G.,(1964). *The Quality association*. London: Routledge and Kegan Paul Ltd.
7. Richmond, Marry(1922). *What is social case work*. New York :Russell sage Foundation
8. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विशवविद्यालय(2010).*समूहों के साथ कार्य करना.* दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ
9. सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य*. लखनऊ: हिंदी संस्थान।
10. मिश्रा, प्रयागदीन (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य*.लखनऊ : हिंदी संस्थान
11. कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विष्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।
12. तेज, संगीता. पाण्डेय तेजस्कर (2010).*समाज कार्य*.लखनऊ: जुबली एच फाउंडेशन
13. सिंह, ए.एन., सिंह, नीरजा ,संजय,मिश्रा,सुषमा (2012). *सामूहिक कार्य*.हल्दानी : उत्तरायन प्रकाशन

खंड - 2

समूह कार्य सक्रियता

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई 1 समाज समूह कार्य के सिद्धांत एवं प्रारूप

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 सामाजिक समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रमुख सिद्धांत
1.3 सामाजिक समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रारूप (मॉडल)
1.4 सारांश
1.5 बोध प्रश्न
1.6 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

- ❖ समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रमुख सिद्धांतोंका वर्णन सकेंगे।
- ❖ सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न प्रारूपों को वर्गीकृत कर सकेंगे।
- ❖ सामाजिक समूह कार्य की मुख्य विशेषताएँ और प्रमुख क्षेत्रों को रेखांकितकर सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

मानव समाज के इतिहास में सभी देशों एवं युगों में निर्धन, निराश्रित, अपंग, अनाथ, बेरोज़गार, रोगी व्यक्ति रहे हैं तथा ऐसी अनेक समस्याएँ आई जहाँ इन व्यक्तियों को अनेक कठिनाईयों का सामना करना पड़ा है। अतः इन व्यक्तियों की समस्यों का समाधान करने तथा इनके परेशानियों को समझने के लिए आदिकाल से प्रयास किए जा रहे हैं, समाज कार्य की उत्पत्ति इन्हीं प्रयासों के फलस्वरुप हुई है। मानव और समाज पूर्णरूप से एक-दूसरे पर आश्रित है। जिस प्रकार समाज ने मनुष्य को अनेक प्रकार के मानवीय अस्तित्व प्रदान किए वहीं समाज द्वारा अनेक प्रकार की समस्याएँ जैसे बेरोज़गारी आदि समस्याएँ भी व्याप्त है। परंतु आज समाज कार्य के लिए केवल दया, करुणा, प्रेम की भावना ही पर्याप्त नहीं है। आज समाज कार्य ने व्यवसाय का रूप ले लिया है। सामाजिक समूह कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली के रूप में प्रयुक्त किया जाता है समाज कार्य में कुछ सिद्धांतों का पालन किया जाता है, जिनके अभाव में व्यावसायिक समाज कार्य को नहीं किया जा सकता। इसी भाँति समूह कार्य के भी कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत होते हैं जिनका पालन किए बिना कोई भी सामाजिक कार्यकर्ता समूह कार्य प्रक्रिया को संपन्न नहीं कर सकता। सिद्धांतों का पालन कार्य ऐच्छिक नहीं होता, क्योंकि इन सिद्धांतों को प्रयोग में लाए बिना लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इस इकाई में हम सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न सिद्धांतों और प्रारूपों पर चर्चा करेंगे।

1.2 सामाजिक समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले प्रमुख सिद्धांत

सामाजिक सामूहिक कार्य के निम्नलिखित आधारभूत सिद्धांतहैं, जिनके आधार पर समूह कार्य में लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है:-

नियोजन का सिद्धांत

नियोजन किसी भी कार्य को करने का एक सुव्यवस्थित और सुनियोजित तरीका है, जिससे लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा संभावित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपरेखा तैयार की जाती है, जिससे भविष्य के परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुरूप नियंत्रित, निर्देशित तथा संशोधित किया जा सके। समूह का निर्माण हमेशा ही सुनियोजित होना चाहिए। सामूहिक कार्यकर्ता द्वारा सुनियोजित तरीके से समूह निर्माण का कार्य किया जाता है। यदि सामूहिक कार्यकर्ता नियोजित तरीके से कार्य करेगा तो निश्चित ही उसे लक्ष्य प्राप्त होगी। लक्ष्य नियोजन का सिद्धांत लक्ष्य प्राप्ति में अत्यंत ही सहायक होता है। कार्यकर्ता निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से ही कार्य करता है जिससे उसे कार्य करने में आसानी होती है-

- ❖ विकास के लक्ष्यों एवं मूल्यों का निर्धारण करना।
- ❖ परिस्थितियों का विश्लेषण करना।
- ❖ वर्तमान सेवाओं में गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि से पाईजाने वाली कमियों की जानकारी।
- ❖ विशिष्ट उद्देश्यों तथा रणनीतियों का निर्धारण।
- ❖ आगत लक्ष्यों, क्षेत्रों, साधन आदि का निर्धारण।
- ❖ प्रशिक्षण तथा संचार प्रक्रिया की सीमाओं की जानकारी।
- ❖ क्रिया नियोजन तथा कार्यों का दस्तावेजीकरण करने के महत्त्व का ज्ञान होना।
- ❖ कार्य करने हेतु आवश्यक उपकरणों के निर्माण की जानकारी होना।
- ❖ संभावित साधनों-संसाधनों के उपलब्धता की जानकारी।
- ❖ शक्ति के साधनों का निर्धारण।
- ❖ समूह के सदस्यों की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक, भौगोलिक और वर्तमान स्थिति के ज्ञान, अनुभव एवं जीवन स्तर की पहचान करना।

इसके अतिरिक्त समूह कार्यकर्ता को समूह सदस्य संख्या, शक्ति के स्त्रोत, उद्देश्य तथा लक्ष्यों के बीच संतुलन स्थापित हो यह ध्यान रखना चाहिए।

लक्ष्यों की स्पष्टता का सिद्धांत

सामुदायिक कार्यकर्ता के लिए स्पष्ट लक्ष्यों का ज्ञान होना नितांत आवश्यक होता है जिससे वह कार्य को आसानी से कर सके। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कौन-सा सदस्य किस प्रकार का कार्य करेगा, वह क्या कार्य करेगा? कब करेगा? और कैसे करेगा? यह सब कुछ स्पष्ट हो जाता है जिससे प्रत्येक सदस्य को कोई गलतफहमी नहीं होती है कि उसे क्या करना है? यह संपूर्ण क्रिया कार्यमूर्णता के लिए आवश्यक है। लक्ष्यों की स्पष्टता निम्नलिखित कारणों से भी महत्त्वपूर्ण मानी जाती है-

- ❖ लक्ष्य ही कार्यकर्ता को अपने मार्ग में चलने के लिए हमेशा प्रेरित करते रहते हैं तथा हमेशा आगे बढ़ने के लिए उत्साहित करते हैं।
- ❖ लक्ष्यों की स्पष्टता उपलब्ध साधनों का समुचित उपयोग करने पर बल देती है।
- ❖ लक्ष्यों पर ही कार्य निर्भर करते हैं।
- ❖ कार्य का प्रारंभ उसका स्वरूप तथा प्रकृति उद्देश्यों पर निर्भर होने के कारण लक्ष्यों का स्पष्ट होना आवश्यक होता है।
- ❖ लक्ष्य स्पष्ट होने से नियंत्रण एवं निर्देशन दोनों बेहतर रहतेहैं।

- ❖ समूह सदस्यों की भागीदारी यथोचित होती है।
- ❖ मूल्यांकन करने में आसानी होती है।

समूह कार्य में लक्ष्यों की स्पष्टता से कार्यकर्ता के लिए यह जानना अत्यंत आवश्यक होता है कि सामूहिक अनुभव से प्रत्येक सदस्य को क्या प्राप्त करना चाहिए और उनमें किस प्रकार के अनुभव प्राप्त करने की क्षमता है? इससे समूह सदस्यों की शक्तियों एवं कमज़ोरियों को ज्ञात किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि सामूहिक कार्यकर्ता किसी विशेष स्थान पर समूह कार्य द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम चलाना चाहता है तो सर्वप्रथम समूह के सदस्य यह स्वयं अनुभव करें कि वे स्वयं इस दिशा में प्रयत्न करें अन्यथा यह कार्यक्रम सफल नहीं हो पाएगा। जब तक समूह का प्रत्येक सदस्य यह महसूस न कर ले कि यह मेरा काम है न कि दूसरे का, तब तक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस मानसिकता से कार्यों द्वारा लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

सोद्देश्य संबंध का सिद्धांत

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है वह समाज में ही रहकर अपना जीवन-यापन कर सकता है इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर वह संबंधों का निर्माण करता है एवं अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टि संबंध के माध्यम से करता है। अतः प्रत्येक सामाजिक स्थिति मे संबंधों का विशेष महत्त्व है। सामूहिक कार्य में भी कार्यकर्ता तथा समूह के बीच संबंधों का अत्यंत महत्त्व है लेकिन यह संबंध उद्देश्यों के आधार पर होना चाहिए जिससे आगे किसी भी प्रकार का कोई मतभेद कार्यकर्ता और सदस्यों के बीच उत्पन्न ना हो। समूह के सदस्य निश्चित किए जाएँ तथा उन्हीं के आधार पर संबंधों की स्थापना एवं विश्लेषण हो। कार्यकर्ताओं के लिए यह भी ध्यान देने वाली बात यह है कि कार्यकर्ता एवं समूह के बीच संबंध तभी घनिष्ठ होंगे जब कार्यकर्ता समूह सदस्यों को जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करे। सामान्यतः सोद्देश्य संबंध के निम्नलिखित लक्षण होते हैं-

- ❖ सर्वप्रथम कार्यकर्ता को समूह द्वारा स्वीकार किया जाए।
- ❖ समूह को कार्यकर्ता द्वारा स्वीकार किया जाए।
- ❖ स्नेह एवं आत्मसंचार का पूर्ण भाव व्याप्त हो।
- ❖ समस्या सुलझाने की इच्छा का विकास हो।
- ❖ समूह सदस्यों का भागीदारी तथा कार्यकर्ता द्वारा व्यावसायिक ज्ञान का उपयोग।
- ❖ सदस्यों की इच्छा को सर्वोपरि माना जाए एवं उन्हें आत्मनिश्चय का अधिकार हो।
- ❖ सदस्यों को आत्म निर्णय का अधिकार हो।
- ❖ सामूहिक रूचि तथा भागीदारी में निरंतर वृद्धि हो।
- ❖ कार्यकर्ता द्वारा सदस्यों की बातों एवं शिकायतों को ध्यानपूर्वक सुना जाए।
- ❖ कार्यकर्ता को सदस्यों की सामाजिक, सांस्कृतिक स्थिति का ज्ञान हो।
- ❖ कार्यकर्ता को उसी बौद्धिक स्थिति के आधार पर बात करना चाहिए जिस बौद्धिक स्थिति का समूह-सदस्य हो।

निरंतर व्यक्तिकरण का सिद्धांत

प्रत्येक व्यक्ति अपने अलग-अलग पर्यावरण, ज्ञान एवं वंशानुक्रम से भिन्न होता है। प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग विशिष्टता होती है अतः कार्यकर्ता का दायित्त्व होता है कि वह प्रत्येक सदस्य की ओर अपना ध्यान रखें जिससे समूह अपने लक्ष्य पर अग्रसर रहे। सामाजिक समूह कार्य में निरंतर व्यक्तिकरण का सिद्धांत एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में जाना जाता है जिसके माध्यम से समूह कार्यकर्ता ऐसे समूह के सदस्यों की सहायता करता है, जो सदस्य समूह में सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकते हैं उन्हें समूह के सदस्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के

लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा समूह सदस्यों की विभिन्न इच्छाओं और आवश्यकताओं को भी वहनिरंतर व्यक्तिकरण के माध्यम से जान सकता है। वैयक्तीकरण करने के लिए कार्यकर्ता में निम्नलिखित लक्षणों का होना अत्यंत आवश्यक है-

- ❖ अभिमत तथा पूर्वाग्रहों से स्वतंत्र होना चाहिए।
- ❖ मानव-व्यवहार का ज्ञान होना चाहिए।
- ❖ सुनने तथा अवलोकन करने की क्षमता होनी चाहिए।
- ❖ समूह सदस्यों की भावनाओं को समझने की योग्यता होनी चाहिए।
- ❖ सदस्यों में आत्मीयता की भावना उत्पन्न करने की योग्यता होनी चाहिए।
- ❖ समस्या के अध्ययन, निदान तथा चिकित्सा में समूह सदस्यों का सहयोग प्राप्त करने की योग्यता होनी चाहिए।

कार्यकर्ता व्यक्तिकरण के माध्यम से सामूहिक सदस्यों की कठिनाइयों को ध्यान में रखता है और उनके अनुसार कार्यक्रम आयोजित करता है जिससे कि प्रत्येक सदस्य कार्यक्रम का हिस्सा बन सके।

निर्देषित सामूहिक अंत:क्रिया का सिद्धांत

संपूर्णसमूह कार्य प्रक्रिया सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से नियोजित की जाने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से संपूर्ण कार्य संपन्न किए जाते हैं। यह सामूहिक प्रक्रिया कार्यकर्ता और समूह सदस्यों के मध्य होने वाली अंत:क्रियाओं पर ही निर्भर करती है। इनअंत: क्रियाओं का स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि समूह के सदस्य तथा सामूहिक कार्यकर्ता की इच्छाएँ, क्षमताएँ तथा कार्य के ढंग इत्यादि किस प्रकार के हैं? जहाँ कहीं भी दो पक्ष विद्यमान होते हैं, अंत:क्रियाएँ होती ही है। यदि ये अंत: क्रियाएँ निर्देशित न हो अर्थात इनकी दिशा सही न हो तो सामूहिक उपलब्धियों को प्राप्त नही किया जा सकेगा। इसलिए कार्यकर्ता का कार्य रहता है कि वह किस प्रकार समूह सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के मध्य होने वालीअंत:क्रियाओं को सही दिशा प्रदान करे, क्योंकि समूह के कार्य एवं उद्देश्य समूह में होने वालीअंत:क्रिया का स्वरूप तथा इनको दिशा समूह के सदस्यों तथा कार्यकर्ताओं की क्षमताओं, इच्छाओं, आशाओं तथा कार्य करने के ढंग पर निर्भर रहती है। अत: कार्यकर्ताओं को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि समूह के सदस्यों मे आपसी संबंध सकारात्मक रूप में हो तथाअंत:क्रिया का प्रभाव एक ही दिशा में हो अन्यथा नकारात्मक अंत:क्रिया समूह कार्य प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

जनतंत्रीय सामूहिक आत्मनिश्चयीकरण का सिद्धांत

जनतंत्रीय सामूहिक क्रिया में कार्यकर्ता समूह का, समूह के लिए, समूह द्वारा कार्य करने पर कार्यकर्ता द्वारा बल प्रदान किया जाता है। कार्यकर्ता को इस आधार पर तैयार करना चाहिए कि वह स्वयं अपने निर्णय लेने में सक्षम हो सके, अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुरूप कार्य कर सकेयह सिद्धांत इस तथ्य पर आधारित होता है कि समूह तथा व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व ग्रहण करने के अवसर उपलब्ध कराए जाएँ। लेकिन यह भी निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है कि उत्तरदायित्व किस प्रकार का होगा और किन आधारों में दिया जाएगा यह निर्धारित करना कार्यकर्ता के लिए आवश्यक होगा। सामूहिक कार्य प्रक्रिया में समूह के प्रथम चरण से लेकर समापन तक संपूर्ण प्रक्रिया मेंजो निर्णय लिए जाते हैं वे जनतंत्रीय प्रणाली के आधार पर ही सुनिश्चित किए जाते हैं। संपूर्ण प्रक्रिया में जो निर्णय लिए जाते हैं वह सामूहिकता की भावना को ध्यान में रखकर ही लिए जाते हैं। समूह का प्रत्येक सदस्य इसमें बराबर का भागीदार होता है। वे स्वयं यह निर्धारित करते है कि किस प्रकार कार्य करना है और क्या निर्णय लेना है, कार्यकर्ता केवल सही दिशा देने का कार्य करता है। इस प्रक्रिया के संदर्भ में प्रो. राजाराम शास्त्री ने कहा था कि – 'समूह अथवा समूह के सदस्य स्वयं से, स्वयं के बारे में और स्वयं के लिए जो कुछ भी, जब भी

करें, वह इस प्रकार होना चाहिए कि उनमें से प्रत्येक की भावना को आघात पहुँचाते हुए तथा उन्नत समाजगत स्वीकृति मूल्यों तथा प्रेम, सौहार्द, शालीनता, सज्जनता से युक्त होकर करें, अर्थात आपस में शिष्ट आचार-विचार के माध्यम से प्रकृतिगत विकृतियों के दमन और सद्वृत्तियों के विकास द्वारा करें। जब कार्य में भी इस अपेक्षित स्थिति में कमजोरी के लक्षण दिखें तो सामूहिक कार्यकर्ता को भी कथित जनतांत्रिक तरीकों से ही समय सेवार्थियों अथवा सदस्यों के ज्ञान-धरातल को उन्नत कर या परिवेशगत परिमार्जन द्वारा अंतःक्रियाओं की स्थिति एवं स्वरूप को ऐसी दिशा देनी चाहिए जो अधिकाधिक अधिकारी हों।

लोचदार कार्यात्मक संगठन का सिद्धांत

लोचदार कार्यात्मक संगठन सिद्धांत के द्वारा समूह कार्यकर्ता इस प्रकार का प्रयास करता है किकिसी भी गतिविधि को इतना सरल व आसान बनाया जाए, जिससे प्रत्येक सदस्य गतिविधियों का हिस्सा बन जाए और समय व आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में परिवर्तन संभव हो सके। समूह कार्य में समूह का निर्माण कुछ विशिष्ट उद्देश्यों के साथ किया जाता है। इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुछ औपचारिक संगठनों का निर्माण किया जाता है, क्योंकि इन्हीं औपचारिक संगठनों के माध्यम से समूह सदस्यों की शक्तियाँएक दिशा में प्रवाहित होती हैं। साथ-ही-साथ सामूहिक जीवन में भी स्थायित्व आता है। कुछ समूहों में भिन्नता भी होती है। समूहों में समयानुसार आवश्यकताएँ बदलती रहती है तथा नवीन इच्छाओं का भी जन्म होता हैअतः समूह संगठन की रचना में लचीलापन होना अत्यंत ही आवश्यक होता है।

प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों का सिद्धांत

समूह कार्य एक प्रगतिशील प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया बिना रचनात्मक कार्यक्रमों के संभव नहीं हो पाती है। जब समूह कार्य प्रक्रिया को प्रारंभ किया जाता है और उसमें कार्यक्रमों को प्रारंभ किया जाता है तो ध्यान देने वाली बात यह होती है कि कार्यक्रम इस प्रकार का हो जिसमें समस्त रुचियाँ, आवश्यकताएँ, अनुभव, निपुणता तथा दक्षता होती जाए जैसे-जैसे इन शक्तियों में विकास होता जाएगा वैसे-वैसे कार्यक्रमों में भी परिवर्तन किया जाएगा। प्रत्येक स्तर पर समूह को कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया जाता है जिससे कि प्रत्येक सदस्य कार्यक्रम का हिस्सा बन जाए और सदस्यों में आत्मनिर्णय की क्षमता का विकास हो संपूर्ण प्रक्रिया प्रगतिशील समूह एवं कार्यकर्ता की योग्यता पर निर्भर करता है। अतः प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों के सिद्धांत को समूह कार्य में एक विशिष्ट स्थान दिया जाता है।

साधनों के उपयोग का सिद्धांत

किसी भी प्रक्रिया में साधनों का उपयोग एक सामाजिक कार्यकर्ता के लिए अत्यंत ही आवश्यक होता है। इस प्रकिया द्वारा कार्यकर्ता यह अनुभव प्राप्त करता है कि किसी भी समूह या सामुदायिक प्रक्रिया में उपलब्ध साधनों का उपयोग कैसे किया जाए, जिससे लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सके। साधनों का उपयोग कुशलता पूर्वक करना चाहिए, जिससें किसी भी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न न हो और साधनों का उचित उपयोग किया जा सके। संस्था एवं संपूर्ण वातावरण और समुदाय मिलकर बहुत-से साधन रखते हैं। सामाजिक सामूहिक कार्य में संस्था तथा समुदाय के इन साधनों का प्रयोग व्यक्तियों और समस्त समूह के हित के लिए किया जाता है। कार्यकर्ता की भूमिका केवल समूह में ही नहीं होती वरन वह समूह से बाहर भी उतनी ही भूमिका को अदा करता है वह समुदाय से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी को एकत्रित करता है तथा समस्त सदस्यों को वह जानकारी साझा करता है, जिससे वह एक प्रकार से मध्यस्थता की भूमिका भी अदा करता है और आवश्यकता पड़ने पर समूह को उपलब्ध साधनों के उपयोग के लिए प्रेरित भी करता है।

मूल्यांकन का सिद्धांत

मूल्यांकन एक सतत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया कार्य प्रारंभ होने के साथ ही प्रारंभ हो जाती है। इस प्रक्रिया द्वारा यह तय किया जाता है कि कार्य में कितनी सफलता प्राप्त हुई है और कार्य के दौरान क्या

कमियाँ रह गई हैं जिसे कार्यकर्ता द्वारा दूर करने का प्रयास किया जाना है। यह एक निर्णय करने वाली प्रक्रिया भी है, जो निश्चित करती है कि समूह कार्यकर्ता तथा संस्था का क्या उत्तरदायित्व है, उनको पूरा करने की कितनी क्षमता है, क्या-क्या शक्तियाँ है तथा क्या-क्या कमजोरियाँ हैं, कौन-कौन से कार्य रचनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं। मूल्यांकन के द्वारा समूह की अंतःक्रियाओं, समूह की शक्तियों, सदस्यों की कमज़ोरियों, समूह के अनुभव एवं उनकी क्षमताओं काआँकलन किया जाता है। समूह कार्यकर्ता निम्न लिखित तीन स्थितियों का मूल्यांकन करता है -

- ❖ कार्यक्रम का मूल्यांकन
- ❖ सदस्यों की भागीदारी का तथा अनुभव का मूल्यांकन
- ❖ कार्यकर्ता द्वारा स्वयं अपनी भूमिका का मूल्यांकन।

उपर्युक्त समूह कार्य के सिद्धांत समूह कार्य को सरलतापूर्वक संपन्न करने में कार्यकर्ता की सहायता करते हैं जिससे समूह कार्य प्रक्रिया को सरलतापूर्वक संपन्न किया जा सकता है। ये सिद्धांत समूह कार्यकर्ता को अनुकूलदिशा प्रदान करते हैं। ये कोई स्थिर सिद्धांत नहीं है वरन आवश्यकतानुसार परिवर्तनशील भी है अनुभवों, ज्ञान निपुणता तथा प्रविधियों के साथ इनमें बदलाव होते रहते हैं। परंतु यह वे साधन हैं जिनका उपयोग कर कार्यकर्ता लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से कर सकता है।

1.3 सामाजिक समूह कार्य में किए जाने वाले प्रारूप (मॉडल)

शुरुआती दिनों में समूह कार्य का प्रयोग केवल परंपरागत विचार से निवारण-रोकथाम के लिए किया जाता था किंतु आज समूह कार्य का दायरा अत्यंत विस्तृत हो गया है और यह समाज के प्रत्येक समूह समस्याग्रस्त क्षेत्रों में कार्य करने लगा है। अनेक विद्वानों ने समूह कार्य करने की अपनी अलग-अलग प्रविधियों को बनाया है और नए-नए सिद्धांतों के साथ-साथ नए-नए प्रारूपों का भी निर्माण किया है, जिससे समूह कार्य को वैज्ञानिक तरीके से किया जा सके। अनेक परंपरागत और समकालीन प्रारूप हैं जो निरंतर समूह कार्य में प्रयुक्त किए गए है किंतु आज जिन महत्त्वपूर्ण प्रारूपों का समूह कार्य अभ्यास में प्रयोग किया जाता है उन प्रारूपों का विस्तृत उल्लेख किया जा रहा है।

पापेल और रॉथमैन (1966) ने तीन प्रमुख प्रतिरूपों को प्रतिपादित किया है। सामाजिक लक्ष्य प्रारूप, उपचारी प्रारूप और पारस्परिक प्रारूप। यह समाज समूह कार्य परंपरा के प्रमुख प्रतिरूप हैं।

सामाजिक लक्ष्य प्रारूप (The Social goal model)

सामाजिक लक्ष्य प्रारूप का उल्लेख क्वायले, केसर, फिलिप्स, कोनोप्का, कोहेन, मिलर, जिन्सवर्ग तथा क्लीन के लेखों में किया गया है। इन उल्लेखों में इस प्रारूप को मुख्यतः दो प्रत्ययों में बांटा गया है- प्रथम सामाजिक चेतना प्रत्यय (Social consciousness)और दूसरा सामाजिक उत्तरदायित्व प्रत्यय (Social Responsibility) सामूहिक कार्य का मुख्य उद्देश्य नागरिकों को ज्ञानवान, उत्तरदायित्वपूर्ण एवं दक्षतापूर्ण बनाना है। इस प्रारूप का यह कहना है कि सामाजिक क्रियाओं तथा व्यक्ति के मनोवैज्ञानिक स्वास्थ्य में एकरूपता होती है। प्रत्येक व्यक्ति समाज की वर्तमान जीवनधारा में कुछ-न-कुछ योगदान करने की क्षमता रखता है। अतः इस प्रारूप का विश्वास है कि उसकों अपने सामाजिक योगदान के लिए अवसरों की उपलब्धि तथा सम्प्रेरक तत्वों की आवश्यकता होती है। सामाजिक भागीकरण चिकित्सात्मक रूप में इसी प्रारूप के अंतर्गत किया जाती हैं। इस प्रारूप के द्वारा कार्यकर्ता को प्रभावी एवं महत्वपूर्ण व्यक्ति माना गया है जो कि समूह कार्य में अपना विशेष योगदान दे सकता है क्योंकि परस्पर घनिष्ठ संबंधों के आधार पर ही सामाजिक चेतना तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित होती

हैं। संयुक्त राज्य अमेरिका में 1930 के दशक में हुए आश्रय सदन आंदोलन, सामाजिक आंदोलन, मजदूर यूनियन आंदोलन और महिलाओं के आंदोलन सामाजिक लक्ष्य प्रारूप के स्रोत हैं(सुलीवेन-ईटीएल, 2003)। यह समुदाय के सदस्यों को सामाजिक मुद्दों के समाधान करने के कार्यों में सहायता करता हैतथा समाज के दबे-कुचले लोगों के लिए सामाजिक परिवर्तन लाने के बारे में सहयोग प्रदान करता है। यह प्रतिरूप सामाजिक मूल्यों को स्थापित करने के लिए विशेष रूप से बल देता है। कोहेन और मुलेंद्र (1999) दावे के साथ कहते हैं कि सामाजिक लक्ष्य प्रतिरूप को हाल के साहित्य में सामाजिक क्रिया समूह प्रतिरूप के रूप समझा जाता है। समूह कार्य में संस्था का महत्वपूर्ण स्थान होता है, क्योंकि संस्था एक ऐसा माध्यम होता है जो कि स्थानीय स्तर पर व्यक्तियों की सहायता करता है। अतः इसी आधार पर यह लोगों में सामाजिक चेतना जाग्रित करने का भी प्रयास आसानी से कर सकता है। प्रारूप द्वारा सामुदायिक स्तर पर सामूहिक कार्य की सेवाओं को भी उपयोग में लाया जाता हैं। सामुदायिक अध्ययन को करने के पश्चात यह सामाजिक क्रिया का भी सूत्रपात करता है । इस प्रारूप का मुख्य उद्देश्यों समाज में परिवर्तन लाना है।

चिकित्सा संबंधी प्रारूप(The climical model)

चिकित्सा संबंधी प्रारूप का विकास रेडेल् कोनोप्का, स्लोअन, फिशर, तथा गैन्टनर के कार्यों से हुआ । लेकिन इस प्रारूप का व्यवस्थित रूप राबर्ट विन्टर ने दिया । सामाजिक सामूहिक कार्यकर्ता का यह दायित्व होता है कि वह वैयक्तिक एवं समूह की समस्याओं एवं आवश्यकताओं को समझे और उचित प्रकार सेउसका समाधान निकालने का प्रयास करे। इस हेतु कार्यकर्ता को व्यावसायिक समाज कार्य के दौरान अनेक तकनीकी कुशलताओं से अवगत होना होता है जिससे वह अभ्यास के दौरान प्रत्येक समस्याओं का सामना करने के लिए सक्षम बन जाएं । चिकित्सा संबंधी प्रारूपक्लीनिकल प्रारूप जैसा ही है, जिसमें समूह में समायोजन स्थापित न कर सकने वाले व्यक्ति को समायोजन करना सिखाया जाता है। समूह को एक पत्र के रूप में उपयोग में लाया जाता है। इस प्रकार का समूह पहले से ही निश्चित होता है तथा कार्यकर्ता अपने कार्यक्रमों के माध्यम से उपचारात्मक कार्य करता है । इस प्रारूप का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति के मन मस्तिष्क में उत्पन्न विकारों को शांत करना एवं उन्हें मुख्यधारा में वापस लाना है। इसमें समूह कार्यकर्ता अपने अनुभवों कुशलताओं और तकनीकी के माध्यम से विभिन्न क्रियाकलापों द्वारा समूह को निर्देशित करता है।

- ❖ इसमें कार्यकर्ता मध्यस्थता की भूमिका निभाता है और समूह एवं व्यक्ति की आवश्यकताओं का निर्धारण करता है।
- ❖ समूह कार्यकर्ता एक प्रवक्ता के रूप में कार्य करता है और वह समाज के मूल्यों के अनुरूप क्रियाओं को निर्देशित करता है।
- ❖ वह एक प्रेरक के रूप में कार्य करता है साथ ही साथ समूह के लक्ष्यों एवं उद्देश्यों के निर्धारण में सहायता करता है।
- ❖ वह एक सहायक के रूप में कार्य करता है और लक्ष्य प्राप्ति हेतु समूह का मार्ग प्रशस्तकरता है।
- ❖ इस प्रकार इस प्रारूप का प्रयोग कर चिकित्सीय संस्थाएँ और कार्यकर्ता व्यक्ति की समस्या को बेहतर तरीके से समझकर उसका समाधान प्रस्तुत कर सकता है।

परस्पर आदान-प्रदान का प्रारूप (The Reciprocal model)

परस्पर आदान-प्रदान प्रारूप का मुख्य बिंदु व्यक्ति और समाज दोनों होते हैं। इस आधार पर यह कहा जा सकता है कि यह प्रारूप सामाजिक लक्ष्य प्रारूप और चिकित्सीय संबंधी प्रारूप दोनों पर एक ही समय में अपनी प्रमुख चिंताओं व संबंधों को इंगित करता हैफैटाउट, 1992)। पापेल तथा रोथमैन (1966) के अनुसार, इस प्रतिरूप का मुख्य उद्देश्य आपसी सहायता प्रणाली को स्थापित करना है । हम जानते हैं कि समूह कार्य समाज कार्य की

प्राथमिक प्रणाली के रूप में जाना जाता है जिसके द्वारा वह व्यक्ति और समूह की सहायता करता है। यह प्रारूप मुख्यतः इसी आधार पर कार्य करता है जिससे वह व्यक्ति तथा समूह दोनोंके लिए समान रूप से सहायक हो। समूह कार्यकर्ता की भूमिका को स्कवार्ट ने निम्नलिखित रूप से विभक्त किया है-

- ❖ सेवार्थी की पृष्ठभूमि को ढूँढ़ना जहाँ पर सेवार्थी की अपनी आवश्यकताओं काप्रत्यक्षीकरण तथा सामाजिक भागीदारी दोनों में समानता हो।
- ❖ सामान्य हित में बाधक समस्याओं को ढूँढ़ना।
- ❖ दृष्टिकोण में परिवर्तन लाना।
- ❖ आवश्यकताओं को परिभाषित करना तथा सीमा का निर्धारण करना, जिसमें सेवार्थी-कार्यकर्ता

व्यवस्था कार्य कर रही है।

चिंतन प्रारूप अथवा ध्यान प्रारूप

चिंतन प्रारूप अथवा ध्यान प्रारूप सन 1961 में प्रकाश में आता है, जिसका कार्य खुली व्यवस्था सिद्धांत है। मानवीय मनोविज्ञान एवं इससे संबंधित प्रमुख पक्षों पर यह प्रारूप प्रकाश डालता है। इस प्रारूप की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं-

- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और यह समाज में ही रहकर अपना जीवन-यापन करता है। अतः इसकी आवश्यकता की पूर्ति समाज में रहकर ही संभव है इसी कारण यह समाज एक दूसरे पर आश्रित है और इसकी आवश्यकताओं में हम एकदूसरे को पूरक के रूपमें देखते हैं और जब इस संरचित व्यवस्था में कोई बाहरी शक्ति का प्रादुर्भाव होता है तब यह संरचना विछिन्न हो जाती है। परिणामतः संघर्ष की स्थिति उत्पन्न हो जाती है।
- संघर्ष की स्थितियों से निपटने के लिए संबंधित समूह को अंतक्रिया करनी चाहिए और अपनी वस्तुस्थिति को समझ-बूझकर संसाधनों का सही ढंग से उपयोग करना चाहिए।
- इस प्रारूप में ध्यान को केंद्र बिंदु माना गया है अर्थात संबंधों(समूह के सदस्यों के मध्य) में एक-दूसरे पर विश्वास एवं आवश्यकता के प्रति चेतना का प्रसार। चूँकि कार्यकर्ता समूह समाज कार्य में सभी कार्योंकी धुरी होता है, इसलिए उसे समूह के सदस्यों में चिंतन को प्रोत्साहित करना चाहिए।
- यह समूह सदस्यों के मध्य संबंधों की एक कड़ी का काम करता है अर्थात हम की भावना को बलवती करता है।
- इस प्रारूप के द्वारा समूह के सदस्यों में व्याप्त तनाव, चिंता इत्यादि का निराकरण किया जाता है।
- आवश्यक लक्ष्यों एवं कार्यों को यह महत्त्व देता है जोकि सामूहिक भावनाओं पर आधारित होती है।

विकासात्मक प्रारूप

विकासात्मक प्रारूप को प्रतिपादित करने का श्रेय बन्सटेन (1965) को जाता है, जिन्होंने बोस्टन यूर्निवसिटी के अन्य फैकल्टी सदस्यों के सहयोग से 1966 में यह प्रारूप का विकास किया गया। लावी (Laway) को इस प्रारूप का मुख्य कर्ता-धर्ता माना गया। इस प्रारूप में स्वतंत्रता को प्रमुखता दी गई है अर्थात समूह को स्वतंत्र होने देना चाहिए उस पर कोई दबाव न हो। इस प्रारूप की कुछ प्रमुख विशेषताएँ इस प्रकार हैं:-

- यह प्रारूप प्राथमिक रूप से समूह के सदस्यों की गत्यात्मकता एवं घनिष्ठतापर आधारित है।

- अध्ययन, निदान एवं उपचार की अवधारणा का उदय व्यक्ति एवं समूह के आयामों से होता है अर्थात समूह के सदस्यों के विषय में जानकारी एवं आवश्यकताओं की पहचान के पश्चात्सामूहिक निदान तथा उपचार प्रक्रिया अपनाई जाती है।
- कार्यकर्ता समूह के अध्ययन, निदान एवं उपचार में स्वयं को शांत रूप से सम्मिलित करता है।
- कार्यकर्ता सामूहिक सदस्यों, संस्था एवं सामाजिक पर्यावरण की विभिन्न स्थितियों को सामान्य बनाए रखने का प्रयास करता है।

अंत में यह कहा जा सकता है कि सामाजिक लक्ष्य प्रारूप, चिकित्सा संबंधी प्रारूप, परस्पर आदान-प्रदान का प्रारूप, चिंतन प्रारूप अथवा ध्यान प्रारूप और विकासात्मक प्रारूप समूह समाज कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले ऐसे माध्यम हैं, जिनकी सहायता से कार्यकर्ता समूह में गत्यात्मकता का प्रभाव प्रसारित करता है जिससे समूह लक्ष्य प्राप्ति में यह सहायक सिद्ध होता है।

1.4 सारांश

सामाजिक समूह कार्य में सिद्धांत और प्रारूपों का अत्यंत महत्त्वपूर्ण योगदान है जिनके अभाव में समूह कार्यकर्ता समूह गतिविधियाँ और कार्य संपन्न नहीं कर सकता। सिद्धांत वैज्ञानिक रूप से स्वीकृत तथ्यों के निकाय होते हैं जो कि व्यक्ति के व्यवहार को समझने में सहायता करते हैं और समूह प्रक्रिया को आगे बढ़ाने का कार्य करते हैं। सिद्धांत समूह कार्य को सरलतापूर्वक संपन्न करने में कार्यकर्ता की सहायता करते हैं, जिससे समूह कार्य प्रक्रिया को सरलतापूर्वक संपन्न किया जा सकता है। ये सिद्धांत समूह कार्यकर्ताको अनुकूल दिशा प्रदान करते हैं। ये कोई स्थिर सिद्धांत नहीं हैं वरन आवश्यकतानुसार परिवर्तनशील भी हैं। अनुभवों, ज्ञान निपुणताओं तथा प्रविधियों के साथ इनमें बदलाव होते रहते हैं। परंतु ये वे साधन हैं जिनका उपयोग कर कार्यकर्ता लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से कर सकता है। जहाँ तक प्रारूपों (मॉडल) का सवाल है, इनमें बहुत सारे परंपरागत हैं। कुछ समकालीन प्रारूप भी हैं। गरीबी उन्मूलन में 1960, 1970 तथा 1980 के दशक के दौरान चिकित्सकीय स्थापनों में भारी माँग देखी गई, और उस समय इस क्षेत्र में असंख्य नए प्रारूपों की घोषणा की गई। इसलिए समूह के साथ अभ्यास के लिए एक मॉडल चुनने के लिए अंतिम निर्णय लिया जाता है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण होता है तथा अभ्यासकर्ता की क्षमता पर निर्भर करता है। प्रारूप चयन एक अत्यंत ही महत्त्वपूर्ण कार्य है जो कार्यकर्ता को बड़ी ही सावधानी के साथ करना चाहिए। प्रत्येक प्रारूप को जानकर एवं समझकर यह उपयोग करना चाहिए, जिससे समूह कार्य प्रक्रिया को आसानी से पूर्ण किया जा सके। अतः यह कहा जा सकता है कि समूह कार्य प्रणाली में सिद्धांतों एवं प्रारूपों का अत्यंत ही महत्व है, लेकिन इन सिद्धांतों एवं प्रारूपों का प्रयोग करना कार्यकर्ता की कुशलता पर अत्यधिक निर्भर करता है।

1.5 बोध प्रश्न

1. सामूहिक समाज कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले विभिन्न सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
2. निरंतर वैयक्तिकरण के सिद्धांत से क्या तात्पर्य है? समझाइए।
3. सामूहिक समाज कार्य के विभिन्न प्रारूपों पर एक लेख तैयार कीजिए।
4. सामूहिक समाज कार्य के किन्हीं दो प्रारूपों का विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिए।
5. चिकित्सा तथा चिंतन प्रारूप के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए।
6. समूह समाज कार्य में सिद्धांतों और प्रारूपों के महत्व पर प्रकाश डालिए

1.6 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. Specht,Harry and Anne,Vickery(1978). *Integrating Social Work Method*, London : George Allen&Unwin, pp.135-149.
2. Sarri,Resemary(1964).*Diagnosis in Social Group work*,Ann Arbor: University of Michigan, School of Social Work
3. Vinter, Robart D(1959). *Group Work : Perpectives and prospect Social Work with Groups*, Newyork :NASW
4. www-en-wikipedia-org/wiki/group&oherelopment]www-ntp&Zentrum at/nlptarteng-htme.
5. प्रसाद मणिशंकर, सत्य प्रकाश, कुमार अरूण,कुमार संजय,सैफ मो.खान एवं सिंह अभव कुमार(2012) *यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेट समाज कार्य*, दिल्ली: अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया) लिमिटेड।
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010). *साथ कार्य करना,* दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ
7. सिंह, ए.एन. एवं सिंह, ए.पी. (2008). *समाज कार्य. लखनऊ*: हिंदी संस्थान।
8. मिश्रा, प्रयागदीन (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य.* लखनऊ : हिंदी संस्थान।
9. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010) *समूहों के साथ कार्य करना,*दिल्लीः समाज कार्य विद्यापीठ।
10. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010*). समाज कार्य*. लखनऊ : जुबली एच फाउंडेशन
11. सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012). *सामूहिक कार्य.* हल्दानी : उत्तरायन प्रकाशन।

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई 2 समूह विकास की अवस्थाएँ

इकाई रूपरेखा

2.0 उद्देश्य

2.1 प्रस्तावना

2.2 समूह विकास

2.3 समूह विकास की अवस्थाएँ

2.4 समूह विकास के चरण

2.4.1 प्रथम अवस्था : योजना और समूह निर्माण (आरंभिक चरण)

2.4.2 द्वितीय अवस्था : पर्यवेक्षण (आरंभिक सत्र)

2.4.3 तृतीय अवस्था : निष्पादन (कार्य चरण)

2.4.4 चतुर्थ अवस्था : मूल्यांकन(विश्लेषण चरण)

2.4.5 पंचम अवस्था : समापन (अंतिम चरण)

2.5 समूह विकास में समूह कार्यकर्ता की भूमिका

2.6 सारांश

2.7 बोध प्रश्न

2.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1. समूह विकास की अवधारणा एवं आवश्यकता का वर्णन कर सकेंगे।
2. समूह विकास के चरण एवं अवस्थाओं को प्रदर्शित कर सकेंगे।
3. कार्यकर्ता की भूमिका को रेखांकित कर सकेंगे।

ज्ञान शांति मैत्री

2.1 प्रस्तावना

हम जानते हैं कि समूह व्यक्तियों का ऐसा संग्रह है जो एक-दूसरे के साथ सामाजिक संबंध स्थापित करते हैं या हम कहें तो, जब दो या दो से अधिक व्यक्ति आपस में मिलते हैं तो एक-दूसरे पर प्रभाव डालते हैं और समूह का निर्माण करते हैं। यह प्रक्रिया निरंतर चलती रहती है। वर्तमान समय में समूह कार्य प्रक्रिया समाज कार्य की प्रमुख पद्धति के रूप में जानी जाने लगी है। दिनों-दिन इसका महत्त्व बढ़ता जा रहा है। मनुष्य किसी भी जाति, धर्म, आयु, वर्ग का क्यों न हो उसे अपना सामाजिक जीवन सुव्यवस्थित रूप से बिताने के लिए समूह के क्रिया-कलापों में भाग लेना पड़ता ही है, क्योंकि आवश्यकता ग्रस्त प्राणी होने के नाते मनुष्यकी यह आवश्यकता होती है कि वह समूह के साथ मिलकर रहें और एक-दूसरे का साथ निभाता रहे। सामाजिक समूह कार्य न केवल संबद्धता की खुशी प्रदान करता है, अपितु सदस्यों को अपनी क्षमताओं का उपयोग करने औरउन्हें बढ़ाने तथा स्वयं को विकसित करने के लिए एक अवसर भी प्रदान करता है। समूह कार्यकर्ता समूह की परस्पर संबंधी क्रियाओं औरकार्यक्रम संबंधी क्रियाओं को इस प्रकार कार्य करने के योग्य बनाता है जिससे व्यक्ति का विकास और वांछित सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। समूह कार्य के प्रारंभ होने से समापन तक कई अवस्थाओं से गुजरना पडता है जो समूह कोप्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी को समूह कार्य की विभिन्न अवस्थाओं और स्तर से अवगत कराया जाएगा।

2.2 समूह विकास

समूह विकास एक निरंतर और सतत चलने वाली प्रक्रिया है जिसमें समूह में हमेशा ही परिवर्तन होता रहता है। समूह एक अवधि के पश्चात वह संपूर्ण परिपक्वता की ओर बढ़ने लगता है, जिसमें मुख्य रूप से यह ध्यान दिया जाता है कि समूह के संबंधों में किस प्रकार का परिवर्तन हो रहाहै। समूह को यह अवसर प्रदान कराए जाते हैं कि वह अपनी ज़िम्मेदारियों को समझ सकें। समूह की रचना से लेकर समूह समापन तक संपूर्ण तथ्यों को बड़ी ही सहजता और सजगता के साथ कार्य करना पडता है, जिससे समूह अपनी मूल शक्ति को प्राप्त कर सकें। समूह विकास के समय निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है-

1. समूह की नियमित बैठकों का आयोजन।
2. सदस्यों में परस्पर व्यापक संपर्क स्थापित करना।
3. सकारात्मक वार्तालाप एवं हँसी-मजाक और उत्साह का वातावरण निर्माण करना।
4. सहयोग और समायोजन की भावना स्थापित करना।

इसके अतिरिक्त समूह विकास के कुछ महत्त्वपूर्ण सूचक भी हैं जिनका पालन करना समूह सदस्यों के लिए अनिवार्य होता है :

1. प्रत्येक सदस्य की उपस्थिति
2. समय की पाबंदी
3. निश्चित समयानुसार बैठक और उपस्थिति
4. औपचारिक संगठन का विकास
5. सदस्यों द्वारा पहल और अपनी ज़िम्मेदारी समझने की इच्छा
6. नव परिवर्तन और प्रेरणा में वृद्धि
7. सदस्यों की नियंत्रित व्यावहारिक क्रिया
8. उच्च भागीदारी स्तर
9. नेतृत्व का विकास
10. 'मैं' और 'मुझे' दृष्टिकोण से 'हम' और 'हमारा' में रूपांतरण

इस प्रकार समूह का विकास कार्य निष्पादन और सदस्यों की भावनात्मक एकीकरण में होता है, जो कि विभिन्न अवस्थाओं से होकर गुजरता है।

2.3 समूह विकास की अवस्थाएँ

समूह कार्य प्रक्रिया में कुछ महत्त्वपूर्ण अवस्थाएँ होती हैं, जिनसे गुजरकर संपूर्ण समूह कार्य प्रक्रिया कोसंपन्न किया जाता है जो एक निश्चित चरण के अनुसार होती है जिससे लक्ष्य प्राप्ति हेतु मार्ग प्रशस्त किया जाता है। अवस्थाओं को परिवर्तित रूप में चरण भी कहा जाता है। समूह अवस्था के माध्यम से समूह कार्य को एक क्रमबद्धता प्रदान की जाती है, जिससे कार्य को एक निरंतर प्रक्रिया में संपन्न किया जा सके। कुछ विद्वानों ने अपनी-अपनी विचारधाराओं के आधार पर समूह विकास की अवस्थाओं को निम्नलिखित प्रकार से वर्णित किया है :

1. बेल्स (1950) ने समूह कार्य अवस्था को अपना स्वरूप प्रदान करते हुए दिशा-निर्धारण (Orientation), मूल्यांकन (Evaluation) एवं निर्णय लेना (Decision making) की क्षमता के आधार पर इसका वर्णन किया है।

2. टकमैन (1963)ने समूह कार्य अवस्था को फोरमिंग (Forming), स्टोरमिंग (stroming), नोर्मिंग (Norming), परफार्मिंग (Perfomig) एवं एडजर्निंग (Adjourning) के आधार पर वर्णित किया है।
3. कैलिन (1972) के अनुसार अवस्था दिशा-निर्धारण (orientation)), विरोध (Resistance), समझौता (Negotiation) घनिष्ठता (Intimacy), समापन (Termination) स्तर को मुख्य रूप से अंकित किया है।
4. ट्रैकर 1972 ने समूह अवस्था को- प्रारंभ (Beginning), समूह भावना का आविर्भाव (Emergence of group feeling) मित्रता का विकास (Development of bond), सशक्ति समूह (Strong group), समूह भावना का पतन (Decline in group feeling),का वर्णन समूह अवस्थाओं में किया है।
5. गारलैंड जोन्स एवं कोलोन्ड्नी (1976) ने समूह कार्य अवस्था को निर्धारित करते हुए बताया कि समूह मुख्य रूप से, मान्यता-पूर्व (Pre&Affiliation),अधिकार एवं नियंत्रण (Power and Control), घनिष्ठतता (Intimacy), अलगाव (diffiesertiation), विभाजन (Separation), समाप्ति (Ending) के रूप में कार्य करता है।
6. नोरदन एवं करलैंड 2001 ने समूह कार्य की अवस्थाओं को समावेश-दिशा निर्देश (Inclusion & orientation), अनिश्चितता-पर्यवेक्षण (Unccrtainty & Uploration), पारस्परिकता एवं लक्ष्य सफलता (Mutuality and goal achievement) एवं विभाजन-समापन (Separation&permination) को मिलाकर समूह विकास की अवस्थओं कावर्णन किया है।

समूह कार्य की विभिन्न विद्वानों द्वारा दी गई अवस्थाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि समूह कार्य के मुख्य रूप में तीन से लेकर छह अवस्थाएं है जो मुख्यतः निम्नलिखित चरण प्रदान करती है-

1. प्रथम अवस्था : योजना और समूह निर्माण (आरंभिक चरण)
2. द्वितीय अवस्था : पर्यवेक्षण (आरंभिक सत्र)
3. तृतीय अवस्था : निष्पादन (कार्य चरण)
4. चतुर्थ अवस्था : मूल्यांकन (विश्लेषण चरण)
5. पंचम अवस्था : समापन (अंतिम चरण)

2.4 समूह विकास के चरण

समूह एक गतिशील प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में निरंतर परिवर्तन होता रहता है । कार्यकर्ता समूह-सदस्यों की इच्छाओं एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिससे वे उद्देश्य प्राप्त करने की दिशामें प्रयास करते हैं। अतः समूह विभिन्न स्तरों से होकर गुजरता है। इन्हीं मुख्य चरणों का विस्तृत वर्णन नीचे प्रस्तुत किया जा रहा है :

2.4.1 प्रथम अवस्था - योजना और समूह निर्माण (आरंभिक चरण)

योजना और समूह निर्माण के आरंभिक चरण में कार्यकर्ता द्वारा समूह निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया जाता है और समूह निर्माण के लिए पहल की जाती है । जब समूह कार्यकर्ता समूह निर्माण की आवश्यकता की पहचान कर लेता है तो वह समूह निर्माण की योजना तैयार करता है। इसके लिए कार्यकर्ता को अपनी व्यावसायिक पृष्ठभूमि के साथ कुछ प्रश्नों के उत्तर अत्यंत ही सावधानीपूर्वक और क्रमबद्धढंग से देने पड़ते हैं। ये प्रश्ननिम्नलिखित हैं-

1. समूह क्यों होता है? यहाँ कार्यकर्ता को समूह निर्माण की आवश्यकता पर ध्यान देना होता है कि यह किन उद्देश्यों और लक्ष्यों को पा सकता है और किस हद तक उसे पाने में सफल होता है?

2. समूह का निर्माण किसके लिए हो रहा है? समूह से संबंद्ध होने वाले सदस्योंके प्रकार पर विचार करना तथा सदस्य को भर्ती करने की योग्यता का मापदंड निर्धारित करना।
3. समूह निर्माण की संभावित समयावधि और बैठकों की संख्या के संदर्भ में ध्यान केंद्रित किया जाता है।
4. समूह में सदस्यों की संलिप्तता को कैसे सुनिश्चित किया जाए? समूह सदस्य और कार्यकर्ता समूह क्रियाओं को सुनिश्चित करने के लिए जो आपसी सहमति बनाते हैं, वह समूह के उद्देश्यों की पुष्टि तक चलती रहती है।

उपर्युक्त प्रश्नों को उठाए जाने के बाद समूह कार्यकर्ता द्वारा कुछ आवश्यक योजनाओं का निर्माण किया जाता है जिससे समूह निर्माण की योजना को प्रभावी बनाया जा सके। इसलिए कार्यकर्ताओं के द्वारा निम्न आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता होती है –

1. **समूह उद्देश्य का निर्धारण -** समूह कार्यकर्ता को भली-भाँति यह ज्ञान होना चाहिए कि समूह का निर्माण किन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है अर्थात समूह का निर्माण क्यों हो रहा है और इसका उद्देश्य क्या होगा? कार्यकर्ता को यह ध्यान में रखना चाहिए कि जिस समूह का निर्माण वह करने जा रहा है उसका अंतिम लक्ष्य समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है और समूह को सक्षम बनाना है। अतः कार्यकर्ता को समूह सदस्यों के साथ मधुर संबंध स्थापित होना चाहिए जिससे समूह सदस्यों के हित अपनी भावनाओं को स्पष्ट कर सके जिससे लक्ष्य प्राप्ति में आसानी होगी। साथ ही कार्यकर्ता को यह विश्वास भी दिलाना होगा कि समूह का निर्माण कार्य क्षेत्रों की सीमा के अंदर होगा और उनके हितों और सेवाओं के विरूद्ध नहीं जाएगा।
2. **समूह की बनावट -** समूह के उद्देश्य का निर्धारण करने के पश्चात यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि रचना समूह की किस प्रकार की होगी और किस रूप में होगी? क्या यह समरूप में होगा या विषम रूप में? समरूप का अर्थ हैं सदस्यों के बीच आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि, सामाजिक वर्ग तथा अन्य हितों में साझेदारी करना। समरूपता से समूह और अधिक शक्तिशाली बनता है। साथ ही, यह समूह निर्माण में मुख्य भूमिका अदा करती है। समूह कार्यकर्ता को समूह की आवश्यकताओं और लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए समूह की बनावट का निर्णय लेना चाहिए।
3. **समूह का आकार -** समूह में कितने सदस्य होंगे? उसका आदर्श मानक क्या होगा? समूह का आकार कितना बड़ा होगा या कितना छोटा? इन संपूर्ण प्रश्नों के उत्तर समूह कार्यकर्ता के मन में होने चाहिए। समूह के आकार के संबंध में कोई निश्चित पैमाना नहीं है जिसे आधार मानकर यह निश्चित किया जा सके कि समूह का आकार क्या होगा? सामान्य तौर पर यह समूह के उद्देश्यों, उसकी प्रबंधकीय क्षमता, समय-सीमा, स्थान, धन और आवश्यक नियंत्रणों पर निर्भर करता है। अनेक विद्वानों के अनुसार आठ से पंद्रह सदस्यों के आकार वाला समूह श्रेष्ठ आकार का हो सकता है।
4. **सदस्यों की भर्ती -** सदस्यों की भर्ती के संदर्भ में यह कहा जाता है कि कार्यकर्ता द्वारा संभावित सदस्यों को समूह के गठन के विषय में सूचित करें। यह सूचना संभावित सदस्यों को सीधे ही अथवा अभिकरण के सूचनापट्ट पर सूचना चिपकाकर या समाचारपत्रों, रेडियो, टीवी आदि संचार माध्यमों में विज्ञापन के माध्यम से दी जा सकती है और रूचिशील सदस्यों से आवेदन आमंत्रित किए जा सकते हैं। यहाँ कार्यकर्ता का दायित्त्व होता है कि योग्यता के स्थापित मापदंडों के आधार पर आवेदकों की उपयुक्त जाँच करना। इन मापदंडों में कार्यकर्ता द्वारा समूह सदस्यों हेतु आवश्यकता की सीमा का निर्धारण, हस्तक्षेप की अविलंबता, जनसांख्यिकीय विशेषताएँ, अनुभव और अन्य कौशल शामिल हैं। कार्यकर्ता आवेदकों की उपयुक्तता सुनिश्चित करने के लिए उनसे साक्षात्कार का भी प्रबंध कर सकता है और समूह की सदस्यता लेने से संबंधित उनकी शंकाओं का निवारण भी कर सकता है।

5. **बैठकों का समूह और स्थान -** समूह बैठकों हेतु कार्यकर्ता को समूह के सदस्यों के साथ मिलकर यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि समूह में बैठकों का आयोजन किस अंतराल में और कबकब होगा। साथ ही किस स्थान पर बैठकें आयोजित की जाएंगी यह भी निर्धारित कर लेना चाहिए।
6. **समूह की अवधि-** समूह मुख्य रूप से दो प्रकार के बनाए जाते हैं- दीर्घकालीन समूह और अल्पकालीन समूह यह समूह के लक्ष्य पर निर्भर करता है कि समूह दीर्घकालीन होगा या अल्पकालीन। समूह का उद्देश्य पूर्ण हो जाने के पश्चात इसे समाप्त किया जा सकता है और इसके लिए अनुमानित समय निर्धारित किया जा सकता है। फिर भी समय निर्धारित करने का निर्णय करते समय लचीलापन होना चाहिए।
7. **अनुबंधन -** समूह का निर्माण करते समय समूह सदस्यों और कार्यकर्ताओं के मध्य एक अनुबंधन होना चाहिए जिसमें समूह सदस्यों और कार्यकर्ताओं के दायित्त्व का निर्वहनहोता है, जिनमें सत्रों में नियमित रूप से और समय पर उपस्थित रहना होता है। किसी भी अनुबंधित कृत्य अथवा कार्य को पूरा करना, समूह की चर्चाओं की गोपनीयता को बनाए रखना और ऐसा कोई भी व्यवहार न करना हो, जो समूह की भलाई के विरूद्ध जाता हो। अनुबंध लिखित एवं मौखिक दोनों प्रकार से हो सकता है। इस अनुबंध में यह निर्धारित किया जाता है कि समूह नियोजित तरीके से चलेगा और समूह प्रक्रमों को कारगर ढ़ंग से चलाने के लिए उपयुक्त वातावरण के निर्माण को सुगम बनाया जाएगा।

अतः इस प्रकार से समूह कार्य की प्रथम अवस्था के प्राथमिक चरण द्वारा समूह के संदर्भ में योजना का निर्माण किया जाता है एवं समूह के सफल संचालन हेतु योजना का निर्माण किया जाता है।

2.4.2 द्वितीय अवस्था : पर्यवेक्षण (आरंभिक सत्र चरण)

प्रथम अवस्था में समूह निर्माण और योजना के निर्माण पश्चात द्वितीय अवस्था में (जिसे समूह का आरंभिक सत्र भी कहा जाता है) पर्यवेक्षण का कार्य किया जाता है। पर्यवेक्षण कार्य के माध्यम से समूह सदस्यों में दिशा निर्धारण का कार्य किया जाता है। यह चरण सदस्यों में संबद्धता और एकात्मकता की भावना विकसित करने की शुरूआत करता है। इस अवस्था में मुख्य रूप से निम्नांकित कार्य किए जाते हैं -

1. **दिशा निर्धारण एवं प्रवेश -** समूह कार्य में आरंभिक सत्र एक महत्त्वपूर्ण विधा के रूप में माना जाता है। किसी भी प्रक्रिया में आरंभ का अत्यधिक महत्त्व रहता है इसलिए कहा भी जाता है कि मकान के निर्माण हेतु नींव जितनी अधिक मजबूत होगी मकान का निर्माण भी उतना ही अधिक मजबूत होगा। अतः इसी आधार पर समूह कार्य की आरंभिक प्रक्रिया में समूह की सफलता और असफलता निर्भर करती है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत प्रत्येक कार्यकर्ता को प्रत्येक सदस्य से अपना परिचय करना चाहिए और समूह निर्माण के उद्देश्यों को भी स्पष्ट कर देना चाहिए। सदस्यों में सहभागिता का भाव जागृत करते हुए उन्हें आत्मविश्वास दिलाना चाहिए जिससे वे अपना परिचय स्पष्ट रूप से दे सकें। आरंभिक सत्रों में सदस्यों को निश्चित संवेदनशीलता के साथ समूह में शामिल किया जाता है, ताकि उनकी सांत्वना और सहजता की भावना का स्तर ऊँचा रखा जा सके। समूह कार्य आरंभिक प्रक्रिया में कुछ सदस्य एक-दूसरे से अपरिचित रहते हैं इस कारण से उनमें हिचकिचाहट अधिक देखने में नज़र आती है अतः उनमें आपसी स्वीकारता का भाव जाग्रत करना चाहिए। ऐसा करने से समूह सदस्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करनें में लग जाते है और उनमें आपसी सामंजस्य स्थापित हो जाता है और समूह में प्रवेश प्रक्रिया भी प्रारंभ हो जाती हैं।
2. **सदस्यों की रूपरेखा तैयार करना-** जैसे सदस्यों की आवश्यकता एक-दूसरे के बारे में जानने की होती है उसी तरह कार्यकर्ता को भी सदस्यों के बारे में गहराई से जानना और अवलोकन करना चाहिए। कार्यकर्ता को प्रत्येक सदस्य की एक रूपरेखा बनानी चाहिए, जिसमें उसकी आयु, पारिवारिक पृष्ठ भूमि,

शारीरिक विशेषताएँ, आदतें, रूचियाँ शामिल हो। यदि इसे आरंभिक सत्रों में एकत्रित तथ्यों के अवलोकनों के आधार पर बनाया जाए तो यह सहायता प्रदान करेगा। यह न केवल समूह सदस्यता स्तरों को व पारस्परिक संपर्क अच्छी तरह समझने में उसकी सहायता करेगा, अपितु समूह कहाँ से आरंभ किया जाए इसमें भी सहायक होगा। पुनः यह एक अवधि के बाद विकास की योजना बनाने में विशेषतः मूल्यांकन की अवस्थामें भी सहायता प्रदान करेगा।

3. **विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित करना-** समूह कार्य में प्रायः उद्देश्य का निर्धारण पूर्व में ही कर लिया जाता है, लेकिन इसके पश्चात भी समूह सदस्यों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने के पश्चात कुछ विशिष्ट उद्देश्य का निर्माण भी किया जाता है, जिससे कार्यक्रम की योजना का आधार तैयार हो सके। यहाँ कार्यकर्ता को व्यवहार या सामाजिक परिवर्तन का अभीष्टतम स्तर निर्धारित करने में समूह की सहायता करनी होती है। यद्यपि पहली अवस्था में कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समूह की रचना की जा चुकी है तो भी इस अवस्था में लक्ष्यों को विशेष रूप से प्रस्तुत करना होता है। इस गतिविधि के माध्यम से समूह कार्यकर्ता द्वारा समूह के सदस्यों को सक्रिय भागीदार होने के लिए प्रोत्साहित करता है और यदि सदस्यों में कुछ विशेष प्रकार की आदतें, जैसे- धूम्रपान, तंबाकू खाने की आदत इत्यादि हो तो व्यवहार परिवर्तन में समूह की सहायता करता है।
4. **संरचना का निर्माण-** संरचना निर्माण द्वारा सदस्यों को इस आधार पर तैयार किया जाए, जिससे वे अपनी भूमिका और ज़िम्मेदारियों को समझ सकें। इसके लिए समूह सदस्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए। सदस्यों को उनकी क्षमताओं ओर योग्यताओं के आधार पर कार्यों का बँटवारा कर देना चाहिए और उन्हें उनकी क्षमताओं के संदर्भ में भी अवगत कराना चाहिए। समूह कार्यकर्ता का दायित्त्व होता है कि वह समूह सदस्यों में छुपी हुई योग्यताओं को सामने लाएँऔर उन्हें प्रेरित करें। इस अवस्था में एक क्रियात्मक संगठन का उदय होना चाहिए, ताकि सदस्य सक्रिय भूमिका ले सके और ज़िम्मेदारी से फैसला कर सके। ''स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के लिए अभिलाषा रखने वाले प्रत्येक समूह को अपने स्थपित सदस्यों' का तरीके से व्यवस्थित करना होता है कि वे स्वयं को 'संगठित' कह सकें'। एक औपचारिक संगठन के साथ समूह अपने लचीलेपन और परिपक्वता के साक्ष्य देना आरंभ कर देता है। समूह कोज़िम्मेदारी उठाने के लिए सक्रिय करने के बाद वह अगली अवस्था में जाने के लिए तैयार हो जाता है।

2.4.3 तृतीय अवस्था : निष्पादन (कार्य चरण)

प्रथम एवं द्वितीय चरण पूर्ण कर लेने के पश्चात अब समूह परिपक्व स्थिति में नज़र आने लगता है और समूह अपने क्रियाशील चरणों की ओर बढ़ने लगता है। अतः तृतीय चरण में वह निष्पादन कार्य आरंभ कर देता है, जिसे कार्य चरण भी कहा जा है और निम्नलिखित गतिविधियों के माध्यम से चरण को पूर्ण करता है :

1. **क्रियात्मक चरण -** इस अवस्था में समायोजन और प्रगति के लिए अवसर प्रदान करने के लिए बनाए गए कार्यक्रम, अनुभवों के प्रावधानों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। कार्यक्रम का आधार कार्यों पर निर्भर करता है कि कार्यक्रम दीर्घकालीन होगा या अल्पकालीन । यह अवस्था एक महत्त्वपूर्ण अवस्था के रूप में मानी जाती है क्योंकि इस अवस्था तक आते-आते समूह सदस्य एक-दूसरे को गंभीरता से लेने लगते हैं। कार्यों का निर्धारण सही रूप से हो जाता है और समूह सदस्य कार्यक्रमों में भागीदारी प्रारंभ कर देता है। इस चरण में गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं, क्योंकि कार्यक्रम की योजना और क्रियान्वयन में पर्याप्त समय लगाया जाता है उनका एक समूह बना दिया जाता है। समूह कार्यकर्ता उनकी गाने और अभिनय की योग्यताएँ देखने के बाद उन्हें एक संगीतमय नाटक करने के लिए प्रोत्साहित करता है। समूह प्रेरित होता है और आलेख लिखने, गीत बनाने में और नृत्य कलाएँ बनाने में लग जाता है। समुदाय के समर्थन की

सहायता से समूह अपना पहला नाटक प्रदर्शित करता है और धीरे-धीरे एक स्थापित नाट्यशाला समूह बन जाता है। क्रियात्मक चरण में आलेख लिखने, गीत रचना करने तथा प्रदर्शन के लिए निरंतर तीव्र अभ्यास करने से सदस्यों का अत्यधिक समय और प्रयोग करने में वे काफी व्यस्त रह सकते हैं। अब कार्यकर्ता समूह सदस्यों को ज़िम्मेदारियाँ देना प्रारंभ कर देता है, जिससे समूह तेज़ी से आगे बढ़ने लगता है और अनेक कार्यक्रम बनना प्रारंभ हो जाते हैं। साथ ही, साथ नेतृत्त्व की भावना का भी विकास होना प्रारंभ हो जाता है। यह समूह कार्य प्रक्रिया का सर्वाधिक क्रियात्मक चरण होता है तथा इस चरण में अत्यधिक समय व्यतीत हो जाता है। अब समूह अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से अपने पथ पर अग्रसर हो जाता है और कार्यक्रम की योजना विकास, उसका क्रियान्वयन करना प्रारंभ कर देता है।

2. **कार्यक्रम की योजना एवं क्रियान्वयन -** समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम एवं क्रियान्वयन एक महत्त्वपूर्ण विधा मानी जाती है जिसके माध्यम से सदस्य-सदस्य और कार्यकर्ताओं के मध्य आपसी समन्वय, नेतृत्त्व की भावना, सामूहिकता की भावना आदि का विकास हो जाता है। यह गतिविधि सदस्यों की क्षमताओं और उनकी योग्यताओं पर निर्भर रहती है यह कला और शिल्प से लेकर संगीत, नृत्य, सामाजिक घटनाएँ तथा पिकनिक व भ्रमण तक हो सकता है। इस अवस्था में समूह के अंदर कार्यक्रम के प्रति रूचि जागृत होने की संभावना रहती है। हो सकता है प्रारंभ में समूह सदस्य इस प्रक्रिया में अत्यधिक उत्सुकता न दिखाएँ पर जैसे-जैसे यह गतिविधि क्रियान्वित होती है सदस्यों की संख्या में भी वृद्धि होती जाती है। कार्यक्रम का विकास सरल से जटिलता की तरफ होना चाहिए, जिसमें गति के साथ योग्यता और तत्परता के रूप में समूह की प्रगति के रूप में परिणाम नज़र आना चाहिए।
3. **कार्य समापन -** जब ऐसा प्रतीत होने लगे कि अब समूह आगे बढ़ने के लिए तत्पर है तो कार्यकर्ता को सदस्यों द्वारा विभिन्न और अपेक्षित अनुभवों की अपनी अभिलाषा जानने में मदद करनी चाहिए। जब समूह के सदस्य अपने अभावों को पूरा करने के लिए अपनी इच्छाएँ अभिव्यक्त करने लगे और अपने कार्य में सुधार कर लें तो मान लेना चाहिए कि वे अपने विकास में उन्नत बिंदु पर पहुँच गए हैं। हो सकता है जो कार्यक्रम आत्मकेंद्रित रहे हों तो उन्हें अपेक्षाकृत बड़े अभिकरण और सामुदायिक उद्देश्यों पर जोर देने के लिए परिवर्तित किया जाना चाहिए। जब समूह को अपनी क्षमताओं पर भरोसा हो जाता है तो मूल्यांकन में काफ़ी समय लगता है (ट्रेक्कर, 1955)। अनेक बार ऐसा होता है कि जब सदस्य कार्यक्रम करता है और लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है तो अनेक समस्याएँ समूह में आ जाती हैं जो कि समूह लक्ष्य प्राप्ति में बाधक बनती है ऐसी स्थिति में समूह कार्यकर्ता को मध्यस्थता की भूमिका अदा करनी चाहिए और समस्या के समाधान हेतु सहायता करनी चाहिए।
4. **प्रगति पर नज़र रखना-** जैसे-जैसे प्रक्रिया आगे बढ़ती है समूह अपने आप में सक्षम होता जाता है। अब इस स्थिति में समूह कार्यकर्ता समूह से अपने कदम पीछे करना प्रारंभ कर देता है और दूर से ही समूह पर अपनी नज़र बनाए रखता है। जैसे-जैसे वह समूह लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता जाता है कार्यकर्ता अपने को पीछे करता रहता है और समूह की तरफ अपनी नज़र बनाए रखता है।

2.4.4 चतुर्थ अवस्था : मूल्यांकन (विश्लेषण चरण)

मूल्यांकन एक सतत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जिसके माध्यम से समूह के प्रत्येक पहलू का अध्ययन किया जाता है। मूल्यांकन को परिभाषित करते हुए मिल्टन गार्डन (1952) ने बताया है कि , मूल्यांकन निर्णय करने वाली एक प्रक्रिया है जो निश्चित करती है कि व्यक्ति, कार्यकर्ता तथा संस्था का क्या उत्तरदायित्त्व है ? उनको पूरा करने की कितनी क्षमता है? क्या-क्या शक्तियाँ है? कौनसे कार्य रचनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं तथा कौन से कार्य समस्या को जटिल बनाते हैं। इस प्रकार मूल्यांकन उद्देश्य का दार्शनिक एवं नैतिक ज्ञान है।

मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से समूह कार्य के प्रत्येक पहलू पर पुनः ध्यान दिया जाता है जिससे यह प्रतीत हो जाता है कि संपूर्ण प्रक्रिया में कोई गलती तो नहीं हुई है यदि कुछ गलत हुआ हो तो उसे सही कैसे किया जाए एवं जो सकारात्मक पहलू प्राप्त हुए हैं उन्हें और अधिक प्रभावी कैसे बनाए जाए? इन समस्त बातों पर ध्यान दिया जाता है। सभी सामूहिक प्रयत्नों में मूल्यांकन आवश्यक समझा जाता है। यह संस्था अथवा समूह का आवश्यक अंग होता है तथा कार्यकर्ता का प्रथम उत्तरदायित्व है कि वह इस दिशा में सदैव प्रयत्नशील रहें। संस्था के लिए मूल्यांकन आवश्यक समूहप्रक्रिया पर निर्भर होता है। अतः अच्छे प्रशासन के लिए मूल्यांकन करना आवश्यक होता है। इससे क्षमताओं एवं उपलब्धियों का ज्ञान होता है। समूहक्रियाओं का मूल्यांकन सदैव उद्देश्यों को ध्यान में रखकर करना चाहिए अर्थात तुलनात्मक अध्ययन मूल्यांकन का एक आवश्यक अंग है।

ट्रेकर ने मूल्यांकन प्रक्रिया को निम्नलिखित प्रकार से दर्शाया है:-

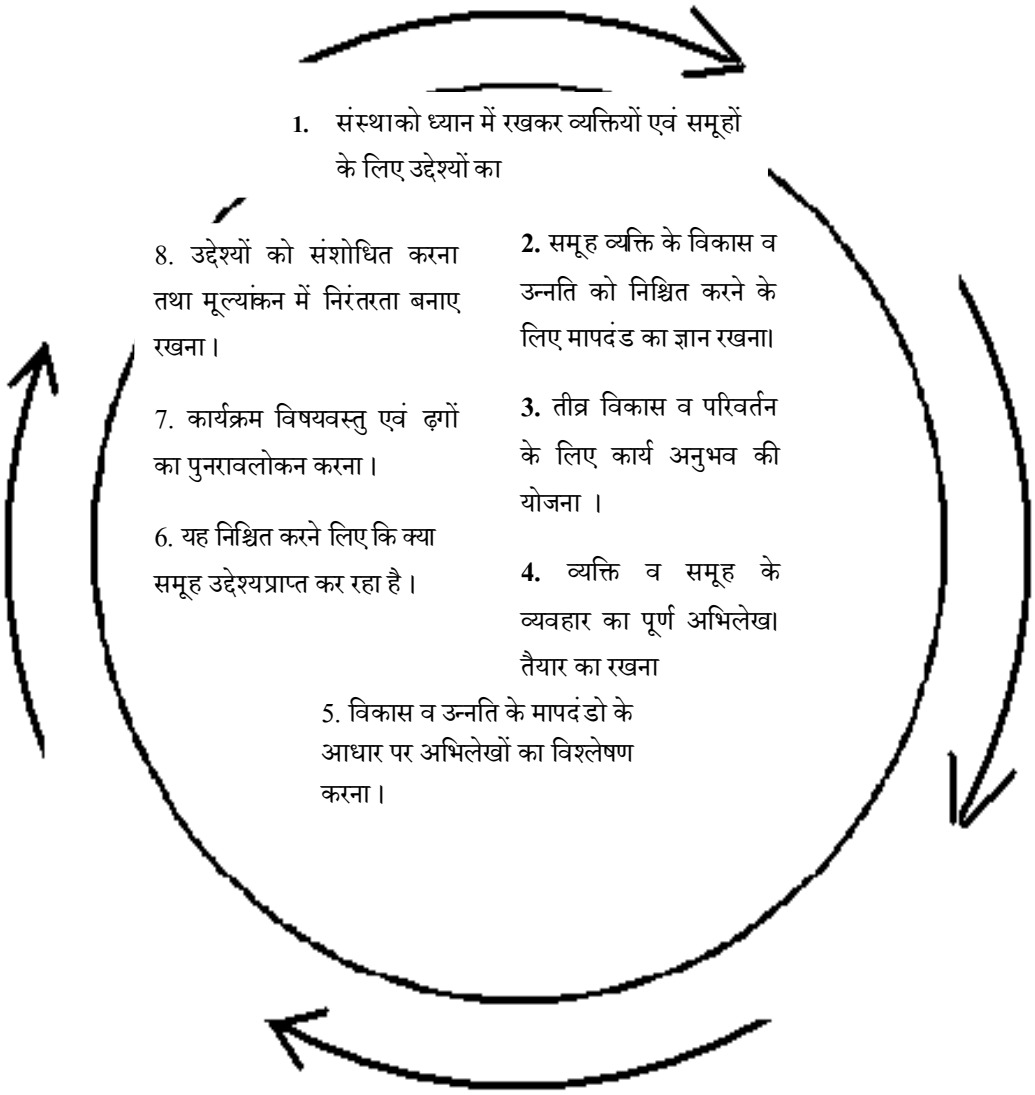

ट्रेकर द्वारा चित्र प्रदर्शन से ज्ञात होता है कि मूल्यांकन का कार्य सामूहिक कार्य के प्रारंभिक स्तर से प्रारंभ होकर समाप्ति स्तर तक चलता रहता है। मूल्यांकन की प्रक्रिया द्वारा निम्नलिखित तथ्यों को ज्ञात किया जा सकता है-

1. **समूह उद्देश्य का निर्धारण -** कार्यकर्ता सर्वप्रथम समूह के सदस्यों का वैयक्तिक अध्ययन करता है। उनकी इच्छाओं, अभिलाषाओं, आवश्यकताओं का पता लगाता है। इन आवश्यकताओं का मूल्यांकन करता है कि उन्हें किस प्रकार से सामूहिक आवश्यकता के रूप में प्रदर्शित किया जा सकता है।
2. **विकास के मापदंड का निर्धारण:-** उद्देश्य निर्धारण पश्चात समूह-सदस्यों को उनके विषय में विस्तृत जानकारी देता है तथा सामूहिक विकास की प्रक्रिया का निर्धारण करके विकास की गति का अनुमान लगाता है। वह समूह की योग्यताओं, क्षमताओं तथा निपुणताओं का मूल्यांकन करके विकास के मापदंड निश्चित करता है।
3. **कार्यक्रम की योजना का निर्माण:-** वह कार्यक्रम का मूल्यांकन करके ऐसे कार्यक्रमों को समूह के लिए चुनता है जो समायोजन तथा विकास के अधिकतम अवसर प्रदान करते हैं। ये कार्यक्रम दीर्घ तथा लघुकालीन दोनों प्रकार के होते हैं। इसका निर्धारण लघुकालीन एवं दीर्घकालीन उद्देश्यों के आधार पर किया जाता है।
4. **अभिलेखन करना:-** कार्यकर्ता समूह में होने वाली महत्त्वपूर्ण क्रियाओं का अभिलेखन करता है। यह कार्यकर्ता की मूल्यांकन योग्यता पर निर्भर होता है कि वह किस प्रकार और कौन-कौन-सी परिस्थितियों का अभिलेखन करता है।
5. **अभिलेखों का विश्लेषण :-** अभिलेखों के लेखन पश्चात वह इन अभिलेखों के आधार पर व्यक्ति सदस्य के व्यवहार एवं भागीकरण का विश्लेषण करता है। समूह के प्रत्युत्तरों का अध्ययन करता है, कार्यक्रम की उपयुक्तता-अनुपयुक्तता का अध्ययन करके उनकी उपयोगिता निश्चित करता है। कार्यकर्ता स्वयं अपनी भूमिका का विवेचन करता है।
6. **उद्देश्यों की प्राप्ति का स्तर:-** अभिलेखों के विश्लेषण से कार्यकर्ता इस बात को जानने का प्रयास करता है कि समूह अपने कार्यकलापों के माध्यम से किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो पाया है।
7. **कार्यक्रम, विषयवस्तु तथा प्रणाली का पुनरावलोकन:-** कार्यकर्ता कार्यक्रमों का विश्लेषण एवं विवेचन करता है। उनकी उपयोगिता निर्धारित करता है। उनकी विषयवस्तु का निर्धारण समूह की उन्नति के अनुसार करता है। जो प्रणालियाँ या ढ़ंग कार्यक्रमों के संचालन में उपयोग में लाए गए हैं, उन पर प्रकाश डालता है।
8. **उद्देश्यों का संशोधन:-** उपरोक्त क्रियाओं के पश्चात कार्यकर्ता यदि आवश्यक समझता है तो उद्देश्यों में परिवर्तन करता है। उद्देश्यों में संशोधन करना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि समूह-अनुभव से उसकी अंतर्दृष्टि बढ़ती है, जिससे लक्ष्यों का विस्तार भी होता है। इस प्रकार यह प्रक्रिया निरंतर कार्य करती रहती है।

   अतः इस प्रकार से समूह कार्य प्रक्रिया में मूल्यांकन अवस्था को महत्त्वपूर्ण माना जाता है जो चौथा और महत्त्वपूर्ण चरण के रूप में जाना जाता है।

2.4.5 पंचम अवस्था : समापन (अंतिम चरण)

समापन अवस्था एक भावनात्मक अवस्था होती है, क्योंकि समूह के प्रत्येक सदस्य एक साथ कार्य करने के कारण एक-दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं एवं इस अवस्था में समूह के समापन होने के कारण एक-दूसरे से बिछुड़ते या अलग होते हैं। इस अवस्था में किए गए कार्यों का मूल्यांकन किया जाता है इस अवस्था में समूह का उद्देश्य पूर्ण हो जाता है। अतः अब इस समापन प्रक्रिया मे समूह के सदस्य समूह से अलग हो जाते हैं। प्रत्येक समूह

के जीवन में ऐसा समय आता है जब इसका अंत होता है जो एक सकारात्मक या नकारात्मक अनुभूति होती है जब यह कहा जाए कि समूह ने अपने लक्ष्य प्राप्त कर लिए हैं और समूह कार्यकर्ता एक उपयुक्त प्रक्रिया द्वारा इसके अच्छे ढंग से समाप्त करने के बारे में निश्चित हो तो समूह का सकारात्माक समापन होना माना जाता है। कुछ विद्वानों का मानना है कि समूह कार्य प्रारंभ के समय ही समापन की तिथि को घोषित कर देना चाहिए जिससे कि समूह सदस्यों को यह ज्ञात रहें कि हमें कितने समय में लक्ष्य प्राप्त करना है? जिस प्रकार समूह कार्यकर्ता ने विकास की पिछली अवस्थाओं में किया था, ठीक उसी प्रकार इस अवस्था में भी उसे यह सुनिश्चित करना पड़ता है कि समूह का समापन उचित तरीके से हो। कुछ विद्वानों ने समूह समापन के निम्नलिखित प्रकारों का वर्णन किया है-
समूह समाप्न प्रक्रिया को तीन भागों में बाँटा जा सकता है-

1) **उद्देश्य पूर्ण होने पर समापन:-** इस प्रकार का समापन समूह जो उद्देश्य लेकर चलता है वह पूर्ण हो जाता है तो समूह का समापन कर दिया जाता है। इस प्रकार समापन उद्देश्य पूर्ण होने पर निर्भर करता है। उद्देश्य पूरा होने पर ही समूह का समापन कर दिया जाता है।
2) उदाहरण:- अस्पताल में मरीज एक समूह के सदस्य के रूप मे रहता है उसके ठीक होने के बाद छुट्टी दे दी जाती है। अर्थात समूह का जो उद्देश्य था वह पूरा हो गया है। अतः अपने सदस्य को मुक्त कर देता है।
3) **समय सीमा के आधार पर समापन:-** इस प्रकार के समापन में समूह की समय अवधि समाप्त हो जाने पर समूह का समापन कर दिया जाता है। इस प्रकार के समापन में समूह के उद्देश्य पूरा होने या न होने आदि पर कम महत्त्व दिया जाता है इसमें समय अवधि को अधिक महत्त्व दिया जाता है।
4) उदाहरणः- उदाहरण के लिए स्कूल मे एन.सी.सी. कैंप लगता है वह कुछ समय एक हफ्ते पंद्रह दिन आदि के लिए लगता है समय सीमा समाप्त हो जाने पर ग्रुप का समापन कर दिया जाता है।
5) **कानून के आधार पर समापन:-** इस प्रकार का समापन समूह का उद्देश्य कानून द्वारा मान्यता प्राप्त नहीं होता है अर्थात उद्देश्य को कानून द्वारा स्वीकृति नही मिलती है इस प्रकार के समूह का समापन कर दिया जाता है।

समापन अवस्था में कार्यकर्ता की निम्नलिखित भूमिका होती है -

1. समापन की अवस्था में कार्यकर्ता की मुख्य भूमिका होती है कि वह सदस्यों के कार्यों का मूल्यांकन करे। उनके तथा समूह के Achievements के बारे में तथा उनकी कमज़ोरियों के बारे में बताए।
2. इस अवस्था में कार्यकर्ता का मुख्य कार्य यह है कि वे समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत भावों, भावनाओं तथा Termination Phase के वातावरण के मध्य सामंजस्य बनाए रखे।
3. समूह कार्यकर्ता सदस्यों को समूह छोड़ने के लिए मानसिक रूप से तैयार करे।
4. कार्यकर्ता को अपने समूह सदस्यों के साथ अनुभव बाँटने चाहिए।
5. कार्यकर्ता को सदस्यों को यह बताना चाहिए कि वे समापन अवस्था को सकारात्मक रूप से ग्रहण करे एवं यह भी बताए कि समूह कार्य में समापन प्रक्रिया प्राकृतिक है।

अतः अंत में कहा जा सकता है कि समापन समूह कार्य का अहम हिस्सा है। यही कार्यों की मूल्यांकन की अवस्था है। सदस्यों को समापन अवस्था के प्रति जो भाव होते हैं वह उनके व्यवहार में परिलक्षित हो जाते हैं। इस प्रकार समूह के समापन की घोषणा होती है। समूह के सदस्यों की भावनात्मक तथा व्यवहारिक प्रतिक्रिया होती है। कुछ समूह के लिए स्पष्ट एवं आश्चर्य मिश्रित अनुभव होता है। जबकि कुछ समूह के लिए यह केवल विदाई कार्यक्रम ही होती है। इनमें से कुछ सदस्य अपने भावों पर संयम करते हैं एवं एकदूसरे को नए कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते हैं।

2.5 समूह विकास में समूह कार्यकर्ता की भूमिका

समूह कार्य की उपर्युक्त अवस्थाओं में समूह कार्यकर्ता कीमहती भूमिका है। जिसके द्वारा कार्यकर्ता प्रत्येक अवस्था व चरण में समूह सदस्यों की सहायता करता है एवं सामूहिक लक्ष्य प्राप्ति हेतुसदस्यों को प्रेरित करता है। कार्यकर्ता सामूहिक कार्य-प्रणाली द्वारा समूह-सदस्यों के विकास, उन्नति, शिक्षा, एवं सांस्कृतिक प्रगति पर जोर देता है। कार्यकर्ता प्रत्येक स्तर पर समूह को समझने का प्रयास करता है और समूह में उत्पन्न समस्या का निवारण प्रस्तुत करता है । समूह कार्यकर्ता के कार्यों और उसकी भूमिका को निम्नलिखित आधारों पर समझा जा सकता है-

समूह कार्यकर्ता के कार्य - सामूहिक कार्यकर्ता के कार्यों के निम्नलिखित आधारों पर समझा जा सकता है -

1. **समूह निर्माण के संबंध में- समूह निर्माण के संबंध कार्यकर्ता निम्नलिखित आधारों पर कार्य करता है-**
    1. कार्यकर्ता यह निर्धारित करता है कि किस प्रकार के समूह का निर्माण किया जा सकता है, जैसे- मनोरंजनात्मक, शिक्षात्मक, सामाजिक या मिश्रित।
    2. समूह कार्य की कार्य-प्रणाली निर्धारित करता है जैसे- खेल-कूद, ड्रामा, वार्तालाप इत्यादि।
    3. स्थान का चयन करता है।
    4. समय का निर्धारण करता है।
    5. समूह अवधि का निर्धारण करता है।
    6. संसाधन का निर्धारण करता है।
    7. माध्यमों का निर्धारण करता है।
    8. समूह का उद्देश्य निर्धारित करता है।
    9. सदस्यों का चयन निर्धारित करता है।
    10. संस्था अथवा समुदाय में स्त्रोंतों का निर्धारण करता है।

2. कार्यक्रम नियोजित करने में सहायता करना- कार्यकर्ता समूह के साथ मिलकर कार्यक्रमों को नियोजित करने में समूह सदस्यों की सहायता करता है। वह कार्यक्रम को अधिक प्रभावशाली एवं रचनात्मक बनाने में समूह की सहायता करता है, जिससे अधिक से अधिक समूह की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और इसके अतिरिक्त वह समूह को कार्यक्रम हेतु दिशा-निर्देश देता है।

3. समूह की रूचियों को खोजने में सहायक का कार्य- कार्यकर्ता समूह सदस्यों की विभिन्न रूचियों की खोज करता है।

4. अंत:क्रिया का निर्देशन - समूह कार्य प्रक्रिया में समूह सदस्यों के बीच कुछन-कुछ अंतःक्रिया अवश्य होती है। यही अंत:क्रिया मूल्यांकन कार्यकर्ता द्वारा किया जाता है। वह सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रत्युत्तरों को देखता है वह सफलता एवं असफलता के कारणों पर प्रकाश डालता है। ट्रेकर ने निम्नलिखित क्षेत्रों का ज्ञान कार्यकर्ता के लिए आवश्यक बताया है-

1. कार्य का विवरण ।
2. बारंबारता- कार्यकर्ता देखता है कि सदस्य कितनी बार तथा कैसे कार्य में भाग लेते हैं।
3. अवधि - सदस्यों के द्वारा कार्यक्रमों में भाग लेने की अवधि को देखता है।
4. अंत:क्रिया की दशा-दिशा की दो श्रेणियाँ होती हैं एक व्यक्ति की ओर तथा दूसरी उद्देश्य की ओर । कार्यकर्ता अंत:क्रिया की दिशा की ओर ध्यान देता है।

5. नेतृत्त्व का विकास करना- समूह कार्यकर्ता का मुख्य उद्देश्य समूह के सदस्यों में नेतृत्त्वका विकास भी करना है। कार्यकर्ता द्वारा यह भी प्रयास किया जाता है कि जो सदस्यों में सकारात्मक नेतृत्त्व के गुण विद्यमान हैं और वे

उत्तरदायित्व को ग्रहण कर सकते हैं ऐसे सदस्यों हेतु प्रयास करता है। समूह कार्यकर्ता यह जानता है कि वह समूह के साथ कुछ ही दिन रहेगा और एक निश्चित समय पश्चात उसे समूह का समापन करना पडेगा, इसलिए वह कोशिश करता रहता है कि समूह के ऐसे सदस्य जिनमें नेतृत्त्व हेतु सकारात्मक भाव हो ऐसे लोगों के निरंतर संपर्क में रहता है और इस प्रकार से निर्देशित करता है, जिससे समूह-नेता समूह का प्रिय सदस्य हो जाता है। वह समूह के प्रत्येक सदस्य को कोई ज़िम्मेदारी वाला कार्य सौंपता है, जिससे समूह में एकता भी बनी रहे और किसी भी प्रकार उच्च-निम्न का भाव जाग्रत न हो सके।

6. मूल्यांकन करना- समूह कार्यकर्ता जैसे-जैसे कार्यक्रम प्रक्रिया को आगे बढ़ाता रहता है वह समूह व सदस्यों का मूल्यांकन करता रहता है। वह प्रत्येक सदस्यों की भूमिका का भी मूल्यांकन करता है। कार्यकर्ता कहमेशा प्रयत्न रहता है कि वह सदस्यों द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे कार्यों का प्रत्येक स्तर पर मूल्यांकन करते रहें टेकर ने मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित कार्यों का उल्लेख किया है-

1. संस्था को ध्यान में रखकर व्यक्तियों और समूहों के उद्देश्यों का निर्धारण करना।
2. समूह व व्यक्ति के विकास व उन्नति को निश्चित करने के लिए मापदंड का ज्ञान रखना।
3. तीव्र विकास एवं परिवर्तन के लिए कार्यक्रम की योजना तैयार करना।
4. विकास व उन्नति के मापदंड के आधार पर अभिलेखों का विश्लेषण करना।
5. यह निश्चित करने के लिए कि क्या समूह उद्देश्यों को प्राप्त कर रहा है, विश्लेषणात्मक आँकड़ों की व्याख्या करना।
6. कार्यक्रम, विषय-वस्तु और ढंगों का पुनरावलोकन करना।
7. उद्देश्यों को संशोधित करना तथा मूल्यांकन में निरंतरता बनाए रखना।
8. संस्था से संबंधित कार्यसामाजिक समूह कार्य में मुख्य रूप से तीन प्रकार के अंगों का वर्णन किया जाता है - कार्यकर्ता, समूह एवं संस्था । सामाजिक संस्था द्वारा ही कार्यकर्ता समूह को सेवा प्रदान करता है। कार्यकर्ता संस्था के संबंध में यह जानने का प्रयास करता है कि
9. संस्था के प्रमुख उद्देश्यों के संबंध में जानकारी एकत्रित करता है।
10. संस्था की सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक व मनोसामाजिक स्थिति का पता लगाना ।
11. संस्था में मुख्य रूप से उपलब्ध सुविधाओं को ज्ञात करना ।
12. संस्था की कार्यप्रणाली को ज्ञात करना।
13. संस्था की नीतियों का अध्ययन कर समूह को संस्था की नीतियों के अनुरूप मोड़ने का प्रयास करना।
14. संस्था की सभी गतिविधियों में भाग लेना।
15. संस्था को समूह के हित में सोचने के लिए अंतर्दृष्टि देता है।

समूह कार्यकर्ता की भूमिका:- सामूहिक कार्यकर्ता समूह की आवश्यकता एवं सामूहिक स्थितियों को ध्यान में रखकर अपनी भूमिका को निभाता है। कुछ विद्वानों ने मुख्य रूप से समूह कार्यकर्ता की निम्नलिखित भूमिकाओं को स्पष्ट किया है-

1. **सार्थकता की भूमिका (Enabler): -** कार्यकर्ता का सर्वप्रथम यह प्रयास रहता है कि वह अपने समूह-सदस्यों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझे एवं उन्हें सुलझाने में सहायता करें। अतः वह उन स्रोतों का पता लगाता है, जिनसे आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है तथा सदस्य सहयोग ले सकते हैं। वह समूह निर्माण के लिए व्यक्तियों में अपनी वर्तमान स्थिति के प्रति असंतोष उत्पन्न करता है, जिससे वे परस्पर सहयोग एवं संयुक्त प्रयास के लिए एकत्रित

होते हैं। कार्यकर्ता सभी के मतानुसार समूह का निर्माण करता है। वह सदस्यों में अपनी समस्याओं के समाधान हेतु सक्षमता को विकसित करता है तथा कार्यक्रम के चयन हेतु भी सदस्यों में जागरूकता पैदा करता है। अतः इस आधार पर वह एक सार्थकता की भूमिका को निभाता है।

2. **पथ-प्रदर्शक के रुप में (The Guide)** :- कार्यकर्ता एक पथ-प्रदर्शक की भाँति समूह को रास्ता दिखाता है। वह सदस्यों को संस्था व समुदाय की सुविधाओं एवं अन्य स्रोतों से अवगत कराता है, जिनकी उन्हें आवश्यकता तो है परंतु वे जानते नहीं हैं। वह सदस्यों की अपनी भूमिका का एहसास कराता है तथा आवश्यक मुद्दों को स्पष्ट करता है। आवश्यकता पड़ने पर प्रत्यक्ष रूप से समूह की सहायता करता है। वह सामूहिक अंतक्रिया का निर्देशन करता है।

3. **अधिवक्ता के रूप में (The Advocate)** :- जिस प्रकार एक अधिवक्ता अपने मुवक्किल के लिए, उसके न्याय के लिए जज के सामने अपने पक्षों को रखता है उसी प्रकार कार्यकर्ता सदस्यों की समस्याओं को उच्च अधिकारियों के समक्ष रखता है तथा आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने की सिफारिश करता है।

4. **विशेषज्ञ के रूप में (The Expert) :-** कार्यकर्ता सदस्यों को आवश्यकता पड़ने पर एक विशेषज्ञ की भाँति सलाह देने का कार्य करता है। वह समूह-समस्या का विश्लेषण करता है तथा उसका निदान किस प्रकार से किया जाए उसका हल खोजता है। समूह को विधिवत तथा अधिक प्रभावकारी होने के लिए उपयुक्त तरीके बतलाता है। वह संस्था व समूह के कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी करता है, जिससे कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से संपन्न किया जा सके।

5. **चिकित्सक के रूप में (The Therapist):-** जिस प्रकार एक चिकित्सक मरीज के रोगों के अध्ययन के पश्चात उचित इलाज करता है, उसी प्रकार एक कार्यकर्ता समूह की कुछ मुख्य समस्याओं को चयनित करउनका समाधान करने में समूह की सहायता करता है। वह समूह का उन शक्तियों से परिचय करवाता है जो विघटनात्मक है तथा जिनका प्रत्यक्ष रुप से प्रभाव पड़ता है। वह समूह को इस प्रकार से प्रेरित करता है, जिससे सदस्य स्वयं परिवर्तन की माँग करते हैं। वह सदस्यों के अहं को सुदृढ़ करता है।

6. **परिवर्तक के रूप (The Changer) :-** कार्यकर्ता सदस्यों की आदतों में परिवर्तन लाने के लिए अनेक कार्यक्रम करता है, क्योंकि कभी-कभी आदतों के कारण ही समस्या उठ खड़ी होती है और परिवार व समाज में विघटन उत्पन्न कर देती है। कार्यकर्ता सदस्यों के कार्य करने के तरीकों में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करता है , क्योंकि जब तक कार्य करने के ढ़ंगों में बदलाव नहीं आएगा तब तक समूह किसी भी प्रकार से विकास नहीं कर सकेगा। वह सदस्यों के मनोवृत्तियों मे भी परिवर्तन लाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करता है जिससे की समूह कोमज़बूती प्रदान हो सके।

7. **सूचना दाता के रूप में (The Imformer) :-** कार्यकर्ता एक सूचनादाता के रूप में समूह के साथ कार्य करता है। वह समूह को संस्था के संदर्भ में उपलब्ध सुविधाओं के अतिरिक्त समुदाय की आवश्यकताओं एवं समूह सदस्यों को प्राप्त होने वाली समस्त सुविधाओं के संदर्भ में समूह की सहायता करता है।

8. **सहायक के रूप में (The Helper) :-** कार्यकर्ता समूह की सहायता लक्ष्य निर्धारण तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीकों को निश्चित करने में करता है। वह संस्था से सहायता लेने में समूह की मदद करता है। कार्यक्रमों के निर्धारण तथा उनका चयन करने में वह सहायता करता है। समूह में सामूहिक चेतना तथा सामूहिक भावना विकसित करने के लिए समूह की सहायता करता है।

अतः उपर्युक्त आधारों पर यह कहा जा सकता है कि समूह कार्यकर्ता समूह के प्रत्येक चरण व अवस्था में प्रारंभ से समापन तक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका को निभाता है एवं इन आधारों पखह समूह का लक्ष्य प्राप्ति हेतु सहायता करता है।

2.6 सारांश

संपूर्ण अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समूह कार्य प्रक्रिया एक अत्यंत ही सावधानीपूर्वक की जाने वाली गतिविधि है, जिसमें प्रत्येक अवस्था व चरण का अपना महत्त्व है । इस संपूर्ण प्रक्रिया में यदि एक भी चरण में कोई गलती हो जाती है तो संपूर्ण कार्य प्रक्रिया प्रभावित होती है अतः प्रत्येक चरण को बड़ी सावधानीपूर्वक संपन्न करना चाहिए । विद्वानों द्वारा दिए गए मुख्य चरण एवं अवस्था में हमारे द्वारा मुख्य अवस्थाओं, प्रथम अवस्था-समूह रचना (आरंभ), द्वितीय अवस्था-पर्यवेक्षण (आरंभिक सत्र), तृतीय अवस्था-निष्पादन (क्रियात्मक चरण), चतुर्थ अवस्था-मूल्यांकन (समीक्षा), पंचम अवस्था-समापन (समाप्ति चरण) पर चर्चा की गई है। लेकिन सारांश में टकमैन (1963) द्वारा दिए गऐ समूह कार्य अवस्था को समझने से समूह अवस्था संबंधी कार्यमें और अधिक स्पष्टता आ सकती है इसलिए इसको भी समझ लेना आवश्यक होगा। (Forming), परफारमिंग (Performing) एवं एडजर्निंग (Adjourning) के आधार पर वर्णन किया है।

Forming stage :- Forming वह Stage है, जिसमें समूह में सम्मिलित प्रत्येक सदस्य एक साथ मिलते हैं एवं सदस्य एक दूसरे से अनभिज्ञ रहता है तथा सदस्य निष्क्रिय रहते हैं Forming stage में ही समूह को समस्या का पता चलता है। इस चरण में सदस्यों के मध्य कभी-कभी संघर्ष की स्थिति भी आ जाती है। Forming stage में समूह नया होता है तथा प्रत्येक व्यक्ति अपने ही विचारों में रहता है।

***"Storming"* :-** (आक्रमण करना) इस चरण में समूह के प्रत्येक सदस्य स्वयं को श्रेष्ठ बनाने में लगा रहता है। सब अपनी-अपनी बात को महत्त्व देते है। परिणामस्वरुप वैचारिक मतभेद समूह में होने लगता है। वैचारिक मतभेद की स्थिति के कारण इस चरण में समूह कभी-कभी टूटने की स्थिति में भी आ जाता है समूह में तनाव की स्थिति बनी रहती है। बिना वाद विवाद के कोई भी एक निश्चित बिंदु पर किसी भी बात को स्वीकार नही करता अर्थात समूह में कोई भी किसी कि बात नही सुनता।

Norming:- इसके पश्चात के नोर्मिंग चरण में आते हैं। इस चरण में समूह अपने छोटे-छोटे समूह में बट जाता है एवं समूह के सदस्यों के मध्य आपसी संबंध स्थापित होता है वे एक साथ कार्य करते हैं सहयोग तथा घनिष्ठता के कारण समूह का प्रत्येक सदस्य स्वयं को समूह में सुरक्षित महसूस करता है तथा अपने विचारो तथा बिंदुओं को स्वतंत्रता से व्यक्त कर पाता है। तथा पूरे समूह मे स्वतंत्रता से विचार-विमर्श कर पाता है। सबसे प्रमुख महत्त्वपूर्ण बात यह है कि इस चरण में समूह के सदस्य एक दूसरे की बात को सुनते हैं तथा ताल-मेल स्थापित करते हैं।

Performing :-. इस चरण में समूह स्थापित हो जाता है। एव समूह कार्यकर्ता यह निश्चित कर लेता है कि समूह स्थापित हो गया है। परफारमिंग में समूह के प्रत्येक सदस्य लक्ष्य तथा प्रभाव को हासिल करने में जुट जाते हैं तथा एक साथ सहयोगी रूप से कार्य करते हैं। तो इस प्रकार से भी समूह कार्य अवस्था को समझा जा सकता है। साथ ही, सामूहिक कार्यकर्ता भी समूह के प्रत्येक अवस्था में अपनी भूमिका को निभाता है एवं अपनी सेवाओं के द्वारा समूह के लक्ष्य प्राप्ति हेतु सहायता करता है। वह व्यक्ति के सामाजिक, आर्थिक विकास हेतु संपूर्ण प्रयास

करता है ओर सामाजिक संबंधो के आधार पर विकासात्मक एवं शिक्षात्मक क्रियाओं का आयोजन समस्या समाधान हेतु करता है । अत: उपर्युक्त अध्ययन के पश्चात यह कहा जा सकता है कि समूह कार्य प्रक्रिया में अवस्थाएँ एवं चरण और समूह कार्यकर्ता की भूमिका समूह कार्य हेतु अत्यंत हीमहत्त्वपूर्ण है।

2.7 बोध प्रश्न

1. सामूहिक समाज कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाली विभिन्न अवस्थाओं की व्याख्या कीजिए।
2. समूह विकास की अवस्था में आपके अनुसार सबसे प्रमुख चरण कौनसा है? स्पष्ट कीजिए ।
3. समूह निर्माण करते समय किन-किन महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए?
4. सामूहिक समाज कार्य हेतु समूह कार्यकर्ता की भूमिका को स्पष्ट कीजिए ?
5. समापन अवस्था को विस्तारपूर्वक समझाइए?

2.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. Douglas Tom (1976). *Group work Practice*, Newyork : International University press.
2. Porter, E.H. (1947). *Community*, Newyork, Wise women's press.
3. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010).*समूहों के साथ कार्य करना.* दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ ।
4. सिंह, ए.एन. एवं सिंह, ए.पी. (2008). *समाज कार्य.* लखनऊ:हल्दानी प्रकाशन ।
5. मिश्रा, प्रयागदीन(2008). *सामाजिक सामूहिक* कार्य. लखनऊ : हिंदी संस्थान ।
6. कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।
7. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010). *समाज कार्य.* लखनऊ : जुबली एच फाउंडेशन
8. सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012) *सामूहिक कार्य, हल्दानी* : उत्तरायन प्रकाशन ।
9. गार्विन, चार्ल्सो दी इटीएल (2008). *हैंड बुक ऑफ सोशल वर्क विद ग्रुप्स*नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।
10. कोनोप्का, जिसेला (1963). *सोशियल ग्रुप वर्कर ए हेल्पिंग प्रोसस.* नई दिल्ली: एस.जे. प्रिंटिस हाल।
11. सिद्दीकी एच.वाई. (2008). *ग्रुप वर्क थ्योएरिज एंड प्रैक्टिसिज* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।
12. ट्रेक्कीर, हार्लिग बी (1955). *सोशल ग्रुप वर्क, प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिसिज* न्यूयॉर्क: एसोसिएशन प्रैस।
13. विल्सन, गर्ट्रुड एंड ग्लाडिस रीलेंड (1940). *सोशल ग्रुप वर्क प्रैक्टिस.* बोस्टो : हॉग्टोकन मिक्लिन।

इकाई 3 समूह निर्माण की प्रक्रिया

इकाई रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 समूह की निर्माण की अवधारणा
3.3 समूह की विशेषताएँ
3.4 सामाजिक समूह कार्य में समूह निर्माण
3.5 समूह निर्माण की प्रक्रिया-सामाजिक समूह कार्यकर्ता द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य
3.6 समूह अध्ययन हेतु निर्देशिका
3.7 सारांश
3.8 बोध प्रश्न
3.9 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. समूह निर्माण एवं उसकी विशेषताओं की व्याख्या कर सकेंगे।
2. सामाजिक समूह कार्य में समूह निर्माण को रेखांकित कर सकेंगे।
3. इस प्रक्रिया में सामाजिक समूह कार्यकर्ता की भूमिका को विश्लेषित कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर ही अपना जीवन-यापन कर सकता है। समाज के बिना मनुष्य का जीवन असंभव नज़र आता है । वह जन्म से लेकर मृत्युपर्यंत न केवल विभिन्न प्रकार के समूहों में रहता है बल्कि निरंतर नए समूहों का निर्माण भी करता है। समूहों के माध्यम से ही व्यक्ति अपनी विभिन्न प्रकार की आवश्यकताओं की पूर्ति करता है। समूहोंसे पृथक व्यक्ति के अस्तित्व की साधारणतः कल्पना नहीं की जा सकती। विभिन्न समूहों के माध्यम से ही व्यक्ति का समाजीकरण और व्यक्तित्व का विकास होता है। मनोवैज्ञानिकों की मान्यता है कि व्यक्ति अपनी एक मूलप्रवृत्ति 'ग्रिगेरियस इन्सर्टिक्ट' के कारण ही समूह में रहता है। समूहों के माध्यम से ही एक पीढ़ी के विचारों तथा अनुभवों को दूसरी पीढ़ी को हस्तांतरित किया जाता है। आमतौर पर समूह शब्द का प्रयोग कुछ व्यक्तियों के संगठन, जैसे- परिवार, भीड़, सामाजिक वर्ग, धार्मिक वर्ग, व्यावसायिक वर्ग, विभिन्न प्रजातियाँ, आदि के लिए किया जाता है। आप इससे पहले समूहों की प्रकृति तथा समूह सक्रियता के अर्थ का अध्ययन कर चुके है साथ ही यह भी जान चुके है कि समूह की अवस्थाएँ क्या होती हैं। वास्तव में समूह निर्माण सभी समूह विकास और निष्पादन का प्रारंभिक बिंदुहोता है। समूह निर्माण प्रक्रिया के माध्यम से ही सामाजिक समूह कार्य संपन्न किया जा सकता है।

3.2 समूह निर्माण की अवधारणा

समूह का निर्माण अकारण नहीं होता है। इसके पीछे अनेक कारण होते हैं। एक समूह निर्माण में प्रभावी कारण मनुष्य की स्वार्थता नज़र में आती है । समूह का निर्माण क्यों और कैसे होता है इस संदर्भ में मैकाइवर और पेज ने

समूह निर्माण की निम्नलिखित विशेषताओं कीओर ध्यान आकर्षित करते हुए कहा है कि सामान्य हित ही सामूहिकता की भावना को जन्म देता है। इसका स्पष्टीकरण देते हुए उन्होंने तीन बातों को मुख्य रूप से कहा है- सर्वप्रथम उन्होंने कहा है कि - मनुष्य स्वंय ही आवश्यकता की पूर्ति कर सकताहै पर वह व्यावहारिक नहीं है, द्वितीय व्यक्ति समाज के अन्य सदस्यों से संघर्ष करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है पर वह मानव समाज के लिए विघटनकारी है और अंत में व्यक्ति कुछ लोगों के साथ सहयोग करके अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सकता है। अतः मैकाइवर और पेज के अनुसार यह तीसरा तरीका ही समूह निर्माण का कारक बनता है । अतः इन्हीं महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखकर समूह निर्माण प्रक्रिया को पूर्ण किया जाता है।

3.3 समूह की विशेषताएँ

मानव-क्षेत्र में समूह से तात्पर्य, मनुष्यों के ऐसे संकलन से है जो एक-दूसरे के साथ सामाजिक संबंध रखते हैं समूह को परिभाषित करते हुए शेरिफ ने कहा था कि- 'समूह एक सामाजिक इकाई है जिसका निर्माण ऐसे व्यक्तियों से होता है जिनके बीच (न्यूनाधिक) निश्चित परिस्थिति एवं भूमिका विषयक संबंध हो तथा व्यक्तिसदस्यों के आचरण को, कम से कम समूह के लिए महत्त्वपूर्ण मामलों में, नियमित करने के लिए जिसके अपने कुछ मूल्य या आदर्श-नियम हो'। अतः अनेकों विद्वानों द्वारा दी गई परिभाषाओं के आधार पर समूह की निम्नलिखित विशेषताओं को देखा जा सकता है

1. **व्यक्तियों का समूह:-** समूह दो या दो से अधिक व्यक्तियों का होता है। किसी भी समूह का निर्माण एक अकेले व्यक्ति द्वारा नहीं हो सकता।
2. **उद्देश्य पूर्ति :-** प्रत्येक समूह का निर्माण किसी-न-किसी उद्देश्य के कारण ही होता है जिसमें प्रत्येक सदस्य साथ मिलकर उद्देश्य की प्राप्ति करते हैं। समूह के सदस्यों में कार्य-विभाजन कर दिया जाता है।
3. **सामान्य रुचि :-** किसी भी समूह का निर्माण उन्हीं व्यक्तियों द्वारा होता है जिनकी रुचि एक समान होती है जैसे- एक सी पसंद का होना, खेलना-कूदना आदि।
4. **एक समान हित -** मनुष्य एक स्वार्थी प्राणी है, जब व्यक्ति का हित समान होता है तो वह समूह का निर्माण करना आरंभ कर देता है । विरोधी हितों वाले व्यक्ति का समूह का निर्माण करना असंभव हो जाता है।
5. **लक्ष्य :-** कोई समूह, समूह के रूप में उसी समय तक कायम रह सकता है जब तक वह किसी लक्ष्य की प्राप्ति हेतु एक साथ मिलकर प्रयास करते हैं। यदि लक्ष्य प्राप्ति न हो तो समूह में एकता की भावना नहीं रह पाएगी और समूह टूट जाएगा ।
6. **ऐच्छिक सदस्यता:-** समूह की सदस्यता ऐच्छिक होती है इसका तात्पर्य यह है कि सदस्य अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु समूह को स्वीकारता है। व्यक्ति सभी समूहों कासदस्य नहीं बनता वरन उन्हीं समूहों की सदस्यता ग्रहण करता है जिनमें उसके हितों, आवश्यकताओं एवं रुचियों की पूर्ति होती हो।
7. **स्तरीकरण:-** समूह में सभी व्यक्ति समान पदों पर नहीं होते वरन् वे अलग-अलग प्रस्थिति एवं भूमिका निभाते हैं। अतः समूहों में पदों का उतार-चढ़ाव पाया जाता है।
8. **सामूहिक आदर्श:-** प्रत्येक समूह में सामूहिक आदर्श एवं प्रतिमान पाए जातेहै जो सदस्यों के पारस्परिक व्यवहारों को निश्चित करते हैं, उन्हें एक स्वरुप प्रदान करते हैं। प्रत्येक सदस्य से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समूह के आदर्शो एवं प्रतिमानों जैसे प्रथाओं, कानूनों, लोकाचारों, जनरीतियों आदि का पालन करें।

9. **स्थायित्व:-** समूह में थोड़ी बहुत मात्रा में स्थायित्व भी पाया जाता है। यद्यपि कुछ समूह अपनेउद्देश्यों की पूर्ति के बाद ही समाप्त हो जाते हैं। फिर भी वे इतने अस्थिर नही होते कि आज बने और कल समाप्त हो गए।
10. **समझौता:-** समझौता मनुष्य के लिए प्रत्येक स्तर पर अत्यंत ही आवश्यक होता है।किसी भी समूह की स्थापना तभी संभव है जब उसके सदस्यों में समूह के उद्देश्यों, कार्य-प्रणाली, स्वार्थ पूर्ति, नियमों, आदि को लेकर आपस में समझौता हो।
11. **ढाँचा:-** प्रत्येक समूह के नियम, कार्यप्रणाली, अधिकार, कर्तव्य, पद एवं भूमिकाएँ आदि तय होते हैं। इसी आधार पर यह एक संरचना या ढाँचा का निर्माण करते हैं और सदस्य उन्हीं के अनुसार आचरण करते हैं।
12. **अंतर्वैयक्तिक संबंध:-** प्रत्येक समूह में परस्पर अंतक्रिया का होना अत्यंत ही आवश्यक होता है। जब तक वह किसी अन्य व्यक्ति के साथ अंत:क्रिया नहीं करेगा तब तक वह समूह का सदस्य नहीं हो सकता। अतः समूह में अंतर्वैयक्तिक संबंध का होना अत्यंत हीआवश्यक होता है।
13. **आदान प्रदान:-** सहयोग एवं आदान-प्रदान से ही समूह के सदस्य अपने सामान्य हितों की पूर्ति कर पाते हैं। इसी सहयोग एवं आदान-प्रदान के आधार पर समूह के सदस्य एक-दूसरे के कष्ट में सहयोग एवं सहायता भी करते हैं।
14. **स्पष्ट सख्या:-** स्पष्ट संख्या के संदर्भ में अनेक विद्वानों की अलग-अलग राय है। लक्ष्य के आधार पर समूह संख्या का निर्धारण किया जाना चाहिए। एक सामाजिक समूह में सदस्यों की संख्या स्पष्ट होना चाहिए जिससे उसके आकार एवं प्रकार को स्पष्ट रूप से समझा जा सके।

अतः उपर्युक्त विशेषताओं के आधार पर समूह को समझा जा सकता है।

3.4 सामाजिक समूह कार्य में समूह निर्माण

सामाजिक समूह कार्य प्रणाली में समूह निर्माण एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण प्रक्रिया है, क्योंकि इसी प्रक्रिया के माध्यम से सेवार्थी को सेवाएँ प्रदान की जाती हैं। कार्यकर्ता एवं संस्था दोनों के लिए समूह एक आवश्यक साधन व यंत्र होता है जिसका प्रयोग कर उद्देश्यों का निर्धारण करने से लेकर लक्ष्य प्राप्ति तक संपूर्ण कार्य किए जाते हैं। कुछ समूह तो स्थायी रूप से संस्था के अंग होते हैं, लेकिन कुछ समूह अस्थायी होते हैं, जो लक्ष्य हेतु समूह में सम्मिलित किए जाते हैं। कुछ समूह आकार में छोटे होते हैं तो कुछ समूह आकार में बडे होते हैं, कुछ समूह संगठित होते हैं कुछ असंगठित होते है, कुछ समूहों का संरचनाओं के आधार पर उनका निर्माण किया जाता है। अतः समूहों की संख्या, स्थायित्व, संरचना, समूह लक्ष्य पर अधिक निर्भर करती हैं। समूह निर्माण लघु परिवर्तनों के साथ एकल प्रक्रिया नहीं हैं। यह बिलकुल अलग घटनाक्रम, नए और भिन्न समूहों के निर्माण का परिणाम हो सकता हैं। कार्टराइट और जैंडर (1968) ने तीन अलग-अलग परिस्थितियों की पहचान की हैं, जिसमें समूह अपने अस्तित्त्व में आता है, ये हैं-

1. **सुविचारित निर्माण-** एक या उससे अधिक लोग अपने कुछ उद्देश्यों को पूरा करने के लिए समूह निर्माण करते हैं। सुविचारात्मक निर्माण अथवा 'निर्मित' समूह, बाहर के अभिकर्ता समूह के लिए लोगों को काम करने के लिए तैयार करते हैं और समूह के उद्देश्य के अनुसार विशेष प्रकार के पदों से सज्जित करते हैं। अनेक कार्य समूह, समस्या समाधान समूह, चिकित्सा समूह, सामाजिक क्रिया समूह तथा सलाहकार मध्यस्थ समूह और सबसे अधिक समूहों की भरमार सामाजिक मनोविज्ञान तथा शैक्षिक उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए निर्मित सभी समूह इसी श्रेणी के अंदर आते हैं।

2. **स्वैच्छिक निर्माण-** समूह का निर्माण अंतवैयक्तिकरूचि व इच्छाओं के आधार पर होता है। समूह का निर्माण इसलिए होता है कि लोग एक साथ मिलकर अपनी इच्छाओं को पूरा करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, मित्रता समूह या मैत्री समूह, गैंग और व्यावसायिक समूह इत्यादि।
3. **बाहरी पद-** इसका निर्माण इसलिए होता है कि लोग उनके साथ समजातीय के रूप में व्यवहार करते हैं। यह बाहरी पदों का सृजन समूहों के सुविचारित निर्माण की दिशा में ले जा सकता है।
4. **समूह नियोजन-** समूह का निर्माण कुछ विशिष्ट उद्देश्यों को लेकर किया जाता है, जैसे- कुछ कार्यक्रम संबंधी, कुछ विशेष व्यवहार, अतिसक्रीय या क्रोधी लोग या असामाजिक बच्चों संबंधी, कुछ सामान्य रोग संबंधी, विशिष्ट लक्षणों संबंधी एवं परिस्थिति संबंधी इन समस्त उद्देश्य संबंधी समूहों को नियोजित करने की समाज कार्य समूह की सफलता के लिए एक व्यापक योजना की आवश्यकता होती है। नार्दन तथा कुरलैंड (2001, पृ. 109-111) के अनुसार 'समूह की प्रथम बैठक से पहले नियोजन करना आवश्यक है, इसमें सोचना या विचार करना, तैयारी, निर्णय लेना और सामाजिक कार्यकर्ता के कार्यों इत्यादि की योजना शामिल है।' समूह कार्य हेतु नियोजन को और अधिक निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है-

1. **आवश्यकता -** समूह सदस्य वह निर्धारित करते हैं कि परिप्रेक्ष्य के संदर्भ में कौन-सी समस्याएँ, मुद्दे और क्षेत्र विचारणीय हैं।
2. **उद्देश्य -** समूह के सामूहिक प्रयासों का समापन और उद्देश्य क्या होंगे? समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत उद्देश्य क्या होंगे ?
3. **संयोजन -** समूह में कितने व्यक्ति सदस्य होंगे ? उनके बीच कौन-से महत्त्वपूर्ण बिंदु समान होंगे और कौन-से भिन्न बिंदु होंगे?
4. **संरचना-** समूह संचालन की विशेष व्यवस्था तथा सुविधाएँ क्या होंगी? विशिष्ट रूप से समय और स्थान की क्या व्यवस्था होंगी ?
5. **विषय-** समूह में वास्तविक विषय क्या होगा या उसमें क्या किया जाएगा ?
6. **पूर्व-समूह संपर्क-** यदि कार्यकर्ताओं द्वारा समूह सदस्य पहले से निश्चित किएजा चुके हैं तो ऐसी स्थिति में संयोजन की प्रक्रिया आरंभ होती है। जैसे यदि एक ही अस्पताल में रहने वाले बीमार व्यक्ति। कार्यकर्ता अब सदस्यों की आवश्यकताओं के बारे में जानकारी प्राप्त करेंगे।समूह में व्यक्तियों की प्रतिबद्धताओं की क्षमताओं तथा प्रोत्साहनों की जानकारी लेंगे। समूह पूर्व संपर्क में उद्देश्यों, संरचना, विषय एवं व्यस्तता आदि सम्मिलन के निर्धारण के संदर्भ में बताएंगे।

3.5 समूह निर्माण की प्रक्रिया-सामाजिक समूह कार्यकर्ता द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य

समूह कार्य प्रक्रिया में समूह कार्यकर्ता की महती भूमिका होती है। कार्यकर्ता यह प्रयास करता है कि किस प्रकार से समूह के सदस्यों आपस में संबंध स्थापित करें, जिससे आवश्यक समूह कार्य प्रक्रिया को संपन्न किया जा सके। इसके लिए कार्यकर्ता द्वारा निम्नांकित प्रयास किए जाते हैं -

1. समूह कार्य प्रक्रिया प्रारंभ होने के पश्चात नए सदस्यों का आगमन प्रारंभ हो जाता है जिससे कार्यकर्ता समूह सदस्यों के मध्य आपसी सामंजस्य का प्रयास करता है। उसी समय कार्यकर्ता का प्रयास रहता है कि वह संस्था एवं सदस्यों की वस्तुस्थिति से सभी सदस्यों को अवगत कराए।

2. कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक होता है कि वह व्यक्ति एवं समूह दोनों का ज्ञान रखे और नए सदस्यों के शामिल होने संबंधी तथ्यों पर सोचविचार कर निर्णय ले। यह भी ध्यान रखें कि समूह का प्रत्येक सदस्य उसकों स्वीकार करें साथ ही, समूह की आवश्यकता का ज्ञान भी कार्यकर्ता को होना चाहिए।
3. कार्यकर्ता को स्पष्ट रूप से समूह के संदर्भ में संभावित उद्देश्यों को निर्धारित कर लेना चाहिए और यदि कार्यकर्ता पहले से ही निर्मित समूह के साथ कार्य करना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह उस समूह में शामिल होने से पूर्व उसके व्यापक उद्देश्यों की जानकारी अवश्य ही प्राप्त कर लें।
4. समूह कार्य का एक मुख्य उद्देश्य नेतृत्व का विकास भी करना है। नेतृत्व विकास से कार्य सदस्य एक सूत्र में बंध जाते है तथा अपनेपन की भावना का विकास होता है। कार्यकर्ता को नेतृत्व की स्थिति का उपयोग उचित प्रकार से करना चाहिए।
5. कार्यकर्ता में आवश्यक कुशलताएँ होना चाहिए, जिससे वह समूह में ऊर्जा का संचार कर सके ओर उचित तकनीकों का प्रयोग कर समूह भावना को विकसित कर सके।
6. समूह निर्माण प्रक्रिया के दौरान कार्यकर्ता के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा समूह से पहले संपर्क है। इस संपर्क का उद्देश्य नियोजित किए जा रहे समूह के लिए उपयुक्त सदस्यों को सुरक्षित या निश्चित करना तथा उस समूह में भागीदारी के लिए उनको तैयार करना है।
7. कार्यकर्ता को संसाधनों के उपयोग का पूर्ण ज्ञान होना और साथ ही पत्र-पत्रिकाओं विज्ञापन, समाचार पत्र, संस्थानों को पत्र लिखना आदि कुशलताओं का ज्ञान होना आवश्यक होजाता है।
8. कार्यकर्ता अभिकरण द्वारा समूह की योजना बनाने के ठीक इसी समय से समूह के उद्देश्य संरचना, सदस्यता, प्रचार का कार्य हाथ में लेना, संभावित सदस्यों का चयन और भर्ती करना इत्यादि के संबंध में एक विस्तृत रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए, कार्यकर्ता को बहुत ही महत्त्वपूर्ण कार्यों का निष्पादन करना होता है जिनका इसके लक्ष्यों की उपलब्धियों में समूह की सफलता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। समूह निर्माण की व्यापक प्रक्रिया की पहले ही योजना बनानी चाहिए तथा समूह की सफलता के लिए प्रथम बैठक बहुत ही व्यापक एवं महत्त्वपूर्णहोती है।
9. कार्यकर्ता का यह भी दायित्त्व होता है कि वह समुदाय से संबंधित सामुदायिक नेताओंस्थानीय पंचों को समूह कार्य से संबंधित उद्देश्यों से सभी को अवगत कराएँ
10. समूह कार्यकर्ता के लिए अत्यंत ही आवश्यक है कि वे समूह की संरचना तथा उसके विशेष लक्षणों के संबंध में विस्तृतनियोजन के निर्णय को तैयार करें।
11. कार्यकर्ता को यह निश्चित कर लेना चाहिए कि क्या प्रस्तावित समूह को आरंभ करने के लिए किसी प्राधिकारी की अनुमति की आवश्यकता होगी। ऐसे कई कार्यक्रम एवं समूह होते हैं जिनको आरंभ करने के पूर्व संभावित अधिकारियोंसे स्वीकृति आवश्यक होती है।

इन सब तथ्यों के अतिरिक्त समूह कार्यकर्ता समूह को स्थापित करने तथा निर्मित करने से पहले समूह कार्य की प्रणालियों को लागू किया जाना चाहिए। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता को कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने चाहिए तथा उसके पश्चात निर्णय लिए जाने चाहिए।

1. सामाजिक अभिकरण के क्या उद्देश्य हैं ?
2. सामाजिक अभिकरण का लक्ष्य समूह कौन स्थापित करेगा ?
3. क्या समूह कार्य द्वारा सामूहिक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है?
4. जिन सदस्यों के समान उद्देश्य हैं उनकी पहचान करना ?
5. क्या जो समय, स्थान, दिन व वातावरण का निर्धारण किया गया है वह उचित है?
6. समूह का उद्देश्य कौन निर्धारित कर रहा है?

7. समूह के कौन से भावी सदस्य होते हैं? किस प्रकार से उनका समूह में चयन और उन्हें सूचीबद्ध किया जाता है ?
8. सदस्यों के चयन के पीछे आधार क्या होगा? क्या एक-दूसरे से परिचित व्यक्तियों के आधार पर चयन किया जाएगा? कार्यकर्ता सुविचार के तहत अपने हित-लाभ, कौशल, आवश्यकता समस्या या सरोकारों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित समूह के लिए परिप्रेक्ष्य सदस्यों का चयन कर सकता है?
9. समूह में सदस्यों की संख्या का निर्धारण कैसे कियाजाएगा ?
10. समूह में कौन से कार्यक्रमों का पालन किया जाएगा? चर्चा, खुली या विषम-मूलक होगी ? क्या गतिविधियाँ-खेल, कला और शिल्प कला, नाटक, भूमिका निभाना, सामुदायिक सेवा इत्यादि एक साथ होगी ?
11. अनेक गैर-सामाजिक कार्य संस्थाएँ जैसे विद्यालय, अस्पताल, बंदी-गृह, आदि में सामाजिक कार्यकर्ता को किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता है? इसका निर्धारण करना।
12. यह निर्णय लेना कि किस प्रकार से समूह की शुरूआत की जाए, इसकी पूरी अवधि में समूह की निगरानी किस प्रकार की जाए, किस प्रकार से समूह के कार्य निष्पादन तथा विकास का मूल्यांकन किया जाए और कब और कैसे समूह को समाप्त किया जाए ? यह सब बातें समूह के सक्षम योजना के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।

अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यावसायिक समूह कार्यकर्ता को कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने चाहिए तथा उसके पश्चात निर्णय लिए जाने चाहिए।

समूह निर्माण को प्रभावित करने वाले कारक

हम सभी एक ही समय में विभिन्न प्रकार के समूहों के सदस्य होते हैं, जैसे- परिवार के, मित्रमंडली, कार्य संगठनों के, धार्मिक संस्थाओं के इत्यादि प्रत्येक समूह के अपने अलग-अलग कार्य एवं उद्देश्य होते हैं। हम अपने-अपने हितों की पूर्ति के लिए समूह से जुड़े हैं। समूह कार्य प्रक्रिया में जब सदस्य भाग लेता है तो वह भी इन्हीं संस्थाओं के माध्यम से समूह का सदस्य बनने आता हैं कई ऐसे कारक होते है, जो एक व्यापक किस्म के समूहों में प्रवेश करने और बने रहने के हमारे निर्णय को प्रभावित करते हैं। ये प्रकार निम्नानुसार हो सकते हैं-

1. समूह के सदस्यों के प्रति कार्यकर्ता का विशेष आकर्षण।
2. समूह की गतिविधियाँ।
3. लक्ष्य तथा कार्य समूहों के साथ जुड़ना।
4. समूह के बाहर की आवश्यकताओं एवं लक्ष्यों को प्राप्त करना।

इसके अतिरिक्त कुछ अन्य कारक भी हैं जो समूह को प्रभावित करते हैं, जैसे- कार्यात्मक विभाग, शारीरिक गतिविधियाँ, बौद्धिक प्रयास, भावनात्मक आवश्यकताएँ या संरक्षण और मित्रता बनाना। विल्सरन तथा रीलांड (1949) ने विभिन्न कारकों पर प्रकाश डाला है -प्रत्येक सामाजिक कार्यकर्ता जो समूहों के साथ कार्य करता है, उन्हें इन कारकों की जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक है। समूह का आकार, स्थापना-अभिकरण तथा समुदाय जिसमें समूह स्थापित करना है, सदस्यों का व्यक्तित्व, उनकी सांस्कृतिक, सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि तथा अभिकरण और समुदाय में इस समूह से दूसरे समूहों के संबंध इत्यादि ये सब प्रमुख कारक हो सकते हैं, जिन्हें कार्यकर्ता को कार्य के दौरान ध्यान में रखना चाहिए।

3.6 समूह अध्ययन हेतु निर्देशिका

समूह कार्य को स्पष्ट रूप से समझने के लिए ट्रेकर ने एक निर्देशिका का निर्माण किया है, जिसके आधार पर समूह कार्य से संबंधितउठने वाले प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ा जा सकता है। ये निर्देशिका निम्नानुसार है-

समूह का इतिहास

1. समूह ने कब कार्य करना प्रारंभ किया?
2. किसलिए, किसके द्वारा तथा किन कारणों से समूह का प्रारंभ किया गया है?
3. भूतकाल में किन संस्थाओं ने समूह के साथ कार्य किया?
4. यह किस प्रकार का समूह है- कल्याणकारी समूह, कक्षा,क्लब या अन्य प्रकार का ?

समूह की विशेषताएँ

1. सदस्यों की आयु की सीमा क्या है?
2. समूह सदस्यों का लिंग क्या है?
3. सांस्कृतिक पृष्ठभूमि क्याहै अथवा वे किस राष्ट्र का प्रतिनिधित्व करते हैं?
4. समूह सदस्य किस प्रकार समय का उपयोग करते हैं- स्कूल में ,काम में या अन्य किसी प्रकार से?
5. वर्तमान समय में उसका संगठन किस प्रकार का है?
6. सदस्यों में संबंधों की क्या विशेषताएँ हैं?
7. समूह क्या कोई प्रमुख छोटा समूहभी रखता है?
8. समूह में सामाजिक नियंत्रण प्रक्रिया का क्या कोई प्रमाण है?
9. संस्था और समुदाय में समूह की क्या स्थिति है?
10. समूह का भूतकालीन अनुभव क्या रहा है तथा समूहसदस्य किस प्रकार इसका मूल्यांकन करतेहैं?
11. क्या समूह-सदस्यों में भाग लेने में समानता एवं संतुलन है ?
12. समूह विकास कर रहा है या विघटित हो रहा है?
13. समूह किस प्रकार नए सदस्यों का प्रवेश करता है?
14. समूह किस प्रकार अपने कार्यक्रम व व्यवसाय को चलाता है?
15. प्रत्येक सदस्य की उम्र, लिंग, प्रजाति, तथा शैक्षिक पृष्ठभूमि क्या है?
16. समूह में व्यक्ति का क्या स्थान है? संस्था में क्या स्थान है? तथा समुदाय में क्या स्थिति है?
17. व्यक्ति किस प्रकार अन्य व्यक्तियों के साथ आसानी से भाग लेता है ?
18. व्यक्ति की रूचियाँ तथा योग्यताएँ क्या हैं ?
19. समूहों में व्यक्ति का पूर्व अनुभव कैसा रहा है?
20. किस प्रकार के घर से तथा सामुदायिक वातावरण से वह आया है ?
21. समूह की क्रियाओं में किस सीमा तक सदस्य भाग ले रहा है?
22. समूह के कार्यों में कितना उत्तरदायित्व ग्रहण करता है तथा प्रोत्साहन देता है?
23. वह समूह में कोई स्थान ग्रहण करता है, क्या चेयरमैन या अन्य उत्तरदायित्व ग्रहण करता है?
24. व्यक्ति किन अन्य संस्था और समुदाय के समूहों में सक्रिय है?

समूह-कार्यकर्ता संबंधकैसा है?

1. वर्तमान कार्यकर्ता से पहले समूह के कार्यकर्ता कौन-कौन थे तथा उनका समूह से कैसा संबंध था? समूह-सदस्य उनके विषय में क्या कहते हैं ?
2. वर्तमान कार्यकर्ता का समूह से कैसा संबंध है? समूह कार्यकर्ता से क्या अभिलाषा रखता हैं?
3. कार्यकर्ता का वर्तमान संबंध सदस्यों के साथ कैसा है?
4. वर्तमान कार्यकर्ता अपनी भूमिका को किस प्रकार समूह के साथ परिभाषित करता है? अन्य कार्यकर्ताओं का उपयोग समूह किस प्रकार करेगा - साधन के रूप में या कार्यक्रम में सहायक सामग्री के रूप में ।
5. कार्यक्रम के तरीके में समूह ने क्या किया है तथा वर्तमान रूढ़ियों क्या है ?

6. कार्यक्रम किस प्रकार नियोजित किया जाता है तथा भूतकाल में किस प्रकार चलाया जाता है? कार्य के क्रियान्वयन का वर्तमान तरीका क्या है ?
7. कार्यक्रम किस सीमा तक समूह की आवश्यकताओं को संतुष्ट करने में समर्थ हो पा रहा है?
8. किस सीमा तक कार्यक्रम साधारण क्रियाओं से जटिल क्रियाओं की ओर अग्रसर हुआ है?
9. समूह की आवश्यकताओं एवं रूचियों को पूरा करने के लिए क्या साधन तथा स्त्रोत उपलब्ध हैं ?
10. क्या संबंध संस्था के उद्देश्यों के अनुकूल है?
11. समूह के वर्तमान तथा दीर्घकालीन उद्देश्यों क्या है ?
12. कौन से व्यक्ति समूह तथा कार्यकर्ता से विशेष सहायता चाहते हैं?
13. भूतकाल में समूह ने किस सीमा तक सफल अनुभव प्राप्त किया है?

अतः इस आधार ट्रेकर द्वारा दिए गए समूह कार्य निर्देशिका को स्पष्ट किया जा सकता है जिससे समूह कार्य से संबंधित उठने वाले प्रश्नों का उत्तर ढूँढ़ाजा सके।

3.7 सारांश

उपर्युक्त इकाई के अध्ययन पश्चात यह कहा जा सकता है कि चाहे किसी भी कारण से, जिसके द्वारा भी और जहाँ कहीं भी कोई समूह बनाना पड़ता है, तो यह आवश्यक होता है कि वह किसी सामाजिक सामूहिक कार्यकर्ता की देख-रेख में बने । सामूहिक कार्यकर्ता की देख-रेख में बनने वाले समूह ज़्यादा फलप्रद होने की संभावना रखते हैं। समूह निर्माण हेतु कार्यकर्ता की महती भूमिका है, लेकिन इसके साथ ही साथ ऐसे तीन और पक्ष हैं, जिनका महत्त्व समूह निर्माण मे अत्यधिक होता है। प्रथम-समूह के व्यक्ति, दूसरा सामाजिक अभिकरण और तीसरा समुदाय। समूह कार्य प्रक्रिया में व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों एवं उसके बौद्धिक स्तर को वैज्ञानिक स्तर से जानने का प्रयास करना चाहिए। व्यक्ति की आर्थिक स्थिति उसका व्यक्तित्व और अंत: क्रियाओं पर प्रभाव तथा उसकी संभावनाओं को भी जानना आवश्यक है। समूह के सदस्य जिस समुदाय से आए हों वहाँ का आर्थिक, राजनीतिक वातावरण को जानना अत्यंत आवश्यक होता है। समूह निर्माण करते समय इन सभी तत्वों को जानना इसलिए आवश्यक होता है क्योंकि, व्यक्तित्व पर इन सब का अत्यधिक प्रभाव पडता हैं। समूह के प्रत्येक सदस्य के इन कथित पक्षों का अलग-अलग समुचित अध्ययन करने की आवश्यकता इसलिए होती है, क्योंकि वे सभी सदस्य मिलकर समूह बनाते हैं और उन सबको भिन्न-भिन्न क्षमताओं के आधार पर लाभ प्राप्त करने की संभावनाएँ होती हैं। यदि प्रत्येक व्यक्ति की क्षमता का ज्ञान कार्यकर्ता को नहीं होगा तो कार्यकर्ता व्यक्ति की आवश्यकता के अनुसार सदस्य को सहायता नहीं कर पाएगा जिससे लक्ष्य प्राप्ति में समस्या आ सकती है। अतः समूह निर्माण प्रक्रिया हेतु उपर्युक्त समस्त तथ्यों का होना अत्यंत ही आवश्यक है जिससे समूह निर्माण प्रक्रिया को प्रभावी बनाया जा सके।

3.8 बोध प्रश्न

1. समूह निर्माण से आपका क्या तात्पर्य है?
2. समूह निर्माण को प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कीजिए?
3. समूह निर्माण प्रक्रिया को स्पष्ट कीजिए?
4. सामूहिक कार्यकर्ता को समूह निर्माण करते समय किन-किन बातों का ध्यान रखना चाहिए ?
5. समूह नियोजन के घटकों का वर्णन कीजिए?
6. समूह निर्माण करने के पूर्व कार्यकर्ता द्वाराकिन-किन महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए?
7. व्यक्तिगत सदस्यों के साथ समूह बनाने से पहले संपर्क करने का क्या उद्देश्य होता है?

3.9 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. ट्रेकर, एच.वी, (1955). *सोशल ग्रपवर्क पिन्सिपल एन्ड प्रैक्टिस.*न्यूयोर्क: एसोसिएशन प्रेस।
2. प्रसाद मणिशंकर, सत्य प्रकाश, कुमार अरूण,कुमार संजय,सैफ मो.खान एवं सिंह अभव कुमार(2013). *यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेट समाज कार्य*. दिल्ली : अरिहंत पब्लिकेषन (इंडिया) लिमिटेड।
3. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010). *समूहों के साथ कार्य करना.* दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ।
4. सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य*. लखनऊ: हिंदी संस्थान।
5. मिश्रा, प्रयागदीन (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य.* लखनऊ : हिंदी संस्थान
6. कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।
7. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010). *समाज कार्य*. लखनऊ : जुबली एच फाउंडेशन
8. सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012).*सामूहिक कार्य.*हल्दानी : उत्तरायन प्रकाशन।
9. मेलकॉफ, एंड्रीयू (2004).*ग्रुप वर्क विद एडोलसेंट प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिस* न्यूयार्क : दि गिलफोर्ड प्रेस।
10. विल्सफन, जरट्रूड, रिलैंड, ग्लेगडीस, (1949). *सोशल ग्रुप वर्क प्रैक्टिस दि क्रियटीव यूस ऑफ सोशल प्रोसेंस*. यू एस ए: दि राइबर साइड प्रेस।
11. कोनोपका, शिसेला (1972). *सोसयल ग्रुप वर्क र ए हेल्पिंग प्रोसस*इंग्लेकवुड: प्रेंटिस हाल आई एन सी।
12. द्विवेदी, आर.एस. (2008).*व्ह्यूमन रिलेशनस एंड आर्गनाइजेशन्सन.* दिल्ली : बिहेवियर ग्लोबल

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई 4 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य और सिद्धांत

इकाई रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य एवंदर्शन
4.3 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य और सिद्धांत
4.4 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य (Values)।
4.5 सामाजिक समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले सिद्धांत (Principal)
4.6 सारांश
4.7 बोध प्रश्न
4.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. सामाजिक समूह कार्य में मूल्य एवं दर्शन को रेखांकितकर सकेंगे।
2. समूह कार्य अभ्यास में मूल्यों के महत्त्व को प्रदर्शितसकेंगे।
3. समूह कार्य अभ्यास में मुख्य रूप से प्रयुक्त होने वाले सिद्धांतों एवं उनके महत्त्व को वर्णित करसकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

हम यह जानते हैं कि समूह कार्य समाज कार्य की एक प्रणाली के रूप में जाना जाता है, जिसका मुख्य उद्देश्य समूह के माध्यम से लोगोंकी सहायता करना है। मनुष्य को यह सहायता विशिष्ट मान्यताओं और नियमों के तहत प्रदान की जाती है। समाज कार्य के उद्देश्य की ओर यदि हम ध्यान दें तो यही कहा जा सकता है कि यह एक मानवतावादी दर्शन, वैज्ञानिक ज्ञान तथा प्रविधिक निपुणताओं का प्रयोग करते हुए व्यक्तियों, समूहों एवं समुदायों की सहायता करता है। यह इस प्रकार से इनकी सहायता करता है कि ये स्वयं अपनी समस्या का समाधान करने में सक्षम हो जाए। समाज कार्य एक वैज्ञानिक ज्ञान पर आधारित कार्य है यहा वैज्ञानिकता का अर्थ व्यवस्थित ज्ञान से है। समाज कार्य की प्राथमिक प्रणाली होने के नाते मुख्यतः यही दर्शन और मूल्य समूह कार्य के भी हैं, जिनको समझ लेना अत्यंत आवश्यक है कि ये किस प्रकार से समाज कार्य की प्राथमिक प्रणाली (वैयक्तिक कार्य, समूह कार्य, सामुदायिक कार्य) समूह कार्य में सहायक बनते हुए कार्य करते हैं। इसी भाँति समूह कार्य के भी कुछ महत्त्वपूर्ण सिद्धांत होते हैंजिनका पालन किए बिना कोई भी सामाजिक कार्यकर्ता समूह कार्य प्रक्रिया को संपन्न नही कर सकता। सिद्धांतों का पालन कार्य ऐच्छिक नहीं होता, क्योंकि इन सिद्धांतों को प्रयोग में लाए बिना लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इसलिए इस इकाई में सामाजिक समूह कार्य के विभिन्न सिद्धांतों एवं मूल्यों के संबंध में चर्चा करेंगे।

4.2 सामाजिक समूह कार्य मे मूल्य एवं दर्शन

मूल्य समाज द्वारा मान्यता प्राप्त इच्छाएं एवं लक्ष्य हैं जिनका आंतरीकरण समाजीकरण की प्रक्रिया के माध्यम से होता है। मूल्यों के आधार पर ही व्यक्ति की जीवन शैली का निर्धारण होता है तथा अंत: क्रियाएँ संभव होती हैं। मूल्यों को परिभाषित करते हुऐ डोरौथी ली ने कहा है कि मानवीय मूल्यों से किसी एक मूल्य या मूल्यों की एक पद्धति से मेरा अभिप्राय है कि वह आधार जिस पर व्यक्ति किसी एक मार्ग को किसी दूसरे मार्ग की अपेक्षा अच्छा या बुरा, उचित या अनुचित समझते हुए ग्रहण करता है। हम मानवीय मूल्यों के विषय में केवल व्यवहार द्वारा ही जान सकते हैं। मानव व्यवहार द्वारा समूह निर्माण में मूल्य सामाजिक नियंत्रण के साधन के रूप में एक महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं इन्हीं मूल्यों द्वारा एक समूह, समुदाय और व्यक्ति अपने व्यवहार पर नियंत्रण रखतेहैं। समाज कार्य मूल्यों को आगे विस्तार से समझा जाएगा।

समाज कार्य में दर्शन सामाजिक जीवन के मौलिक सिद्धांतों और धारणाओं की व्याख्या करता है। दर्शन सामाजिक संबंधोंके सर्वोच्च आदर्श का निरूपण करता है। लियोनार्ड ने दर्शन को परिभाषित करते हुए कहा है कि- दर्शन विश्व के विभिन्न दृष्टिकोणों की प्रत्ययात्मक अभिव्यक्ति से अधिक कुछ और है – आदर्शात्मक शाप के अतिरिक्त यह मनुष्य के बीच तथा मनुष्य व संपूर्ण जगत के बीच संबंधों की मूल सत्यताओं का निरूपण करता हैमानव-विज्ञानों को वैज्ञानिक होने के लिए दार्शनिक होना होगा। विलियम जेम्स ने दर्शन के संबंध में कहा है कि प्रत्येक प्राणी का एक दर्शन होता है, जो उसके जीवन का मार्गदर्शन करता है। अतः कहा जा सकता है कि दर्शन से तात्पर्य कार्य को एक दिशा देना है जो व्यक्ति के अपने मतानुसार हो सकती है यह समान भी हो सकती है और भिन्नता भी प्रकट कर सकती है।

4.3 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य और सिद्धांत

फ्रीडलैंडर के मतानुसार समाज कार्य के मौलिक मूल्यों एवं सिद्वांतों का जन्म स्वतः नहीं हुआ है, अपितु इनकी जड़ें उन गहरे एवं उपजाऊ विश्वासों में मिलती हैं जो सभ्यताओं को सीखते हैं।अमेरिका की प्रजातांत्रिक व्यवस्था का आधार नैतिक एवं आध्यात्मिक समानता, वैयक्तिक विकास की स्वतंत्रता , सुअवसरों के स्वतंत्र चुनाव की स्वतंत्रता, न्यायपूर्ण प्रतिस्पर्धा, वैयक्तिक स्वतंत्रता, पारस्परिक प्रतिष्ठा एवं सर्वजन के अधिकार हैं। प्रजातंत्र के यह सभी आदर्श अभी तक पूर्ण रूप से प्राप्त नहीं किए जा सके हैं तथा समाज कार्य इन्हीं आदर्शात्मक की प्राप्ति का प्रयास कर रहा है। हर्बर्ट बिस्नो ने समाज कार्य के मूल्यों को चार क्षेत्रों में विभाजित किया है- प्रथम व्यक्ति की प्रकृति के संदर्भ में, द्वितीय समूहों, व्यक्तियों एवं समूहों और व्यक्तियों के आपसी संबंधों के संदर्भ में, तृतीय समाज कार्य प्रणालियों एवं कार्यों के संदर्भ में एवं चतुर्थ सामाजिक कुसमायोजन एवं सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में। हर्बर्ट बिस्नो द्वारा कहे गए इन समस्त मूल्यों को यदि हम समायोजित करके अध्ययन करें तो यही स्पष्ट होता है कि अपने अस्तित्व के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति मूल्यवान है, यह मूल्य समस्त समाज कार्य दर्शन का आधार स्तंभ है । साथ ही स्पष्ट होता है कि समाज कार्य का द्विमुखी दृष्टिकोण है। एक ओर समाज कार्य व्यक्तियों का संस्थागत समाज के साथ समायोजन स्थापित करने में सहायता करता है और दूसरी ओर यह संस्थागत समाज के आवश्यक क्षेत्रों में परिवर्तन लाने का प्रयास करता है। समाज कार्य में सिद्धांतों का भी अपना अलग ही महत्त्व है जो कार्य को एक क्रमबद्धता के साथ करने में हमारी सहायता करते हैं और यही क्रमबद्धता समूह कार्य के सिद्धांतों मे भी प्रतीत होती है। समूह कार्य के सिद्धांतों में मुख्य रूप से-नियोजन का सिद्धांत, लक्ष्यों की स्पष्टता का सिद्धांत, सोद्देश्य संबंध कासिद्धांत, निरंतर व्यक्तिकरण का सिद्धांत, निर्देशित सामूहिक अंतःक्रिया का सिद्धांत, जनतंत्रीय सामूहिक आत्मनिश्चयिकरण का सिद्धांत,लोचदार कार्यात्मक संगठन का सिद्धांत, प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों का सिद्धांत, साधनों के उपयोग का सिद्धांत, मूल्यांकन का सिद्धांत, भावनाओं के उद्देश्य पूर्ण प्रगटन का

सिद्धांत, आत्म-संकल्प का सिद्धांत आदि मुख्य सिद्धांतों के रूप में देखे जाते हैं जिनके माध्यम से संपूर्ण समूह कार्य प्रक्रिया को लक्ष्य प्राप्ति हेतु आसानी से किया जा सकता है।

4.4 सामाजिक समूह कार्य में मूल्य (Values)

समाज कार्य एक व्यावसायिक कार्य है और बिना मूल्यों के कोई भी व्यवसाय नहीं बन सकता । समाज कार्य के माध्यम से व्यक्ति में सामाजिक एवं व्यक्तिगत परिवर्तन लाने का प्रयास किया जाता है, इसलिए समाज कार्य में मूल्यों का होना आवश्यक है। समाज कार्य की विभिन्न अवधारणाओं का ज्ञान और समाज कार्य की विधियोंका ज्ञान कार्यकर्ता के लिए पूर्ण रूप से उपयुक्त नहींहो सकता जब तक वह इस ज्ञान और समाज कार्य के अभ्यास के फलस्वरूप एक विशेष प्रकार के व्यक्तित्व का विकास नहीं कर लेता। यह व्यक्तित्व समाज कार्य की मनोवृतियों एवं मूल्यों पर आधारित होता है। इसकी सहायता से समाज कार्यकर्ता व्यक्तिगत, सामूहिक एवं सामुदायिक क्षेत्रों में उत्पन्न होने वाली समस्याओं और विरोधी मूल्यों को दूर करने का प्रयास करता है। वह ऐसे मूल्यों को स्वीकार करने में सहायता देता है जो सभी को मान्य हों और जिससे संपूर्णसमुदाय, समूह एवं व्यक्तियों का विकास संभव हो सके। समाज कार्य के अनेक मूल्य हैं जो समाज कार्य को एक व्यावसायिकता प्रदान करते हैं अनेक विद्वानों के द्वारा समाज कार्य के इन मूल्यों को अलग-अलग रूप में परिभाषित किया गया है जो समाज कार्य व्यवसाय को एक दिशा प्रदान करते हैं और जिनका समावेश समूह कार्य प्रणाली में किया जाता है –

कौस (koss) के अनुसार समाज समूह कार्य के मूल्य

1. मनुष्य की योग्यता एवं उसकी गरिमा(The worth and dignity of man)।
2. संपूर्णमानवीय सामर्थ्य को प्राप्त करने की मानव प्रकृति की क्षमता का विकास करना (The capacity of human nature to achive full human potential)।
3. मतभेदों के लिए सहनशीलता (Tolerance of differences)।
4. मनुष्यकी मौलिक आवश्यकताओं की संतुष्टि(Satisfaction of basic human needs)।
5. स्वतंत्रता (Liberty)।
6. आत्म-निर्देशन (Self-direction)।
7. अनिर्णयात्मक प्रवृति (Non-judgement attitude)।
8. रचनात्मक सामाजिक सहयोग (Constructive social cooperation)।
9. कार्य की महत्ता तथा अवकाश का रचनात्मक सदुपयोग (Importance of work and constructive use of leisure)।
10. मनुष्य एवं प्रकृति के खतरों से अपने अस्तित्व की सुरक्षा(Protection of one's existence from the dangers caused by man and nature)।

कोनोपका (Konopka) के अनुसार

1. प्रत्येक व्यक्ति के प्रति आदर की भावना एवं उसका अपनी क्षमताओं के संपूर्ण विकास का अधिकार (Respect for every person to the fullest development of his/her potential)।
2. व्यक्तियों की पारस्परिक निर्भरता एवं एक-दूसरे के प्रति अपनी योग्यतानुसार उत्तरदायित्व (Mutual development of the individual and responsibility to wards each other according to their abilities.)।

नोटः कोनोपका ने द्वितीयक मूल्यों के प्रति मतभेद को वैज्ञानिक अन्वेषण द्वारा दूर करने का सुझाव दिया है और लिन्डमैन (Lindman) के विचारों की व्याख्या करते हुए कहा है कि समाज कार्यकर्ता एक ऐसा प्रभावशाल अस्तित्व है जो समाज कार्य के प्राथमिक मूल्यों की रक्षा करता है और उन्हें व्यावहारिक रूप देने का प्रयास करता है।

हर्बर्ट बिस्नो (Herbert Bisno) ने समाज कार्य/समूह कार्य के चार प्रमुख मूल्यों को विभाजित करते हुए उसका वर्णन किया है-

1. व्यक्ति की प्रकृति के संदर्भ में (Nature of the Individual) समूहों, व्यक्तियों एवं समूहों और व्यक्तियों के आपसी संबंधों के संदर्भमें (The relation between Group,Group and Individuals and betbeen individuals) ।
2. समाज कार्य की प्रणालियों एवं कार्यों के संदर्भ में(Function and Method of social work)।
3. सामाजिक कुसमायोजन एवं सामाजिक परिवर्तन के संदर्भ में (Social Maladjustment and social change)।

फ्रीडलेंडर ने समाज समूह कार्य के मूल्य को परिभाषित करते हुए कहा था कि समाज कार्य (समूह कार्य) के मौलिक मूल्यों का जन्म राहों के किनारों पर उपजे जंगली पुष्पों की भाँति नहीं हुआ, बल्कि इन मूल्यों की जड़ें उन गहरे, उपजाऊ विश्वासों में देखने को मिलता है जो सभ्यताओं को सींचते आए हैं।

प्रो. मिर्जा आर.अहमद ने विभिन्न भारतीय एवं पाश्चात्य राजनैतिक एवं सामाजिक विचारकों, विशेषज्ञों, शिक्षाविदों के विचारों को उद्धरित करते हुए समाज कार्य के निम्नलिखित मूल्यों को प्रतिपादित किया है-

रूददर दत्त (After Ruddar Dutt) के विचारों से प्रेरित होकर- समाज कार्य आर्थिक एवं राजनैतिक प्रभुसत्ता के समान रूप से पुनर्वितरण पर विश्वास करता है ताकि आर्थिक प्रोग्राम के अंतर्गत निर्धनों को उनका पूरा लाभ मिल सके।**गोल्ड स्मिथ** (After Gold Smith) के विचारों से प्रेरित होकर- समाज कार्य उत्पादन की सामाजिक व्यावहारिक पर विश्वास करता है तथा उत्पादन को सामाजिक उद्देश्य के अधीन मानता है।

होसलाइज़ (After Hoselize) के विचारों से प्रेरित होकर- समाज कार्य का विश्वास है कि आर्थिक भूमिका उपलब्धि के मानक के आधार पर ही निर्दिष्ट होनी चाहिए न कि प्रदत्त प्रस्थिति या सामाजिक स्थिति के अनुसार आरक्षित होनी चाहिए। इन उपर्युक्त आधारों पर प्रो. मिर्जा ने समाज समूह कार्य के मूल्यों को उल्लेखित किया है।

अतः विभिन्न विद्वानों सामाजिक विचारकों, विशेषज्ञों, शिक्षाविदों के विचारों से अवगत होने के पश्चात समूह कार्य के मूल्यों को निम्नानुसार बताया जा सकता है-

1. **आत्म निर्णय का अधिकार -** इसके द्वारा समूह सदस्यों से यह विश्वास किया जाता है कि वे स्वंय अपने निर्णय लेने में सक्षम बन सकें और साथ ही अपने मार्ग को प्रशस्त कर सकें।
2. **समूह सदस्यों की योग्यता एवं महत्ता पर विश्वास -** प्रत्येक व्यक्ति में अपनी कुछ विशेषताएँ होती हैं जो दूसरे किसी अन्य व्यक्ति में नहीं होती। प्रत्येक सदस्य को समान अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे वह समस्या के समय स्वयं ही समस्या का निराकरण खोजने में सक्षम हो जाए। समूह कार्य का लक्ष्य तब तक पूरा नहीं हो पाएगा जब तक कि प्रत्येक सदस्य की योग्यता एवं महत्ता पर विश्वास नहीं किया जाएगा। इसी आधार पर कार्यकर्ता अपनी भूमिका का क्रियान्वयन करता है।
3. **आत्म-पूर्णता -** सामाजिक सामूहिक कार्य का मुख्य उद्देश्य समूह का पूर्ण विकास करना होता है। इसके अंतर्गत उन्हीं कार्यक्रमों को उपयोग में लाया जाता है, जिनसे सदस्यों का सर्वांगीण विकास संभव होता है।

4. **विकास का मुख्य आधार संबंध-** मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसका आधार संबंधों पर निर्भर करता है और व्यक्ति का सर्वांगीण विकास भी इन्हीं सकारात्मक संबंधों पर आधारित होता है।
5. **व्यक्तित्व अंतरों की मान्यता एवं संस्कृति-** प्रत्येक व्यक्ति विचारों, भावनाओं, चिंतन तथा सामाजिक पृष्ठभूमि में भिन्न होता है। उसकी शक्तियों तथा योग्यताओं में भी भिन्नता होती है। समूह कार्य में सभी व्यक्तिओं के विचारों को महत्त्व देकर उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. **समूह पर संस्कृति का प्रभाव -** प्रत्येक मनुष्य किसी-न-किसी संस्कृति, परंपरा व रीति-रिवाज इत्यादि को मान्यता प्रदान करता है एवं उसी के अनुसार अपना प्रभाव समूह में प्रदर्शित करता है। समूह कार्यकर्ता यह ध्यान में रखता है कि किस समूह का निर्माण किया जा रहा है उसमें सदस्यों की संस्कृति में कम भिन्नता पाई जाए इसलिए समूह सदस्यों की संस्कृति का अध्ययन पूर्व में कर लेना चाहिए।
7. **परिवर्तन का विरोध -** परिवर्तन संसार का नियम है यह निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। समूह में भी निरंतर परिवर्तन स्वाभाविक ही है एवं इन परिवर्तनों के चलते कई बार समूह में विरोधाभास भी हो जाता है। अतः समूह कार्यकर्ता द्वारा इस विरोधाभास को समाप्त करने का प्रयास करना चाहिए।
8. **विकास के समान अवसर -** समूह कार्य प्रक्रिया में सदस्यों को समान अवसर प्रदान करना चाहिए जिससे कि वे समूह की गतिविधियों में समान रूप से भाग ले सकें और समूह में सक्रियता बनाए रखें।

अतः उपर्युक्त मूल्यों का अध्ययन करने के बाद यह क्हा जा सकता है कि सामाजिक समूह कार्य में मूल्य एक आधारशिला की भाँति कार्य करते हैं जो संपूर्ण समूह कार्य प्रक्रिया में प्रभावी भूमिका को अदा करते हैं अतः इन मूल्यों का समूह कार्य प्रक्रिया में अत्यंत ही महत्त्व है।

4.5 सामाजिक समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले सिद्धांत (Principal)

नोट: समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले सिद्धांतों का विस्तृत अध्ययन पूर्व इकाई में किया जा चुका है इसका केवल संक्षिप्त रूप यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है।

सामाजिक सामूहिक कार्य के निम्नलिखित आधारभूत सिद्धांत हैं जिनके आधार पर समूह कार्य में लक्ष्यों को प्राप्त किया जा सकता है:-

4.5.1 नियोजन का सिद्धांत

नियोजन किसी भी कार्य को करने का एक व्यवस्थित और सुनियोजित तरीका है जिससे लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा संभावित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपरेखा तैयार की जाती है जिससे भविष्य के परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुरूप नियंत्रित, निर्देशित तथा संशोधित किया जा सके। समूह का निर्माण हमेशा ही सुनियोजित होना चाहिए। सामूहिक कार्यकर्ता सुनियोजित तरीके से समूह निर्माण का कार्य करते हैं यदि सामूहिक कार्यकर्ता नियोजित तरीके से कार्य करेगा तो निश्चित ही उसे लक्ष्य प्राप्त हो जाएगा। लक्ष्य नियोजन का सिद्धांत लक्ष्य प्राप्ति में अत्यंत ही सहायक होता है।

4.5.2 लक्ष्यों की स्पष्टता का सिद्धांत

सामुदायिक कार्यकर्ता के लिए स्पष्ट लक्ष्यों का ज्ञान होना नितांत आवश्यक होता है जिससे वह कार्य को आसानी से कर सकता है। इससे स्पष्ट हो जाता है कि कौन-सा सदस्य किस प्रकार का कार्य करेगा? वह क्या कार्य करेगा कब करेगा कैसे करेगा यह सब कुछ स्पष्ट हो जाता है। जिससे प्रत्येक सदस्य को कोई शंका नहीं होती है कि उसे क्या करना है। यह संपूर्ण क्रिया कार्य पूर्णता के लिए आवश्यक है। समूह कार्य में लक्ष्यों की स्पष्टता से कार्यकर्ता के

लिए यह जानना अत्यंत आवश्यक होता है कि सामूहिक अनुभव से प्रत्येक सदस्य को क्या प्राप्त करना चाहिए और उनमें किस प्रकार के अनुभव प्राप्त करने की क्षमता है? इससे समूह के सदस्यों की शक्तियों एवं कमज़ोरियों को ज्ञात किया जा सकता है। उदाहरण के लिए यदि सामूहिक कार्यकर्ता किसी विशेष स्थान पर समूह कार्य द्वारा स्वच्छता कार्यक्रम चलाना चाहता है तो सर्वप्रथम समूह के सदस्य यह स्वयं अनुभव करें वे स्वयं इस दिशा में प्रयत्न करें अन्यथा यह कार्यक्रम सफल नहीं हो पाएगा । जब तक समूह का प्रत्येक सदस्य यह महसूस न करले कि यह मेरा काम है न कि दूसरे का तब तक लक्ष्यों को प्राप्त नहीं किया जा सकता। इस मानसिकता से कार्यों को संपन्न का लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है।

4.5.3 सोद्देश्य संबंध का सिद्धांत

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में ही रहकर अपना जीवन-यापन कर सकता है। इसी आवश्यकता को ध्यान में रखकर वह संबंधों का निर्माण करता है अपनी आवश्यकताओं की संतुष्टिसंबंधके माध्यम से करता है। अतः प्रत्येक सामाजिक स्थिति में संबंधोंका विशेष महत्त्व है। सामूहिक कार्य में भी कार्यकर्ता तथा समूह के बीच संबंधोंका अत्यंत महत्त्व है लेकिन यह संबंध उद्देश्यों केआधार पर होना चाहिए जिससे कि आगे किसी भी प्रकार का कोई मत-भेद कार्यकर्ता और सदस्यों के बीच उत्पन्न न हो । समूह के सदस्य निश्चित किए जाए तथा उन्हीं के आधार पर संबंधों की स्थापना एवं विश्लेषण हो। कार्यकर्ताओं के लिए भी ध्यान देने वाली बात यह है कि कार्यकर्ता एवं समूह के बीच संबंध तभी घनिष्ठ होंगे जबकि कार्यकर्ता समूह सदस्यों को जैसे हैं वैसे ही स्वीकार करें।

4.5.4 निरंतर वैयक्तिकरण का सिद्धांत

प्रत्येक व्यक्ति अपने अलग-अलग पर्यावरण, ज्ञान एवं वंशानुक्रम से भिन्न होता है प्रत्येक व्यक्ति की अपनी अलग विशिष्टता होती है। अतः कार्यकर्ता का दायित्व होता है कि वह प्रत्येक सदस्य की ओर अपना ध्यान रखे जिससे समूह अपने लक्ष्य पर अग्रसर रहे। सामाजिक समूह कार्य में निरंतर व्यैक्तिकरण का सिद्धांत एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत के रूप में जाना जाता है जिसके माध्यम से समूह कार्यकर्ता ऐसे समूह के सदस्यों की सहायता करता है जो सदस्य समूह में सामंजस्य स्थापित नहीं कर सकते हैं उन्हें समूह के सदस्यों के साथ सामंजस्य स्थापित करने के लिए प्रेरित करता है। इसके अलावा समूह सदस्यों की विभिन्न इच्छाओं और आवश्यकताओं को भी वह निरंतर व्यैक्तिकरण के माध्यम से जान सकता है।

4.5.5 निर्देशित सामूहिक अंतःक्रिया का सिद्धांत

संपूर्ण समूह कार्य प्रक्रिया सामूहिक गतिविधियों के माध्यम से नियोजित की जाने वाली प्रक्रिया है। जिसके माध्यम से ही संपूर्ण कार्य संपन्न किए जाते हैं। यह सामूहिक प्रक्रिया कार्यकर्ता और समूह सदस्यों के मध्य होने वाली अंत: क्रियाओं पर ही निर्भर करती है। इनअंत:क्रियाओं का स्वरूप इस बात पर निर्भर करता है कि समूह के सदस्य तथा सामूहिक कार्यकर्ता की इच्छाएँ, क्षमताएँ तथा कार्य के ढ़ंग इत्यादि किस प्रकार के हैं? जहाँ कही भी दो पक्ष विद्यमान होते हैं, अंत: क्रियाएँ होती ही हैं। यदि ये अंत:क्रियाएँ निर्देशित नहो अर्थात इनकी दिशा सही ना हो तो सामूहिक उपलब्धियों को प्राप्त नहीं किया जा सकेगा। इसलिए कार्यकर्ता का कार्य रहता है कि वह किस प्रकार से समूह सदस्यों एवं कार्यकर्ताओं के मध्य होने वाली अंत: क्रियाओं को सही दिशा प्रदान करें, क्योंकि समूह के कार्य एवं उद्देश्य समूह में होने वालीअंत: क्रिया का स्वरूप तथा इनको दिशा समूह के सदस्यों तथा कार्यकर्ताओं की क्षमताओं, इच्छाओं, आशाओं तथा कार्य करने केढ़ंग पर निर्भर करती है । अतः कार्यकर्ताओं

को इस बात का भी ध्यान रखना चाहिए कि समूह के सदस्यों मे आपसी संबंध सकारात्मक रूप में हो तथा अंत: क्रिया का प्रभाव एक ही दिशा में हो अन्यथा नकारात्मक अंतः क्रिया समूह कार्य प्रक्रिया में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

4.5.6 जनतंत्रीय सामूहिक आत्मनिश्चयीकरण का सिद्धांत

जनतंत्रीय सामूहिक क्रिया में कार्यकर्ता समूह का, समूह के लिए, समूह द्वारा कार्य करने पर कार्यकर्ता द्वारा बल प्रदान किया जाता है। कार्यकर्ता को इस आधार पर तैयार करना चाहिए वह स्वयं अपने निर्णय लेने में सक्षम हो सके। अपनी क्षमताओं एवं योग्यताओं के अनुरूप कार्य कर सके। यह सिद्धांत इस तथ्य पर आधारित होता है कि समूह तथा व्यक्ति को सामाजिक उत्तरदायित्व ग्रहण करने के अवसर उपलब्ध कराए जाए। लेकिन यह भी निर्धारित करना अत्यंत आवश्यक है कि उत्तरदायित्व किस प्रकार का होगा और किन आधारों में दिया जाएगा? यह निर्धारित करना कार्यकर्ता के लिए आवश्यक होगा। सामूहिक कार्य प्रक्रिया में समूह के प्रथम चरण से समापन तक संपूर्ण प्रक्रिया में जो निर्णय लिए जाते हैं, वे जनतंत्रीय प्रणाली के आधार पर ही सुनिश्चित किए जाते हैं। संपूर्ण प्रक्रिया में जो निर्णय लिए जाते हैं वह सामूहिकता की भावना को ध्यान में रखकर ही लिए जाते हैं। समूह का प्रत्येक सदस्य इसमें बराबर का भागीदार होता है, वे स्वंय यह निर्धारित करते हैं कि किस प्रकार कार्य करना है और क्या निर्णय लेना है, कार्यकर्ता केवल सही दिशा देने का कार्य करता है। इस प्रक्रिया के संदर्भ में प्रो. राजाराम शास्त्री ने कहा था कि - समूह अथवा समूह के सदस्य स्वयं से स्वयं के बारे में और स्वयं के लिए जो कुछ भी, जब भी करें, वह इस प्रकार होना चाहिए कि उनमें से प्रत्येक की भावना को कम से कम आघात पहुँचाते हुए तथा उन्नत समाजगत स्वीकृति मूल्यों तथा प्रेम, सौहार्द, शालीनता, सज्जनता से युक्त होकर करें, अर्थात आपस में शिष्ट आचार-विचार के माध्यम से प्रकृतिगत विकृतियों के दमन और सद्वृतियों के विकास द्वारा करें। जब कार्य में भी इस अपेक्षित स्थिति में कमज़ोरी के लक्षण दिखें तो सामूहिक कार्यकर्ता को भी कथित जनतांत्रिक तरीकों से ही समय सेवार्थियों अथवा सदस्यों के ज्ञान-धरातल को उन्नत कर या परिवेशगत परिमार्जन द्वारा अंतःक्रियाओं की स्थिति एवं स्वरूप को ऐसी दिशा देनी चाहिए जो अधिकाधिक अधिकारी हों।

4.5.7 लॉचदार कार्यात्मक संगठन का सिद्धांत

लोचदार कार्यात्मक संगठन सिद्धांत के द्वारा समूह कार्यकर्ता इस प्रकार का प्रयास करता है किकिसी भी गतिविधि को इतना सरल व आसान बनाया जाए जिससे प्रत्येक सदस्य गतिविधियों का हिस्सा बन जाए और समय व आवश्यकतानुसार कार्यक्रम में परिवर्तन संभव हो सके। समूह कार्यमें समूह का निर्माण कुछ विशिष्ट उद्देश्यों के साथ किया जाता है इन्हीं उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए कुछ औपचारिक संगठनों का निर्माण कराया जाता है, क्योंकि इसी औपचारिक संगठनों के माध्यम से समूह सदस्यों की शक्तियाँ एक दिशा में प्रवाहित होती हैं। साथ-ही-साथ सामूहिक जीवन में भी स्थायित्व आता है। कुछ समूहों में भिन्नता भी होती है समूहों में समयानुसार आवश्यकताएँ बदलती रहती हैं तथा नवीन इच्छाओं का भी जन्म होता है।अतः समूह संगठन की रचना में लचीलापन होना अत्यंत ही आवश्यक होता है।

4.5.8 प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों का सिद्धांत

समूह कार्य एक प्रगतिशील प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया बिना रचनात्मक कार्यक्रमों के संभव नहीं हो पाती है। जब समूह कार्य प्रक्रिया को प्रारंभ किया जाता है और उसमें कार्यक्रमों को प्रारंभ किया जाता है, तो ध्यान देने वाली बात यह होती है कि कार्यक्रम इस प्रकार का हो, जिसमें समस्त सदस्यों की रुचियाँ, आवश्यकताएँ, अनुभव निपुणता तथा दक्षता हो। जैसे–जैसे इनकी शक्तियों में विकास होता जायेगा वैसे-वैसे ही कार्यक्रमों मे भी परिवर्तन

किया जायेगा । प्रत्येक स्तर पर समूह को कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित किया जाता है, जिससे कि प्रत्येक सदस्य कार्यक्रम का हिस्सा बन जाए और सदस्यों में आत्मनिर्णय की क्षमता का विकास हों संपूर्ण प्रक्रिया प्रगतिशील समूह एवं कार्यकर्ता की योग्यता पर निर्भर करता है अतः प्रगतिशील कार्यक्रम अनुभवों के सिद्धांत को समूह कार्य में एक विशिष्ट स्थान दिया जाता है।

4.5.9 साधनों के उपयोग का सिद्धांत

किसी भी प्रक्रिया में साधनों का उपयोग एक सामाजिक कार्यकर्ता के लिए अत्यंत ही आवश्यक होता है ।इस प्रकिया के द्वारा कार्यकर्ता यह अनुभव प्राप्त करता है कि किसी भी समूह या सामुदायिक प्रक्रिया में उपलब्ध साधनों का उपयोग कैसे किया जाए जिससे कि लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सके। साधनों का उपयोग कुशलतापूर्वक करना चाहिए जिससे कि किसी भी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न न हो और साधनों का उचित उपयोग किया जा सके। संस्था एवं संपूर्ण वातावरण और समुदाय मिलकर बहुत-से साधन रखते हैं। सामाजिक सामूहिक कार्य में संस्था तथा समुदाय के इन साधनों का प्रयोग व्यक्तियों और समस्त समूह के हित के लिए किया जाता है। कार्यकर्ता की भूमिका केवल समूह में ही नहीं होती वरन वह समूह से बाहर भी उतनी ही भूमिका को अदा करता है। वह समुदाय से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी को एकत्रित करता है तथा समस्त सदस्योंके साथ जानकारी साझा करता है जिससे वह एक प्रकार से मध्यस्थता की भूमिका भी अदा करता है और आवश्यकता पड़ने पर समूह को उपलब्ध साधनों के उपयोग के लिए प्रेरित भी करता है।

4.5.10 मूल्यांकन का सिद्धांत

मूल्यांकन एक सततऔर निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है यह प्रक्रिया कार्य प्रारंभ होने के साथ ही प्रारंभ हो जाती है इस प्रक्रिया द्वारा यह तय किया जाता है कि कार्य को कितनी सफलता प्राप्त हुई है और कार्य के दौरान क्या कमियाँ रह गई हैं जिसे कार्यकर्ता द्वारा दूर करने का प्रयास किया जाता है। यह एक निर्णय करने वाली प्रक्रिया भी है, जो निश्चित करती है कि समूह कार्यकर्ता तथा संस्था का क्या उत्तरदायित्व है, उनको पूरा करने की कितनी क्षमता है, क्या-क्या शक्तियाँ है तथा क्या-क्या कमजोरियाँ है, कौन-कौन से कार्य रचनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं। मूल्यांकन के द्वारा समूह की अंतःक्रियाओं समूह की शक्तियों, सदस्यों की कमज़ोरियों, समूह के अनुभव एवं उनकी क्षमताओं का अँकलन किया जाता है। समूह कार्यकर्ता निम्न तीन स्थितियों का मूल्यांकन करता है-

1. कार्यक्रम का मूल्यांकन
2. सदस्यों के भागीकरण का तथा अनूभव का मूल्यांकन
3. कार्यकर्ता स्वयं अपनी भूमिका का मूल्यांकन

उपर्युक्त समूह कार्य के सिद्धांतसमूह कार्य को सरलता पूर्वकसंपन्न करने में कार्यकर्ता की सहायता करते हैं। ये सिद्धांत समूह कार्यकर्ता को अनुकूल दशा प्रदान करते है। ये कोई स्थिर सिद्धांत नहीं है वरन आवश्यकतानुसार परिवर्तनशील भी है। अनुभवों, ज्ञान, निपुणताओं तथा प्रविधियों के साथ इनमें बदलाव होते रहते हैं। परंतु यह वे साधन हैं जिनका उपयोग कर कार्यकर्ता लक्ष्य की प्राप्ति आसानी से कर सकता है।

4.6 सारांश

राष्ट्रीय सामाजिक कार्यकर्ता संस्था (एन ए एस डब्यूओ) की नैतिक संहिता के अनुसार 'व्यापक नैतिक सिद्धांत सामाजिक कार्यकर्ता के सेवा-मूल्यों , सामाजिक न्याय, प्रतिष्ठा और व्यक्ति की गरिमा, मानव संबंधों का महत्व, निष्ठा और सक्षमता पर आधारित होते हैं।' ये सिद्धांत आदर्श स्थापित करते हैं जिनकी सभी सामाजिक कार्यकर्ताओं को आवश्यकता होती है। इस इकाई का उद्देश्य यह था कि विद्यार्थी को व्यवसायिक सामाजिक

कार्यकर्ता के मूल्यों और सिद्धांतों को समझाया जाए जिससे कि वह समूह कार्य अभ्यास का पालन कर सके और व्यावसाय के लक्ष्य को प्राप्त कर सके। कुछ वर्षों के अंतराल के पश्चात सामाजिक समूह कार्य अभ्यास में कुछ सिद्धांतों का उदगम हुआ है, जिसने सामाजिक समूह कार्यकर्ता को सैद्धांतिक ढाँचा प्रदान किया है। ये उस समय लागू होते हैं जब वह समूह में लोगों के साथ कार्य करता है। कुछ मार्गदर्शन उपलब्ध कराए गए जो अभ्यास को मार्गदर्शित करते हैं। विभिन्न लेखकों ने समय-समय पर विभिन्न समूहों के साथ कार्य करने के विभिन्न सिद्धांतों की रूपरेखा प्रस्तुत की है, कार्यकर्ता को यह सिद्धांत व मूल्य बड़ी ही सावधानी-पूर्वक उपयोग करना आना चाहिए जिससे कि समूह कार्य प्रक्रिया के अंतिम लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।

4.7 बोध – प्रश्न

1. मूल्यों से आपका क्या तात्पर्य है ? स्पष्ट कीजिए।
2. समूह कार्य प्रणाली में मूल्यों के महत्त्व पर प्रकाश डालिए?
3. समूह कार्य में प्रयुक्त किए जाने वाले विभिन्न विद्वानों द्वारा दियें गए मूल्यों को समझाइए?
4. मूल्यों का सामाजिक जीवन में क्या महत्त्व है ? स्पष्ट कीजिए।

4.8 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

- Kohils, S.C.(1996). *The roots of social work* .New York : Association press, p.62.
- Dorothy lee. Abrahim H.Maslo.(1959).*Culture and the expwnence of value in new knowledge in human values*. New York: Harpar & Brother P.165.
- Bison Herbert (1953).*The philosophy of social work*.Washington D.C.: public affaris press.p.1-2.
- Friedlander.Walter(1958).*A concept and method of social work* .Eaglewood cliffs N.J: Ptentice –Hall inc. p.1.
- United national Training for social work – third International survev op.cit.,pp194-195.
- Ahmad Mirza R, Soodan S.and k.s. (eds).(1983).*Perpectrive on social work philosophy in Horizons of social work singh*.Lucknow:Jyotsna publications.pp.38-66.
- ''Man must be regard as a whole; and he really has but one , which is to live wholly and completely''. Wilson G.and Ryland c, op.cit.p.17.
- ट्रेकर, एच.वी, (1955). *सोशल ग्रपवर्क पिन्सिपल एन्ड प्रैक्टिस. एसोसिएशन* न्यूयोर्क: न्यूयोर्क प्रेस, , ,पृ.89-92।
- सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008) *समाज कार्य.* लखनऊ: हिंदी संस्थान।
- मिश्रा, प्रयागदीन (2008). *सामाजिक सामूहिक कार्य.*लखनऊ : हिंदी संस्थान ।
- फ्राइडलैंडर डब्यूी प .ए. (सं.) (1958). *कंस्पंट्स एंड मेथड्स ऑफ सोशल वर्क* प्रिंटिस हाल: एम सी, इंग्ले वुड कलीफ्स एनजे.।
- गार्बिन, चार्ल्स डी ई टी अल (सं.) (2008). *हैंड बुक ऑफ सोशल वर्क विद ग्रुप्स.*दिल्ली: रावत पब्लिकेशन ।
- कोनोपका जिसेला (1963).*सोशल ग्रुप वर्क ए हेल्पींग प्रोसस.* प्रिंटिस हाल: इंग्ल्वुड क्लीरफ्स् एन. जे.।

- हैपवर्थ, डीन एच एंड लार्सन, जो एन (1992). *डॉइरेक्ट सोशल वर्क प्रैक्टिस र थ्योरी एंड स्किल्सल ब्रुक्सव.* कैलीफोर्निया :कोले पब्लिसिंग कम्प्नी, फोरथ ईडी।
- सिद्दीकी, एच वाई (2008). *ग्रुप वर्क थ्योरीस एंड प्रैक्टिसस* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन्स।
- ट्रेकर, हारलीग बी. (1955). *सोशल ग्रुप वर्क-प्रिंसिप्लस एंड प्रैक्टिसस* न्यूयार्क: एसोसिएशन प्रेस।
- प्रसाद मणिशंकर, सत्य प्रकाश, कुमार अरूण,कुमार संजय,सैफ मो.खान एवं सिंह अभव कुमार (2013). *यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेट समाज कार्य*. दिल्ली : अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया) लिमिटेड।
- कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।

ज्ञान शांति मैत्री

खंड - 3

सामाजिक कार्य में नेतृत्व और कौशल विकास

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई1 नेतृत्व और शक्ति/अधिकार

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 नेतृत्व का अर्थ
1.3 नेतृत्व के प्रकार
1.4 सामाजिक समूह कार्य में व्यावसायिक नेतृत्व
1.5 नेतृत्व के सिद्धांत
1.6 नेतृत्व और शक्ति
1.7 सारांश
1.8 बोध प्रश्न
1.9 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

- नेतृत्व के अर्थ एवं अवधारणा से अवगत हो सकेंगे।
- समूह नेतृत्वको प्रभावित करने वाले कारकों का वर्णन कर सकेंगे।
- समूह कार्य में नेतृत्वके महत्व को समझ सकेंगे।
- व्यावसायिक नेतृत्व को समझ सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

समाज कार्य एक व्यावसायिक सेवा है, जो कि व्यक्ति को उसकी आवश्यकता के अनुसार प्रदान की जाती है । समाज कार्य के द्वारा विभिन्न प्रणालियों के माध्यम से व्यक्ति/समूह/समुदाय की सहायता किसी-न-किसी रूप में की जाती है। इन सभी प्रणालियों के द्वारा जो सहायता प्रदान की जाती है, उसमें कार्यकर्ता का एक विशेष योगदान होता है। समूह कार्यकर्ता का यह दायित्व होता है कि वह प्रत्येक व्यक्ति में नेतृत्व का विकास करे, जिससे समूह की कार्य प्रणाली को उचित रूप से संचालित किया जा सके और समूह के सदस्यों में नेतृत्व का विकास किया जा सके ताकि समूह स्वयं ही अपना संचालन कर सके और व्यावसायिक कार्यकर्ता की आवश्यकता न पड़े। नेतृत्व प्रत्येक समाज के विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। नेतृत्वके माध्यम से ही समाज एवं समूह आवश्यकता की पूर्ति व लक्ष्य को हासिल किया जा सकता है । अनेक समाज विद्वानों द्वारा नेतृत्व के संदर्भ में कहा गया है कि नेतृत्व एक जन्मजात गुण है, लेकिन अनेक प्रशिक्षणों के द्वारा व्यक्ति में नेतृत्व के गुण को प्राप्त किया जा सकता है। प्रस्तुत इकाई के माध्यम से नेतृत्व को परिभाषित करने का प्रयास किया जा रहा है और साथ ही समाज कार्य एवं समाज कार्य की मुख्यप्रणाली समूह कार्य में नेतृत्वके महत्व पर प्रकाश डाला जा रहा है।

1.2 नेतृत्व का अर्थ

अनेक विद्वानों के द्वारा नेतृत्व को अनेक प्रकार से स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। कई बार लोग इसका तात्पर्य प्रसिद्धि से भी समझ लेते है। प्रजातंत्र में नेतृत्व के संदर्भ में यह भी कहा जाता है कि जो लोग अपनी स्वेच्छा व इच्छा से अन्य दूसरे व्यक्तियों के आदेशों का पालन कर रहे हों, वह नेतृत्व कहलाता है। कुछ लोगों का मानना है कि यदि कोई व्यक्ति शक्ति के आधार पर दूसरों से अपने अनुसार व्यवहार करवा लेने की क्षमता रखते हो तो उसे भी नेतृत्व के अंतर्गत सम्मिलित किया जाता है। इस आधार पर कहा जा सकता है कि जो व्यक्ति दूसरों के व्यवहार से प्रभावित न होकर अपने व्यवहार से दूसरों को अधिक प्रभावित करता है। भले ही यह कार्य दबाव द्वारा क्यों न किया गया हो, इसे ही नेतृत्व के अंतर्गत रखा जाता है। अनेक विद्वानों ने नेतृत्व को निम्न प्रकार से परिभाषित किया है :

पिंजर (Pingor) के अनुसार –

पिंजर ने नेतृत्व को परिभाषित करते हुए कहा कि ''नेतृत्व व्यक्ति और पर्यावरण के संबंध को स्पष्ट रखने वाली एक धारणा है, यह उस स्थिति का वर्णन करती है, जिसमें एक व्यक्ति ने एक विशेष पर्यावरण में इस प्रकार स्थान ग्रहण कर लिया हो कि उसकी इच्छा भावना और अंतर्दृष्टि किसी सामान्य लक्ष्य को पाने के लिए दूसरे व्यक्तियों को निर्देशित करती है तथा उन पर नियंत्रण रखती है।''

लेपियर और फार्न्सवर्थ (Lapiere and Farnisworth) के अनुसार-

''नेतृत्व वह व्यवहार है, जो दूसरों के व्यवहार को उससे अधिक प्रभावित करता है जितना कि दूसरे व्यक्तियों के व्यवहार नेता को प्रभावित करते हैं।'' सीमेन तथा मौरिस (Seemen and Morris) ने नेतृत्व को परिभाषित करते हुए कहा कि - ''नेतृत्व व्यक्तियों द्वारा दी जाने वाली उन क्रियाओं में है जो दूसरे व्यक्तियों को एक विशेष दिशा में प्रभावित करती हो।''

किंवाल यंग ने नेतृत्व के संदर्भ में कहा कि –

''नेतृत्व की विवेचना प्रभुत्त्व के रूप में की जानी चाहिए।

अत: उपर्युक्त परिभाषाओं के आधार पर यह कहा जा सकता है कि नेतृत्वव्यक्ति का एक ऐसा गुण है, जिससे दूसरा व्यक्ति किसी-न-किसी रूप में प्रभावित होता है और उसका अनुसरण करने लगता है।

ज्ञान शांति मैत्री

1.3 नेतृत्व के प्रकार

नेतृत्व को उसकी प्रकृति के आधार पर कई वर्गों में विभाजित किया जा सकता है, क्योंकि नेतृत्व किसी एक प्रकार का नहीं हो सकता, यह स्थान एवं व्यक्तित्व के आधार निर्भर करता है । इसकी अपनी अलग-अलग विशेषताएँ होती है। नेतृत्व के प्रकारों को विभाजित करते हुए किम्बाल यंग, बार्टलेट और अनेक दूसरे विद्वानों ने नेतृत्वके विभिन्न प्रकारों का विस्तार से उल्लेख किया है। इनमें से बोगार्डस द्वारा दिया गया नेतृत्व का वर्गीकरण सबसे अधिक उपयुक्त समझा जाता है, जिसके आधार पर नेतृत्व के विभिन्न स्वरूपों का वर्णन अधोलिखित किया जा रहा है।

प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष नेतृत्व

प्रत्यक्ष नेतृत्व को परिभाषित करते हुए बोगार्डस ने कहा कि एक ऐसा नेतृत्व जो समूह के अन्य सदस्यों के साथ प्रत्यक्ष रूप से स्थापित होता है, अर्थात प्रत्यक्ष संपर्क में होता है। प्रत्यक्ष नेतृत्व की संज्ञा में आता है। इस प्रकार के नेतृत्व द्वारा समूह सदस्यों की समस्याओं को ज्ञात कर नेता हल करने का प्रयास करता है । ऐसा नेता अपने समूह की आवश्यकताओं से परिचित होता है। वह समूह का प्रतिनिधित्वभी करता है और समूह सदस्यों में आपस में जो मन-मुटाव या झगडा होता है, उसे आपसी सहमति से निपटाने का प्रयास करता है। वह समूह को यह विश्वास दिलाने का प्रयास करता है कि वह उन्हीं में से एक है। इस प्रकार के नेतृत्व द्वारा समूह के सदस्यों का सहयोग भी प्राप्त होता है। किंतु कभी-कभी अधिक निकटता के कारण कई ऐसे नेतृत्व का विरोध भी होता है, जिसे प्रत्यक्ष नेतृत्व के द्वारा स्वीकार भी किया जाता है। इसके विपरीत अप्रत्यक्ष नेतृत्व के द्वारा समूह सदस्यों का संपर्क कम ही होता है। बोगार्डर्स ने अप्रत्यक्ष नेतृत्व के संदर्भ में कहा कि ऐसा नेतृत्व जो कि अपने कार्यों, खोजों अथवा नीतियों की सहायता से बहुत दूर रहते हुए भी ख्याति प्राप्त कर लेता है अप्रत्यक्ष नेतृत्व कहलाता है। जैसे- महान वैज्ञानिक तथा सेनानी इत्यादि। इस प्रकार के नेतृत्व की प्रमुख विशेषता यह होती है कि यह मृत्यु के पश्चात भी यश और सम्मान प्राप्त करते हैं।

पक्षपात पूर्ण एवं वैज्ञानिक नेता

पक्षपातपूर्ण नेतृत्व ऐसे नेतृत्व को कहा जाता है, जिसमें नेता हमेशा ही अपने समूह सदस्यों का सपेक्षी होता है। यह किसी भी परिस्थिति में अपने समूह सदस्यों का पक्ष ही लेता है, चाहे समूह के सदस्य सही हों अथवा गलत किसी भी परिस्थिति में वह समूह को ही लाभ पहुँचाने का प्रयत्न करता है, भले ही इससे दूसरे समूहों को हानि पहुँचाती हो। अत: इस प्रकार के नेतृत्व को एक पक्षीय नेतृत्व कहा जा सकता है। जैसे- किसी राजनीतिक पार्टी के नेता द्वारा सदैव अपने दल का समर्थन करना। दूसरी ओर वैज्ञानिक नेतृत्वके संदर्भ में कहा जाता है कि यह ऐसे नेतृत्व में वास्तविक बातों को ध्यान में किसी भी निर्णय पर पहुँचा जाता है। चाहे वे बातें समूह के हित में हो अथवा अहित में। ऐसे नेतृत्व में प्रमुखत: सिद्धांतों को अधिक महत्व दिया जाता है और इसके नेता सिद्धांतवादी होते हैं। वैज्ञानिक नेतृत्व के माध्यम से किसी भी जाति, धर्म, प्रजाति या संप्रदाय को विशेष महत्व नहीं दिया जाता। ऐसे नेतृत्व में सभी समान होते हैं। इस प्रकार से जो नेतृत्व किया जाता है साधारणत: उसको कोई सत्ता तो प्राप्त नहीं होती, लेकिन इस प्रकार के नेताओं का वर्चस्वहमेशा सत्ताधारियों के मध्य बना होता है।

सामाजिक, मानसिक तथा अधिशासी नेता

सामाजिक नेतृत्व से तात्पर्य ऐसे नेतृत्व से है, जिसमें नेता के द्वारा सामाजिक कार्यों के द्वारा लोकप्रियता प्राप्त की जाती है। इस प्रकार के नेता में कोई सामाजिक प्रभुत्व नहीं होता है, इसके बावजूद भी वह समूह की समस्याका समाधान करता है और इसी की वजह से वह समूह में अपना वर्चस्व स्थापित करता है। ऐसे नेता उत्साही और त्यागपूर्ण जीवन व्यतीत करते हैं।

मानसिक नेता वे होते हैं जो अपने विचारों और क्रियाओं के द्वारा समूह के सदस्योंकी मनोवृत्तियों में परिवर्तन करते हैं। ऐसे नेताओं में बौद्धिकता अधिक होती है और उत्तेजना कम पाई जाती है । यह नेतृत्वशांतिपूर्ण वातावरण में ही सफल माना जाता है। इस प्रकार के नेता अपने जीवन-यापन के संदर्भ में कम ही चिंतित होते हैं।

एक ऐसे नेता, जो अपने कार्य एक विशेष समूह अथवा क्षेत्र के व्यक्तियों को संगठित रखकर करता है, अधिशासी नेतृत्व कहलाता है। ऐसे नेतृत्व में सामाजिक, बौद्धिक तथा प्रबंधकीय गुणों का समावेश होता है। यह नेता समूह हेतु कार्ययोजना का निर्माण करता है। ऐसे नेताओं को राज्यके द्वारा कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं, जिनका वे जनहित में उपयोग करते हैं।

पैगम्बर, संत, विशेषज्ञ तथा मालिक

अनेक विद्वानों ने पैगम्बर, संत, विशेषज्ञ तथा मालिक इत्यादि नेतृत्व को परिभाषित करते हुए कहा कि पैंगम्बर नेतृत्व से तात्पर्य ऐसे नेतृत्व से हैं, जिससे नेता किसी भी प्रकार से अलौकिक शक्ति पर निर्भर होता है। इस कारण से जो इसे मानने वाले होते है इनके मध्य एक प्रकार का आन्तरिक रिस्ता मज़बूत हो जाता है। इस प्रकार के नेतृत्व में बुद्ध, महावीर, ईसामसीह तथा मुहम्मद इस श्रेणी के नेता आते हैं। ऐसे नेताओं का प्रभाव तब कम होता है जब इनकी चमत्कारिक शक्ति में व्यक्तियों का विश्वास कम होने लगता है।

संत नेता वह कहलाता है, जो कि साधारण सा जीवन व्यतीत करता हैं और अपनी पवित्रता तथा त्याग से जनसाधारण का नेता बन जाता है। विशेषज्ञ नेता का तात्पर्य ऐसे व्यक्ति से है, जो एक क्षेत्र में विशेष योग्यता रखने के कारण उस क्षेत्र से संबंद्धसभी लोगों में लोकप्रिय होता है।

निरंकुशवादी नेतृत्व

निरंकुश नेतृत्वके माध्यम से निरंकुशवादी नेता शक्ति तथा निर्णय प्रक्रिया में केंद्र बिंदु पर होता हैं। इसप्रकार का नेता अपने आप को शक्तिशाली बताता है और अपनी मन की बात को दूसरे से मनवाता है। ऐसे नेता के लिए जनसाधारण के कल्याण का इतना महत्व नहीं होता जितना कि अपनी प्रभुसत्ता को बनाए रखने का। वह समूह में ऐसा प्रभाव डालता है, जिससे कि दूसरे लोग उस पर आश्रित बने रहें और वह अपना काम करता रहें एवं समाज के सभी सदस्यों में अपना वर्चस्व कायम रखें। ऐसा नेता इच्छित परिणाम प्राप्त कर लेता हैं। क्रच और क्रच फील्ड ने कहा है कि, ''निरंकुश नेता प्रजातांत्रिक नेता की अपेक्षा पूर्ण शक्ति रखने में विश्वास करता है, वह अकेले ही समूह की नीतियों का निर्धारण करता है; अकेले ही मुख्य योजनाएँ बनाता है तथा भविष्य में समूह द्वारा किए जाने वाले कार्यों और उनके संबंद्धोंके तरीके आदि का निर्धारण करता है; वह अकेले ही व्यक्तिगत सदस्यों को दंड या पुरस्कार देने वाला न्यायाधीश और मध्यस्थ होता तथा इस प्रकार संपूर्णसमूह में वहीं सदस्यों के भाग्य का अंतिम निर्णायक होता है।

प्रजातांत्रिक नेतृत्व

एक ऐसा नेतृत्व जो समूह के सभी सदस्यों की आपसी सहमति से क्रियान्वित होता है, प्रजातांत्रिक नेतृत्व कहलात है। प्रजातांत्रिक नेतृत्वको परिभाषित करते हुए क्रच तथा क्रचफील्ड ने कहा कि, ''एक प्रजातांत्रिक नेता समूह की क्रियाओं और उद्देश्योंके निर्धारण में भाग लेने के लिए प्रत्येक सदस्य को अधिक से अधिक प्रेरित करता है। वह उत्तरदायित्वों को अपने में ही केंद्रित न करके इन्हें सदस्यों में विभाजित करता है। वह समूह की संरचना को शक्तिशाली बनाने के लिए सदस्यों के परस्पर संबंधोंऔर संपर्क को बढ़ाने का प्रयत्न करता है। प्रजातांत्रिक नेता उन विभिन्न समूह-संरचना से बचने की कोशिश करता है, जिसमें अधिकार संपन्न और उच्च स्थिति वाले व्यक्तियों का प्रभुत्व हो।''

क्रच और क्रचफील्ड का कथन है कि ''प्रजातांत्रिक नेता संपूर्णसमूह के मध्यस्थ के रूप में कार्य करता है।'' इस प्रकार के नेतृत्व द्वारा सदस्यों में श्रेष्ठ निपुणताओं एवं कुशलताओं का विकास किया जाता है।

अधिनायकवादी नेतृत्व

इस प्रकार के नेतृत्व द्वारा समूह सदस्यों में हमेशा भय उत्पन्न किया जाता है, जिससे कि सदस्यों द्वारा किसी भी प्रकार का विरोध उत्पन्न न किया जा सके। यदि कोई सदस्य विरोध करता भी है तो उसे दंड दिया जाता है, इस कारण से किसी अन्य सदस्यों के द्वारा कोई विरोध नहीं किया जाता। इस प्रकार का नेतृत्व नकारात्मक कार्य पद्धति पर आधारित होता है और इसकी प्रकृति दंडात्मक होती है, जिससे कि भय दिखाकर सदस्यों से इच्छित व्यवहार

करवाया जा सके। इस प्रकार के कार्य से नेता को तो संतुष्टि प्राप्तहो सकती है, किंतु सदस्योंके लिए यह हमेशा असंतोष पैदा करता है।

हस्तक्षेप-विहीन नेतृत्व

एक ऐसा नेतृत्व जो समूह सदस्यों पर किसी भी प्रकार का प्रभाव नहीं डालता, हस्तक्षेप विहीन नेतृत्व की श्रेणी में आता है। ऐसे नेतृत्व न तो किसी भी प्रकार के समूह कार्य में कोई योगदान देता है और न ही किसी प्रकार का व्यवधान उत्पन्न करता है। सदस्यों द्वारा स्वयं ही लक्ष्य एवं उद्देश्योंका निर्धारण किया जाता है। इस प्रकार के नेतृत्व द्वारा सदैव सदस्यों में निराशा ही उत्पन्न होती है। मार्टिन कानवे ने नेता के 4 प्रकारों का वर्णन किया है -

1. भीड़ को विवश करने वाला
2. समूह-प्रदर्शन
3. समूह का प्रतिनिधि
4. विचार पैदा करने वाला
5. वार्टलेट ने नेतृत्व के 3 प्रकार बताए हैं -
6. संस्थागत- जो किसी संस्था का सदस्य अथवा उसके किसी प्रतिनिधि पर आसीन होता है।
7. प्रभावशाली- सबसे अधिक प्रभुत्व वाला सदस्य नेता हो जाता है।
8. अनुरोधक – जो अपना निर्णय मानने के लिए प्रत्यक्ष अप्रत्यक्ष रूप से प्रेरित करता है।

इस प्रकार से विभिन्न विद्वानों के द्वारा नेतृत्व एवं नेता के प्रकारों को विभाजित करने का प्रयास किया है। जो वर्तमान समाज में देखे जा सकते हैं।

1.4 सामूहिक समाज कार्य में व्यावसायिक नेतृत्व

समाज कार्य में व्यावसायिक नेतृत्व : समाज कार्य एक ऐसी प्रणाली है, जिसके माध्यम से सेवार्थी, समूह एवं समुदाय की सहायता विभिन्न प्रणालियों के माध्यम से की जाती है, जिसमें विभिन्न प्रकार की तकनीकों एवं कौशलों का प्रयोग किया जाता है। समूह कार्य के माध्यम से भी जो सहायता प्रदान की जाती है उसमें कार्यकर्ता का यह प्रयास होता है कि वह समूह को इस प्रकार से सक्षमता प्रदान करें, ताकि समूह अपनी सहायता स्वयं कर सके। इस हेतु वह समूह सदस्यों के मध्य नेतृत्व की भावना को जाग्रित करने का प्रयास करता है, जिसके द्वारा समूह सदस्य स्वयं ही समस्या समाधान हेतु सक्षम बन जाता है। नेतृत्व की आवश्यकता प्रत्येक समूहों में पाई जाती है। सामूहिक परिस्थितियाँ ही हैं, जिनके कारण नेतृत्व का जन्म होता हैं। नेता की आवश्यकता का सामूहिक आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अनुभव होता है। इस क्रिया विधि के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि समूह के सदस्यों में जो अधिक निपुण होता है एवं सामूहिक परिस्थिति को उद्देश्यप्राप्त करने में सहायता दे सकता है, वह नेतृत्व करने में सक्षम हो सकता है अत: समूह की स्थितियों की विभिन्नता के कारण नेता के कार्यों में भी विभिन्नता होती है। इस कारण आवश्यक होता है कि यह केवल किसी एक व्यक्ति के गुण न होकर सभी समूह-सदस्यों में पाये जाते हों क्योंकि, यह आवश्यक नहीं होता कि कोई एक ही व्यक्ति सभी समस्यों का समाधान कर पाए इसलिए सभी व्यक्तियों का इसमें विकास किया जाता है, जिससे वह परिस्थिति के अनुसार समस्या समाधान हेतु निपुण हो सके। इस कारण से संपूर्ण समूह के सदस्यद्वारा नेता का चुनाव किया जाता है एवं सभी सदस्य मिलकर नेता के कार्यों को निर्धारित करते हैं। समूह का नेता वही कार्य को कर सकता है जितने अधिकार उसे समूह सदस्यों के माध्यम से प्राप्त हैं। उसके कार्य समूह-सदस्यों की आवश्यकताओं एवं इच्छाओं पर निर्भर होते हैं। सामूहिक समाज कार्य में जिस प्रकार का नेतृत्व प्रदान किया जाता है वह प्रजातांत्रिक होता है, जिसमें संपूर्ण

निर्णय समूह में आपसी चर्चा के बाद ही लिए जाते हैं। सदस्यों का सक्रिय सहयोग नेता सदैव प्राप्त करना चाहता है। प्रत्येक नेता का दायित्व होता है कि वह समूह के हर एक सदस्य की इच्छा एवं आवश्यकता के अनुसार ही कार्यक्रमों का आयोजन करें तथा साथ ही समूह सदस्यों में सोचने एवं विचारने की योग्यता का विकास करे।

व्यवसायिक नेतृत्व में नेता के कार्य : सामाजिक समूह कार्य के माध्यम से समूह सदस्यों की आवश्कताओं एवं समस्याओं को कर दूर करने का प्रयास किया जाता है, जिसमें समूह का जो नेता होता है उसकी संपूर्ण जावाबदारी होती है कि वह प्रत्येक सदस्यों की आवश्कताओं एवं अपेक्षाओं के अनुसार कार्य करेंइस हेतु वह कुछ कार्ययोजनाओं का निर्माण कर समूह सदस्यों के मध्य आपसी तालमेल स्थापित करता है और उनकी आवश्कताओं की पहचान कर उसे पूर्ण करने का प्रयास करता है। समूह नेता समूह सदस्योंके मध्य निम्न प्रकार से कार्यों को संचालित करता है।

- **लघु समूह वार्तालाप**– सर्वप्रथम नेता के द्वारा समूह सदस्यों को छोटे-छोटे समूह में विभाजित कर दिया जाता है और आपस में बातचीत को प्रारंभ किया जाता है, जिससे समूह सदस्यों को सक्रिय रूप से भाग लेने का अवसर प्राप्त होता है। इस प्रकार के वार्तालाप में समानता का व्यवहार संभव होता है, नेतृत्व के विकास में सहायता मिलती है और दृष्टिकोण में परिवर्तन आता है और नेतृत्व के अवसर प्राप्त होते हैं। इस संपूर्ण प्रक्रिया में समूह नेता निम्नभूमिका को अदा करता है-

✓ समूह सदस्यों के मध्य समूह-वार्तालाप के विषय को स्पष्ट करता तथा कार्यप्रणाली को विस्तार पूर्वक समझाता है।

✓ वह समूह की समस्या को स्पष्ट रूप से सामने रखने एवं समूह के उद्देश्य को स्पष्ट करने में सहायता करता है।

✓ प्रत्येक सदस्य को अवसर प्रदान करने में सहायता करता है, जिससे कि वे विचार को सभी के सामने रख सके।

✓ सभी सदस्यों के समक्ष कुछ प्रश्नों को रखता है एवं उनका उत्तर प्राप्त करने का प्रयास करता है।

✓ नेता समूह पर नज़र बनाए रखता है और यह देखता है कि उद्देश्यों के अनुसार चर्चा हो रही हैं की नहीं और चर्चा में सभी सदस्य की भागादारी है नहीं।

✓ समूह में सकारात्मक एवं सहयोगत्मक वातावरण बनाए रखने का प्रयास करता हैं।

✓ वह सभी सदस्यों के मध्य उचित सुझावों को रखता है।

✓ नेता कार्यवाही के दौरान हमेशा यह देखता है कि चर्चा निर्धारित उद्देश्य के अनुसार सही दिशा में जा रही है कि नहीं।

✓ वह संपूर्ण चर्चा का सारांश तैयार करता है।

✓ जिन मुद्दों में अस्पष्टता है उसे स्पष्ट करने का प्रयास करता है।

समिति (कमेटी) वार्तालाप

समूह कार्य में समिति या कमेटी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान हैं। समूह के लक्ष्य प्राप्ति हेतु इस प्रकार से समूह के सदस्यों को एक कमेटी के रूप में बाँट दिया जाता है, जिससे कि वह आपस में बातचीत कर सकें इसका उद्देश्य किसी विशेष विषय पर आपसी बातचीत या सलाह से होता हैं और इन कमेटियों के माध्यम से कार्यक्रम – नियोजन तथा नीतियों का निर्माण किया जाता हैं। कमेटी में सदस्य-संख्या कम होने के कारण प्रत्येक सदस्य को

अपनी बात कहने का अवसर प्राप्त होता हैं। समूह का नेता इस प्रकार की कमेटी में निम्न भूमिका को अदा करता हैं-

- ✓ नेता द्वारा कमेटी के सभी सदस्यों की उनकी विशेषज्ञता एवं अनुभवशीलता के आधार पर प्रत्येक सदस्य से विषय संबंधी राय लेनी चाहिए।
- ✓ समूह नेता का दायित्व होता है कि वह कमेटि सदस्यों को समूह के उद्देश्य से अवगत कराएं एवं सदस्यों को आवश्यक सलाह दे।
- ✓ आवश्यक प्रश्नों को कमेटी के समक्ष रखता है जिन पर वार्तालाप करना है।
- ✓ कमेटी के प्रत्येक सदस्य को बढ-चढ़कर हिस्सा लेने को प्रोत्साहित करता है और प्रत्येक प्रश्न का उन्हीं के माध्यम से खोजता है।
- ✓ वह कमेटी के अध्यक्ष का चुनाव करें।
- ✓ अध्यक्ष को कमेटी के उद्देश्यों पर विस्तृत चर्चा करने हेतु प्रेरित करता हैं।
- ✓ कमेटी को समयानुसार संचालित करने हेतुसहायता करता हैं।
- ✓ वह कमेटी के सदस्यों से प्राप्त दस्तावेजों के आधार पर सारांश तैयार करता हैं।

परिसंवाद या गोष्ठी

जब विभिन्न व्यक्तियों द्वारा किसी एक विषय के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जाती है और अपने विचार व्यक्त किए जाते हैं, तो उसे परिसंवाद या गोष्ठी कहा जाता हैं। इस प्रकार से एक नेता का दायित्व होता है कि वह समूह सदस्यों के मध्य परिसंवाद स्थापित करें, ताकि विषय के विभिन्न पहलुओं पर विस्तार से चर्चा की जा सके, जिससे कुछ नए विचारों का आयाम हो। इस हेतु नेता निम्न प्रकार से भूमिका को अदा करता हैं।

- ✓ वह विषय से संबंधित व्यक्तियों से मिलता है और विषय पर चर्चा करने हेतु लोगों को आमंत्रित करता हैं।
- ✓ जब परिसंवाद प्रारंभ होते ही मुख्य–मुख्य बातों को नोट करना प्रारंभ कर देता हैं।
- ✓ नेता सर्वप्रथम गोष्टी की शुरूआत स्वयं करता है समस्या पर प्रकाश डालता है, उसके महत्व को स्पष्ट करता है फिर उसके पश्चात सदस्यों को विचार रखने हेतु कहता हैं।
- ✓ समूह को परिसंवाद के वक्ताओं से परिचय करवाता है।
- ✓ वह प्रत्येक सदस्य की भूमिका निश्चित करता है।

1.5 नेतृत्व के सिद्धांत

नेतृत्व एक कौशल है जिसके आधार पर समूह के सफल संचालन की जबावदारी होती है। इस नेतृत्व प्रक्रिया के कुछ मूलभूत सिद्धांत है जिनका पालन करना प्रत्येक कार्यकर्ता एवं नेता के लिए अत्यंत आवश्यक होता है। अनेक विद्वानों के द्वारा दिए गए सुझावों को एकत्रित करते हुए नेतृत्व कि कुछ महत्वपूर्ण सिद्धांतों का उल्लेख निम्नत: किया जा रहा है।

1. **संतुलन का सिद्धांत**
2. **अंर्तदृष्टि का सिद्धांत**
3. **विचित्रता का सिद्धांत**
4. **पूर्वानुमान का सिद्धांत**

5. **मनोशक्ति का सिद्धांत**
6. **योग्यता तथा अयोग्यता का सिद्धांत**
7. **समूह प्रक्रिया का सिद्धांत**

1. संतुलन का सिद्धांत

संतुलन के सिद्धांत के अनुसार नेता हमेशा अपने पद कोबनाए रखने हेतु संतुलित व्यवहार करता है। उसके व्यवहार में ऐसा गुण होता है, जिससे वह व्यक्तित्व एवं नियंत्रक दोनों गुणों को बनाएँ रखता है। अपने उग्रात्मक व्यवहार के कारण ही वह किसी कार्य को पूरी शक्ति के साथ प्रारंभ करता है और यह प्रयास करता है कि जो उसे मानने वाले है, अर्थात उसका अनुसरण करने वाले लोग है वे भी उसका पालन करें। नेता का व्यवहार हमेशा आशावादी होना चाहिए, किंतु सफलता एवं असफलता दोनों तरह की स्थितियों का सामना करने के लिए उसे परिपक्व रहना चाहिए। उसे संपूर्ण समूह प्रक्रिया का ज्ञान होना चाहिए तथा सामूहिक मनमुटाव से निपटने की कला होनी चाहिए। सामूहिक नेता को किसी भी एक कौशल में महारत हासिल होनी चाहिए।

2. अंर्तदृष्टि का सिद्धांत

किसी भी नेता में अंर्तदृष्टि का होना अत्यंत आवश्यक होता है इसी अंर्तदृष्टि के कारण वह समूह की समस्याओं को सुलझाने में सक्षमता हासिल करता है। वह समूह की उन कठिनाईयों को भी देखने की शक्ति रखता है, जो प्रत्यक्ष रूप से दृष्टिगोचर नहीं होती वरन अप्रत्यक्ष रूप से समूह में विद्यवान होती है। नेता में यह अंर्तदृष्टि उसमें विद्यमान ज्ञान, बुद्धि, अनुभव एवं कड़ी मेहनत के कारण रहती हैं।

3. विचित्रता का सिद्धांत

इस सिद्धांत के अनुसार नेता में ऐसे गुण होने चाहिए जिससे वह विचित्र लगे, क्योंकि विचित्रता के कारण ही वह समूह में भिन्न दिखता है। जब तक उसमें इस प्रकार के गुण नहीं होंगे वह समूह का नेतृत्वनहीं कर सकता। ऐसा गुण नेता में चुंबकीय शक्ति उत्पन्न करता है, जिससे वह सम्मान प्राप्त करता है और नेतृत्व करने की मान्यता भी ग्रहण करता है।

4. पूर्वानुमान का सिद्धांत

पूर्वानुमान के सिद्धांत अनुसार नेता में पूर्वानुमान कला, व्यक्तिगत योग्यता, समस्या तथा समस्या समाधान के गुण पूर्ण रूप से विद्यमान होने चाहिए।

5. मनोशक्ति का सिद्धांत

किसी भी नेता के लिए यह परम आवश्यक होता है कि उसमें मनोशक्ति का पूर्ण विकास हो। इस सिद्धांत के अनुसार कोई भी व्यक्ति नेता बन सकता है किंतु उसकी मनोशक्ति को किसी भी एक बिंदु पर स्थिर रखने की योग्यता एवं क्षमता होनी चाहिए। इस प्रकार की शक्ति के माध्यम से वह समूह को एक दिशा में ध्यानाकर्षण कराते हुए अपनी ओर प्रेरित कर सकता है।

6. योग्यता तथा अयोग्यता का सिद्धांत

योग्यता एवं अयोग्यता का समावेश प्रत्येक व्यक्ति में होता है ऐसा कोई व्यक्ति नही है जो कि पूर्ण रूप से सभी कलाओं मेंमहारथी हो। अत: जिन नेताओं में कुछ अयोग्यताए होती है वे उसे छिपाकर अधिक श्रम से दूर करने का प्रयास करते है तथा कुछ विशेष गुणों को हासिल करने का प्रयास करते हैं। इस श्रम के कारण वे अपना स्थान समूह एवं समाज में बना लेते हैं और नेता बन जाते हैं। इस सिद्धांत के अनुसार नेता किसी एक क्षेत्र में असफलता के बाद किसी दूसरे क्षेत्र के माध्यम से इसकी क्षतिपूर्ति करता है।

7. समूह प्रक्रिया का सिद्धांत

समूह प्रक्रिया का मूल लक्ष्यही समूह की समस्या को दूर कर समूह के सदस्योंमें नेतृत्व की भावना का विकास करना होता है। जब समूह के नेता द्वारा इस प्रकार का प्रयास किया जाता है तो वह समूह के बाकी सदस्यों में भी नेतृत्व के गुणों का समावेश करता है और स्वाभाविक रूप से अन्य सदस्यों में भी नेतृत्व के गुण आना प्रारंभ हो जाते है। इस संर्पूण प्रक्रिया में वह निस्वार्थ भावना से समूह की समस्या के समाधान हेतु प्रयास करता है और आगे चलकर वह बड़े नेता के रूप में उभरकर सामने आता है।

1.6 नेतृत्व और शक्ति

किसी भी व्यवहार को परिवर्तित करने की योग्यता को शक्ति कहा जाता है । इस शक्ति के माध्यम से समूह के अंदर और समूह के बाहर की स्थिति में परिवर्तन किया जाता है, जिसमें समूह नेता कार्य करता है। शक्ति एक व्यक्ति अथवा समूह को दूसरे के व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता होती है, जिसकी प्राप्ति श्रेष्ठ स्थिति के कारण होती है। यह स्थिति औपचारिक हो या अनौपचारिक इस प्रकार की शक्ति को पूर्वनिर्धारित तरीकों द्वारा व्यवहार को प्रभावित करने की क्षमता के रूप में समझा जा सकता हैं। फ्रेंच और रॉवेन ने शक्ति के आधारों का निम्नलिखित वर्णन किया है:

- संबंध शक्ति-किसी को भी बुलाने में समर्थ होना और अपने प्रभाव के बल पर लोगों या संसाधनों का प्रयोग करना।
- विशेषज्ञ शक्ति-समूह की सुविधा और कार्य के लिए ज्ञान और कौशलों का होना।
- सूचना शक्ति-ऐसी सूचनाएँ रखता हो जो मूल्यवान हों तथा अन्य लोगों को उनकी आवश्यकता हो।
- विधि सम्मत शक्ति-प्राधिकार और अधिकार प्राप्त पद पर मौजूद हो जो कि संगठन में या व्यापक सामाजिक व्यवस्था में स्थित हो।
- संदर्भ शक्ति-पसंद और समादर करते हों, समूह के सदस्य कार्यकर्ता के साथ पहचान बनाने में इच्छुक हों।
- पुरस्कार शक्ति-सामाजिक अथवा वास्तविक व ठोस पुरस्कार देने की योग्यता रखना।
- बाध्यकारी शक्ति-संसाधनों और सुविधाओं तक पहुँचने,अनुमति देने, दंड देने या अस्वीकृत करने की बाध्यकारी शक्ति धारण करना।

शक्ति और नेतृत्व का आपस में गहरा संबंध होता है, क्योंकि ये एक-दूसरे के पूरक होते हैं । एक नेता पूर्ण रूप से परिचित होता है कि समूह के सफल निर्देशन हेतु उसमें शक्ति का होना नितांत आवश्यक होता है, जिसकी सहायता से वह समूह के अंदर व्युत्पन्न होने वाले अवरोधों से निपटने के लिए सक्षम बनता है। यह स्थिति मुख्य रूप से तब उत्पन्न होती है, जबकि समूह प्रारंभिक स्थिति में होता हैं और समूह सदस्योंके द्वारा समूह के नेता की ओर बड़ी अपेक्षा के साथ देखा जाता है। इन शक्तियों का प्रयोग समूह को शक्तिशाली बनाने, उनके कंधों पर उनकी इच्छानुसार ज़िम्मेदारी डालने और उनको सफल बनाने के लिए की जाती हैं। समूहों को नेता की आवश्यकता इसलिए होती है कि वे असंगठित और अव्यवस्थित न हों, नेतृत्व और शक्ति एक दुसरे से अलग नहीं की जा सकती हैं। (एटजिऑनी, 1961)

1.7 सारांश

नेतृत्व समूह का एक आवश्यक व प्राकृतिक तत्व है। नेतृत्व केद्वारा ही समूह अपने विकासात्मक उद्देश्यों को प्राप्त करता है। अच्छे नेतृत्व का गुण है कि वह अच्छा नेता व सक्षम कर्ता होता है। समूह उसके लिए काम नहीं करता,

बल्कि वह समूह के काम में सहायता करता है। वह अन्य लोगों के विचारों का और हर व्यक्ति का आदर करता है। वह व्यक्तियों को अपनी सहायता से परावलंबी नहीं स्वावलंबीबनाता है। शक्ति और नेतृत्व का आपस में गहरा संबंध होता है एक विशिष्ट प्रकार की शक्ति के कारण ही नेता समूह की सहायता कर सकता है।

1.8 बोध प्रश्न

1. नेतृत्व के अर्थ को स्पष्ट करते हुए इसके प्रकारों को समझाइएं।
2. सामाजिक समूह कार्य में व्यावसायिक नेतृत्व से क्या तात्पर्य हैं ? स्पष्ट कीजिए।
3. नेतृत्व के सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
4. नेतृत्व में शक्ति से क्या तात्पर्य है?
5. व्यासायिक नेतृत्व में नेता के कार्यों की चर्चा कीजिए।

1.9 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

https://hi.wikipedia.org/wiki/ retrived on 03/08/2016

1. मिश्रा, प्रयागदीन (2015). *सामाजिक समूह कार्य*.लखनऊ : हिंदी संस्थान ।
2. बाल गोपाल, आर पी तथा वैस्सिल. वी. टी. (1983). *ग्रुप्स इन सोशल वर्क*.युनाइटिड स्टेटस ऑफ अमरीका : मैक्मिलन पब्लिशिंग को. इनसी
3. कोयले, एल. जी. (1947). *ग्रुप इक्सपीरियन्स एंड डेमोक्रेटिक वैल्यूम*. न्यूयार्क : दि वूमेन्स प्रेस
4. रोब्बिन्स, पी एस एंड सांघी एस (2005). *आर्गनाईजेशनल बिहेवियर* दिल्ली: पीयरसन एजुकेशन
5. प्रसाद मणिशंकर, सत्य प्रकाश, कुमार अरूण,कुमार संजय,सैफ मो.खान एवं सिंह अभव कुमार(2103). *यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेट समाज कार्य*.दिल्ली: अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया लिमिटेड)।
6. तेज, संगीता. पाण्डेय तेजस्कर (2010). *समाज कार्य*. लखनऊ: जुबली एच फाउंडेशन।
7. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2009).*सामाजिक समूह कार्य*.दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ।

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई 2- सामाजिक समूह कार्य के कौशल और तकनीकें

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 समूह कार्य में कौशल/ निपुणताएं
2.3 समूह कार्य में तकनीकें
2.4 सारांश
2.5 बोध प्रश्न
2.6 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप :

1. समूह कार्य प्रक्रिया में प्रयुक्त किए जाने वाले विभिन्न कौशलों/ निपुणताओं से परिचित हो सकेंगे।
2. समूह कार्य तकनीकों के बारे में परिचित हो सकेंगे।
3. विभिन्न कौशल एवं तकनीकों का समूह कार्य प्रक्रिया में महत्वसे अवगत हो सकेंगे।

2.1 प्रस्तावना

समूह कार्य व्यावसायिक गुणों पर आधारित एक कार्य है, जिसमें विभिन्न प्रकार की कौशलों या जिसे हम निपुणता भी कहते हैं, का उपयोग किया जाता है। समूह कार्यकर्ता कुछ कौशलों के साथ-साथ कुछ तकनीकों का भी उपयोग संपूर्ण समूह कार्य प्रक्रिया में करता है जिसके आधार पर वह समूह के उद्देश्यों को प्राप्त किया जाता हैं। कौशल एवं तकनीकों का उपयोग समूह कार्य प्रक्रिया प्रारंभहोने से अंत तक किया जाता है। किसी व्यावसायिक कार्य में कौशलता एवं तकनीकों का होना उसके स्वरूप व महत्व को स्पष्ट करता है। मानव व्यवहार की जो समस्याएं हैं, उन समस्याओं का तब तक समाधान नहीं किया जा सकता, जब तक कि उन समस्याओं के समाधान हेतु विशेष योग्यता एवं कौशल का उपयोग न किया गया हों। उक्त इकाई के माध्यम से छात्र-छात्राओं को समूह कार्य प्रक्रिया में प्रयुक्त की जाने वाली विभिन्न कौशल और तकनीकों के संबंध में विस्तार से बताया जा रहा हैं।

2.3 समूह कार्य के कौशल/ निपुणताएं

निपुणता एवं कौशलता व्यवसाय की दृष्टि से अंतत्य महत्वपूर्ण गुण है। समान्यभाषा में इसके अर्थ को कार्य करने की क्षमता के रूप मे जाना जाता है। समूह कार्य प्रक्रिया में यह परम् आवश्यक होता है कि प्रत्येक कार्यकर्ता इस प्रकार की कुशलताओं से युक्तहो।

कुशलता का अर्थ

ट्रेकर ने कुशलता के अर्थ को स्पष्ट करते हुएं कहा कि ' कार्यकर्ता की विशेष परिस्थितियों में ज्ञान एवं समय के उपयोग की क्षमता हैं।

विरजाइना रॉबिन्सन के अनुसार – ' विशिष्ट वस्तु में परिवर्तन की प्रक्रिया को इस प्रकार गतिशील व नियंत्रित करने की क्षमता, जिससे वस्तु में होने वाला परिवर्तन उस वस्तु की दक्षता व गुण की उपयोगिता और उच्च कोटि के चिंतन द्वारा प्रभावित होता है।

वेवस्टर शब्द के अनुसार निपुणता का तात्पर्य कार्य के क्रियान्वयन व उसे पूर्ण करने के ज्ञान एवं दक्षता से है। इन परिभाषाओं से स्पष्ट होता है कि व्यक्ति जो भी निपुणता प्राप्त करता है वह उसके ज्ञान व अनुभव के आधार पर होती है। जब कोई भी व्यक्ति किसी भी कार्य को लगातार लंबे समय तक करता रहता है तो उसमें स्वाभाविक रूप से उस कार्य के प्रति निपुणता आना प्रारंभ हो जाती है।

सामूहिक कार्य में निपुणताओं के महत्वको स्पष्ट करतें हुए ट्रेकर ने निम्न निपुणताओं का उल्लेख किया है:

- **उद्देश्यपूर्ण संबंधस्थापित करने करने की निपुणता**
  - समूह कार्यकर्ता का सर्वप्रथम उद्देश्य होता है कि वह समूह के सदस्यों को एक-दूसरे के विचारों एवं भावों को समझने में सहयोग करें और समूह को जो लक्ष्य प्राप्त करना है उसके प्रति उनका सहयोग करें।
  - सामूहिक कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक होता है कि वह सर्वप्रथम समूह के सदस्यों को एक-दूसरे को स्वीकार करने एवं आवश्यकता अनुसार उद्देश्यों को प्राप्त करने हेतु समूह सदस्यों के सहयोग की निपुणता होनी चाहिए।
- **समूह परिस्थिति विश्लेषण की निपुणता**
  - कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक हैं कि वह समूह के मनोसामाजिक, सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्तर के आधार पर उसकी आवश्यकता को जानने एवं विकास स्तर को समझने की निपुणता होनी चाहिए। यह निपुणता कार्यकर्ता में प्रत्यक्ष अवलोकन के आधार पर अर्जित की जाती है।
  - कार्यकर्ता के लिए आवश्यक होता है कि वह समूह सदस्यों को इस आधार पर प्रोत्साहित करे कि प्रत्येक समूह सदस्य अपने-अपने विचारों को स्पष्ट रूप से रख सके और अपने उद्देश्यों का निर्धारण कर सकें साथ ही लक्ष्यों की स्पष्टता एवं सदस्यों में अपनी शक्तियों को पहचानने और सीमाओं को पहचानने में मदद करे।
- **समूह के साथ भाग लेने की निपुणता**
  - समूह कार्यकर्ता को समूह के कार्यक्रमों में भाग लेने, समूह की भूमिका की व्याख्या करने, समूह को ग्रहण करने एवं समूह को परिवर्तित करने की निपूणता आवश्यक रूप से होनी चाहिए।
  - समूह कार्यकर्ता में समूह सदस्यों में से नेतृत्व की खोज करने की निपुणता होनी चाहिए। साथ ही समूह सदस्यों में अपनी क्रियाओं के विषय में उत्तरदायित्व स्वीकार करने की भी निपुणता आवश्यक रूप से होनी चाहिए।
- **समूह की भावनाओं से निपटने की निपुणता**
  - समूह कार्यकर्ता को हमेशा ही भावनात्मक रूप से मजबूत होना चाहिए। कभी भी भावनात्मक रूप से विचार नहीं किया जाना चाहिए। इसमें इस प्रकार की निपुणता होनी चाहिए कि वह अपनी भावनाओं को नियंत्रित कर सकें और प्रत्येक परिस्थिति में वह समूह का संचालन उचित रूप से कर सके।

- समूह कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह समूह सदस्यों को सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों प्रकार से मजबूती प्रदान करे, जिससे कि समूह सदस्य प्रत्येक स्थिति के लिए मजबूत हो सके। कार्यकर्ता को समूह के मध्य होने वाले आंतरिक संघर्ष से भी अवगत होने चाहिए एवं इस प्रकार के आंतरिक संघर्षों को निपटने हेतु सहायक एवं निपुण होना चाहिए।

➢ **कार्यक्रम के विकास में निपुणता**

- समूह कार्य एक प्रगतिशील प्रक्रिया है और यह प्रक्रिया बिना रचनात्मक कार्यक्रमों के संभव नहीं हो पाती है। जब समूह कार्य प्रक्रिया को प्रारंभ किया जाता है और उसमें कार्यक्रमों का प्रारंभ किया जाता है तो कार्यकर्ता को इस बात में निपुण होना चाहिए कि कार्यक्रम इस प्रकार का हो, जिसमें समस्त सदस्यों कि रुचियां एवं आवश्यकताएँ शामिल हों।
- कार्यकर्ता को प्रत्येक स्तर पर समूह को कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए प्रेरित करने की निपुणता होनी चाहिए, जिससे कि प्रत्येक सदस्य कार्यक्रम का हिस्सा बन जाए और सदस्यों में आत्मनिर्णय की क्षमता का विकास हो संपूर्ण प्रक्रिया प्रगतिशील समूह एवं कार्यकर्ता की योग्यता पर निर्भर करता है।

➢ **साधनों के उपयोग में निपुणता**

- साधनों के उपयोग कि निपुणता प्रत्येक कार्यकर्ता के लिए एक आवश्यक गुण होता है, क्योंकि किसी भी प्रक्रिया में साधनों का उपयोग एक महत्वपूर्ण अंग माना जाता है। इस प्रक्रिया द्वारा कार्यकर्ता यह अनुभव प्राप्त करता है कि किसी भी समूह या सामुदायिक प्रक्रिया में उपलब्ध साधनों का उपयोग कैसे किया जाए, जिससे लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सके।
- साधनों के उपयोग के संदर्भ में कार्यकर्ता को मुख्य रूप से निपुण होना चाहिए, जिससें किसी भी प्रकार की कोई समस्या उत्पन्न ना हो और साधनों का उचित उपयोग किया जा सके। संस्था एवं संपूर्ण वातावरण और समुदाय मिलकर बहुत सेसाधन रखते हैं। सामाजिक सामूहिक कार्य में संस्था तथा समुदाय के इन साधनों का प्रयोग व्यक्तियों और समस्त समूह के हित के लिए जाता है। कार्यकर्ता की भूमिका केवल समूह में ही नहीं होती वरन वह समूह से बाहर भी उतनी ही भूमिका अदा करता है। वह समुदाय से संबंधित सभी आवश्यक जानकारी को एकत्रित करता है तथा समस्त सदस्यों को वह जानकारी साझा करता है, जिससें वह एक प्रकार से मध्यस्थता की भूमिका भी अदा करता है और आवश्यकता पड़ने पर समूह को उपलब्ध साधनों के उपयोग के लिए प्रेरित भी करता है।

➢ **मूल्यांकन में निपुणता**

- मूल्यांकन एक सतत और निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया कार्य प्रारंभ होने के साथ ही प्रारंभ हो जाती है। इस प्रक्रिया द्वारा यह तय किया जाता है कि कार्य में कितनी सफलता प्राप्त हुई है और कार्य के दौरान क्या कमियाँ रह गई है, इस संबंधी प्रक्रिया में अभिलेखित करने में कार्यकर्ता को निपुण होना चाहिए, जिससे समूह में आने वाली समस्याओं का निपटारा किया जा सके।

- मूल्यांकन द्वारा समूह की अंतःक्रियाओंसमूह की शक्तियों ,सदस्यों की कमज़ोरियों, समूह के अनुभव एवं उनकी क्षमताओं का आकलन करने की निपुणता कार्यकर्ता में होनी चाहिए समूह कार्यकर्ता द्वारा निम्न स्थितियों के मूल्यांकन की निपुणता होनी चाहिए-
- कार्यक्रम मूल्यांकन की निपुणता
- सदस्यों की भागीदारी का तथा अनुभव का मूल्यांकन करने की निपुणता ।
- कार्यकर्ता द्वारा स्वयं अपनी भूमिका का मूल्यांकन करने की निपुणता

➢ **कार्यक्रम**

➢ **समापन की निपुणता**

- कार्यक्रम समापन में कार्यकर्ता को मुख्य रूप से निपुण होना चाहिए वह सदस्यो के कार्यों का मूल्यांकन करे। उनके तथा समूह कीAchievements के बारे में तथा उनकी कमज़ोरियों के बारे में बताए।
- कार्यकर्ता को समूह के सदस्यों के व्यक्तिगत भावों, भावनाओं तथा समूह समापन के संदर्भ में एक सकारात्मक माहौल बनाने की निपुणता होनी चाहिए, जिससे समूह के मध्य सामंजस्य कायम रह सके।
- समूह कार्यकर्ता द्वारा सदस्यों को समूह छोड़ने के लिए मानसिक रुप से तैयार करने हेतु निपुण होना चाहिए।

अत: समाज समूह कार्यकर्ता को समूह का नेतृत्व करने हेतु अनेक कौशलों की आवश्यकता होती है। इसके अतिरिक्त किंतु कुछ अन्य महत्वपूर्ण कौशलों पर चर्चा नीचे चर्चा की जा रही है :

फिलिप्स ने मुख्य रूप से चार प्रकार की समूह कार्य में कार्यकर्ता द्वारा उपयोग में लाई जाने वाली निपुणताओं का वर्णन प्रस्तुत किया है, जो कि निम्न प्रकार से है:

1. संस्था के कार्यों के प्रयोग की निपुणता
2. भावनाओं के संचार की निपुणता
3. वर्तमान की वास्तविकता के प्रयोग की निपुणता
4. सामूहिक संबंधों को उत्तेजित करने तथा उपयोग करने में निपुणता

1. संस्था के कार्यों के प्रयोग की निपुणता:

समूह कार्य प्रक्रिया संस्थाके माध्यम से ही आयोजित की जाती हैं। अनेक सामाजिक संस्थाओं के विकास के द्वारा ही समूह कार्य प्रक्रिया का विकास हुआ है। जो भी सामाजिक संस्थाएँ समाज के हित में कार्य कर रही है भले ही उनके कार्य एवं स्परूप भिन्न-भिन्न हो परंतु उनके उद्देश्य एक समान ही होते है। सर्वप्रथम कार्य प्रारंभ के दौरान कार्यकर्ता को यह जान लेना आवश्यक होता है कि जो संस्था कार्य कर रही है, वह क्या करने का प्रयास कर रही है ? सामूहिक कार्यकर्ता के लिए संस्था के कार्यों के सकारात्मक क्षेत्र हैं, जिनका उपयोग वह समूह के साथ अपने कार्यों में करता है। इस प्रकार से कार्यकर्ता को उस संस्था के कार्यों का स्पष्ट ज्ञान हो जाता है, जिस प्रकार से वह समूह की सहायता करता है और समूह को लाभन्वित करता है।

संस्था के कार्यों के उपयोग के संदर्भ में कार्यकर्ता में निम्न कुशलताओं का होना अंत्यत महत्वपूर्ण होता है-

- अंर्तग्राही कुशलता

- समूह का संस्था से संबंध स्थापित करने की कुशलता
- समूह कार्य प्रक्रिया के द्वारा किस प्रकार की सहायता कि जाए इस प्रकार की कुशलता
- समूह कार्य प्रक्रिया के पश्चात भी समूह सदस्यों को समझने तथा आवश्यकतानुसार सहायता करने की निपुणता।
- समूह को संदर्भित करने की कुशलता

3 भावनाओं के संचार की निपुणता:

इच्छाएँ या भावनाएँ व्यक्ति की प्रकृति व स्वभाव एक अंग है तथा व्यक्तित्व विकास के लिए इनका स्वास्थ विकास होना आवश्यक होता है। सहायता के आधुनिक व्यवसाय में एक सुनिश्चित भावनात्मक जीवन की महत्ता को प्रमुख रूप में मान्यता प्रदान की जाती है। मनोचिकित्सा और मनोविज्ञान दोनों विज्ञानों में व्यक्तित्व की संरचना में भावनाओं की सामान्यस्वस्थ भूमिका का अध्ययन किया गया है। इन विज्ञानों ने सामाजिक कार्य को मानव प्रगति और विकास के बारे में ज्ञान का एक आयाम दिया है। इससे समाज कार्य सहायता प्रक्रिया और अधिक प्रभावी हुई है।

व्यक्ति की मनोवैज्ञानिक मूलभूत आवश्यकता को अंतर्गत प्रेम, सुरक्षा, प्रस्थिति, भावनाओं का स्पष्टीकरण, उपलब्धि तथा आत्मनिर्भरता के रूप में पहचाना गया है। समूह में कार्य करना, समूह स्वीकृत लेना, समूह के तरीकों को व्यवहार में लाना यह सभी मनोसामाजिक आवश्यकताएँ है। इन आवश्यकताओं का स्तर व्यक्ति-दर-व्यक्ति घटता-बढ़ता रहता है। यदि इन भावनाओं का उद्देश्यपूर्ण प्रगटन नहीं होता है तो निराशा उत्पन्न होती है। अत: यदि किसी भी स्थिति के संबंध में दूसरे को बतलाना है तो उससे संबंधित भावनाएं भी स्पष्ट होनी चाहिए। इन सब प्रक्रिया में संचार का अत्यंत ही महत्वपूर्ण कार्य है संचार के माध्यम से ही संबंध स्थपित किया जाते हैं। कार्यकर्ता में इस प्रकार की निपुणता का होना अंत्यत ही महत्पूर्ण होता है, जिससे वह अपनी भावनाओं को नियंत्रित रूप से प्रगट करें, ताकि समूह को इसका लाभ प्राप्त हो। भावनाओं के संचार हेतु कार्यकर्ता में निम्न प्रकार की कुशलता का होना महत्वपूर्ण होता है-

- कार्यकर्ता को स्वयं की भावना को नियंत्रित करने उसे समझने तथा उपयोग करने की कुशलता होनी चाहिए।
- समूह के सभी सदस्यों की भावनाओं को समझने एवं उनकी भावनाओं से निपटने की कुशलता होनी चाहिए।
- सामूहिक भावनाओं के संचार की निपुणता आवश्क होनी चाहिए।

4 वर्तमान की वास्तविकता के प्रयोग की निपुणता :

समूह कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक है कि वह समूह सदस्यों को वास्तविक स्थिति से अवगत करा सके और उसके अनुसार चलने के लिए निर्देशित कर सके। कई बार ऐसा होता है कि समूह कार्यकर्ता समूह सदस्यों की आवश्यकता की पूर्ति वर्तमान समय में नहीं कर सकता ऐसी स्थिति में कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह समूह सदस्यों को इस प्रकार की मांग को रोके और उन्हें कुंठित होने से भी बचाएं। इस हेतु कार्यकर्ता समूह में सामूहिक उद्देश्यों की क्रियाओं के लिए उपयोग करने की निपुणता होना आवश्क होता है। साथ ही यह भी आवश्यक है कि वह समूह को उत्तरदायी निर्णय लेने में सहायता कर सके।

5 सामूहिक संबंधों को उत्तेजित करने तथा उपयोग करने में निपुणता

संबंधका मानव जीवन में एक विशेष महत्व होता है। समूह कार्य में संपूर्ण प्रक्रिया की सफलता एवं असफलता मुख्य रूप से समूह के संबंधों पर निर्भर करती है। समूह कार्य में संपूर्ण सदस्योंके मध्य सकारात्मक संबंध होने चाहिए, जिससे कि एक सौहार्द पूर्ण वातावरण का निर्माण किया जा सके। कार्यकर्ता के लिए यह भी आवश्यक होता है कि यदि समूह में किसी प्रकार का कोई आपसी मनमुटाव है तो उसे अपनी कुशलता से सुलझाने का प्रयास करें और समूह को सही दिशा में निर्देशित करे। समूह कार्यकर्ता को समूह संबंधों को उत्तेजित करने और संबंध के माध्यम से लक्ष्य प्राप्ती हेतु निपूण होना चाहिए।

इस कार्य हेतु कार्यकर्ता में निम्न प्रकार की कुशलाताओं का होना आवश्यक होता है।

- सामूहिक संबंधों को सुदृढ करने के लिए कार्यक्रम उपयोग की निपुणता।
- सदस्यों की अंतर्निहित शक्तियों को समझने तथा उनका उपयोगकरने की निपुणता।

इस प्रकार से समूह कार्य में कार्यकर्ताओं की निपुणताओं को समझा जा सकता है जो कि प्रत्येक समूह कार्यकर्ता में होना नितांत आवश्यक है इन निपुणताओं के अभाव में समूह कार्य का सफल संचालन करना असंभव प्रतीत होता हैं। अत: प्रत्येक समूह कार्यकर्ता में इस प्रकार की निपुणता/ कुशलता एक आवश्यक अंग होती है।

2.3 समूह कार्य में तकनीकें

सामाजिक समूह कार्य में सहायता करने के उपक्रम में समूह और कार्यकर्ता के मध्य होता है। यह एक महत्वपूर्ण प्रक्रियायुक्त चरणबद्ध प्रणाली के रूप में भी देखी जा सकती है। सामाजिक समूह कार्य में निम्नलिखित तकनीकों को प्रमुखत: देखा जा सकता है और उन्हें प्रयोग में भी लाया जा सकता है, जिसका उपयोग समूह कार्यकर्ता के लिए अंत्यत ही महत्वपूर्ण होता हैं।

➢ **परामर्श की तकनीक**

परामर्श समूह कार्य प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में जानी जाती है। यह एक कला एवं विज्ञान दोनों हैं। इसके सहायता से कार्यकर्ता समूह सदस्यों की सहायता परामर्श तकनीक माध्यम से करने का प्रयास करता हैं। कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है कि उसमें विषय वस्तु के ज्ञान के साथ-साथ अनुशासन एवं आत्मिक विकास का भी होना आवश्यक होता है। अभिव्यक्ति तब होती है जब परामर्शदाता समूह तथा अपने बीच संबंधों को सुदृढ़करने के लिए विभिन्न निपुणताओं का उपयोग करता है तथा समूह को स्वायत्ता बनाएं रखने का समर्थन करता है। परामर्श के लिए यह आवश्यक होता है कि परामर्श दाता अच्छा संप्रेषक हो और यह संप्रेषक सावधानीपूर्वक अवलोकन करने पर निर्भर होता है। कार्यकर्ता में प्रशिक्षण तथा अनुभव के कारण दूसरों की सहायता करने की दक्षता होती है। वह अनेक प्रकार की व्यक्तिगत कठिनाइयों का समाधान विभिन्न तकनीकों के माध्यम से करता है।

➢ **आत्मविश्वास जगाने और निर्मित करने की तकनीक**

सामाजिक समूह कार्यकर्ता द्वारा समूह में आत्मविश्वास जगाने का काम प्रमुख होता है। इसलिए इसकी आवश्यकता को महत्व दिया जाता है। समस्या समाधान प्रक्रिया में समूह की पूर्ण भागीदारी होने के लिए उसके अंदर आत्मविश्वास निर्माण की आवश्यकता होती है। समूह को भली-भांति समझकर विभिन्न मजबूत पक्षों को उद्घाटित करना चाहिए और उसे इन सकारात्मक पक्षों के बारे में बताना भी चाहिए। समूह द्वारा जो भी काम बेहतर और वैज्ञानिक ढंग से किया गया हो उसका पूरा श्रेय समूह को ही देना चाहिए। समूह की जो शक्तियां है उन्हेंसामने लाने का प्रयास करना चाहिए और समूह की कमज़ोरियों को दूर कर उसमें आत्मविश्वास का भाव जगाना चाहिए।

ये प्रक्रिया पूर्ण रूप से समूह के अंदर निर्मित आत्मविश्वास को जागृत करने में मददगार साबित होती है। अत: यह तकनीक समूह कार्य प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण तकनीक के रूप में कार्यकर्ता द्वारा उपयोग में लाई जाती है।

➢ **संचार कौशल की तकनीक**

संचार का प्रत्येक मानव जीवन में अत्यंत महत्व होता है। इसी तकनीक के माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति अपनी बातों या आवश्यकताओं को दूसरे व्यक्ति तक पहुँचाने का प्रयास करता है। यह एक ऐसा माध्यम है जिसकी सहायता से कार्यकर्ता संपूर्ण प्रक्रिया को सफलतापूर्वक क्रियान्वित करता है। कार्यकर्ता का यह उत्तरदायित्व होता है कि वह अपनी बात, सुझाव, मदद, प्रस्ताव आदि को समूह के समक्ष रखे साथ ही उसे उचित अभिव्यक्ति भी दे। इस कौशल हेतु संचार तकनीक की आवश्यकता होती है। संचार कौशल में समूह के प्रति संवेदना, उत्साह व सहानुभूति प्रकट करने के साथ सकारात्मकता को व्यक्त करने की दक्षता महत्वपूर्ण होती है। संचार कौशल के रूप में तकनीक का प्रयोग भी प्रासंगिक होता है। प्राय: संचार के किसी माध्यम का प्रयोग समूह को बेहतर समझ विकसित करने में मदद करता है। यह एक प्रकार से बात रखने और परस्पर समझने की कला है, जिसकी निपुणता का लाभ समाजकार्य के क्षेत्र में संचारकौशल के माध्यम से किया जा सकता है।

➢ **भौतिक सहायता उपलब्ध कराने और जुटाने की तकनीक**

समाजकार्य में भौतिक सहायता उपलब्ध कराने से अर्थ है कि कोई मान्यता प्राप्त गैर-सरकारी संस्था किसी समूह को आर्थिक और उपयोगी वस्तुओं की मदद करने से है। कई बार भिन्न-भिन्न तकनीक के माध्यम से दिए गए समर्थन के अलावा समूह को भौतिक सहायता जिसमें आर्थिक वस्तुओं के रूप में मदद की आवश्यकता होती है। बहुत सी संस्थाएं ऐसी होती हैं, जिनके पास भौतिक सहायता के लिए स्वयं की नियमावली होती है, जिसका उद्देश्य कार्यक्षेत्र में कार्य-नियंत्रण व आत्मनियंत्रणयुक्तहोता है। परंतु कई बार विपरीत स्थिति में कुछ संस्थाओं के पास नियमावली का अभाव होता है। परिणात: नियमावली नहीं होने की स्थिति में तो समूह के लिए धर्माथ-न्यास जैसी संस्थाएं, व्यक्तिगत सहायता और दान-दाताओं तथा कुछशुभचिंतकों की ओर से धन और वस्तुओं को एकत्रित करना होता है। विभिन्न मौकों पर समूह की जरूरत अलग-अलग प्रकार की होती है। इसके चलते कार्यकर्ता को समूह के हित के लिए कई स्थानों से सहायता दिलानी होती है। इसको संसाधन संग्रहण कहा जाता है। इन सभी चीजों के लिए कार्यकर्ता को संभावित संसाधन संपन्नव्यक्तियों को ढूंढ़ना होता है और समूह की आवश्यकताओं को पूरी तरह से व्याख्या करने की प्रक्रिया के तरीके द्वारा कुछ नवीन खोज कार्य करने की आवश्यकता होती है। इस प्रकार से कार्यकर्ता द्वारा इस तरह का प्रयास किया जाता है कि समूह के हित हेतु भौतिक सहायता को उपलब्ध कराया जाए और किस तकनीकों के माध्यम से इन सुविधाओं को जुटाया जाए।

❖ **समूह कार्य कौशल एवं तकनीकों को अर्जित करने के तरीके:**

सर्वप्रथम कार्यकर्ता द्वारा व्यक्तिगत रूप से संपर्क किया जाना चाहिए और अपने अवलोकन क्षमता के आधार पर उस व्यक्ति का खोजना चाहिए जो कि समूह के साथ कार्य करने हेतु सक्षम हो। आपको स्वयं का स्तर जानने के लिए स्वयं की जांच कीजिए और यह ज्ञात कीजिए कि आप किस स्थान पर है। ध्यान रखने वाली बात है यह है कि सभी व्यक्तियों को एक दृष्टिकोण के अनुसार नहीं देखना चाहिए। सभी व्यक्तियों को अलग-अलग नजर से देखना चाहिए, क्योंकि सभी व्यक्तियों की योग्यता भिन्न-भिन्न होती हैं। इस प्रकार के गुणों को आत्मसात करना चाहिए, कार्य करने में लोकतांत्रिक नेतृत्व की शैली में गहराई से आंकलन करना चाहिए और सभी तरह से आपसी समझ को विकसित करना चाहिए। अनुभव के आधार पर ज्ञात होता है कि योग्यता नेतृत्व के गुणों के आधार पर किया

जाना चाहिए इसके अतिरिक्त निम्न तथ्यों के माध्यम से भी समूह कार्य में कौशल एवं तकनीकों को अर्जित किया जा सकता हैं।

- अनेक अध्ययनों जैसे- पुस्तकालयों, प्राधिकृत वेबसाइट्स, जरनलों, रिपोर्टों इत्यादि से प्रासंगिक सामग्री का अध्ययन कर कौशलता एवं तकनीकों को अर्जित करने में सहायता प्राप्त होती हैं।
- समूह के साथ किए गए कार्यों की प्रतिदिन की डायरी एवं लिखिए दस्तावेज के माध्यम से अपने आप को परिपक्व बनाया जा सकता है।
- स्यवं का मूल्यांकन करके।
- आपसी अंतःक्रिया के माध्यम से

अत: इस प्रकार के ज्ञान से समूह कार्यकर्ता अपने आप को विभिन्न कौशलों एवं तकनीकों को अर्जित कर सकता हैं। समूह कार्य कौशलों को ग्रहण करने के लिए दूसरों की सहायता आवश्यक रूप से करनी चाहिए व समूह कार्य कौशल के संबंध में लगातार आत्मनिरीक्षण व पुनर्परीक्षण करते रहना चाहिए।

2.4 सारांश

सामाजिक समूह कार्य एक ऐसी प्रणाली है जो कि वैज्ञानिक पद्वति के माध्यम से समूह की समस्यों का समाधान करती है और समूह की आवश्यकता की पूर्ति की जाती हैं। कार्यकर्ताओं द्वारा इस प्रणाली का उपयोग कुछ महत्वपूर्ण निपुणताओं एवं तकनीकों के माध्यम से करने का प्रयास किया जाता हैं, जिसकी सहायता से कार्यकर्ता सेवार्थी की समस्या समाधान में सहायक की भूमिका अदा करता है साथ ही समूह कार्यकर्ता को अपना कार्य संपन्न करने के लिए समूह में आत्मविश्वास जागृत करने की भी आवश्यकता होती हैं। अत: इन तकनीकों एवं कुशलताओं के उपयोग से कार्यकर्ताद्वारा समूह में आत्मविश्वास पैदा कर लक्ष्य प्राप्ति आसानी से प्राप्त की जा सकती हैं।

2.5 बोध प्रश्न

1. समूह कार्य प्रक्रिया में प्रयुक्तकि जाने वाली विभिन्न कुशलताओं / निपुणताओं को स्पष्ट कीजिए।
2. सामाजिक समूह कार्य में तकनीकें से क्या तात्पर्य हैं ? समझाइए।
3. विभिन्न कुशलताओं के महत्वप्रर प्रकाश डालिए।
4. संचार संबंधी निपुणता से आपका क्या तात्पर्य हैं ?

2.6 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

1. ट्रेकर, एच बी (1955).*सोशल ग्रुप वर्क प्रिंसिपल्स एंड प्रैक्टिस*, न्यूयार्क: व्हाइटसाइड
2. https://hi.wikipedia.org/wiki/ **retrived on 03/08/2016**
3. मिश्रा, प्रयागदीन (2015). *सामाजिक समूह कार्य*.लखनऊ : हिंदी संस्थान।
4. कोयले, एल. जी. (1947). *ग्रुप इक्सपीरियन्स एंड डेमोक्रेटिक वैल्यूम*. न्यूयार्क : दि वूमेन्स प्रेस
5. प्रसाद मणिशंकर, सत्य प्रकाश, कुमार अरूण,कुमार संजय,सैफ मो.खान एवं सिंह अभव कुमार(2103). *यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेट समाज कार्य*.दिल्ली: अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया) लिमिटेड।
6. तेज, संगीता. पाण्डेय तेजस्कर (2010). *समाज कार्य*. लखनऊ: जुबली एच फाउंडेशन।
7. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विशवविद्यालय(2009).*सामाजिक समूह कार्य*.दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ।

इकाई 3 सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य
3.1 प्रस्तावना
3.2 जीवन कौशल शिक्षा की समझ
3.3 जीवन कौशल शिक्षा समूह
3.4 जीवन कौशल शिक्षा में समूह कार्यकर्ता की भूमिका
3.5 जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम
3.6 जीवन कौशल के अध्ययन की तकनीकें
3.7 सामाजिक समूह कार्य और शिक्षा
3.8 सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता
3.9 सारांश
3.10 बोध प्रश्न
3.11 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

- सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल के महत्व को समझ सकेंगे।
- समूह कार्य में जीवन कौशल शिक्षा की आवश्यकता और तकनीकों को जान सकेंगे।
- शिक्षा के क्षेत्र में समाज समूह कार्य की भूमिका एवं महत्वका वर्णन कर सकेंगे।

ज्ञान शांति मैत्री

3.1 प्रस्तावना

जीवन कौशल एक ऐसी विधा है जिसके माध्यम से व्यक्ति को सशक्त करने का प्रयास किया जाता है। इस विधा का प्रयोग मुख्य रूप से किशोरों पर किया जाता है, जिसके माध्यम से उन्हें समाज की वर्तमान चुनौतियों एवं अवसरों के तलाश हेतु परिपक्व बनाने का प्रयास किया जाता है। वर्तमान समय में इस प्रकार की शिक्षा का महत्व मुख्य रूप से सामने आया है, जिसके माध्यम से स्वास्थ्य और सामाजिक मुद्दों के संबंध मेंलोगों को तैयार किया जा रहा है। अलग-अलग लोगों द्वारा इसके नामों को बदल-बदल कर उपयोग में लाया जाता है, जैसे- कुछ लोग इसे ''जीवन कौशल'' 'जीवन कौशल आधारित शिक्षा', ''कौशल आधारित स्वास्थ्य शिक्षा'' अथवा ''स्वास्थ्य और परिवार जीवन शिक्षा''के नाम से जानते हैं। किंतु इन समस्त क्रियाविधियों में केंद्र बिंदू युवा लोग मुख्य रूप से लड़कियाँ और युवा महिलाएँ ही होती है जो कि समाज के क्षेत्र में कार्य करने हेतु नियमित रूप से जोखिम उठाती हैं। जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से इस प्रकार की चुनौतियों एवं जोखिमों से निपटा जा सकता है। भारत में ही नहीं अपितु संपूर्ण विश्वमें इस प्रकार की शिक्षा का महत्व दिनों- दिन बढ़ता जा रहा है, जिसके माध्यम से युवाओं के क्षेत्र में आने वाली समस्याओं से निपटा जा सकता है।

3.2 जीवन कौशल शिक्षा की समझ

वास्तव में जीवन कौशल एक ऐसा तरीका है जिसके माध्यम से समस्या समाधान करने का प्रयास किया जाता है। इस प्रकार के प्रयास से व्यक्ति व्यवहार को नियंत्रित करके उसे समाज के लिए उपयुक्त और कर्तव्यनिष्ठ बनाया जा सकता है। जीवन कौशलों के प्रशिक्षण हेतु मुख्य रूप से कार्ययोग्य, घटकों तथा समूह सदस्यों को पढाना इत्यादि शामिल किया जाता है। जीवन कौशल के माध्यम से विशेषकर व्यक्ति (स्वयं), परिवार, कार्य/विद्यालय, अवकाश के समय, और समुदाय के साथ मिलकर कार्य कर सकता है और इनके विकास हेतु आवश्यक प्रयास करता है। इस प्रकार से कहा जा सकता है कि जीवन कौशल शिक्षा के अंतर्गत विभिन्न विषयों की व्यापक परिधियों को समाहित कर इसे समूह विकास प्रयोग में लाया जा सकता है।

यूनिसेफ (UNICEF) के अनुसार - जीवन कौशल आधारित शिक्षा एक व्यवहार परिवर्तन है अथवा व्यवहार विकास दृष्टिकोण है जिसकी अभिकल्पना तीन क्षेत्र- ज्ञान, अभिवृति और कौशलों को संतुलित करने के लिए की गई है।

जीवन कौशल शब्द के अर्थ से स्पष्ट होता है कि यह मनो-सामाजिक तथा अंतर्वैयक्तिक कौशलों के व्यापक समूह के अर्थ को प्रकट करता है जो व्यक्तियों को निर्णय लेने की क्षमता एवं उन्हें प्रभावकारी बनाने हेतु उपयोग में लाया जाता है, जिससे व्यक्ति को अच्छा स्वास्थ्य और सफल जीवन प्राप्त हो सके।

3.3 जीवन कौशल शिक्षा समूह

जीवन कौशल शिक्षा समूह शिक्षा कार्यक्रम एवं अन्य सदस्यों की भागीदारी के साथ क्रियान्वित किया जाता है। जो एक कुशल प्रशिक्षित समूह कार्यकर्त्ता के नेतृत्व के माध्यम से संचालित किया जाता है। कार्यकर्ता का प्रयास होता है कि वह विभिन्न समूहों जैसे पेशेवर युवा समूह स्वास्थ्य समूह , व्यावसायिक विकास समूह इत्यादि के साथ मिलकर कार्य करे जिससे अपेक्षाएं इस प्रकार के समूहों के मध्य स्व-जागरूकता को उत्पन्न कर सके। कार्यकता द्वारा निम्न प्रकार की अपेक्षाएं समूह सदस्यों से की जाती हैं।

- समूह सदस्य स्वयं समस्या समाधान हेतु सक्षम बन सकें।
- समूह सदस्यों के आत्म-विश्वास में बढ़ोतरी हों।
- समाज के साथ उचित प्रकार का समायोजन स्थापित कर पाएं।

3.4 जीवन कौशल शिक्षा में समूह कार्यकर्ता की भूमिका

समूह कार्यकर्ता की भूमिका को हमने विभिन्न इकाईयों के माध्यम से समझने का प्रयास किया है । समूह कार्य समूह सदस्यों के साथ मिलकर अनेक कार्यक्रमों को आयोजित करता है, जिससे समूह अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सके। समूह कार्यकर्ता का गुण होता है कि वह कई प्रकार के ज्ञान, कौशल , दक्षताओं एवं निपुणताओं से परिपूर्ण होता हैं । वह प्रत्येक स्तर को जानता है कि समूह सदस्यों से कैसे व्यवहार किया जाएं। कार्यकर्ता का यह प्रयास होता है कि वह समूह सदस्यों की केवल सहायता नहीं करता वरन् उनकी आवश्क्ताओं को समझकर उन्हें पूर्ण करने हेतु प्रेरित भी करता है। एक समूह कार्यकर्ता जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम में समूह सदस्योंके साथ निम्न प्रकार की भूमिका को अदा करता है:

- वह समूह के शिक्षात्मक एवं स्वास्थ्य विकास हेतु पूर्ण ईमानदारी के साथ कार्य करता है और यह विचार करता है कैसे समूह सदस्यों की आवश्यकताओं को पूर्ण किया जाए
- कार्यकर्ता समूह के विभिन्न क्षेत्रों में अधिक उत्पादकता के लिए बल देता है।

- कार्यकर्ता समूह के प्रत्येक सदस्य का मनोबल हमेशा उच्च स्तर का बनाए रखता है। वह कभी भी यह महसूस नहीं होने देता कि समूह सदस्य अकेला है । वह प्रत्येक संघर्ष की स्थिति में सदस्य के साथ रहता है।
- कार्यकर्ता प्रत्येक समूह सदस्यों के विचारों एवं अनुभवों को महत्व देते हुए उन्हें प्रक्रिया में शामिल करता है।
- कार्यकर्ता का यह प्रयास होता है कि वह सदस्य को स्वयं ही समस्या समाधान करने हेतु विभिन्न कौशलों से परिपूर्ण बनाए ।
- कार्यकर्ता सदस्य समूह की बौद्धिक, शारीरिक तथा भावनात्मक आवश्यकताओं में संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

  इस प्रकार कार्यकर्ता द्वारा विभिन्न प्रकार की भूमिकाओं के माध्यम से व्यक्ति की जीवन कौशल शिक्षा संबंधी क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देता है।

3.5 जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम

संपूर्ण विश्व में, जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम के क्षेत्रों में बडी तीव्रता के साथ वृद्धि को देखा जा सकता हैं। भिन्न-भिन्न संस्कृतियों के माध्यम से जीवन कौशल की मांग को देखा जा सकता हैं।

अनेक भिन्नताओं को ध्यम में रखते हुए जीवन कौशल शिक्षा के विभिन्न तत्वों को सदस्यों की आवश्कतानुसार व्यापक और सामान्य बनाने का प्रयास किया गया हैं। अनेक विद्वानों ने जीवन कौशल शिक्षा को अपने शब्दों में समझाने का प्रयास किया हैं किंतु आज तक कोई सर्वमान्य परिभाषा विकसित नहीं कि जा सकी है। व्यक्ति की आवश्यकता एवं स्थानीय स्थितियों के अनुसार विभिन्न जीवन कौशलों का प्रयोग किया जाता है।

विश्व स्वास्थ्य संगठन(WHO) ने युवा वर्ग के लिए जीवन कौशलों का विशिष्टीकरण किया है तथा इस विषय को ध्यान में रखते हुए जीवन कौशलों के क्षेत्र में कार्य करने वाले शिक्षकों और व्यावसायिकों हेतु महत्वपूर्ण कुछ मार्ग दर्शन उपलब्ध कराएँ हैं।

WHO द्वारा जीवन कौशल शिक्षा हेतू विशेष रूप से बल प्रदान किया जाता हैं। सर्वप्रथम वर्ष 1977 में WHO द्वारा जीवन कौशल क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों को उठाया गया और इसको बेहतर बनाने हेतु अनेक प्रकार के शोध किए गए। ‘‘जीवन कौशल जीवित कौशल अथवा अनुकूलता और सकारात्मक व्यवहार के लिए योग्यताएँ व सक्षमताएँ हैं जो व्यक्ति को दैनिक जीवन की आवश्यकताओं तथा चुनौतियों से निपटने के लिए सक्षम व प्रभावी रूप से तैयार करती है, उसे योग्य बनाती हैं।’

WHO ने 1977 में मुख्य रूप से निम्न कौशलों को बताया है, जिनके आधार पर उसने कहा कि इनकी सहायता से समाज में परिवर्तन किया जा सकता है।

- **आलोचनात्मक विचारधारा :** आलोचनात्मक विचारधारा के माध्यम सूचना को विश्लेषित करने का प्रयास किया जाता हैं एवं उद्देश्यपूर्ण तरीके में अनुभव प्राप्तकिए जाते हैं।
- **रचनात्मक विचारधारा :** इस विचारधारा के माध्यम से ऐसी योग्यता का विकास किया जाता है जिससे कि व्यक्ति स्वयं ही प्रत्यक्ष अनुभव से आगे देखने की क्षमता प्राप्त करता हैं। यह व्यक्ति के जीवन में नवीनता और लचीलापन लाती है।
- **निर्णय-लेना:** अनेक प्रभावकारी कार्यों को करने के पश्चात उपलब्ध विकल्पों में से उपयुक्त विकल्प की पहचान कर उपयोग करने का प्रयास किया जाता है जिससे प्रभावकारी निर्णय लिए जा सकते हैं।

- **समस्या समाधान करना :** निर्णय लेने की प्रक्रिया के पश्चात उपयुक्त विकल्प की खोज कर समस्या समाधान का प्रयास किया जाता है जिससे सकारात्मक परिणाम प्राप्त किए जा सकें।
- **अन्तवैयक्तिक संबंध:** अंतवैयक्तिक संबंध के माध्यम से दूसरे लोगों के साथ हमारे संबंधों को समझने का प्रयास किया जाता है। यह सिखाया जाता है की हैं कि दूसरे व्यक्तियों के साथ किस प्रकार का व्यवहार किया जाए। यह मित्रों या परिवार के सदस्यों से संबंधों को बनाए रखने में सहायता करता है और हमें सकारात्मक संबंध स्थापित करने के योग्य भी बनाता है।
- **प्रभावकारी संचार (संप्रेषण)** : इस कौशल के माध्यम से प्रक्रिया में उपयुक्त तरीके से संचार करना शामिल होता हैं। इसमें मौखिक तथा गैर-मौखिक दोनों ही माध्यमों से व्यक्ति में अपनी बातें रखने की योग्यता का विकास किया जाता हैं जिससे व्यक्ति में व्याप्त भय, कुंठा को दूर किया जा सके।
- **मनोभावों के साथ साझेदारी करना :** इस योग्यता के माध्यम से दूसरे व्यक्ति के मनोभावों को समझने का प्रयास किया जाता है।
- **तनाव की स्थिति से निपटना :** प्रत्येक व्यक्ति के जीवन में किसी-न-किसी प्रकार कष्ट या तनाव होता है जिससे उसका समस्त सांसारिक जीवन प्रभावित होता है । इस योग्यता के माध्यम से व्यक्ति की आवश्यकता एवं समस्या को जानकर प्रभावी रूप से हल करने का प्रयास किया जाता हैं।
- **स्व-जागरूकता :** इस प्रक्रिया में व्यक्ति स्वयं की पहचान करता है। वह अपनी ताकतों एवं कमज़ोरियों से अवगत होता है और आवश्यकतानुसार परिवर्तन कर स्वयं में जागरूकता लाने का प्रयास करता है।
- **तदानुभूति:** तदानुभूति की विधा से व्यक्ति दूसरोंको महसूस करने का प्रयास करता है। वह इस विधा के माध्यम से अन्य व्यक्ति की जीवन शैली को जानने का प्रयास करता है ।

अत: उपयुर्क्त तथ्यों के आधार पर कहा जा सकता है कि जीवन कौशल एक व्यापक विषय है, जिसके आधार पर विभिन्न विषयों और विभिन्न क्षेत्रों को शामिल किया जाता हैं। इसका अंतिम लक्ष्यस्व-जानकारी, आत्म प्रतिष्ठा तथा अन्य को स्वीकार करने की प्रवृत्ति है।

जीवन कौशल का भारतीय परिदृश्य

जीवन कौशल के क्षेत्र में स्कूल सामाजिक कार्यकर्ता को प्रोत्साहित करने का प्रयास किया जा रहा है। जिनका उद्देश्य अनेक संघों और पत्रिकाओं का निर्माण कर राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इसके महत्व से अवगत होना हैं। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा और शैक्षणिक और गैर- शैक्षणिक बाधाओं कोदूर कर एकजुट लाने का प्रयास किया जाता है ।

ग्रामीण भारतीय विद्यालयों के विधार्थियों के लिए जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रम को निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता हैं:

- समाज के संबंध में शिक्षा ग्रहण करना
- परिवार पर ध्यान केंद्रित करना
- प्रजनन स्वास्थ्य और संबंधित सूचना
- पर्यावरण
- तत्कालीन प्रवृतियाँ-सामाजिक और आर्थिक वास्तविकताओं में परिवर्तन
- अन्य से संबंधित

- स्व या आत्मविकास

3.6 जीवन कौशल के अध्ययन की तकनीकें

उर्पयुक्त तथ्यों से स्पष्ट होता है कि जीवन कौशल विभिन्न पक्षों एवं पहलुओं में कार्य करता हैं जैसे- व्यक्ति के अंतर्वैयक्तिक संबंध के पक्ष में एक व्यक्ति के अधिकारों और उसकी ज़िम्मेदारियों को समझने के पक्ष में, व्यक्ति का अच्छा स्वास्थ्य बनाने के पक्ष में, मानसिक स्वास्थ्य के पक्ष में, एच आई वी/एड्स, एसटीडी की रोकथाम, जैसे- के पक्ष में, मादक द्रव्य दुरूपयोग की रोकथाम, व्यक्ति में आत्मविश्वास जागृत करने के पक्ष में, आत्महत्याओं की रोकथाम करने के पक्ष में साथ ही साथ जीवन कौशल के अंतर्गत शांति स्थापित करने में योगदान के प्रयास इत्यादि का अध्ययन शामिल किया जाता है।

इन कार्यक्रम को कार्यकर्ता निम्नलिखित तकनीकों एवं विभिन्न प्रणालियों के माध्यम से कार्य करता है

- कार्यकर्ता द्वारा सदस्यों को अनेक प्रकार के कठोर प्रशिक्षण प्रदान कराए जाते हैं।
- कार्यकर्ता छोटे-छोटे समूहों के साथ कार्य करना प्रारंभ करता है।
- विचारों में उथल-पुथल लाकर कार्य को अंजाम देता है।
- कार्यकर्ता द्वारा नुक्कड- नाटक तकनीक का प्रयोग विभिन्न कार्यों में किया जाता है।
- प्रयोग मूलक शिक्षा तकनीक का प्रयोग किया जाता है।
- खेल-कूद एवं विचार विमर्श जैसी तकनीकों का प्रयोग किया जाता है।
- संप्रेषण की तकनीक का उपयोग किया जाता है।
- आक्रोश और निवेदन के बीच संतुलन बनाने की क्षमता एवं तकनीक का उपयोग किया जाता है
- न्याय संगत निर्णय लेने की तकनीक का विकास किया जाता है।

  अत: इस प्रकार जीवन कौशल के क्षेत्र में विभिन्न तकनीकों का उपयोग कर व्यक्ति को सशक्त बनाने का प्रयास किया जाता है। जीवन कौशल शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य ही समूह सदस्यों में उन अभिवृत्तियों को विकसित करना है जिनसे वे उनके जीवन में आने वाली चुनौतियाँ का डटकर सामना करने योग्य बन जाए। इन आधारों पर कहा जा सकता है कि जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से समूह सदस्यों में स्वस्थ सामाजिक संबंधों को बढ़ाने, सकारात्मक कार्यों में भाग लेने तथा सदस्यों में आत्मविश्वास पैदा करने की योग्यता का विकास किया जाता है।

3.7 सामाजिक समूह कार्य और शिक्षा

सामाजिक समूह कार्य में शिक्षा के माध्यम से अनेक क्रियाविधियों को कराया जाता हैं । समूह कार्य में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य है– सामूहिक एकता। यह एक ऐसी भावना है जिसके आधार पर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आसानी से किया जा सकता है। इसलिए शैक्षिक संस्थाओं में सभी विद्यार्थियों को एक समूह में शिक्षा प्रदान की जाती है। किसी भी समूह में किसी कार्य को करने से समूह के सारे सदस्यों के विचारों का आदान प्रदान होता है और उन सभी में सोचने-समझने की क्षमता में वृद्धि होती है। वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में मूलतः ध्यान विद्यार्थियों को हर क्षेत्र से संबंधित जानकारी उपलब्ध कराने में दिया जाता है। जिससे विद्यार्थी व्यापक शिक्षा प्राप्त कर सके। इस तरह की शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी का पूर्ण विकास हो सके, वह पूरी तरह से संतुलित रहे, सामाजिक भूमिका का निर्वाह कर सके, मानवीय संबंधों को समझ सके और उसका निर्वाह कर सके। मानव

के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों हेतु इस प्रकार के क्रियाकलापों का विकसित होना अत्यंत आवश्यक है।

वर्तमान समय में अनेक ऐसे कारक समाज में विद्यमान है जिसके माध्यम से किसी-न-किसी रूप में प्रत्येक समाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है इनमें प्रमुख रूप से बच्चे/बच्ची भी शामिल हो गए हैं। ऐसी स्थिति में स्कूल समाज कार्यकर्ता द्वारा विद्यार्थियों को समाज में समायोजन करना सिखाया जाता है। स्कूल सामाजिक कार्य द्वारा व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के माध्यम से यह समाज कार्य का एक व्यापक क्षेत्र प्रस्तुत करता है। निम्नलिखित उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समूह कार्य शिक्षा के महत्व को समझा जा सकता है-

- समूह कार्य शिक्षा के माध्यम से स्कूल प्रणाली और विधार्थी सेवाओं के लिए अद्वितीय ज्ञान और कौशल लाने का प्रयास किया जाता है।
- सामाजिक समूह कार्य में शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों को, जो मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं, व्यवहार चिंताओं, सकारात्मक व्यवहार समर्थन, शैक्षणिक और कक्षा समर्थन, शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासकों के साथ परामर्श के साथ सहायता कर सकते हैं और साथ ही व्यक्तिगत और समूह परामर्श/चिकित्सा, उपलब्ध कराने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।
- सामाजिक समूह कार्य शिक्षा में स्कूली शिक्षण के माध्यम से शिक्षा के लिए एक रूपरेखा तैयार करता है,जिसने मिशन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईहै।

स्कूल में समूह कार्य शिक्षा के प्रयोग करने से विभिन्न लाभ प्राप्त होते हैं -

1. विद्यार्थी अपना काफ़ी समय इस प्रकार समूह में बिताता है, जिससे उन्हें कार्य करने में आसानी होती है।
2. विद्यार्थी कार्य क्षेत्र के वातावरण से परिचित हो जाता है।
3. समूह में कार्य करने से परिणाम स्वरूप यह निश्चित माना जाता है कि शिक्षक और विद्यार्थी के बीच संबंधमें काफ़ी सुधार आता है।

3.8 सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता

सामाजिक समूह कार्य एक ऐसी प्रणाली हैं जिसके माध्यम से समूह सदस्योंकी आवश्यकतानुसार उनकी समस्या समाधान का प्रयास सामूहिक रूप से किया जाता हैं। उपर्युक्तअध्ययन से भी स्पष्ट होता है कि समूह कार्यों और जीवन कौशलों दोनों तकनीकों का मुख्य लक्ष्य अपने सदस्यों के सामाजिक कार्यों में वृद्धि करना है, ताकि सदस्य स्वयं अपनी समस्या समाधान हेतु सक्षम बन जाएं। कर्ले आड्म के अनुसार सामूहिक कार्य के एक पक्ष के रूप में, सामूहिक सेवा कार्य का उद्देश्य, समूह के अपने सदस्यों के व्यक्तित्व परिधि का विस्तार करना और उनके मानवीय संपर्कों को बढ़ाना है। यह एक ऐसी प्रणाली है जिसके माध्यम से व्यक्ति के अंदर ऐसी क्षमताओं का विकास किया जाता है, जो उसके अन्य व्यक्तियों के साथ संपर्क बढ़ाने की ओर निर्देशित होती है। ट्रैकर ने बताया की सामाजिक सामूहिक कार्य एक प्रणाली है जिसके द्वारा व्यक्तियों की सामाजिक संस्थाओं के अंतर्गत समूहों में एक कार्यकर्ता द्वारा सहायता की जाती है। यह कार्यकर्ता कार्यक्रम संबंधी क्रियाओं में व्यक्तियों की परस्पर प्रक्रिया का मार्ग दर्शन करता है, जिससे वे एक-दूसरे से संबंध स्थापित कर सके और वैयक्तिक,सामूहिक एवं सामुदायिक विकास की दृष्टि से अपनी आवश्यकताओं एवं क्षमताओं के अनुसार विकास के सुअवसरों का अनुभव कर सकें। कोनोप्का ने बताया की सामाजिक समूह कार्य समाजकार्य की एक प्रणाली है जो व्यक्तियों की सामाजिक कार्यात्मकता बढ़ाने में सहायता प्रदान करती है। उद्देश्यपूर्ण सामूहिक अनुभव द्वारा व्यक्तिगत, सामूहिक और सामुदायिक समस्याओं को प्रभावकारी ढ़ंग से सुलझानेमे सहायता प्रदान करती है।

स्पष्ट हो जाता है कि यह केवल शिक्षात्मक कार्य ही नहीं करती बल्कि इसके द्वारा सेवा प्रदान की जाती है। यह कार्य स्वैच्छिक एवं सार्वजनिक संगठनों दोनों के माध्यम से किया जाता है।

समूह कार्य प्रणाली के माध्यम से समूह सदस्यों में नेतृत्व का विकास भी किया जाता हैं। जिससे समूह सदस्य विभिन्न गतिविधियों को आयोजित करता हैं। यदि हम समूह कार्य के इतिहास पर नज़र डालते हैं तो प्रतीत होता है कि समूह कार्य का प्रारंभ विभिन्नमनोरंजनात्मक गतिविधयों से हुआ, लेकिन आज वर्तमान में इसका क्षेत्र अत्यंत व्यापक हो गया हैं और यह विभिन्न संस्थाओं के विभिन्नप्रकारों अस्पतालों, विद्यालयों में पढ़ाई के अतिरिक्त अन्य गतिविधियों में लगातार बढ़ रहा है। इस प्रकार के नेतृत्व का मार्गदर्शन उद्देश्य एक लोकतांत्रिक समाज है, जिसमें हम प्रत्येक व्यक्ति को अपनी स्वतंत्रता के साथ उसकी क्षमताओं का उपयोग करने के लिए अवसर प्रदान करते हैं, इस प्रकार जीवन कौशल शिक्षा समूह कार्य का एक महत्वपूर्ण पक्ष है। जीवन कौशल शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति का संपूर्ण विकास किया जाता हैं।वर्तमान समय में विद्यालय समाज कार्य शिक्षा एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य समझा जाने लगा है । विद्यालय समाज कार्य के माध्यम से छात्र-छात्राओं में व्यक्तित्व विकास जैसे पक्षों पर विशेष बल दिया जा रहा है। साथ ही साथ जो विद्यार्थी किसी अन्य समस्या से ग्रस्त रहता है समूह कार्यकर्ता के माध्यम से, शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ मिलकर इसे हल करने का प्रयास किया जाता है। आज के समय में विद्यार्थियों का सामंजस्य भी एक प्रमुख समस्या बनकर सामने आ रही है। विद्यार्थी कक्षा में, सहपाठियों के साथ एवं और तो और अपने परिवार में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है जिससे वह गलत रास्तों को ग्रहण कर लेता है, जिससे अनेक बाल-अपराध जैसी समस्याएँ दिनों-दिन बढती जा रही है। समूह कार्यकर्ता ऐसे बच्चों के सामंजस्य हेतु अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों को इस प्रकार से आयोजित करता है कि समूह गतिविधियों के माध्यम से समूह लक्ष्य तथा इसी तरह से व्यक्तिगत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक साथ मिलकर कार्य करें। समूह कार्य एवं जीवन कौशल शिक्षा का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं को अपने स्वयं के कार्यो से सीखना है। इन समस्त कार्यों हेतु समूह कार्यकर्ता विद्यालयी कार्य के माध्यम से उन्हें समाजमें सामंजस्य स्थापित करने हेतु सहायता करता है ।

3.9 सारांश

सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसके माध्यम से व्यक्ति की सहायता समूह के रूप में प्रदान की जाती हैं। जीवन कौशल विधा के माध्यम से सदस्यों को आत्म-प्रतिष्ठा, सामजिकता और धैर्य रखकर कार्य करने की योग्यताएं का विकास किया जाता हैं। इस प्रकार से जब हम किसी भी कार्य को करना प्रारंभ कर देते हैं तो हम उस कार्य को संपन्न कर समाज में कुछ परिवर्तन लाना प्रारंभ कर देते हैं, जिससे व्यक्ति की दक्षता एवं क्षमता में विकास होता हैं। अत: जीवन कौशल शारीरिक और ज्ञानात्मक स्वचालित कौशलों से अलग होकर कार्य करता है।

3.10 बोध प्रश्न

1. जीवन कौशल में शिक्षा की समझ से क्या तात्पर्य हैं?
2. जीवन कौशल शिक्षा समूह को समझाइए।
3. जीवन कौशल शिक्षा में समूह कार्यकर्ता की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
4. जीवन कौशल शिक्षा कार्यक्रमों को स्पष्ट कीजिए।
5. जीवन कौशल के अध्ययन की विभिन्न तकनीकों का वर्णन कीजिए।
6. सामाजिक समूह कार्य में जीवन कौशल शिक्षा की प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए।

3.11 संदर्भ एवं उपयोगी पुस्तकें

- डॉगलास, टी (1976) .*ग्रुप वर्क प्रैक्टिस*. न्यूयॉर्क : इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी प्रेस।
- कोनप्का, जी (1963) .*सोशल ग्रुप वर्क ए हेल्पिंग प्रोसेस*. न्यूयॉर्क : इंग्लेवुड क्लीफ्स, प्रिंटिस हाल।
- ट्रेकर, एच.बी. (1955). *सोशल ग्रुप वर्क प्रिंसिप्ल्स एंड प्रैक्टिस*. न्यूयॉर्क : व्हाइट साइड।
- मिश्रा, प्रयागदीन (2015). *सामाजिक समूह कार्य*.लखनऊ : हिंदी संस्थान।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विशवविद्यालय (2009).*सामाजिक समूह कार्य, समूहों के साथ कार्य करना*.दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ।

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई 4 सामाजिक समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 कार्यक्रम का अर्थ एवं प्रक्रिया
4.3 कार्यक्रम की प्रकृति तथा उद्देश्य
4.4 कार्यक्रम के आवश्यक तत्व
4.5 कार्यक्रम नियोजन के सिद्धांत
4.6 कार्यक्रम माध्यमों का उपयोग एवं महत्व
4.7 कार्यक्रम नियोजन
4.8 सारांश
4.9 बोध प्रश्न
4.10 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन पश्चात आप -

- समाज समूह कार्य में कार्यक्रम के महत्व से अवगत हो सकेंगे।
- समूह कार्य में कार्यक्रम नियोजन के अर्थ एवं कार्यकता की भूमिका को रेखांकित कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम एवं कार्यक्रम नियोजन एक महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है, जिसके माध्यम से सदस्य-सदस्य और कार्यकर्ताओं के मध्य आपसी समन्वय, नेतृत्त्व की भावना, सामूहिकता की भावना आदि का विकास होता है। यह गतिविधि सदस्यों की क्षमताओं और उनकी योग्यताओं पर निर्भरकरती है। यह कला और शिल्प से लेकर संगीत, नृत्य, सामाजिक घटनाएँ तथा पिकनिक व भ्रमण तक हो सकता है। इस प्रक्रिया में समूह के अंदर कार्यक्रम के प्रति रुचि जागृत होने की संभावना रहती है। हो सकता है प्रारंभ में समूह सदस्य इस प्रक्रिया में अत्यधिक उत्सुकता ना दिखाएँ पर जैसे-जैसे यह गतिविधि क्रियान्वित होती है सदस्यों की संख्या में भी वृद्धि होती जाती है। कार्यक्रम का विकास सरल से जटिलता की तरफ होना चाहिए, जिसमें गति के साथ योग्यता और तत्परता के रूप में समूह की प्रगति में परिणाम नजर आना चाहिए। समूह कार्यकर्ता में एक प्रभावी कार्यक्रम नियोजन के माध्यम से सदस्यों के मार्गदर्शन की योग्यता और कौशल होना चाहिए।

4.2 कार्यक्रम का अर्थ एवं प्रक्रिया

समूह कार्य में कार्यक्रम एक महत्वपूर्ण विधा के रूप में जाना जाता है, जिसके माध्यम से समूह गतिविधियों को आयोजित कर क्रियान्वित करने का प्रयास किया जाता है। कार्यक्रम को अनेक अर्थों में परिभाषित किया जा सकता है। वास्तव में कार्यक्रम स्वयं एक प्रक्रिया है, जिसका उद्देश्य समूह की क्रियाओं और गतिविधियों को इस प्रकार से नियोजित करके संपन्न करना है, जिससे समूह एवं समूह के सदस्यों को अधिकतम लाभ प्राप्त हो सके और समूह अपने लक्ष्य की प्राप्ति कर सके। कार्यक्रम की विषय वस्तु में जीवन के सामान्य अनुभवों का निरूपण

किया जाता है। जो प्रत्येक व्यक्ति के विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होता है। उदाहरण के रूप में देखा जा सकता है कि किस प्रकार से सामूहिक कार्य के कार्यक्रम की विषयवस्तु में मुख्य रूप से मनोरंजन से संबंधित क्रियाओं को संपन्न कराया जाता है । यह एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है, क्योंकि मानव अपने खाली समय का उपयोग अपने स्वयं के सामाजिक महत्व के लिए करता है।

ट्रेकर के अनुसार "साधारण भाषा में समूह समाज कार्य के अंतर्गत कार्यक्रम का अर्थ कोई वस्तुतथा प्रत्येक वस्तु हो गया है जो समूह अपनी अभिरूचियों की संतुष्टि के लिए करता है।'

क्लीन ने कार्यक्रम को परिभाषित करते हुए कहा कि "इसके अंतर्गत वह सब आता है जिसे समूह के सदस्य करते हैं। कार्यक्रम के अंतर्गत शिल्प, अभिनय –नाटक तथा खेल –कूद आदि को सम्मिलित किया जाता हैं।"

मिडलमैन ने कार्यक्रम के संदर्भ में कहा कि "कार्यक्रम शब्द उन क्रियाओं में प्रयोग किया जाता है जो वार्तालाप के स्थान पर करने को अधिक महत्व देती है।"

अत: समस्त परिभाषाओं के आधार पर कहा जा सकता है कि "कार्यक्रम एक समूह द्वारा की जाने वाली वे गतिविधियाँ हैं जो समूह की व्यक्तिगत अभिरुचियों एवं क्षमताओं पर आधारित तथा निर्धारित होती हैं जिनके द्वारा समूह में समूह की भावना का विकास होता है और समूह अपनीसमस्याओं का समाधान खोजता है।'

कार्यक्रम के माध्यम से सदस्यों में 'समूह भावना'(टीम भावना) के विकास पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाता है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में कार्यकर्ता का यह दायित्वहोता है कि वह समूह सदस्यों की रुचियों एवं क्षमताओं के अनुसार कार्यक्रमों का निर्माण करें एवं सदस्यों को विभिन्न भूमिकाओं के निर्वहन का अवसर प्रदान करे।

सामूहिक कार्य में कार्यक्रम एक प्रक्रिया के रूप में :

ट्रैकर ने सामाजिक समूह कार्य में कार्यक्रम के महत्व को स्पष्ट करते हुए निम्न प्रक्रिया के रूप में दर्शाया है:-

कार्यक्रम के माध्यम के रूप में नाटकों, मनोरंजन, संगीत, नृत्य, वाद-विवाद, वार्तालाप, खेलकूद, कला, शिल्प आदि कार्यक्रम को लिया जाता हैं। ये कार्यक्रम व्यक्तिकरण की प्रक्रिया के माध्यम से व्यक्तिकरण के विशिष्ट साधन होते हैं, जिनके द्वारा समूह किसी विशेष क्षेत्र में क्रियाएं संपन्न करता है। समूह कार्यकर्ता सर्वप्रथम कार्यक्रम को संचालित करने हेतु समूह को कार्यात्मक संगठन बनाने के लिए सहायता करता है। कार्यकर्ता का यह प्रयास होता है कि वह समूह सदस्यों को कार्यक्रम की विषय वस्तु एवं क्षेत्र से अवगत कराए साथ ही इसके पूर्व समूह सदस्यों की रूचियों से भी वह अवगत हो जाए । कार्यकर्ता समूह की सहायता इस प्रकार करता है कि समूह सदस्यों अपने संसाधनों की पहचान कर सकें, ताकि वह समूह की समस्या का निपटारा स्वयं ही कर सकें। ट्रेकर ने बताया कि कार्यकर्ता का संबंध मुख्यरूप से तीन बातों से होता है:

1. क्या कार्यक्रम है (अर्थात कार्यक्रम की विषयवस्तु)
2. कार्यक्रम किस प्रकार चलेगा, और
3. इस माध्यम से कार्यक्रम क्यों चलाया जायेगा।

इस प्रकार यह स्पष्ट होता है कि कार्यक्रम के तीन आवश्यक अंग है।

कार्यक्रम के प्रमुख अंग

कार्यक्रम की व्याख्या में कार्यक्रम के निम्नलिखित तीन अंगों का उल्लेख आवश्यक है -

1. विषयवस्तु एवं क्षेत्र

कार्यक्रम की विषय वस्तु से तात्पर्य है कि जो कार्यक्रम समूह द्वारा संचालित किया जा रहा हैं, उसमें किन-किन क्रियाओं एवं गतिविधयों का समावेश किया जारहा है एवं समूह क्या अनुभव प्राप्त कर रहा है और उसका

विकास किस दिशा में हो रहा है। कार्यक्रम की विषयवस्तु को मुख्य रूप से मनोरंजन, शिक्षा, मनोवैज्ञानिक सहायता, शारीरिक विकास इत्यादि के क्षेत्र में देखा जा सकता है।

2. माध्यम

माध्यम से तात्पर्य उन साधनों से है जिनका उपयोग समूह अपने अनुभव के लिए करता है। कार्यकर्ता द्वारा क्षेत्र एवं विषय-वस्तु के चयन करने के पश्चात कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए एक माध्यम निर्धारित करता है ।कार्यकर्ता द्वारा आवश्यक साधनों का उपयोग कर समूह की विभिन्न क्रियाओं को आयोजित करने का प्रयास करता हैं। कार्यकर्ता द्वारा समूह कार्य करते समय मुख्य रूप से निम्न माध्यमों को लिया जाता हैं, जैसे- नाच, गाना, कहानी, ड्रामा, खेल, कला आदि । समूह सदस्यों को इन कार्यक्रमों के माध्यम से केवल रचनात्मक सहयोग प्राप्त नहीं होता वरन समूह की आवश्यकताओं को समझने में भी सहायता मिलती है।जैसे यदि किसी नाटक के माध्यम से स्वास्थ्य की समस्याओं को दूर करने हेतु उसके उपायों के बारेमें बताया जा रहा है तो समूह के सदस्यों में केवल स्वास्थ्य के विषय में जानकारी प्राप्त नहीं होती, बल्कि सदस्यों को सामुदायिक स्वास्थ्य स्तर की भी जानकारी प्राप्त हो जाती है।

3. कार्यक्रम के सम्पादन की प्रणाली / पद्धति

कार्यक्रम के संपादन प्रणाली अथवा पद्धति से तात्पर्य समूह की संपूर्ण प्रक्रिया से है। कार्यकर्ता का सर्वप्रथम दायित्व होता है कि वह सदस्यों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं की पहचान करसमूह को कार्यात्मक संगठन के रूप में संगठित करे, जिससे समूह अपने निर्णय लेने हेतु स्वयंसक्षम बन सके । इस प्रक्रिया में वह कार्यक्रम की विषय- वस्तु एवं माध्यमों को निर्धारित कर कार्यक्रम को संचालित करने का प्रयास करता है और आवश्यक निदान करने का प्रयास करता हैं। साथ ही साथ अंत में उपचार की प्रक्रिया एवं समापन प्रक्रिया को संपादित करता है।

4.3 कार्यक्रम की प्रकृति तथा उद्देश्य

किसी भी कार्यक्रम की सफलता का प्रभाव सदस्यों के व्यवहार मूल्यांकन द्वारा ज्ञात होता है। कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति के जीवन के सामान्य अनुभवों का निरूपण किया जाता है, जो व्यक्ति विशेष के लिए विकास की दृष्टि से अर्थपूर्ण होते हैं। समाज कार्य की समूह कार्य प्रणाली मुख्य रूप से मनोरंजन पर आधारित कार्यों को क्रियान्वित करती है। इस प्रकार के मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों के माध्यम से सभी सदस्यों की सहभागिता पर ज़ोर दिया जाता है, जिससे कि समूह सदस्योंमें हम की भावना का भी विकास किया जा सके। साथ ही साथ व्यक्ति अपने खाली समय में सामूहिक कार्यक्रमों में भाग लेता है और नए प्रयोगों के माध्यम से कुछ नया सीखने का प्रयास करता है। वह समाज के प्रति अपनी जवाबदारी एवं उत्तरदायित्व का भी विकास करता है।

समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम की सफलता एवं असफलता कार्यकर्ता की दक्षता एवं निपुणता पर अत्यधिक निर्भर करती है। कार्यकर्ता द्वारा अपनी कुशलता एवं निपुणता के आधार पर ही कार्यक्रमों का निर्माण किया जाता है। और यह कार्यक्रम कार्यकर्ता अपने व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर आयोजित करने का प्रयास करता है जो कि व्यक्ति के विकास हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण होते हैं। कार्यकर्ता द्वारा निम्नउद्देश्यों को ध्यान में रखकर कार्यक्रम को क्रियान्वयन किया जाता है:

- समूहसदस्यों में हम की भावना का विकास करने हेतु।
- समूहसदस्यों में अपने-अपने उत्तरदायित्व निभाने की योग्यता का विकास करने हेतु।

- व्यक्ति के व्यक्तित्व विकास हेतु।
- प्रत्येक समूह सदस्य की सहभागिता निर्धारित एवं सुनिश्चित करने हेतु
- प्रत्येक समूह सदस्य को अपने व्यक्तिगत जीवन के सामान्य अनुभवों से सीख लेते हेतु प्रेरित करना, एवं
- समाज के प्रत्येक सदस्य की जानकारी के स्तर में वृद्धि करना।

4.4 कार्यक्रम के आवश्यक तत्व

समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम के तीन आवश्यक तत्व को महत्वपूर्ण रूप से शामिल किया जाता हैं:

1. सदस्य
2. समूह कार्यकर्ता तथा
3. कार्यक्रम की विषय-वस्तु

1. सदस्य

समूह कार्य प्रक्रिया में किसी भी कार्यक्रम की विषय-वस्तु लगभग समान होती है। लेकिन कई बार सदस्यों की आवश्यकता , संस्कृति , परंपरा रीति- रिवाज आदि भिन्नताओं के कारण इनमें आवश्यकतानुसार परिवर्तत भी किया जाता है। कार्यक्रम की विषय –वस्तु को सामाजिक शक्तियाँ को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती है। इन्हीं प्रभाव के आधार पर समूह का आकार, संरचना एवं अन्य क्रियाएं, जिनके द्वारा वह उद्देश्य को प्राप्त करता है, निश्चित की जाती है। एक दूसरा पहलू भी इस ओर इंगित करता है कि जिनसमाजों में असुरक्षा, सामाजिक उथल-पुथल तथा संघर्ष बना रहता है, उनके समूहों की संरचना हमेशा ही स्थिर नहीं रह पाती है उनमें हमेशा परिवर्तन होता रहता है। इसी कारण संपूर्ण कार्यक्रम की विषयवस्तुका निर्धारण कुछ ही सदस्यों द्वारा किया जाता है। इन्ही सदस्यों के उपर संपूर्ण कार्यक्रम की सफलता एवं असफलता काउत्तरदायित्व होता है एवं यही समूह के भविष्य को भी निर्भारित करता हैं।

2. समूह कार्यकर्ता

कार्यकर्ता प्रत्येक समूह की प्रत्येक अवस्था में समूह सदस्यों की सहायता करता है एवं सामूहिक लक्ष्य प्राप्ति हेतु सदस्यों को प्रेरित करता है। कार्यकर्ता सामूहिक कार्य-प्रणाली द्वारा समूह-सदस्यों के विकास, उन्नति, शिक्षा एवं सांस्कृतिक प्रगति पर ज़ोर देता है। कार्यकर्ता प्रत्येक स्तर पर समूह को समझने का प्रयास करता है और समूह में उत्पन्न समस्या का निवारण प्रस्तुत करता है। कार्यकर्ता यह निर्धारित करता है कि किस प्रकार के समूह का निर्माण किया जा सकता है जैसे मनोरंजनात्मक, शिक्षात्मक, सामाजिक या मिश्रित। साथ ही वह समूह कार्य की कार्य-प्रणाली निर्धारित करता है जैसे- खेल-कूद, ड्रामा, वार्तालाप इत्यादि। कार्यकर्ता स्थान का चयन करता है, समय का निर्धारण करता है, समूह अवधि का निर्धारण करता है, संसाधन का निर्धारण करता है, माध्यमों का निर्धारण करता है, समूह का उद्देश्य निर्धारित करता है, सदस्यों का चयन निर्धारित करता है, संस्था अथवा समुदाय में स्रोतों का निर्धारण करता है। समूह कार्यक्रमों को नियोजित करने में भी कार्यकर्ता समूह के साथ मिलकर कार्यक्रमों को नियोजित करने में समूह सदस्यों की सहायता करता है। वह कार्यक्रम को अधिक प्रभावशाली एवं रचनात्मक बनाने में समूह की सहायता करता है, जिससे अधिक से अधिक समूह की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और इसके अतिरिक्त वह समूह को कार्यक्रम हेतु दिशा-निर्देश देता है। समूह की रूचियों की खोज करता है। अंत: क्रिया का निर्देशन करता हैं। कार्यकर्ता द्वारा मुख्य रूप से सदस्यों में नेतृत्व का विकास भी किया जाता है। वह

समूह के प्रत्येक सदस्य को कोई ज़िम्मेदारी वाला कार्य सौंपता है, जिससे समूह में एकता भी बनी रहे और किसी भी प्रकार उच्च-निम्न का भाव जागृत ना हो सके।

3.कार्यक्रम की विषय वस्तु

कार्यक्रम की विषय-वस्तु सदस्यों की आवश्यताओं एवं क्षमताओं के आधार पर निर्भर करती है। कार्यक्रम की विषय-वस्तु में सदस्यों की समान रूचियों का समावेश किया जाता है। प्रत्येक समूह का निर्माण समूह सदस्योंकी प्रेम-भावना के आधार पर तैयार किया जाता है। इस कारण से कार्यकर्ता एवं संस्था द्वारा सदस्यों की रुचियों के आधार पर कार्यक्रम की विषय-वस्तु का निर्धारण किया जाता है।

4.5 कार्यक्रम नियोजन के सिद्धांत

किसी भी कार्य को सुव्यवस्थित और सुनियोजित तरीके से क्रियान्वित करने हेतु कुछ आवश्यक सिद्धांतों का पालन करना अत्यंत आवश्यक होता है, जिनके आधार पर कार्य को आसानी से संपन्न किया जा सकता है। इन सिद्धांतों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है:

- किसी भी कार्यकम का उपयोग समूह चिकित्सा के रूप में किया जाना चाहिए। अर्थात इसका तात्पर्य है कि किसी भी कार्यक्रम का उद्देश्य लघुकालीन न होकर दीर्घकालीन और स्थायी प्रभावकारी होना चाहिए।
- समूह सदस्यों को निर्णय लेने का अधिकार होना चाहिए।
- कार्यक्रम इस प्रकार का हो जिससे समूह प्रक्रिया को परिवर्तित किया जा सके।
- सदस्यों की आवश्यकताओं, समस्याओं, क्षमताओं एवं अभिरुचियों के अनुसार कार्यक्रम का आयोजन होना चाहिए।
- प्रत्येक सदस्य में उत्तरदायित्व की भावना का विकास हो।
- समय-समय पर कार्यक्रम के प्रभाव का मूल्यांकन होना चाहिए।
- कार्यक्रम इस आधार पर हो जिससे कि समूह के लक्ष्य को आसानी से प्राप्त किया जा सके।

इन सिद्धांतों के आधार पर कहा जा सकता है कि कार्यक्रम नियोजन प्रक्रिया में:

- लक्ष्य स्थापित करना
- सदस्यों को उत्साहित करना
- लक्ष्यों की दिशा में कार्यक्रम नियोजन करना
- समूह का अनुमोदन प्राप्तकरना
- व्यक्ति और उपसमूह की जिम्मेदारी निर्धारित करना
- कार्यक्रम का कार्यन्वयन करना
- सर्वाधिक मूल्यांकन और आधार सामग्री उपलब्ध करना
- अनुवर्ती कार्यवाही करना सम्मिलित है।

एक कार्यक्रम रूपरेखा योजना :

आवश्यकता की पहचान	कार्यकलाप	अभ्यासबद्ध कौशल	सीखना/शिक्षण
एक दूसरे को सुनने में एक समूह की कठिनाई संकेतक • सदस्य को एक बिंदु बनाने में कठिनाई होती है • अन्य को समझने के लिए समय न देना ही असहमति का कारण है। • समूह चर्चा की सुविधा की कठिनाई	समूह खेल	उत्तर के लिए कहना और प्रतिक्षा करना अन्य व्यक्ति की अवाज को सुनना सुनने के कौशल की जागरूकता	मनोरंजन और लक्ष्य प्राप्त करने के लिए सुनना महत्वपूर्ण है।
	खेल को सुनना तथा समूह चर्चा	अभी तक कितने कौशलों का अभ्यास किया तथा उनको सीखा	कौन-से कौशल हैं जो मुझे अच्छा श्रोता बनाते है।
	समस्या समाधान के खेल जिसमें समूह एक दूसरे को सुनता है	कौशलों का अभ्यास करना कौशलों की स्थिति में अच्छा होने के लिए मान्यता देना	जब हम एक दूसरे को सुनते हैं समूह कार्य बहतर होता है।

उपर्युक्त रूपरेखा से प्रकट होता है कि किस प्रकार से विभिन्न कार्यकलाप सुनने के कौशलों को सीखने में समूह की सहायता कर सकते हैं। विभिन्न प्रकार के व्यावहारिक कौशलों को इस प्रकार से विकसित किया जा सकता है।

(इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विशवविद्यालय (2009).*सामाजिक समूह कार्य*.दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ Http:/www.cdysb.ie/publication/PDF/Programme%20 Planning.Pdf

ज्ञान शांति मैत्री

4.6 कार्यक्रम माध्यमों का उपयोग एवं महत्व

कार्यकर्ता को समूह की रचना, उद्देश्य तथा स्तर एवं क्षमताओं के आधार पर कार्यक्रमों को निर्धारित करना आवश्यक होता है। ये सभी कार्यक्रम क्रियाएं अर्थपूर्ण अंत क्रिया के लिए अवसर प्रदान करते हैं। मुख्य रूप से निम्न प्रकार के कार्यक्रमों का आयोजन संपूर्ण समूह कर्म प्रक्रिया में किया जाता है -

- खेल संबंधी कार्यक्रम - इसके संदर्भ में प्रौढ़ शिक्षा एवं विद्यालयी शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है जिसके अंतर्गत अंतर्गत खेल-कूद व शारीरिक क्रियाओं को भी शामिल किया गया, जिसमें कला संगीत, अभिनय, नृत्य आदि हैं।
- ड्रामा, नाटक, कठपुतली का नाच तथा भूमिका निर्वाह समूह सदस्यों को विभिन्न प्रकार की क्रियाओं को संपन्न करने के लिए उत्साहित किया जाता है जो उनकी कठिनाईयों तथा समस्याओं के लिए महत्वपूर्ण होती हैं।
- संगीत, कला तथा शिल्प के माध्यम से भी कार्यक्रमों को संचालित किया जाता है।

- वार्तालाप : वार्तालाप कार्यक्रम प्रक्रिया का प्रारंभ समूह के निर्माण के समय से ही हो जाता है। कार्यकर्ता द्वारा यह प्रयास किया जाता है कि किस प्रकार से समूह सदस्यों के बीच वार्तालाप प्रक्रिया को आगे बढाया जाए जिससे कि समूह सदस्य एक-दूसरे के बारें में सबकुछ जान सकें एवं आपसी प्रेम-भाव को जागृत किया जा सके। इन क्रियाओं में मुख्यरूप से भाषण, सेमिनार, विचार-विमर्श, संवेदनशील खेल आदि को सम्मिलित किया जाता हैं।
- व्यवहार परिवर्तन कार्यक्रम - युवकों के व्यवहार में परिवर्तन हेतु कई प्रकार के मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों तथा शिक्षात्मक कार्यक्रमों को शामिल किया जाता है, जिससे युवकों के चरित्र का निर्माण हो सके।
- उपचार के क्षेत्र में मनोरंजनात्मक कार्यक्रम - किसी भी बीमारी के क्षेत्र में व्यक्ति का वातावरण प्रमुख भूमिका निभाता है। अत: इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए उपचार के क्षेत्र में मनोरंजन कार्यक्रमों को भी शामिल किया जाता है। ये कार्यक्रम व्यक्ति को शारीरिक, मानसिक तथा सांवेगिक व्याधियों से मुक्ति दिलाने या प्रभाव को कम करने का प्रयास करते हैं। इन कार्यक्रमों के माध्यम से हृदय रोग, तनाव ग्रस्त बच्चे, मानसिक रोगी, बाल अपराधी आदि क्षेत्रों में मनोरंजन उपचार के साथ इसका प्रयोग किया जाता है।
- अन्य कार्यक्रम - समूह कार्य के क्षेत्र में ऐसे कई संगठन हैं, जिसके माध्यम से सामूहिक गतिविधियों को कराया जाता है। जैसे राजनीतिक पार्टियाँ, औद्योगिक संस्थाएँ, श्रमिक संघ इत्यादि। इन संगठनों का उद्देश्य मनोरंजनात्मक कार्यक्रमों द्वारा व्यक्तियों को अपनी रुचियों के अनुसार शिक्षा मनोवृत्ति तथा व्यवहार को नियंत्रित करने के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करना है। अतः इस प्रकार से समूह के कार्यक्रमों को देखा जा सकता है।

समूह के लिए कार्यक्रम का महत्व

किसी भी सामाजिक समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम का अत्यंत महत्वपूर्ण योगदान होता है, क्योंकि कार्यक्रम के माध्यम से ही संपूर्ण कार्य की प्रकृति निर्भर करती है और कार्य को व्यवस्थित रूप से संचालित किया जा सकता है। इस संपूर्ण प्रक्रिया में कार्यक्रम माध्यमों का ही विशेष प्रभाव होता है, जिसके माध्यम से ही समूह सदस्य मनोरंजनात्मक क्रियाओं को संचालित कर आनंद महसूस करते हैं इन कार्यक्रमों द्वारा ही संवेगों की अभिव्यक्ति होती है और शारीरिक एवं मानसिक विकास संभव होता है। इस प्रकार की अंतक्रिया के कारण ही सदस्य एक-दूसरे के पास आते हैं और एक-दूसरे के विषय में अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं। जिससे प्रेम, सौहार्द, भिन्नताएं तथा उग्रताएं आदि मनोभावों को व्यक्त करने का अवसर प्रत्येक सदस्य को प्राप्त होता है । समूह में कई बार प्रारंभ से ही संघर्ष कि स्थिति नजर आती है इस समय यह प्रक्रिया फलदायी साबित होती है। कार्यक्रम ही एक ऐसा माध्यम से, जिनके कारण सदस्य एक साथ एकत्रित होते है और एक-दूसरे को समझने का प्रयास करते हैं

व्यक्ति के जीवन में कार्यक्रम का महत्व

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है और वह संपूर्ण सांसारिक जीवन समूह में रहकर हीव्यतीत करता है । अत: इसी आवश्यकता के कारण वह हमेशा ही किसी-न-किसी समूह का सदस्य अवश्य होता है। समूह के कार्यक्रमों का अपना एक विशिष्ट महत्व होता। है कई बार व्यक्ति जिन भावनाओं की अभिव्यक्ति अकेले होने के कारण नहीं कर पाता वह समूह कार्यक्रम के माध्यम से करने का प्रयास करता है। इन कार्यक्रमों के माध्यम से व्यक्ति के जीवन में आंतरिक संघर्ष में कमी आती है और वह सांवेगिक तनाव भी कम करता है । कार्यक्रम के जीवन में महत्व को निम्न बिंदु ओं के माध्य से समझा जा सकता है:

- शारीरिक विकास में सहायक – समूह कार्यक्रम के माध्यम से बालक/ सदस्य समूह में भाग लेता हैं, जिससे उसका शारीरिक विकास स्वत: ही होता रहता है। खेलों के माध्यम से सदस्य का शारीरिक विकास होता है।
- नियंत्रण प्राप्त करने में सहायक – कार्यक्रम के माध्यम से बच्चों / सदस्य की शारीरिक क्रियाओं पर नियंत्रण किया जाता है।
- बौद्धिक योग्यता का विकास - कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति का बौद्धिक विकास होता है इसके द्वारा बौद्धिक शक्तियों का विकास किया जाता है।
- ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा की जागृति- जब व्यक्ति समूह में रहता है तो वह दूसरों की तरह बनने का प्रयास करता है। उसे इस बात की आवश्यकता महसूस होती है कि वह भी अन्य व्यक्तियों की भांति ज्ञानी एवं कुशलताओं से परिपूर्ण हो। इसके लिए वह हमेशा ही प्रयत्नशील होता है।
- सांवेगिक तनाव से छुटकारा- व्यक्ति के जीवन में अत्यधिक सांवेगिक तनाव होते है, जिनके आधार पर वह हमेशा ही दु खी एवं निराश होता है । समूह कार्यक्रम के माध्यम से वह लोगों के साथ उठता-बैठता है, हंसी-मजाक करता है तो उसके सांवेगिक तनाव से छुटकारा प्राप्त करता है।
- इच्छा- पूर्ति के अवसर – कई बार जिन इच्छाओं को व्यक्ति अपने दैनिक जीवन में प्राप्त नहीं कर पाता, जैसे-नेता बनने की इच्छा, वक्ता बनने की इच्छा इत्यादि कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति की आवश्यकताओं की भी पूर्ति हो जाती है ।
- व्यक्तित्व विकास में सहायक – कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्ति को ऐसे अनुभव प्राप्त होते है जो उसको सामान्य जीवन में कभी प्राप्त नहीं हो पाते। अत: ऐसे में व्यक्ति का व्यक्तिव विकास संभव हो पाता है।
- प्रेम-प्रदर्शन- कार्यक्रम के माध्यम से व्यक्तित्व के प्रेम का प्रदर्शन हो जाता है कि वह क्या पसंद करता है।
- सामूहिक एकीकरण - सामूहिक एकीकरण के माध्यम से व्यक्ति उन भावनाओं एवं कार्योंको त्यागने का प्रयत्न करता है जो कि अन्य सदस्य एवं समाज द्वारा स्वीकृत नहीं होती। समाज एवं सदस्यों के अनुरूप अपने आपको ढ़ालने का प्रयास करता है, जिससे उसमें सामूहीकरण की भावना का विकास होता है।
- मनोबल की उच्चता- कार्यक्रम के माध्यम से सदस्यों को अनेक पुरस्कारों से भी सम्मानित किया जाता है, जिससे उसके मनोबल में वृद्धि होती है।
- स्वीकृति प्राप्त करना तथा स्वीकृति प्रदान कराना- सदस्य जब समूह कार्यक्रम में भाग लेता है तो वह समूह स्वीकृति लेना और देना दोनों सीखता है।
- कष्ट के समय बचाव – कई बार जब व्यक्ति को कष्टों का सामना करना पड़ता है तो अकेले में वह निराश हो जाता है तथा अनेक समस्याओं से घिर जाता है। अत कार्यक्रम के माध्यम से वह समूह सदस्यों के सहयोग से अपने कष्ट को कम कर सकता है।
- भावनाओं का स्पष्टीकरण- मनुष्य एक तार्किक प्राणी है। उसमें ज्ञान का भण्डार है तथा कार्य करने की इच्छा व अनिच्छा होती है। इच्छाएँ या भावनाएँ व्यक्ति की प्रकृति व स्वभाव एक अंग है तथा व्यक्तित्व विकास के लिए इनका स्वस्थ विकास होना आवश्यक होता है। कार्यक्रम के माध्यम से सहायता के

आधुनिक व्यवसाय में एक सुनिश्चित भावनात्मक जीवन की महत्ता को प्रमुख रूप में मान्यता प्रदान की जाती है।

- नेतृत्व के गुणों का विकास- कार्यक्रम के माध्यम से समूह सदस्यों/ व्यक्तियों में नेतृत्व के गुणों का विकास किया जाता है।

4.7 कार्यक्रम नियोजन

कार्यक्रम की संपूर्ण प्रक्रिया के अध्ययन पश्चात नियोजन को समझना भी अत्यंत आवश्यक होता है, क्योंकि कार्यक्रम-नियोजन द्वारा ही समूह सदस्यों द्वारा लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है। नियोजन किसी भी कार्य को करने का एक सुव्यवस्थित और सुनियोजित तरीका है, जिससे लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त किया जा सकता है। नियोजन के अंतर्गत विद्यमान स्थितियों तथा संभावित परिवर्तनों की उपयोगिता को ध्यान में रखकर एक व्यवस्थित तथा सुसंगठित रूपरेखा तैयार की जाती है, जिससे भविष्य के परिवर्तनों को अपेक्षित लक्ष्यों के अनुरुप नियंत्रित, निर्देशित तथा संशोधित किया जा सके। समाजशास्त्रीय शब्दकोष में नियोजन की धारणा को निम्न प्रकार से स्पष्ट किया गया है :

"नियोजन लक्ष्यों का आरोपण, उनकी पूर्ति के लिए साधनों की व्यवस्था और क्रियाओं केव्यवस्थित रूपों, जो कि सामान्य सामाजिक व्यवस्था से उत्पन्न होते हैं, का प्रयोग है।"

समूह का निर्माण हमेशा ही सुनियोजित होना चाहिए सामूहिक कार्यकर्ता द्वारा सुनियोजित तरीके से समूह निर्माण का कार्य किया जाता है। यदि सामूहिक कार्यकर्ता नियोजित तरीके से कार्य करेगा तो निश्चित ही उसे लक्ष्य प्राप्त होगी। लक्ष्य नियोजन का सिद्धांत लक्ष्य प्राप्ति में अत्यंत ही सहायक होता है। कार्यकर्ता निम्नलिखित बिंदुओं के माध्यम से ही कार्य करता है, जिससे उसे कार्य करने में आसानी होती है-

- विकास के लक्ष्यों एवं मूल्यों का निर्धारण करना।
- परिस्थितियों का विश्लेषण करना।
- वर्तमान सेवाओं में गुणात्मक एवं परिमाणात्मक दृष्टि सेपाई जाने वाली कमियों की जानकारी।
- विशिष्ट उद्देश्यों तथा रणनीतियों का निर्धारण।
- आगत लक्ष्यों, क्षेत्रों, साधन आदि का निर्धारण।
- प्रशिक्षण तथा संचार प्रक्रिया की सीमाओं की जानकारी।
- क्रिया नियोजन तथा कार्यों का दस्तावेजीकरण करने के महत्व का ज्ञान होना।
- कार्य करने हेतु आवश्यक उपकरणों के निर्माण की जानकारी का होना।
- संभावित साधनों-संसाधनों के उपलब्धता की जानकारी।
- शक्ति के साधनों का निर्धारण।
- समूह के सदस्यों की आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक,भौगोलिक और वर्तमान स्थिति के ज्ञान, अनुभव एवं जीवन स्तर की पहचान करना। इसके अतिरिक्त समूह कार्यकर्ता को समूह सदस्य संख्या, शक्ति के स्रोत, उद्देश्य तथा लक्ष्यों के बीच संतुलन स्थापित कर यह

ध्यान रखना पडता है, जिससे कि समूह कार्य में कार्यक्रम को नियोजन उचित प्रकार से किया जा सके।

कार्यक्रम नियोजन तथा विकास में कार्यकर्ता की भूमिका

कार्यक्रम नियोजन हेतु कार्यकर्ता की भूमिका को निम्न बिंदु ओं के माध्य से समझा जा सकता है:

1. सदस्यों को कार्यक्रम नियोजित करने में कार्यकर्ता सहायक की भूमिका अदा करता है।
2. कार्यकर्ता द्वारा समूह सदस्यों की रुचियों की खोज की जाती है तथा उन रुचियों के अनुसार कार्यक्रमों को संचालित किया जाता है।
3. कार्यकर्ता द्वारा उचित संसाधनों एवं पर्यावरण का उपयोग किया जाता है।
4. कार्यकर्ता द्वारा सदस्यों की सीमाओं को ज्ञात कर उसका उपयोग करना।
5. सुनना, अवलोकन करना तथा उसके अनुसार कार्य करना।
6. विश्लेषण एवं अभिलेखन तैयार करना।
7. समूह सदस्यों को आवश्यक निरीक्षण तथा परामर्श देना।
8. शिक्षा तथा नेतृत्व का विकास करना।
9. समूह सदस्यों में आवश्यक कुशलताओं की प्रप्ति हेतु सहायता करना।
10. समूह सदस्यों में नेतृत्व की भावना का विकास करना।

4.8 सारांश

सामाजिक समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम नियोजन का महत्वपूर्ण स्थान होता है। इसी प्रकिया के माध्यम से वह संपर्ण प्रक्रिया को संपन्न करता है और समूह सदस्यों में नेतृत्व की भावना का विकास किया जाता है जिससे समूह सदस्य अपनी समस्या का समाधान करने में स्वयं सक्षम बन जाता है।

4.9 बोध प्रश्न

1. कार्यक्रम के अर्थ को समझाइए।
2. सामाजिक समूह कार्य में कार्यक्रम के महत्व पर प्रकाश डालिए।
3. कार्यक्रम के सिद्धांतों की व्याख्या कीजिए।
4. कार्यक्रम के विभिन्न तत्वों को समझाइए।
5. नियोजन से आपका क्या तात्पर्य है ? नियोजन प्रक्रिया में कार्यकर्ता की भूमिका को निर्धारित कीजिए।

4.10 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

https://hi.wikipedia.org/wiki/ retrived on 03/08/2016

1. मिश्रा, प्रयागदीन (2015). *सामाजिक समूह कार्य*.लखनऊ : हिंदी संस्थान।
2. रोब्बिन्स, पी एस एंड सांघी, एस (2005). *आर्गनाईजेशनल बिहेवियर* दिल्ली: पीयरसन एजुकेशन
3. प्रसाद मणिशंकर, सत्य प्रकाश, कुमार अरूण,कुमार संजय,सैफ मो.खान एवं सिंह अभव कुमार(2103). *यूजीसी नेट/जेआरएफ/स्लेट समाज कार्य*.दिल्ली: अरिहंत पब्लिकेशन (इंडिया)लिमिटेड।
4. तेज, संगीता. पाण्डेय तेजस्कर (2010). *समाज कार्य*. लखनऊ: जुबली एच फाउंडेशन।
5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विशवविद्यालय(2009).*सामाजिक समूह कार्य*.दिल्ली: समाज कार्य विद्यापीठ ।

खंड - 4

विभिन्न स्थापनों में सामाजिक समूह कार्य

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई-1
भारतीय संदर्भ में स्व-सहायता समूहों की संकल्पना और सक्रियता

इकाई की रूपरेखा

1.0 उद्देश्य
1.1 प्रस्तावना
1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि
1.3 स्व-सहायता समूह का उद्देश्य एवं महत्व
1.4 स्व-सहायता निर्माण हेतु आवश्यक तथ्य
1.5 स्व-सहायता समूह बैंक लिंकेज
1.6 समूह के मुख्य अभिलेख
1.7 समूह कार्यकर्ता के कार्य
1.8 सारांश
1.6 बोध प्रश्न
1.7 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. स्व-सहायता समूह के संबंध में जानकारी प्राप्तकर सकेंगे।
2. महिला सशक्तिकरण में स्व-सहायता समूह की भूमिका से अवगत हो सकेंगे।
3. स्व-सहायता समूह निर्माण में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका से अवगत हो सकेंगे।
4. स्व-सहायता समूह के महत्व के बारे में जान सकेंगे।

1.1 प्रस्तावना

स्व-सहायता समूह (Self Help Group) भारत सरकार द्वारा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोज़गार योजना के अंर्तगत 1 अप्रैल 1999 से प्रारंभ किया गया है। इस योजना के अंर्तगत गरीब परिवारों को स्वरोज़गार की सहायता देना है। ऐसे ग्रामीण जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करते हैं तथा जिनकी आय और गतिविधियाँ एक हो, स्व-सहायता समूह के अंर्तगत आते हैं। इस समूह के सदस्य अपनी दैनिक आय अथवा मासिकआय से कुछ बचत कर समूह के पास जमा करते हैं तथा समूह आवश्क्कता पड़ने पर जरूरतमंद सदस्य को ऋण देती है, जिससे सदस्य अपनी आवश्यकता पूरी कर ऋण राशि आसान किश्तों में वापस जमा कर सकें। ब्याज प्राप्त आय को समिति के कार्यकलापों में खर्च किया जाता है। स्व-सहायता समूह में 10 से 20 सदस्य हो सकते हैं, जो अपनी गतिविधियों के अनुसार समूह का नाम रख सकते हैं। स्व सहायता समूह के माध्यम से लोग अपनी मूलभूत आवश्क्कताओं की पूर्ति करने में सक्षम होते हैं। वर्तमान समय में स्व-सहायता समूह द्वारा मुख्यरूप से महिलाओं को सशक्तिकृतकरने का प्रयास किया जा रहा है। प्रस्तुत इकाई के माध्यम से स्व-सहायता समूह के संबंध में आप जानकारी प्राप्तकर सकेंगे।

1.2 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में लगभग 78 प्रतिशत लोग गाँवों में निवास करते है। गाँवों की प्रमुख विशेषता यह होती है कि वह प्रकृति के अत्यधिक निकट होते हैं और साथ ही इनमें भाई चारे की भावना एवं आपसी सहयोग की भावना मुख्यरूप से पाई जाती है। परंतु आज शहरी चकाचौंध के कारण यह प्रथा धीरे-धीरे समाप्त हो रही है, इसके बावजूद सामुदायिकता, गरीब व सामाजिक तौर से पिछड़े वर्गों में आज भी किसी-न-किसी रूप में आपसी सहयोग की भावना व्याप्त है।

स्व-सहायता समूह की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को देखने से ज्ञात होता है कि मुख्य रूप से इसकी शुरुआत देश की कुछ प्रतिष्ठित स्वैच्छिक संस्थाएँ, जैसे- सेल्फ एम्पलाइड वीमेन एसोसिएशन (SEWA), अहमदाबाद, मयराडा, बंगलौर आदि के माध्यम से हुई थी। वर्ष 1968 से ही मयराडा संस्था ने सामाजिक कार्य के प्रति अपनी भूमिका निभानी शुरू कर दी थी। प्रारंभ में मयराडा ने मुख्य रूप से चीन युद्ध के पश्चात तिब्बत से आए तिब्बतियों को पुनर्स्थापित करने का कार्य शुरू किया। तत्पश्चात इसके माध्यम से वर्ष 2000 तक लाखों लोगों को विभिन्न प्रकार की सुविधाएँ प्रदान कर उनके जीवन-यापन हेतु उचित प्रकार से कार्य किया और आवश्यकताग्रस्त व्यक्तियों के कार्य करने हेतु अपना लक्ष्य निर्धारित किया।

इस कार्यक्रम में मुख्य रूप से स्व-सहायता समूह के संदर्भमें निम्नलिखित विशेष मुद्दों पर बल दिया, जिसमें मुख्य रूप से निम्न मुद्दें है-

1. सामुदायिक क्रियाशील समूह के माध्यम से ग्रामीण साख पद्धति।
2. महिलाओं को संगठित करना, जिससे स्वयं सहायता समूहों को बढ़ावा दिया जा सके।

1.2 स्व सहायता समूह उद्देश्य एवं महत्व

1. स्वयं सहायता समूहों के उद्देश्यों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है-
2. आवश्यकताग्रस्त व्यक्तियों के मध्य 'बचत' जैसी आदतों को विकसित करना।
3. बृहत पैमाने पर संसाधन की उपलब्धता को ज्ञात करना।
4. स्थानीय स्तर पर बेहतर तकनीकी एवं सुविधाओं को विकसित करना।
5. अपने क्षेत्र में ही आपातकालीन, उपयोग एवं उत्पादन कार्य हेतु कर्ज सुविधाको उपलब्ध कराना।
6. स्वंत्रता, समानता, आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण पर बल देना।
7. महिला एवं कमज़ोर वर्गों को सशक्तिकृत करना।

महत्व

गाँवों में कुल आबादी का लगभग 75 प्रतिशत अपने जीवन-यापन के लिए कृषि कार्य पर निर्भर है। व्यापक खेतों के मालिक तो जमींदार ही होते हैं, जो अपने खेतों का कार्य कराने के लिए गाँव के गरीब को मज़दूरी पर बुलाकर कार्य करवाते हैं। अत: मज़दूरों की आय का साधन खेती ही है। अतिरिक्त अन्य आय का साधन इनके पास नहीं होते है। खेती के माध्यम से पाँच-छह माह तक ही काम उपलब्ध होता है। अतिरिक्त समय में आय के लिए अधिक प्रयत्न करना पड़ता है। इसके बावजूद भी काम न मिलने से व्यक्ति को अपनी जमा-पूँजी, जैसे- गहने, मकान इत्यादि जमींदारों या महाजनों के यहाँ गिरवी रखनी पडती है। परिस्थिति से जुझते हुए, लिए गए गिरवी के कर्ज को चुका भी नहीं पातें। आकस्मिक दुर्घटनाएँ, जैसे-बीमारी, मृत्यु आदि से ग्रसित होने पर बंधक रखने को राजी हो जाते हैं। अत: मज़दूरी को बढ़ावा मिलता है जो कि कानूनी अपराध भी है। उपरोक्तकठिन परिस्थितियों से उबरने के लिए स्व-सहायता समूह एक रोशनी का कार्य करता है। चूँकि अकेला व्यक्ति अधिक पूँजी एकत्र नहीं कर सकता। अत: एक समूह (10-20 लोग) के सभी सदस्य थोडी-थोडी रकम एकत्र कर जमा पूँजी तैयार कर सकते हैं। आवश्यकता पड़ने पर स्वय-सहायता समूह ज़यरतमंद व्यक्ति को ऋण के तौर पर कुछ धन उपलब्ध करा सकते हैं।

इस तरह उन्हीं की एकत्र पूँजी से वे एक-दूसरे की मदद कर सकते हैं। इस तरह स्वसहायता समूह के माध्यम से कम ऋण पर नगद राशि की सहायता मिलने से वे समस्या का समाधान काफ़ी हद तक कर सकते हैं।

1.4 स्व-सहायता निर्माण हेतु आवश्यक तथ्य :

1. किसी भी स्व-सहायता समूह के निर्माण हेतु निम्नलिखित आवश्यक तथ्यों का होना अत्यंत आवश्यक होता है-
2. स्व-सहायता समूह के अंतर्गत समूह में सामान्यत: 10 से 20 व्यक्ति होना अत्यंत आवश्यक होता है।
3. लघु सिंचाई योजना हेतु तथा विकलांग व्यक्तियों के लिए समूह सदस्यों की संख्या न्यूनतम संख्या 5 तक हो सकती हैं।
4. समूह के सभी सदस्य गरीबी की रेखा के नीचे जीवन-यापन करने वाले व्यक्ति होंगे।
5. किसी भी स्वयं सहायता समूह में परिवार का एक से अधिक सदस्य नहीं होगा।
6. समूह कार्य करने हेतु अपने आचरण नियम बनाएंगे तथा आपस में एक सप्ताह या 15 दिवस में बैठक आयोजित कर स्वतंत्र रुप से विचारों का खुले रूप से आदान प्रदान कर सकेंगे।
7. समूह के सदस्य नियमित बचत से अपना कोष बनाएंगे तथा समूह अपने प्रयास से सदस्योंकी स्वेच्छा से की गई बचत का संग्रहण करेंगे।
8. इस बचत से सदस्यों को ऋण दिया जाएगा तथा ऋण देने की प्रक्रिया ऋण वापसी की प्रक्रिया एवं ब्याज की दर का निर्धारण समूह द्वारा किया जाएगा।
9. समूह द्वारा समूह बचत खाते का संचालन किया जाएगा, जिससे ऋण वापसी के पश्चात राशि को इस खाते में जमा की जाएगी।
10. समूह चाहे तो अपना पंजीयन करा सकता है।
11. समूहों का गठन स्वैच्छिक संगठनों के माध्यम से भी किया जा सकता है।
12. यदि समूह 6 माह तक एक अच्छे समूह के रूप में विकसित हो चुका है तथा यह सुनिश्चित हो जाएगा कि स्वावलंबी हो गया है तो उसे रिवालविंग फंड दिया जा सकता है।
13. समूह की राशि बढ़ाने के लिए रिवालविंग फंड दिया जाएगा।
14. समूह ग्रुप फंड से सदस्यों को ऋण देगा तथा ऋण वापसी हेतु स्पष्ट समय चक्र एवं ब्याज दर निर्धारित करेगा।
15. रिवालविंग फंड प्राप्त होने के पश्चात समूह इस राशि का उपयोग अपने निर्णय अनुसार करेगा।
16. जिस समूहों को डवाकरा अथवा किसी कार्यक्रम हेतु रिवालविंग फंड प्राप्त होती है, वे SGSY में रिवालविंग फंड प्राप्त करने हेतु पात्र नहीं होगा। द्वितीय चरण में समूह को रिवालविंग फंड प्राप्ति के6 माह के पश्चात यह ग्रेडिंग की जाएगी कि वह प्रभावी ढंग से कार्य कर रहा है। तत्पश्चात वह द्वितीय चरण में लिया जाएगा।
17. तृतीय चरण में समूह को ऋण एवं अनुदान की पात्रता होगी।
18. विकास खंड अधिकारी चयनित व्यक्तियों से प्रार्थना पत्र भरवाएंगे।

प्रार्थना पत्र प्राप्त होने के पश्यात बैंक 15 दिवस के एक माह में अनुमोदन करेंगे तथा वितरण करेंगे। एस.जी.एस.वाय. में निम्न सदस्य होगे-

1. मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जिला पंचायत – - अध्यक्ष
2. परियोजना अधिकारी (स्वरोज़गार) - सदस्य
3. विकास खंड स्तर के सभी बैंक मैनेजर - सदस्य

4. विकास खंड स्तर के विभिन्न विभागों के अधिकारी - सदस्य
5. स्वैच्छिक संस्थानों के प्रतिनिधि - सदस्य
6. विकास खंड अधिकारी – मु.का.अधि.जन.पंचा. - संयोजक

बैठक मुख्य कार्यपालन अधिकारी द्वारा आहूत की जाएगी। लीड बैंक अधिकारी बैठक में आवश्यक रुप से उपस्थित होंगे। (सहभागी ग्रामीण आकलन, दिसंबर 2012)

1.5 स्व-सहायता समूह बैंक लिंकेज

अनौपचारिक ऋण प्रणाली के लचीलेपन, सुग्रहिता, अनुक्रियाशीलता जैसे गुणों को औपचारिक ऋण संस्थाओं की तकनीकी क्षमताओं और वित्तीय संसाधनों के साथ संयोजित करने और ऋण वितरण प्रणाली में सकारात्मक नवीनताएं लाने की दृष्टि से राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) ने फरवरी 1992 में स्व-सहायता समूहों को वाणिज्य बैंकों से जोड़ने के लिए पायलट परियोजना शुरू की थी, जिसमें (बाद में) सहकारी बैंकों और क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों को भी शामिल कर लिया गया। यह जुड़ाव इस विचार से भी किया गया था कि औपचारिक और अनौपचारिक ऋण प्रणाली के अच्छे गुणों को समायोजित कर सके।

कुछ चयनित गैर सरकारी संस्थाओं एवं बैंकों की मदद से ही पायलट परियोजना का कार्यान्वयन हुआ। वर्ष 1992-93 में स्व-सहायता समूह को विभिन्न बैंकों से जोड़ा गया। पायलट परियोजना में मात्र 500 स्व-सहायता समूह जोड़ने का लक्ष्य रखा गया था, जबकि वर्ष 1993-94 में 650 समूहों को जोड़ा गया। वर्ष 1994-95 में या लिंकेज की संख्या 2212 हुई, जिसमें बैंक कर्ज रु० 224.5 लाख थी। इस प्रायोगिक खंड के स्व-सहायता समूह बैंक लिकेंज कार्यक्रम की सफलता से आकर्षित होकर भारतीय रिजर्व बैंक के गवर्नर ने एक कार्यकारी समूह का गठन किया, जिसमें प्रसिद्ध गैर-सरकारी संस्था, एकेडेमेशियन (प्रबुद्ध), बैंक पदाधिकारीगण और नाबार्ड के प्रबध निदेशक इत्यादि थे। इन सभी सदस्यों के द्वारा पूर्ण अध्ययन किया गया। इसी आधार पर भारतीय रिजर्व बैंक ने दिनांक 2 अप्रैल 1996 को अपने परिपत्र के जरिए स्व-सहायता समूहों को दिए गए ऋण में प्राथमिकता क्षेत्र अग्रिमों के तहत शामिल किए जाने का निर्देश दिया।

ज्ञान शांति मैत्री

स्व-सहायता समूह बैंक लिंकेज के निम्नलिखित उद्देश्य हैं-

1) गरीबों की ऋण ज़रूरतों को पूरा करने के लिए पूरक ऋण नीतियों का विकास करना।
2) बैंकों एंव ग्रामीणों गरीब जनता के बीच परस्पर विश्वास/भरोसा पैदा करना।
3) ग्रामीण गरीब जनता में बचत व ऋण दोनों तरह के बैंकिंग कार्यकलापों को प्रोत्साहित करना।

स्वयं सहायता समूह बैंक लिकेंज कार्यक्रम से लाभ

1. ऋण चक्र में मूल्यांकन निर्गत, निरीक्षण एंव भुगतान प्रक्रिया में होने वाली लागत में कमी।
2. बड़े स्तर पर छोटी बचत का जमागतिमान होना।
3. सुनिश्चित एवं समय पर भुगतान होने केकारण कोष का तेजी से पुनः चक्रीय होना।
4. गरीब वर्ग को समाहित करने के साथ-साथ व्यापार में विस्तार करने का अवसर।
5. दूरदर्शितापूर्ण ग्राहक आधारित भविष्य तैयार करना।

स्व-सहायता समूह का उद्देश्य

1. गरीबों के बीच बचत आदत विकास करने का माध्यम।

2. बृहत पैमाने पर संसाधन की उपलब्धता॥
3. एक स्थान से बेहतर तकनीकी एवं बौद्धिक ज्ञानवर्द्धन की सुविधा।
4. अपने क्षेत्र में ही आपातकालीन, उपयोग एवं उत्पादन कार्य हेतु कर्ज की उपलब्धता॥
5. विभिन्न प्रकार का प्रोत्साहन सहायता का उपलब्ध होना॥
6. स्वंत्रता, समानता, आत्मनिर्भरता और सशक्तिकरण सुनिश्चित होना॥
7. महिला और कमज़ोर वर्गों का सशक्तिकरण।

स्वयं सहायता समूह बैंक के चयन हेतु मापदंड

1. समूह के सदस्यों की संख्या10 से 20 के बीच होनी चाहिए।
2. समूह निबंधित भी हो सकता है और नहीं भी॥
3. समूह को अपने लिए एक आचार संहिता बनानी चाहिए जो सभी कोबाँध सके।
4. आंतरिक बचत प्रक्रिया समूह की मूलाधार है। अतः यह भावना प्रत्येक सदस्य में होनी चाहिए।
5. सदस्यों को प्रदत्त ऋण और बचत की ब्याज दर उनके द्वारा ही तय की जानी चाहिए।
6. समूह को लोकतांत्रिक ढंग से कार्य करना चाहिए, जिसमें सदस्यों को विचारों के आदान-प्रदान व सहभागिता की छूट हो।
7. सभी समूह को सामान्य रिकार्ड रखना चाहिए।
8. समूह कम-कम-से छह माह से सक्रिय रूप से अस्तित्व में हो और वे दूसरे बैंक का डीफाल्टर न हो।
9. समूह की स्थापना के औचित्य तथा इसके उद्देश्यों के प्रति बैंक संतुष्ट होना चाहिए

स्वयं सेवी संस्थाओं की भूमिका

स्व-सहायता समूह के निर्माण से लेकर संपूर्ण क्रियान्वयन क्रार्यक्रमों तक स्वयं सेवी संस्थाओं ने अपनी महती भूमिका अदा की है, जिसे निम्न बिंदुओं के माध्यम से समझा जा सकता है :

1. समस्त ग्रामीणों में जनजागरूकता उत्पन्न करना।
2. समूह सदस्यों में बचत की भावना को प्रोत्साहित करते हुए संस्थागत और व्यक्तिगत विकास की ओर ले जाना।
3. समूह के सदस्यों को सभी दस्तावेजों, जैसे- खाता-बही इत्यादि का रख-रखाव करना एवं बैठक संचालन और कोष प्रबंधन हेतु शिक्षण प्रशिक्षण का आयोजन करना।
4. बैंक के सहबद्ध, सभी गैर सरकारी संगठनों को एक सुविधाजनक संस्थान के रूप में कार्य कर करने हेतु प्रेरित करना।
5. संसाधन का अधिकतम उपयोग करते हुए समूह सदस्यों की तकनीकी और बौद्धिक क्षमता का विकास करें।
6. समूह के साथ एक मित्र, दार्शनिक और मार्गदर्शक एवं सहायक के रूप में करना।

1.6 समूह के मुख्य अभिलेख

रोकड़ पंजी का साधारण

प्रत्येक समूह रोकड़ पंजी का संधारण करेगा, जिसकों समूह का कोषाध्यक्ष अद्यतन स्थिति में रखेगा। इसमें समूह में जमा राशि, समूह द्वारा दिया गया ऋण, समूह को अन्य स्रोतों से आय आदि का विवरण सम्मिलित किया जाएगा। इस पंजी के अंतिमपृष्ठों में समूह के हर सदस्य के लिए चार-चार पन्ने सुरक्षित रखे जाएंगे। सदस्य के द्वारा की गई बचत, लिया गया ऋण, दिया गया ब्याज अथवा अर्थ दंड सभी का विवरण अंकित किया जाएगा, जिसका प्रारूप निम्नानुसार होगा-

समूह की रोकड़ पंजी-

क्रमांक	दिनांक	विवरण	नामे	जमा	बकाया	कोषाध्यक्ष के हस्ता.
1	2	3	4	5	6	7

सदस्य खाता-

क्रमांक	दिनांक	विवरण	नामे	जमा	बकाया	कोषाध्यक्ष के हस्ता.
1	2	3	4	5	6	7

सदस्य की व्यक्तिगत पासबुक

समूह के प्रत्येक सदस्य को एक पास बुक दी जाएगी, जिसमें उसके द्वारा की गई बचत एवं उसके द्वारा लिए गए ऋण का विवरण रखा जाएगा। यह विवरण समूह के द्वारा संधारित रोकड़ पंजी में सदस्यके खाते से मेल खाएगा।

समूह की कार्यवाही पंजी/निरीक्षण पुस्तिका

इस पृथक रजिस्टर में हर समूह कार्यवाही विवरण में उपस्थित सदस्यों के नाम एवं संख्या अंकित की जाएगी एवं कार्यवाही विवरण बैठक के परिचालन में ऊपर दिए गए बिंदु के अनुरूप विस्तार से अंकित किया जाएगा।

ग्राम सभा में अनुमोदन

गठित किए गए हर समूह का ब्यौरा ग्राम सभा में रखा जाएगा, उसका अनुमोदन ग्राम सभा द्वारा किया जा सकेगा।

1.7 समूह कार्यकर्ता के कार्य

1. समूह सदस्यों की उपस्थिति की ओर ध्यान देना।
2. समिति द्वारा सदस्यों की नियमित बैठक की निगरानी करना।
3. प्रत्येक बैठक की कार्यवाही एवं दस्तावेजों के विवरण का निरीक्षण करना।
4. समूह के सदस्यों को नियमित बचत हेतु प्रोत्साहित करना।
5. बचत राशि को बैंक खाते में जमा करने हेतु प्रेरित करना।
6. आपसी ऋण का प्रोत्साहन करना एवं स्पष्टता बनाए रखना।
7. सदस्यों को अन्य छोटे कुटीर उद्योगों हेतु प्रोत्साहित करना।
8. ऋण सदस्य द्वारा ऋण व्यवसाय में उपयोग के संदर्भ मे अवगत कराना।
9. समूह सदस्यों को चयनित गतिविधियों के माध्यम से परिचित कराना।
10. समिति द्वारा बचत/ऋण खातों का रख-रखाव को नियमित करने हेतु प्रशिक्षण प्रदान कराना।
11. अन्य आवश्यक सेवाओं को उपलब्धकराना।

समूह बैठक के संदर्भ में कार्य

समूह की प्रत्येक बैठक में जिन बिंदुओं परआवश्यक रूप से चर्चा की जाती है, उन बिंदु ओं पर कार्यकर्ता निम्न प्रकार से अपनी भूमिका अदा करता है-

1. बैठक में उपस्थित सदस्यों की संख्याका निर्धारण करना।
2. पिछली बैठक में लिए गए निर्णय का क्रियान्वयन करने में सहायक की भूमिका का निर्धारण करना।

3. पिछले माह में सदस्यों द्वारा जमा राशि के विवरण पर ध्यान देना।
4. बैंक मे जमा राशि के विवरण को देखना।
5. सदस्यों द्वारा अन्य सदस्यों को स्वीकृत किए गए ऋण के संबंध में जानकारी रखना।
6. समूह द्वारा प्रस्तावित व्यावसायिक गतिविधि के संचालन हेतु मार्गदर्शक की भूमिका अदा करना।
7. सदस्य से वसूल किए गए ऋण का विवरण तैयार करना।
8. यदि किसी सदस्य ने निर्धारित ऋण की किस्त वापस नहीं की है, तो उक्त संबंध में की जानेवाली कार्यवाही को अन्य सदस्यों द्वारा सुनिश्चित करना।
9. समूह के अन्य आय-व्यय विवरण की ओर ध्यान देना।
10. अन्य व्यावसायिक एवं पारिवारिक समस्याओं की चर्चाकरना।

स्व-सहायता समूह के लिए मुख्य रूप से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है

1. स्व-सहायता समूह गठन के बाद नियमित बैठक आवश्यक है।
2. समूह के सदस्यों को बैठक में भाग लेना आवश्यक है।
3. बैठक में समूह की गतिविधियों, समूह को सुदृढ़ करने समूह की आय बढ़ाने, सदस्यों को ऋण की आवश्यकता, गाँव की समस्या, बच्चों/बच्चियों को पढ़ने/बढ़ने पर चर्चा आदि पर विचार करना चाहिए ।
4. बैठक में की गई चर्चा का ब्यौरा कार्यवाही रजिस्टर में दर्ज करना आवश्यकतानुसार ऋण दिया जा सके।
5. इस बात की निगरानी करना कि समिति से प्राप्त ऋण का सही उपयोग करें, जैसे- अपने व्यवसाय में लगाएँ, बच्चों/बच्चियों के पढ़ने पर खर्च करें अथवा अपने अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यों में लगाएं ।
6. समिति से प्राप्त ऋण समिति की शर्तों के अनुसार समय के अंदर दें।
7. समूह के छह माह सफल संचालन के उपरांत समिति सदस्य अथवा अध्यक्ष अपने ग्राम के ग्राम सहायक, विस्तार अधिकारी अथवा विकास खंड अधिकारी से संपर्क कर समिति के चयनित व्यवसाय के ऋण के लिए संपर्क करें।

ज्ञान शांति मैत्री

1.8 सारांश

स्व-सहायता समूह ने अपने कार्यों के द्वारा सरकारी नीति को किसी-न-किसी रूप में प्रभावित किया है और विकास के आयामों को जमीनी स्तर पर खड़ा करने का प्रयास किया है। स्व-सहायता समूह, समूह कार्य प्रणाली का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उदाहरण है, जिसके माध्यम से संपूर्ण विधि को संचालित किया जा सकता है। स्व-सहायता समूह के कुछ महत्वपूर्ण अभिलेख भी होते हैं, जिनके माध्यम से इसका संचालन किया जाता है, जिनमें मुख्य रूप से रोकड़ पंजी का संधारण, समूह की रोकड़ पूँजी, सदस्य खाता, सदस्य का व्यक्तिगत पास बुक, समूह की कार्यवाही, पूँजी, ग्राम सभा में अनुमोदन, इत्यादि होते हैं। इस प्रकार समूह कार्य में स्व-सहायता समूह गतिविधि एक महत्वपूर्ण कार्य विधि हो सकती है। जिस प्रकार स्व-सहायता समूह में कार्यों को संचालित किया जाता है, उसी प्रकार समूह कार्यों को भी एक निश्चित लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाता है।

1.9 बोध प्रश्न

1) स्व-सहायता समूह से क्या तात्पर्य है ?
2) स्व-सहायता समूह निर्माण हेतु आवश्यक कार्यप्रणाली का वर्णन कीजिए।
3) स्व-सहायता समूह में समूह कार्यकर्ता के कार्यों को उल्लेखित कीजिए।

4) स्व-सहायता समूह के उद्देश्य एवं महत्व पर प्रकाश डालिए।
5) स्व-सहायता समूहों ने 'महिलाओं के सशक्तिकरण हेतु अपनी महती भूमिका अदा की है। इस कथन की पुष्टि कीजिए।

1.10 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1) http://hi.vikaspedia.in/social-welfare/ Retrieved on 27/07/2016
2) लिमये मनोज **(2012*). सहभागी ग्रामीण आकलन*. राज्य संसाधन केंद्र प्रौढ शिक्षा: इंदौर म.प्र.**

ज्ञान शांति मैत्री

इकाई – 2 सामूदायिक स्थापनों में समूह कार्य

इकाई की रूपरेखा

2.0 उद्देश्य
2.1 प्रस्तावना
2.2 सामुदायिक स्थापनों में समाज कार्य
- नशाबंदी केंद्रों एवं नशा सेवन करने वाले व्यक्तियों के साथ समूह कार्य
- चिकित्सीय स्थापनों में समूह कार्य
- गली (स्ट्रीट चाइल्ड) के बच्चों के साथ समूह कार्य
- आपदा पीडितों के साथ समाज कार्य
- समुदाय में युवाओं के साथ समूह का

2.3 सारांश
2.4 बोध प्रश्न
2.5 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

2.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप-

1. विभिन्न सामुदायिक स्थापनों में सामाजिक समूह कार्य का वर्णन कर सकेंगे।
2. प्रत्येक स्थापनों में समूह कार्य की भूमिका को जान सकेंगे।
3. प्रत्येक स्थापनों में समूह कार्य के कार्यों को विश्लेषित कर सकेंगे।

2 .1 प्रस्तावना

वर्तमान समय में समूह कार्य प्रक्रिया समाज कार्य की प्रमुख पद्धति के रूप में जानी जाने लगी है। दिनों-दिन इसका महत्व बढ़ता जा रहा है। मनुष्य किसी भी जाति, धर्म, आयु, वर्ग का क्यों ना हो उसे अपना सामाजिक जीवन सुव्यवस्थित रूप से बिताने के लिए समूह के क्रिया-कलापों में भाग लेना पड़ता ही है। आज के समय में व्यक्तियों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है और ये समस्याएँ कभी प्राकृतिक रूप से आ जाती है तो कभी व्यक्ति अपनी कुछ बुरी आदतों के कारण उत्पन्न कर लेता है। विभिन्न स्थापनों के माध्यम से समूह कार्यकर्ता इन समस्याओं को सुलझाने का प्रयास करता है। सामाजिक समूह कार्य न केवल संबद्धता की खुशी प्रदान करता,है अपितु सदस्यों को अपनी क्षमताओं का उपयोग करने और उन्हें बढ़ाने तथा स्वयं को विकसित करने के लिए एक अवसर भी प्रदान करता है। समूह कार्यकर्ता समूह की परस्पर संबंधी क्रियाओं और कार्यक्रम संबंधी क्रियाओं को इस प्रकार कार्य करने के योग्य बनाता है, जिससे व्यक्ति का विकास और वांछित सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके।

2.2 सामुदायिक स्थापनों में समाज कार्य

- **नशाबंदी केंद्रों एवं नशा सेवन करने वाले व्यक्तियों के साथ समूह कार्य** –

मादक द्रव्यों का सेवन/नशा/व्यसन करना आज के समाज में एक चुनौतीपूर्ण गंभीर सामाजिक समस्या बनती जा रही है, जिसने समाज के प्रत्येक वर्ग को प्रभावित किया है चाहे वह पुरूष हो या महिला, वृद्ध हो या जवान या फिर बच्चे और उच्च, निम्न या मध्यम वर्ग। समाज के प्रत्येक वर्ग को इस नशाखोरी जैसी भयावह समस्या ने अपने

चंगुल में कर लिया है । समूह कार्यकर्ताओं के माध्यम से इसेदूर करने का प्रयास किया जा सकता है जिससे व्यक्ति समाज में कुशल जीवन यापन कर सके। समूह कार्यकर्ता द्वारा नियंत्रण, रोकथाम और उपचार के माध्यम से इस कार्य को किया जाता है। यदि हम एक उदाहरण के रूप में समझें तो यदि समूह कार्यकर्ता एक शराबी व्यक्ति का अध्ययन करेगा तो सर्वप्रथम वह व्यक्ति के शराब पीने के कार्यकारणों का अध्ययन व्यक्ति से जुड़े समस्त पहलुओं से करेगा, जिसमें व्यक्ति के परिवार, आस-पडो स एवं मित्रगणों की भूमिका होगी। तत्पश्चात निदान की योजना तैयार करेगा और फिर उपचार के माध्यम से शराब को नियंत्रित करने का प्रयास करेगा। इस प्रकार कार्यकर्ता द्वारा नशाखोरी जैसी भयानक समस्या से व्यक्ति को निजात दिलाई जा सकती है, जिसने संपूर्ण समाज को प्रभावित किया है।

सामाजिक समूह कार्यकर्ता मादक द्रव्य व्यसन करने वाले व्यक्तियों के क्षेत्र में निम्न प्रकार से अपनी भूमिका को सुनिश्चित करता है, जिसको मुख्य रूप से निम्नवत बताया जा सकता है -

1. समूह कार्यकर्ता व्यक्ति के अकेलेपन के विचारों को समूह के अन्य सदस्यों के साथ मिलकर दूर कर करने का प्रयास करता है, जिससे व्यसन करने वाला प्रत्येक व्यक्ति इस का शिकार रहता है। उसे भी यह अनुभव होने लगता है कि अन्य लोग भी मेरी तरह ही सामान्य समस्याओं से ग्रसित है और इससे उसे उसके आत्मबल को संतुष्टि प्राप्तहोती है।
2. समूह कार्यकर्ता समूह के माध्यम से सदस्यों को यह सीखने का अवसर प्रदान करता है कि मादक द्रव्य व्यसन कितनी बुरी आदत है, जिसको यदि नहीं छोडा गया तो व्यक्ति की जान तक जा सकती है । अत: कार्यकर्ता समूह के माध्यम से इससे निपटने हेतु व्यक्तियों को प्रेरित करता है, जिससे सदस्य एक दूसरे को देखकर व्यसन छोड़ने का प्रयास करते हैं।
3. समूह कार्यकर्ता द्वारा समूह के सदस्योंको द्रव्य व्यसन के संदर्भ में नई सूचनाओं को बतलाया जाता है ।
4. समूह कार्यकर्ता अपने सदस्यों को भावात्मक रूप से सहयोग प्रदान करता है, जिससे कि द्रव्य व्यसन व्यक्ति बाहरी तनाव को सहने में सक्षम हो सके।

समूह सदस्यों को सामाजिक कौशलों को प्राप्त करने के लिए कार्यकर्ता सहायता करता है, ताकि वह जीवन की कठिन परिस्थितियों का सामना कर सके न कि द्रव्य मादक द्रव्यों पर निर्भर हो जाए। कोरी एंड कोरी (1987) ने समूहों की कार्य करने की शैली को प्रभावकारी बनाने के लिए **महत्वपूर्ण सिद्धांत और तकनीक प्रदान की है जो कि निम्नवत है-**

1. मादक द्रव्यों के अंतर्गत आने वाले सभी उत्पादों, के सेवन के परहेज के लिए दबाव डालना महत्वपूर्ण है ।
2. समूह सदस्यों में न्यूनतम प्रोत्साहन की अति आवश्यकता होती है। प्रोत्साहन इसलिए भी आवश्यक है कि परिवार के मादक ग्रस्त रोगियों को परिवार के सदस्य समूहों में शामिल होने के लिए मजबूर करते है ।अत: वे समूह प्रक्रिया में सहयोग प्रदान करते हैं।
3. समूह के सदस्यों में मादक ग्रसित व्यक्तियों की शारीरिक और मानसिक स्थिति में सुधार करने के योग्य तरीके का ज्ञान होना आवश्यक है । मादक ग्रसित व्यक्ति के अत्यधिक नशा करने की वजह से उनकी क्षमता नष्ट हो जाती है, सोचने की शक्ति मंद हो जाती है । अत: समूह के सदस्यों के लिए यह आवश्यक है कि विष मुक्त करने के लिए उचित दवाओं का सेवन कराएँ।
4. सामाजिक समूह में एक विशिष्ट समूह ' उच्च शक्ति' निर्मित किया गया है । इस प्रकार के समूह में मादक सेवन करने की वजह से मानसिक रोग से पीड़ित व्यक्तियों को रखा जाता है । इस प्रकार मानसिक रोगियों के सुधार में वृद्धि की जा सकती है ।
5. समूह कार्य में सदस्यों को नवीन दृष्टिकोण का प्रयोग करने के लिए स्वतंत्रता दी जानी चाहिए ।

6. सामूहिक सदस्यों को विशिष्ट कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जैसे कि मादक ग्रसित अपंग व्यक्तियों के लिए शारीरिक संचालन के लिए योग शिविर की व्यवस्था।
7. कुछ महत्वपूर्ण तकनीकें, जिनके माध्यम से सामाजिक कार्यकर्ता अपने उद्देश्यों को स्पष्ट रूप से जन-जन तक पहुंचा सके।

- समस्या का समाधान
- उचित सामग्री
- विरोध करना।

➢ चिकित्सीय स्थापनों में समूह कार्य

मानव जीवन में स्वास्थ्य का महत्वपूर्ण स्थान है| यह कहा जा सकता है कि स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मस्तिष्क होता है| समाज कार्य में एक क्षेत्र विशेषीकरण के रूप में चिकित्सीय समस्याओं से ग्रस्त व्यक्तियों की सहायता की जाती है| जहां तक संभव हो ऐसी परिस्थितियों को विकसित करने का प्रयास किया जाता है, ताकि समस्याएं उत्पन्न न हो| चिकित्सीय समाज कार्य, समाज कार्य का एक विशिष्ट कार्य क्षेत्र है| चिकित्सीय समाज कार्य का क्षेत्र अधिकांशतः वैयक्तिक कार्यविधि तथा कभी-कभी सामूहिक, सामुदायिक कार्यविधि द्वारा भी संपन्न किया जाता है| चिकित्सीय समूह कार्य का लक्ष्य यह होता है कि वह चिकित्सीय सुविधाओं का उपयोग रोगियों के लिए अधिकाधिक लाभप्रद व सरल बनाने तथा चिकित्सा में बाधक मनोसामाजिक दशाओं का विवरण करे।

चिकित्सीय समूह कार्यकर्त्ता के प्रमुख कार्य-

- परामर्श और निर्देशन उपलब्ध करवाना।
- शैक्षणिक कार्यक्रमों में सहभागी बनाना।
- समाज कार्य शोध में सहयोग देना।
- सामुदायिक संगठन में सहयोग देना।
- संस्था के नीति निर्धारण तथा कार्यक्रम नियोजन में सहभागिता करते हुए इनकी प्रभाव पूर्णता को बढ़ाना।

चिकित्सालय/अस्पतालों में कार्य करने वाले समूहों के प्रकार

1. **शैक्षिक समूह** - ये समूह रोग से संबंधित सूचनाओं को जन-जन तक प्रसारित करते हैं, साथ ही रोग का शरीर पर होने वाला प्रभाव किस तरह हानिकारक हो सकता है और इससे बचाव के उपाय भी ये लोग प्रसरित करते हैं| उदहारण- एड्स के मरीज को एड्स से संबंधित जानकारी और उपचार हेतु सही जानकारी देकर उसका मार्गदर्शन करना।
2. **सहायता समूह** - ये समूह रोगी को आवश्यक सामाजिक और भावनात्मक सहयोग प्रदान करते हैं| ये रोगियों को समुचित सामना करने वाली तकनीकें उपलब्ध करवा सकता है, ऐसा करते समय वे व्यक्ति की आवश्यकताओ और पर्यावरण को ध्यान में रखते हैं।
3. **प्रशिक्षण समूह** - ये समूह रोगियों को नए कौशल पढ़ाने पर ध्यान केंद्रित करता है, जो उनके अस्पताल से छुट्टी मिलने पर उनकी सहायता करता है।

इस संबंध में कुछ सुझाव निम्नवत हैं -

1. अस्पताल में समूह कार्यकर्ता को यह समझना अत्यंत आवश्यक है कि वह किसी भी बैठक में शामिल होने के

लिए रोगी पर दबाव ना बनाए|

2. कार्यकर्ता को लचीला दृष्टिकोण अपनाना चाहिए|
3. रोगी का व्यक्तिकरण एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है|

➢ गली (स्ट्रीट चाइल्ड) के बच्चों के साथ समूह कार्य

एक राष्ट्रीय संगठन चाइल्ड लाइन देश भर में 0 से 18 साल तक के बच्चों के लिए 24 घंटे सेवा हेतु कार्यरत रहता है। ये संस्थान अपने स्वयंसेवकों के साथ मिल कर पूरे देश में जरूरतमंद बच्चों की मददकरता है, साथ ही लोगों को जागरूक करते हुए चाइल्ड लाइन की जानकारी देता है। ये संगठन लोगों से आह्वान करता है कि आज का बचपन राष्ट्र का भविष्य है, इसलिए चाइल्ड लाइन सब सेंटर के दोस्ती अभियान में सक्रिय भूमिका निभा कर गुमशुदा बच्चे शोषित बच्चे, घर से भागे हुए बच्चे, ऐसे बच्चे जिन्हें देखभाल की जरूरत है, बाल मज़दूर, ऐसे बच्चे जहां भी दिखे तो 1098 पर निशुल्क कॉल कर जानकारी दें, ताकि ऐसे बच्चों की मदद की जा सके। इस क्षेत्र में चाइल्ड लाइन सब सेंटर का कार्य सराहनीय है।

ये संगठन बेघर बच्चों को आश्रय देते हैं, बच्चे जब चाहे इन आश्रय स्थलों में आ सकते हैं और जब चाहे इन्हें छोड़ सकते हैं, इन आश्रय स्थलों में इन्हें भोजन, कपडे, रहने और शिक्षा तथा मनोरंजन की व्यवस्था कराई जाती है (इसे शेल्टर सुविधा कहा जाता है)। अनेक बच्चे इन एजेंसियों तथा इनके स्टाफ सदस्यों के साथ जुड़ जाते हैं और एक बार सौहार्द स्थापित होते ही स्टाफ सदस्य बच्चो को विभिन्न तरीके से प्रभावित करने का प्रयास करते हैं, जैसे- जीवन कौशलों और जीवन जीने के तरीकों पर प्रयोग करते हैं।, इस हेतु वे विभिन्न साधनों का प्रयोग करते है, इसमें सभी कार्यकलाप मुख्य रूप से समूह आधारित होते हैं, जैसे- खेल, चल चित्र दिखाना आदि ।

किसी एक क्षेत्र में अपना कार्य पूरा करने के पश्चात ये संगठन अपना एक कार्यक्रम करता है, जिसे ओपन हॉउस कहा जाता है। ओपेन हाउस कार्यक्रम बच्चों के लिए खुला मंच है जहां बच्चे अपने अनुभूतियों, अपनी समस्याओं को खुलकर रखते हैं एवं चाइल्ड लाइन से अपनी समस्याओं के वकालत की आशा करते हैं। चाइल्ड लाइन ओपेन हाउस में बच्चों द्वारा उठाई गई समस्याओं का लिखित प्रतिवेदन तैयार करते हैं एवं संबंधित विभाग को उससे अवगत कराने का कार्य करते हैं। इस कार्यक्रम में मुद्दे सीधे ही बच्चों से जुड़े हुए होते हैं। विभिन्न बीमारियों, मादक द्रव्यों के सेवन सवाल से दुष्प्रभाव, शोषण संबंधी आदि प्रमुख मुद्दों पर चर्चा की जाती है। विषयों को बहुत ही सरल और औपचारिक तरह से पेश किया जाता है। विषय से संबंधित प्रश्नों को श्रोताओं के सामने खुले तौर पर रखा जाता है तथा उनके उत्तर देने हेतु भी उन्हें प्रोत्सहित किया जाता है। जब आवश्यकता समझी जाती है तो स्पष्टीकरण भी प्रस्तुत किया जाता है। समिति इस प्रकार की कार्यनीति का पालन करती है जिससे सबसे संवेदनशील तथा ऐसे बच्चों के वर्गों को शामिल किया जा सके जो पहुँच से बाहर होते है। कभी-कभी वे लोग संस्थान के इस माहौल में खुद को मुक्त नहीं पाते ऐसे में संस्थान स्वयं को उन बच्चों के अनुसार ढ़ालने का प्रयास करता है तथा कभी-कभी खुद की नीतियों में भी बदलाव लाता है।

इस दृष्टिकोण के साथ ही समूह कार्य में संशोधन किया जाता है। लम्बे समय तक समूह कार्यकर्ता को पूर्व निश्चित स्थान और नियमित समय पर समूह की बैठकों के लिए दबाव नहीं दिया जाता है। बहरहाल, इस दृष्टिकोण में समूह कार्य के अनेक सिद्धांतों को देखा जा सकता है। उपर्युक्त संशोधनों के साथ स्वीकार्यतास्व-समूह निर्धारण, कार्यात्मक लचीलापन जैसे सिद्धांतों का प्रयोग किया जाता है। सदस्यों को परस्पर सीखने और भाग लेने के लिए उत्साहित करते हैं, सहयता परिवारों के लिए बच्चों के नेटवर्क के अंतर्गत अनुपूरक कार्यों को प्रोत्साहित किया जाता है एंजेंसी के संस्थागत समूह कार्य में नवीनीकरण देखा जा सकता है। समूह कार्य की स्वीकार्यता को सर्जन के रूप में देखा जा सकता है और इसका प्रयोग अन्य एजेंसियों में किया जाता है।

➢ आपदा पीड़ितों के साथ समाज कार्य

समाज कार्य आपदा पीड़ितों के साथ मुख्य रूप से सहायक होकर कार्य करता है। आपदा एक प्राकृतिक घटना है, जिससे व्यापक रूप से मानवीय नुकसान होता है और अनेक धन संपत्तियां नष्टहो जाती है। आपदा से केवल वे ही लोग प्रभावित नहीं होते, जिनकी मृत्यु हो गई है और जो गंभीर रूप से घायल हुए है, वरन वे व्यक्ति भी प्रभावित होते हैं, जो जीवित बचे हैं। इन सभी व्यक्तियों व उनके परिवारों को किसी-न-किसी रूप में सहायता की आवश्यकता होती है। चाहे वह सहायता भावात्मक रूप में हो या मनोविज्ञानिक रूप में। आपदा में किसी-न-किसी रूप में सभी व्यक्तियों को जन-जीवन प्रभावित होता है।

विद्वानों ने आपदा पीड़ित लोगों को छह श्रेणियों में वर्गीकृत करने का प्रयास किया है-

1. सर्वप्रथम पीड़ितों की श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं, जो आपदा से सीधे रूप में प्रभावित होते हैं।
2. दूसरी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं, जो प्रथम श्रेणी में प्रभावित व्यक्तियों के परिवार के सदस्य, मित्र, रिश्तेदार होते हैं।
3. तीसरी श्रेणी में उन व्यक्तियों को रखा जाता है, जिन्हें आपदा के बाद बचा लिया गया हो या जिनका इलाज चल रहा हो और वे ठीक होने की स्थिति में है।
4. चौथी श्रेणी में वे व्यक्ति आते हैं जो कि समुदाय हेतु आपदा कार्योंमें लगे होते हैं।
5. पांचवी श्रेणी– इस श्रेणी में उन लोगों को रखा जाता है, जिनके पास आपदा का कोई अनुभव नहीं होता, किंतु आपदा ग्रसित व्यक्तियों को देखकर उन्हें दुख होता है।
6. छठवी श्रेणी और अंतिम श्रेणी में उन लोगों को रखा जाता है जो कि आपदा से प्रभावित होते हैं और किसी-न-किसी संयोगवश बच जाते है

आपदा पीड़ितों की आवश्यकता

आपदा मनुष्य को आर्थिक एवं सामाजिक किसी-न-किसी रूप में प्रभावित करती है, जिसमें व्यक्ति को अनेक प्रकार के धन-जन की हानि होती है। इस कारण ऐसे व्यक्तियों की निम्नलिखित आवश्यकताओं देखा जा सकता है –

1. **मकान की आवश्यकता** – आपदा आने के पश्चात अनेक मकान ढह जाते है। ऐसी स्थिति में व्यक्तियों के निवास हेतु अस्थाई आश्रय की आवश्यकता होती है। अस्थाई आवश्यकता को पूरी करने के पश्चात पीड़ित व्यक्तियों को स्थाई मकान अति आवश्यक हो जाता है।
2. **भोजन** – भोजन मानव की मूलभूत आवश्यकता है। आपदा के पश्चात पीड़ितों हेतु उचित भोजन पहुंचाना अत्यंत आवश्यक होता है।
3. **चिकित्सीय सहायता** - जो व्यक्ति आपदा के समय किसी-न-किसी रूप से घायल हो गए है, उनको उचित दवाईयों और देखभाल की आवश्यकता है।
4. **कानूनी सहायता** – पीड़ितों के जीवन-यापन हेतु उचित प्रकार से क्षतिपूर्ति हेतु कानूनी सहायता की आवश्यकता है, जिससे वे पुन: मुख्य धारा में वापस लौट पाए।
5. पीड़ितों को उर्पयुक्त सहायता के अतिरिक्त मनोसामाजिक सहायता के साथ-साथ उनमें आत्मसम्मान जगाने की भी आवश्यकता होती है।

➢ समुदाय में युवाओं के साथसमूह कार्य

समाज में प्रत्येक वर्ग बच्चों, किशोरों तथा युवाओं के माध्यम से सामाजिक समूह कार्य किया जा सकता है। इस कार्य द्वारा समाज मे व्याप्त विभिन्न प्रकार की समस्याओं का समाधान व्यहारिक रूप से किया जा सकता है,

जिसमें युवाओं का एक महत्वपूर्ण स्थान होता है। इस समूह कार्य को प्रभावित करने वाले मुख्य कारणों को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है –

1. शैक्षिक योग्यता
2. विद्यालय का आकार
3. अध्ययनशील है या नहीं
4. परिवार का प्रकार
5. पडोस का माहौल
6. जीवन शैली
7. स्वयं का व्यक्तित्व

समाज में व्याप्त समस्याओं के निराकरण हेतु अनेक प्रकार के युवा-समूहों का निर्माण किया जा सकता है, जिनके माध्यम से उचित समाधान को खोजा जा सके।

1. **शैक्षिक समूह** – इस प्रकार के समूह के अंतर्गत समाज में व्याप्त कठिन परिस्थितियों के निराकरण से संबंधित सुझाव दिए जाने चाहिए। अत समूह सदस्यों को प्रायोगिक रूप से सहायता प्रदान करनी चाहिए।
2. **मनोरंजनात्मक समूह** – इस प्रकार के समूह में अपने सदस्यों को छोटी-छोटी खुशियां मनाने के लिए प्रोत्साहन आवश्यक होता है। अत: सदस्य बड़े जोखिमों को भी सहजता से सुलझाने में सफल होता है और स्वस्थ जीवन शैली के विकास में सहयोग प्रदान करता है।
3. **व्यक्तित्व विकास समूह** – इस समूह में प्रत्येक सदस्य के स्वयं का आकलन कराना चाहिए। उनकी योग्यताओं एवं आत्मविश्वास को बढ़ाने के लिए प्रोत्साहन देना चाहिए।

व्यवहार/ कार्य

सामाजिक समूह कार्य में समूहगत कार्य करने के लिए 'व्यवहार' का बहुत महत्वपूर्ण योगदान होता है। अत: युवाओं के साथ किस तरह का व्यवहार करना चाहिए यह अत्यंत आवश्यक होता है, इसके अंतर्गत निम्न बिंदु ओं की चर्चा की जा रही है-

1. उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए युवा वर्ग के समक्ष ऐसे प्रसंग रखना चाहिए जिनका प्रतिरोधन किया जा सके। समूह कार्य में स्वयं का निर्णय महत्वपूर्ण होता है। अत: लक्ष्य तक पहुँचने के लिए उन मार्गों व साधनों का उपयोग करना चाहिए, जिसमें सदस्यों को अलग किए बिना लक्ष्य को प्राप्त किया जा सके।
2. समूह कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है कि उद्देश्य प्राप्ति हेतु आपस में एक-दूसरे के प्रति विश्वास होना चाहिए। अत: विश्वास स्थापित करने हेतु सभी सदस्यों को ईमानदारी का परिचय देना चाहिए।
3. समूह के सभी सदस्य अपने-अपने अनुभवों को युवाओं के सामने रख सकते हैं ताकि बच्चे और युवा जो उचित समझे उसे सहजता से अपना सके।
4. समूह के प्रत्येक सदस्य को ध्यान रखने की आवश्यकता है कि नीति-निर्देश समूह के लाभ के लिए एवं व्यक्तिगत हित के लिए किसी भी वस्तु को उपयोग नहीं करना चाहिए।
5. युवा वर्ग के समक्ष यह जताना आवश्यक है नहीं है कि वह अच्छा या बेहतर जानता है।
6. जब यह निश्चित हो जाए कि समूह के सभी सदस्य कार्य करने के लिए दक्ष है, तभी उन्हें कार्य सौपना चाहिए। इस दौरान कार्य करते समय यदि कोई गलती होती है, तो उसे नज़रअंदाज़ करनी चाहिए जिससे कि सदस्य हतोत्साहित ना हों।
7. समाज कार्य के लिए समूह का चयन करते समय समान लिंग, समान आयु के वर्ग का चयन करना चाहिए।

2.3 सारांश

समूह समाज कार्य का दायरा दिनों-दिनों बढ़ता जा रहा है। सामुदायिक स्थापनों के माध्यम से समूह कार्य विभिन्न संकट ग्रस्त व्यक्तियों एवं क्षेत्रों में किया जा रहा है, जिसमें प्रमुख रूप से नशाबंदी केंद्रों एवं नशा सेवन करने वाले व्यक्तियों के साथ, चिकित्सीय स्थापनों में, गली (स्ट्रीट चाइल्ड) के बच्चों के साथ, आपदा पीड़ितों के साथ एवं समुदाय में युवाओं के साथ जैसे क्षेत्रों को मुख्यरूप से इंगित गया है। इन क्षेत्रों में समूह कार्यकर्ता समूह कार्य की विभिन्न तकनीकों एवं निपुणताओं के माध्यम से समूह की समस्याओं का अध्ययन कर निराकरण का प्रयास करता है, जिससे कि समूह का प्रत्येक सदस्य समस्याओं का निपटारा उचित प्रकार से कर सके और समाज में समायोजन स्थापित कर सके।

2.4 बोध प्रश्न

1. सामूदायिक स्थापनों में समूह कार्य को स्पष्ट कीजिए।
2. द्रव्य-व्यसन से आपका क्या तात्पर्य है ?
3. आपदा के क्षेत्र में समूह कार्यकर्ता द्वारा किए जाने वाले कार्यों को सूचीबद्ध कीजिए।
4. समूह कार्य में युवाओं की भूमिका को सुनिश्चित कीजिए

2.5 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. सिद्दकी, एच.वाई.(2008). *ग्रुप वर्क क्योरीज एवं प्रेक्टिस*, जयपुरः रावत पब्लिकेशन
2. कोरी एवं कोरी (1987). *ग्रुप्स प्रोसेस एंड प्रैक्टिस,* कैलीफोनिया:कोले पब्लिकेशन कंपनी।
3. मिश्रा, प्रयागदीन(2008). *सामाजिक सामूहिक* कार्य. लखनऊ : हिंदी संस्थान
4. सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य.* लखनऊ:हल्दानी प्रकाशन।
5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010).*समूहों के साथ कार्य करना.* दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ।
6. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010). *समाज कार्य.* लखनऊ : जुबली एच फाउंडेशन।
7. कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।
8. सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012) *सामूहिक कार्य, हल्दानी* : उत्तरायन प्रकाशन।
9. कोनोप्का, जिसेला (1963). *सोशियल ग्रुप वर्कर ए हेल्पिंग प्रोसस* नई दिल्ली: एस.जे. प्रिंटिस हाल।

इकाई – 3 संस्थागत स्थापनों में समूह कार्य

इकाई की रूपरेखा

3.0 उद्देश्य

3.1 प्रस्तावना

3.2 विभिन्न स्थापनों में समूह कार्य

3.2.1 चिकित्सा के क्षेत्र एवं मनोसामाजिक स्थापनों में समूह कार्य

3.2.2 युवा के क्षेत्र में समूह कार्य

3.2.3 महिला एवं बाल-विकास के क्षेत्र में समूह कार्य

3.2.4 विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति और समूह कार्य

3.2.5 समूह कार्य और वृद्ध चिकित्सा देखभाल

3.2.6 आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ समूह कार्य

3.2.7 अस्पतालों में समूह कार्य

3.2.8 समूह कार्य और बाल कल्याण

3.3 सारांश

3.4 बोध प्रश्न

3.5 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

3.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

- विभिन्न स्थापनों में सामाजिक समूह कार्य का वर्णन कर सकेंगे।
- विभिन्न स्थापनों में सामाजिक समूह कार्य की भूमिका को जान सकेंगे।
- विभिन्न स्थापनों में समूह कार्य के स्थान को विश्लेषित कर सकेंगे।

3.1 प्रस्तावना

समूह कार्य समाज कार्य की एक महत्वपूर्ण प्रणाली है, जिसके द्वारा व्यक्तियों को सामाजिक लक्ष्यों की प्राप्ति होती है। सामाजिक समूह कार्य संबंधोंपर आधारित एक प्रक्रिया है। यह संबंध उन समूह सदस्यों तथा कार्यकर्ता (संस्था समूह) के बीच स्थापित किया जाता है, जिनके साथ वह कार्य करता है। इस प्रणाली द्वारा समूह के सदस्यों की शिक्षा, विकास, समृद्धि साथ ही समूह में व्यक्तिगत संपर्कों के माध्यम से व्यक्ति में विकास और सामाजिक समायोजन की प्राप्ति पर बल दिया जाता है| अनेक संस्थानों में समूह कार्य का प्रयोग किया जाता है, जैसे- अस्पताल, स्कूल, बाल कल्याण, महिला कल्याण, मनोचिकित्सालय, स्लम क्षेत्र, आंगनवाडी इत्यादि। यदि समूह के साथ प्रभावी ढंग से कार्य किया जाए तो इन क्षेत्रों की समस्याओंको आसानी से दूर कियाजा सकता है। वर्तमान समय में समूह कार्य दायरा बढ़ता जा रहा है और इसने समाज के प्रत्येक क्षेत्र में अपने आप को सार्थक साबित किया है। यह कार्य विभिन्न संस्थाओं औरसंगठनों के प्रयास से ही संभव हो पाता है। प्रत्येक संगठन

अपने आप में एक अलग विशेष प्रकार की छवि रखता है और उसे उसी प्रकार से ही जाना जाता है। इस इकाई में हम विभिन्न संस्थागत स्थापनों और उनकी विशिष्ट विशेषताओं तथा इन संस्थानों में समूह कार्य के उपयोग पर चर्चा करेंगे।

3.2 संस्थागत स्थापनों में समूह कार्य

समाज कार्य दिन-प्रतिदिन अनेक क्षेत्रों में विस्तारित होते जा रहा है। आज समाज का कोई ऐसा भाग नहीं है जहाँ समाज कार्य हस्तक्षेप नहीं कर रहा है। इसके कार्य को देखते हुए अन्य क्षेत्रों में भी इसकी उपयोगिता महसूस की जा रही है। समाज कार्य में समूह कार्य के माध्यम से यह अन्य संस्थाओं के साथ मिलकर व्यक्तियों एवं समूहों की समस्या को ज्ञात कर उनके समाधान का प्रयास करता है। विभिन्न क्षेत्रों में समूह कार्य के माध्यम से निम्न प्रकार के कार्य किए जाते हैं।

3.2.1चिकित्सा के क्षेत्र में समूह कार्य - चिकित्सीय समाज कार्य आधुनिक समय में सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य माना जाने लगा है। विभिन्न अस्पतालों के माध्यम से यह कार्य विभिन्न प्रकार की प्रणाली के माध्यम से कार्यकर्ता द्वारा दिया जाने लगा है। मानव समाज एक परिवर्तनशील समाज है। इसमें निरंतर परिवर्तन होता रहता है। बढ़ते औद्योगीकरण, नगरीकरण एवं संयुक्त परिवार के पतन ने दिनोंदिन कई प्रकार की आर्थिक सामाजिक एवं मनोसामाजिक समस्याओं को जन्म दिया है। परिणामस्वरूप इन समस्याओं के निवारण एवं निराकरण हेतु चिकित्सीय समाज कार्य की महत्त्वपूर्ण उपयोगिता को देखा जा रहा है। प्रोफेसर राजाराम शास्त्री ने चिकित्सीय समाज कार्य को परिभाषित करते हुए कहा था कि चिकित्सीय समाज कार्य का मुख्य उद्देश्य चिकित्सीय सहुलियतों का उपयोग रोगियों के लिए अधिकाधिक फलप्रद एवं सरल बनाने तथा चिकित्सा में बाधक मनोसामाजिक दशाओं का निराकरण करना है। चिकित्सीय समाज कार्य के इतिहास पर यदि नज़र डाली जाए तो इसकी शुरूआत व्यवस्थित रूप से अमेरिका के मैसाचुसेट जनरल अस्पताल में हुई। डॉ. रिचर्ड सी केवट पहले व्यक्ति थे जिन्होंने यह स्वीकार किया कि रोगों का सामाजिक ज्ञान अत्यंत आवश्यक है, क्योंकि इसकी सामाजिक स्थिति का प्रभाव रोगी पर पड़ता है। 1920 के दशक में समाज कार्यकर्ताओं की चिकित्सा के क्षेत्र में भर्ती बढ़ती हुई नज़र आई है, जिसके माध्यम से अपाहिज एवं आवश्यकता ग्रस्त व्यक्ति के उपचार हेतु कार्यकर्ताओं को नियुक्त किया गया। भारत में चिकित्सीय समाज कार्य के इतिहास पर यदि नज़र डाली जाए तो 1946 में सर्वप्रथम चिकित्सा समाज कार्यकर्ता की नियुक्ति बंबई के जेजे. अस्पताल में हुई। समूह कार्यकर्ता अपनी निपुणताओं से संभावित रोगियों के लिए समूह कार्य तकनीकों का प्रयोग मनोचिकित्सीय प्रकार से करता है एवं उनके परिवारों को भावनात्मक सहयोग उपलब्ध कराने के लिए मदद करता है। समूह कार्यकर्ता द्वारा इस प्रकार का प्रयास किया जाता है कि सेवार्थी को किस प्रकार की चिकित्सीय सुविधा उपलब्ध कराई जाए, जिससे वह अपने परिवार में सामंजस्य स्थापित कर पाए। समूह कार्य के माध्यम से रोगी और उनके परिवारों के सदस्यों को सहयोगात्मक चिकित्सा उपलब्ध कराई जाती है। समूह कार्य दुश्चिंता,तनाव एवं एकाकीपन जैसी स्थिति को दूर करने में सहायता करता है। समूह कार्य प्रक्रिया, सहज प्रक्रिया में तथा चिकित्सा प्रक्रिया में उनको भागीदारी के योग्य बनाता हैं। आज के समय में यदि देखा जाए तो राष्ट्रीय ग्रामीण स्वास्थ्य मिशन (एन.आर.एच.एम) जैसे सरकारी कार्यक्रमों में सामाजिक कार्यकर्ताओं की नियुक्ति होने लगी है,जिसमें बच्चों एवं माताओं के पोषाहार से लेकर उनके संपूर्ण रोगों का अध्ययन किया जा रहा है। वर्तमान में चिकित्सीय समूह कार्य का क्षेत्र अत्यधिक बढ़ता जा रहा है और यह सरकारी एवं निजी अस्पताल देखा जा सकता है।

4. मनोचिकित्सीय स्थापनों में समूह कार्य

यह लोगों की व्यवहार संबंधी विविध समस्याओं में बहुत उपयोगी होता है। समूह कार्यकर्ताकई तरह की तकनीकें प्रयोग करते हैं, जैसे- प्रायोगिक संबंध-निर्माण, संवाद, संचार तथा व्यवहार-परिवर्तन आदि। इनसे रोगी का

मानसिक-स्वास्थ्य एवं सामूहिक-संबंध (group relationships) सुधरते हैं।

मनोचिकित्सा में समूह कार्य की आवश्यकता/उद्देश्य-सबसे पहले हम निम्न बिंदुओं के आधार पर मनोचिकित्सीय उपचार प्रक्रिया में समूह कार्य के महत्व और उसकी आवश्यकता पर प्रकाश डालेंगे-

1. किसी व्यक्ति में अपने कल्याण के प्रति भावना को बढ़ाना|
2. रोगी को अपने सर्वोत्तम सामर्थ्य की प्राप्ति या जीवन की समस्याओं से बेहतर संघर्ष के लिए प्रोत्साहित करना|
3. प्रशिक्षण द्वारा उसे सक्षम बनाने का प्रयास करना|
4. यह रोगी के सभी विचारों की अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करता है, जिसमें कल्पनाएं और स्वप्न शामिल होते हैं, जिसके द्वारा विश्लेषक उस अचेतन संघर्ष का निरूपण करता है जो रोगी में लाक्षणिक और व्यवहारगत समस्या का कारण है।

वैसे मानसिक सामूहिक कार्य जो मानसिक अथवा आवेगात्मक असंतुलनकी स्थिति में समूह कार्यकर्ता द्वारा किए जाते हैं, मनोचिकित्सीय समूह कार्य कहलाते है। इस प्रकार के समूह कार्य को समूह कार्यक्र्त्ता स्वयं भी कर सकता है या कभी-कभी उसे किसी मनोचिकित्सक की जरूरत भी पड़ सकती है। मनोचिकित्सकों के साथ मिल कर ये सहयोग कार्य मानसिक अस्पतालों, उपचार सदनों तथा निजी तौर पर कार्य करने वाले मानसिक चिकित्सकों की व्यवस्थाओं के अंतर्गत हो सकता है|

मनोचिकित्सीय समूह कार्य का प्रयोग विशेष रूप से प्रशिक्षित ऐसे व्यक्तियों द्वारा किया जाता है जो कुछ सीमा तक मनोचिकित्सीय विज्ञान के ज्ञान से युक्त होते हैं तथा वे इस ज्ञान को वैयक्तिक सेवा कार्य और समूह कार्य प्रकिया में अभ्यास कर प्रयोग करते रहते हैं | ये लोग मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम पर विशेष ध्यान देने वाली संस्था में कार्य करते है। मनोचिकित्सीय समाज कार्यकर्ता सामाजिक असमायोजन के उन सेवार्थियों के साथ कार्य करता है, जिनमें मनोस्नायुविकृति अथवा मनोविकृति के प्रारंभिक अवस्था में समाधान करने का विशेष महत्व होता है। यह कार्य वैयक्तिक या समूह कार्य, शोध कार्य, शैक्षणिक कार्य हो सकता है|

मनोचिकित्सीय समूह कार्यकर्ता के कार्य- मनोचिकित्सीय समूह कार्यकर्त्ता के निम्नलिखित कार्य है -

1. **रोगी का मानसिक परीक्षण तथा निदान करना**- रोगी के रोग से संबंधित इतिहास जानने के बाद उसकी समस्या का निदान किया जाता है। इसका तरीका विभिन्न संस्थाओं द्वारा अलग अलग प्रकार से किया जाता है इसलिए इसका कोई निश्चित प्रारूप नहीं है। इस कार्य हेतु कार्यकर्ता को मनोचिकित्सा से संबंधितअच्छी जानकारी का होना आवश्यक है|
2. **उपचार** - मानसिक रोगों के बहुत से कारण व्यक्तिगत, सामाजिक, पारिवारिक या मनोवैज्ञानिक होते है तथा इन रोगों का वास्तविक उपचार भी इन्हीं में सन्निहित होता है। हमारे देश में इस समस्याओं का उपचार समूह सामाजिक कार्यकर्ता द्वारा कुछ स्थानों तक ही सीमित है। कार्यकर्ताओं द्वारा रोगी का उपचार मनोसंजिक पद्धति से किया जाता है| जब एक ही जैसी समस्या से व्यक्ति झूझ रहा होता है तो कार्यकर्तासमूह उनके साथ मिल कर समूह में इसे सुलझाते है।
3. **अनुरक्षण**- जब रोगी उपचार के पश्चात घर जाता है तब कार्यकर्ता द्वारा उसके घर वालों को उसके उपचार संबंधी संपूर्ण जानकारी दी जाती है साथ ही उचित परामर्श और दिशा निर्देश भी दिए जाते हैं।
4. **पुनर्वास** – मानसिक रोगियों के पुनर्वास में भी कार्यकर्ता की महती भूमिका रहती है। ऐसे रोगी जो गंदे रहते है, नाख़ून नहीं काटते, नहाते नहीं उन्हें स्वच्छ रखने के लिए तथा दैनिक क्रियाओं का प्रशिक्षण देने हेतु जो कार्य होता है उसे पुनर्वास का प्रथम पहलू कहा जा सकता है।

3.2.2 युवा के क्षेत्र में समूह कार्य - युवा देश का निर्माता होता है। आज भारत की लगभग आधी आबादी युवा है। युवा शक्ति, ऊर्जा, क्षमता, कुशलता एवं परिश्रम से भरपूर होता है और यदि उन्हें उचित मार्गदर्शन दिया जाए तो

यह समाज के निर्माण में महत्वपूर्ण हो सकते हैं। किंतु वर्तमान समय में युवाओं को भीअनेक समस्याओं जैसे बेरोज़गारी, नशाखोरी एवं अपराध ने जकड़ लिया है, जिससे उनका एवं राष्ट्र का विकास रूका हुआ नज़र आ रहा है। युवाओं की भागीदारी की ओर यदि नज़र डालें तो राजनैतिक दल से लेकर हर कोई युवाओं के महत्व को स्वीकार कर रहा है एवं विद्यार्थी नेतृत्व को महत्व दे रहे हैं। सभी विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में विद्यार्थी विंग स्थापित किए गए हैं। ये समूह संगठित प्रयासों के माध्यम से विद्यार्थी समुदाय की सामान्य आवश्यकताओं और समस्याओं पर ध्यान केंद्रित कर उनका समाधान निकालते हैं। भारत सरकार ने1988 में निर्मित राष्ट्रीय युवा नीति को वर्ष 2003 में और अधिक व्यापक व सशक्त रूप प्रदान किया है, जिससे युवाओं का सर्वांगीण विकास किया जाए। अनेक संस्थाओं जैसे युवा समाज़एन.सी.सी., ग्रामीण युवा क्लबों की स्थापना कराई गई है। कुछ गैर-सरकारी युवा और विद्यार्थी संगठनों जैसे एम.सी.ए. वाई, डब्ल्यू.सी.ए., स्काउट्स और गाइड्स इत्यादि का उद्गम हुआ है। नेहरू युवा केंद्र की स्थापना 1972 में हुई। यह छठी पंचवर्षीय योजना का एक भाग था, जिसका भारत में समूह कार्य के ऐतिहासिक विकास के संदर्भ में वर्णन किया जा सकता है। इस केंद्र के कारण ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं को प्रशिक्षण देकर उनमें सामूहिक भावना को पैदा कर समुदाय आधारित कार्यों को करना एव युवा नेतृत्व का निर्माण करना था जो अत्यंत ही प्रभावी साबित हुआ। 1969 में गैर-सरकारी मंच पर विश्व युवक केंद्र का निर्माण कर युवा संगठन तथा युवा सेवाओं कोविकसित करने की आवश्यकता एवं उनमें जागरूकता लाने के लिए प्रशिक्षण देकर कार्यकर्ता तैयार करने पर बल दिया गया।

3.2.3महिला एवं बाल-विकास के क्षेत्र में समूह कार्य - समाज कार्य के क्षेत्र में एक और महत्वपूर्ण कार्य महिला एवं बालविकास का है जो आज के दौर में समूह कार्यकर्ताओं द्वारा आवश्यक रूप से किया जा रहा है। प्राचीन काल से ही महिलाओं को अधिक कमज़ोर माना जाता रहा है। उनके साथ हमेशा से ही भेदभाव किया जाता रहा है। हमेशा ही लिंगभेद होते आ रहा है, जिस कारण से वे हमेशा पिछड़ी रही। जबकि यह सर्वविदित है कि महिलाओं की भागीदारी के बिना राष्ट्र व समाज का विकास असंभव है। समूह कार्य के माध्यम से आवश्यकता ग्रस्त महिलाओं को शिक्षण प्रशिक्षण देकर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का कार्य किया जाता है। यदि कहें तो महिलाओं के सर्वांगीण विकास हेतु सरकार द्वारा भी कुछ पहल की जारही है, जिनमें प्रमुख रूप से वर्ष 1990 को बालिका वर्ष के रूप में मनाना, वर्ष 2001 को महिला वर्ष के रूप में मनाना, यू.एन.ओ.द्वारा 1975 को अंतरराष्ट्रीय महिला वर्ष और 1975-85 को अंतरराष्ट्रीय महिला दशक के रूप में घोषित करना और और वैश्विकात्तर पर 8 मार्च को महिला दिवस के रूप में मनाना शामिल है। भारत सरकार द्वारा प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में भी महिलाओं को लेकर अनेक कार्यक्रमों को संचालित किया जा रहा है। सरकार द्वारा मुख्य रूप से निम्नलिखित प्रमुख योजनाएँ चलाई जा रही है, जिनमें प्रमुख हैं -

डवाकारा योजना 1982 में एकीकृत ग्राम्य विकास योजना की सहायक योजना के रूप में ग्रामीण क्षेत्रों की महिलाओं एवं बच्चों के लिए प्रारंभ की गई। महिला विकास निगम(1986-87) में महिला विकास निगम को इस उद्देश्य के साथ बनाया गया कि महिलाओं में अधिक रोज़गार के साधन प्रदान किए जाएँ। महिलाओं को स्वरोज़गार हेतु वित्तीय सहायता-महिलाओं में उद्यम को बढ़ावा देने के लिए निगम अपने फंडों में से3 प्रतिशत से 7 प्रतिशत ब्याज दर पर ऋण देता है। इसके अतिरिक्त विशेष केंद्रीय सहायता के अधीन अनुसूचित जाति की पीले कार्ड धारक महिलाओं को स्वीकृत ऋण का25 से 35 प्रतिशत तक की पूँजी में सब्सिडी दी जाती है। महिला समाख्या कार्यक्रम (1988) के माध्यम से समाज एवं अर्थव्यवस्था में महिलाओं द्वारा अपने योगदान की उपयोगिता पहचान सकने में उनकी सहायता करना एवं वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नए जीवन का संचार करना एवं यह विश्वास दिलाना कि महिलाएँ स्वयं अपनी एवं अपने बच्चों की देखभाल कर सकती है। इस प्रकार सरकार द्वारा अनेक कार्यक्रमों को महिलाओं के विकास हेतु चलाया जा रहा है जिसमें समूह कार्यकर्ता समूह कार्य के माध्यम से इन कार्यक्रमों को संचालित करने में सहायता करता है। महिलाओं को ज्यादा-से-ज्यादा सहभागी होने

के लिए प्रेरित करता है। दूसरी ओर बालकों के विकास हेतु समूह कार्य को समझे तो भारत सरकार द्वारा वर्ष1974 में बाल-नीति का निर्माण किया गया, जिसमें अनेक प्रावधान बच्चों के लिए किए गए और साथ-ही-साथ प्रत्येक पंचवर्षीय योजना में भी बच्चों के कल्याण हेतु कार्यक्रमों को सुनिश्चित किया गया है। विभिन्न संचालित योजनाओं जैसे महिला एवं बाल विकास मंत्रालय की स्थापना 1985 में की गई। इन दोनों के सर्वांगीण विकास पर जोर दिया जा रहा है। समेकित बाल विकास सेवा (आईसीडीसी) 2 अक्टूबर 1975 से इस उद्देश्य के साथ बनाया गया कि 0-6 वर्ष के बच्चों के पोषाहार और स्वास्थ्य में सुधार लाया जाए। संविधान की धारा 21 ए में भी 6 से 14 वर्ष के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा का प्रावधान किया गया है। 1995 से मध्याह्न भोजन को प्रारंभ किया गया है। इन सभी कार्यक्रमों में गैर-सरकारी संगठन और समूह कार्यकर्ता अपने स्तर से कार्यक्रमों को क्रियान्वित करने में सहायता करते हैं और समूह प्रयास से यह तय करते हैं कि कैसे इन योजनाओं को सफल बनाया जाए, जिससे कि महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में भी समूह कार्यकर्ता अपनी अहम भागीदारी को सुनिश्चित कर सकें।

3.2.4 समूह कार्य और वृद्ध चिकित्सा देखभाल

भारतीय संविधान के अनुच्छेद 41 में वर्णित राज्य के नीति निर्देशक सिद्धांतों के अंतर्गत देश की विभिन्न राज्य सरकारों तथा संघीय क्षेत्रों ने वृद्ध व्यक्तियों की सहायता हेतु वृद्धावस्था पेंशन योजना को प्रारंभ किया है। सर्वप्रथम इस योजना को उत्तर प्रदेश सरकार ने वर्ष 1957 में प्रारंभ किया। इसके अलावा हैल्पेज न्यासकोष, हैल्पेज इंडिया (1978), एज-केयर-इंडिया (1980) एवं दिवा केंद्र इत्यादि को स्थापित कर वृद्धों की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जा रहा है, जिसमें समूह कार्यकर्ता वृद्धों के कार्यों को सृजनात्मक कार्यक्रमों के रूप में बदलने का प्रयास करता है। उनमें उत्पन्न सांवेगिक समस्याओं को दूर करने का भी प्रयास करता है। परिवार में समायोजन स्थापित करने में सहायता करता है और संगठित मनोरंजन के साधन को उपलब्ध कराने में सहायता करता है। इसके साथ-साथ वृद्ध चिकित्सा भी आज के वर्तमान समय में बहुत अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। परिवारों का विघटन, एकाकी परिवार शहरों की ओर पलायन इत्यादि समस्याओं ने वृद्धों की समस्याको अत्यधिक बढ़ा दिया है। सरकारी आकड़ों की ओर यदि ध्यान आकर्षित किया जाए तो भारत में लगभग 1000 वृद्धआश्रम है। इसके अतिरिक्त अन्य स्वैच्छिक, गैरसरकारी एवं व्यावसायिक संगठनों के माध्यम से वृद्ध सहायता का कार्य किया जाता है। वृद्ध व्यक्तियों की अपनी भिन्न प्रकार की समस्याएँ होती हैं। इनमें मुख्य रूप से मानसिक और शारीरिक रोग प्रमुख होते हैं। वृद्ध व्यक्तियों को एक अलग प्रकार की देखभाल की आवश्यकता होती है। कोरी एवं कोरी ने (1982, 348) ने वृद्धावस्था की निम्न मुख्य समस्याओं की ओर अपना ध्यान आकर्षित किया है -

- अकेलापन तथा सामाजिक अलगाव, परिवार द्वारा त्यागे जाने की भावना, जीवन में साधन उपलब्ध करने का संघर्ष, निर्भरता, काम न होने की स्थिति में खाली पन का होना। निराशा तथा अकेला पन, मृत्यु का भय व अन्य लोगों की मृत्यु होने पर संताप होना वृद्धों की प्रमुख रूप से विशेषता है।
- अन्य स्थानों पर पहुँचनें की समस्या।
- समूह सत्रों पर ध्यान देने की कमी आना।
- विरोध के स्थान पर सहायता और उत्साह की आवश्यकता।
- सुनने और समझने की अत्यंत आवश्यकता।

उपर्युक्त प्रकार से वृद्धों की समस्याओं को देखा जा सकता है।

वृद्धों की समस्याओं के निराकरण हेतु कुछ सामाजिक समूहों का निर्माण किया जाता है जो कि उनकी समस्याओं को काफ़ी हद तक सुलझाने में सार्थक साबित होते हैं।

- **सहायता समूह –**

सहायता समूह का कार्य वृद्धों की मनोसामाजिक समस्याओं के समाधान हेतु किया जाता है। बहुधा देखा जाता है कि वृद्ध एक साथ नहीं रहते है और यदि कुछ वृद्ध एक साथ रहते भी है तो उनमें अंतःक्रिया कम ही होती है। सहायता समूह द्वारा अकेलेपन की समस्याओं को दूर किए जानेका प्रयास किया जाता है। अनेक सहायता समूह कार्यकलाप सुझाव प्रस्तुत करते है, जिससे कि अन्य सदस्यों के साथ सुंदर स्थलों पर जाकर अनेक सामाजिक गतिविधियों, जैसे – चित्र बनाकर, बीते समय की बातों को याद करके अपने आप में आनंद की अनुभूति करते हैं।

- **मनोरंजनात्मक समूह –**

मनोरंजनात्मक समूह द्वारा वृद्धों की सहायता का कार्य अनेक प्रकार के खेलों का आयोजन करके किया जाता है, जिससे उनके मन को बहलाया जा सके। इस प्रकार के कार्यकलापों द्वारा वृद्धों को विभिन्नसमूहों में बांटकर उन्हें कार्यक्रम में भाग लेने हेतु प्रेरित किया जाता है, जिससे प्रत्येक सदस्य की प्रत्यक्ष भागीदारी हो सके। खेल का चयन वृद्धों की पसंद एवं आवश्यकताओं पर निर्भर होता है।

- **चिकित्सीय समूह –**

चिकित्सीय समूह में मानवीकृत एवं गैर मानवीकृत चिकित्साओं को शामिल किया जाता है। मानवीय चिकित्सा द्वारा वार्तालाप संबंधी व्यवहार चिकित्सा और संज्ञानात्मक व्यवहारपरक चिकित्सा को शामिल किया जाता है। जबकि गैर-मानवीकृत चिकित्सा में गैर-संरचनात्मक साधनों का प्रयोग किया जाता है, जिसमें सदस्यों और जीवन समीक्षा भावनात्मक स्थितियों पर गैर-संरचनात्मक साधनों से ध्यान केंद्रित किया जाता है।

3.2.5 विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति और समूह कार्य

विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति, जिन्हें पूर्व में बाधित व्यक्ति कहा जाता था, ऐसे व्यक्ति जो अपनी व्यक्तिगत, शारीरिक, मानसिक एवं सामाजिक सीमाओं एवं परिस्थितियों के कारण अपना जीवन सामान्य रूप से बिताने में असमर्थ हैं, को विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्ति कहा जाता है । ऐसे व्यक्तियों को भारत सरकार के समाज कल्याण विभाग ने 4 भागों में बाँटा है- प्रथम, शारीरिक दृष्टि से विकलांग- ऐसे व्यक्ति जिनकी शारीरिक क्षमता उनके किसी भी शारीरिक अंग द्वारा ह्रास, विकृति या किसी अन्य कारण से खराब हो गई है । दूसरे, नेत्रहीन, तीसरे मूक-बधिर और चौथे, मानसिक दृष्टि से मंदित/ कुष्ठ रोगी। इन सभी व्यक्तियों के साथ सामाजिक कार्यकर्ता समस्याओं को समझकरउनका उपचार करता है तथा उसे संस्था में समुदाय में उपलब्ध साधनों के उपयोग में सहायता करता है। साथ ही वह परिवार के सदस्यों को सहयोग एवं मनोसामाजिक समस्याओं का समाधान करने में सहयोग प्रदान करता है । विशेष योग्यता रखने वाले व्यक्तियों के लिए भारत सरकार द्वारा विभिन्न क्षेत्रों में कुछ महत्त्वपूर्ण संस्थाओं को बनाया गया हैजिसमें इन व्यक्तियों की आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर इनका निर्माण किया गया है ।

संस्थान	मंत्रालय	स्थान	वर्ष
राष्ट्रीय दृष्टि विकलांग संस्थान (NIVH)	केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के अधीन	देहरादून	1950
राष्ट्रीय अस्थि विकलांग संस्थान (NIOH)	कल्याण मंत्रालय द्वारा स्थापित	कलकत्ता	1978
अली यावर जंग राष्ट्रीय श्रवण विकलांग संस्थान	कल्याण मंत्रालय के अधीन	मुंबई	9 अगस्त 1983

(AYJNIHN)			
राष्ट्रीय मानसिक विकलांग संस्थान (NIMH)	कल्याण मंत्रालय के अधीन	स्वायत्त संस्था	1984

उपर्युक्त क्षेत्रों के साथ मिलकर समूह कार्यकर्ता द्वारा समाज की समस्याओं को दूर करने का प्रयास किया जाता है जिसमें व्यक्ति समाज में अपना स्थान सुचारु रूप से कर पाए। इन क्षेत्रों के अतिरिक्त कुछ अन्य समुदाय आधारित क्षेत्रों में भी समूह कार्यकर्ता कार्य करता है, जिससे समुदाय आधारित क्षेत्रों की समस्या का समाधान किया जा सके।

3.2.6 आंगनवाड़ी केंद्रों के साथ समूह कार्य

1975 में बाल-नीति के बनने के बाद से ही आगंनवाड़ी कार्यक्रमों को चलाया जा रहा है। यह कार्यक्रम एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (Integrated Child Development Services .ICDS) का ही एक मुख्य भाग है। इसके माध्यम से ग्रामीण समुदाय में बच्चों और महिलाओं की शैक्षिक और स्वास्थ्य संबंधीआवश्यकताओं को पूरा किया जाता है। आंगनवाड़ी में बच्चों/बच्चियों को प्राथमिक शिक्षा और भोजन उपलब्ध कराया जाता है। आंगनवाड़ी के कार्यकर्ता द्वारा स्थानीय क्षेत्र की महिलाओं के समूहों को स्वास्थ्य शिक्षा उपलब्ध कराई जाती है। ये गर्भवती महिलाओं और सात वर्ष की आयु तक के बच्चोंबच्चियों के लिए स्वास्थ्य और पोषण पर ध्यान देते हैं। स्थानीय क्षेत्र में समूह कार्यकर्ता द्वारा किशोर बालिकाओं के लिए जागरूक कार्यक्रमों और विकासात्मक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। कार्यकर्ता इस क्षेत्र में अनेक रचनात्मक कार्यक्रम के द्वारा आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं के साथ मिलकर बच्चों एवं महिलाओं के क्षेत्र में कार्य करता है।

- **स्व-सहायता समूह एवं समूह कार्यकर्ता**

स्व-सहायता समूह (Self Help Group) भारत सरकार द्वारा स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोज़गार योजना के अंर्तगत 1 अप्रैल 1999 से प्रारंभ किया गया है। इस योजना के अंर्तगत गरीब परिवारों को स्वरोज़गार की सहायता देना है। ऐसे ग्रामीण जो गरीबी रेखा के नीचे जीवन-यापन करते हैं तथा जिनकी आय और गतिविधियाँ एक हो स्व-सहायता समूह के अंर्तगत आते हैं। इस समूह के सदस्य अपनी दैनिक आय अथवा मासिक आय से कुछ बचत कर समूह के पास जमा करते हैं तथा समूह आवश्यकता पड़ने पर जरूरतमंद सदस्य को ऋण देती है, जिससे सदस्य अपनी आवश्यकता पूरी कर ऋण राशि आसान किश्तों में वापस जमा कर सकें। ब्याज से आय समिति के कार्यकलापों में खर्च किया जाता है। स्व-सहायता समूह में 10 से 20 सदस्य हो सकते हैं, जो अपनी गतिविधियों के अनुसार समूह का नामरख सकते हैं। स्व-सहायता समूह के माध्यम से लोग अपनी मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम होते हैं। स्व-सहायता समूह के लिए मुख्य रूप से कुछ महत्त्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखने की आवश्यकता होती है, जैसे -

1. स्व-सहायता समूह गठन के बाद नियमित बैठक आवश्यक है।
2. समूह के सदस्यों को बैठक में भाग लेना आवश्यक है।
3. बैठक में समूह की गतिविधियों, समूह को सुदृढ़ करने समूह की आय बढ़ाने सदस्यों को ऋण की आवश्यकता, गाँव की समस्या, बच्चों/बच्चियों को पढ़ने/बढ़ने पर चर्चा आदि पर विचार करना चाहिए ।
4. बैठक में की गई चर्चा का ब्यौरा कार्यवाही रजिस्टर में दर्ज करना आवश्यकतानुसार ऋण दिया जा सके।

5. समिति से प्राप्त ऋण का सही उपयोग करें – जैसे, अपने व्यवसाय में लगाएँ, बच्चों/बच्चियों के पढ़ने-बढ़ने पर खर्च करें अथवा अपने अन्य महत्त्वपूर्ण कार्यो में लगाए।
6. समिति से प्राप्त ऋण समिति की शर्तों के अनुसार समय के अंदर दें।
7. समूह के छह माह सफल संचालन के उपरांत समिति सदस्य अथवा अध्यक्ष अपने ग्राम के ग्राम सहायक, विस्तार अधिकारी अथवा विकास खंड अधिकारी से संपर्क कर समिति के चयनित व्यवसाय के ऋण के लिए संपर्क करें।

तो इस प्रकार उपर्युक्त स्व-सहायता समूह की गतिविधियों को संचालित किया जा सकता है। स्व-सहायता समूह, समूह कार्य प्रणाली का एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण उदाहरण है जिसके माध्यम से संपूर्ण विधि को संचालित किया जा सकता है। स्व-सहायता समूह के कुछ महत्त्वपूर्ण अभिलेख भी होते हैं, जिनके माध्यम से इसका संचालन किया जाता है, जिनमें मुख्य रूप से रोकड़ पंजी का संधारण, समूह की रोकड़ पूँजी, सदस्य खाता, सदस्य का व्यक्तिगत पास बुक, समूह की कार्यवाही, पूँजी, ग्राम सभा में अनुमोदन, इत्यादि होते हैं। इस प्रकार समूह कार्य में स्व-सहायता समूह गतिविधि एक महत्त्वपूर्ण कार्य विधि हो सकती है। जिस प्रकार स्व-सहायता समूह में कार्यों को संचालित किया जाता है, उसी प्रकार समूह कार्यों को भी एक निश्चित लक्ष्य प्राप्ति के लिए किया जाता है।

3.2.7 अस्पतालों में समूह कार्य

समूह कार्य अभ्यास के लिए अस्पताल एक बहुत ही महत्वपूर्ण संस्थान है मनोवैज्ञानिक और शारीरिक कारक एक दूसरे से संबंधित है और मनोवेज्ञानिक कारक व्यक्ति की शारीरिक स्तिथि को भी ख़राब कर सकते हैं। प्रायः ऐसा होता है कि रोगी अनेक व्यक्तिगत, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक आदि कारणों से अनेक प्रकार की चिकित्सीय सुविधाओं से दूर रह जाते हैं कुछ दवाई लेने में हिचकते है, तो कुछ अस्पताल जाने में, कुछ डॉक्टर के निदान और उपचार को पसंद नहीं करते, तो कुछ आर्थिक कारणों से आवश्यक सुविधा नहीं जुटा पाते| अस्पताल में अनेक नियम, कार्यक्रम तथा कार्यकर्ताओं की मनोवृति और कर्तव्य पालन की दशाएं ऐसी हो सकती है, जिनसे कि वो अपने अभीष्ट लक्ष्य रोगी की सफल चिकित्सा को प्राप्त कर पाने में कठिनाई अनुभव कर रहे हैं। उपरोक्त वर्णित सभी दशाओं में समूह कार्य की आवश्यकता पड़ती है और समूह कार्यकर्ता ऐसीस्थिति में अपनी पूरी क्षमता से लड़ने के लिए तैयार होता है|

3.2.8 समूह कार्य और बाल कल्याण

भारत में लगभग 40% जनसख्या 16 वर्ष के नीचे के आयु वर्ग की है। आर्थिक दशा में एवं परिवारिक क्रियाकलापों में परिवर्तन के कारण बालक के विकास की अनेक समस्या उत्पन्न हो गई है।

भारत सरकार ने अगस्त 1974 में बच्चों के लिए एक राष्ट्रीय नीति संकल्प पास किया। संकल्प में बाल कल्याण के लिए अपनाए जाने वाले अलग-अलग उपायों तथा उन्हें दी जाने वाली प्राथमिकताओं की विवेचना की गई है। संकल्प के अनुसार दिस्बर 1974 में एक राष्ट्रीय बाल बोर्ड बनाया गया था। 25 मई 1981 को बोर्ड का पुनर्गठन किया गया। हिमाचल प्रदेश और चंडीगढ़ संघ राज्य क्षेत्र को छोड़कर तमाम राज्यों में इसी तरह के बोर्ड निर्मित किए गए।

भारत में विभिन्न सरकारी मंत्रालय और विभाग बाल कल्याण से संबंधी सभी कार्यों तथा योजनाओं को उन तक पहुँचाने हेतु प्रयासरत रहते हैं। बाल विकास विभाग की स्थापना वर्ष 1985 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय के एक अंग के रूप में की गई थी। इसका उद्देश्य महिला तथा बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देना था। 30 जनवरी 2006 से इस विभाग को मंत्रालय का दर्जा दे दिया गया है। इस मंत्रालय का मुख्य उद्देश्य है महिला तथा बच्चों के समग्र विकास को बढ़ावा देना।

इस मंत्रालय का मुख्य उद्देश्य है बच्चोंके समग्र विकास को बढ़ावा देना। बच्चों की उन्नति के लिए एक नोडल मंत्रालय के रूप में यह मंत्रालय योजना, नीतियां तथा कार्यक्रम का निर्माण करता है; कानून को लागू करता है,

उसमें सुधार लाता है और बाल विकास के क्षेत्र में कार्य करने वाले सरकारी तथा गैर सरकारी संगठनों को दिशा-निर्देश देता है व उनके बीच तालमेल स्थापित करता है। इसके अलावा अपनी नोडल भूमिका निभाकर यह मंत्रालय बच्चों के लिए कुछ अनोखे कार्यक्रम चलाता है। ये कार्यक्रम कल्याण व सहायक सेवाओं, रोज़गार के लिए प्रशिक्षण व आय सृजन एवं लैंगिक सुग्राहता को बढ़ावा देते हैं। ये कार्यक्रम स्वास्थ्य शिक्षा व ग्रामीण विकास इत्यादि के अन्य क्षेत्रों में भी एक पूरक व संपूरक भूमिका निभाते हैं।

बच्चों के समग्र विकास के लिए मंत्रालय दुनिया का सबसे बड़ा और सबसे अनोखा कार्यक्रम समेकित बाल विकास सेवाओं (ICDS) का क्रियान्वयन करता रहा है, जिसके तहत पूरक पोषण, टीकाकरण, स्वास्थ्य जांच और रेफरल सेवाएं, स्कूल जाने से पहले के अनौपचारिक शिक्षा का एक पैकेज प्रदान किया जाता रहा है। हाल के वर्षों में मंत्रालय द्वारा उठाए गए मुख्य कदम में समेकित बाल विकास सेवाओं तथा किशोरी शक्ति योजना, किशोरियों के लिए एक पोषण कार्यक्रम, बाल अधिकारों की सुरक्षा के लिए एक आयोग का गठन करना तथा घरेलू हिंसा से महिला की सुरक्षा अधिनियम को लागू करना शामिल हैं।

इसी के साथ नागरिक समाज भी बाल संबंधी मुद्दों में व्यापक रूप से कार्य कर रहे हैं। अनेक गैर-सरकारी संगठन बाल श्रम रोकथाम, गोद संबंधी सेवा तथा किशोर देखभाल एवं पुनर्वास के कार्योंको जरूरतमंदो तक पहुँचाने के सफल प्रयास में लगे हुए हैं। बाल अनाथालयों का संचालन भी गैर-सरकारी संस्थान या धार्मिक संस्थान कर रहे हैं। समूह कार्य का विभिन्न संस्थानों (सरकारी और गैर-सरकारी) में अनेक जरूरतमंद बच्चों की समस्याओं को

सुलझाने तथा उन्हें सक्षम बनाने हेतु प्रयोग किया जाता है समाज कार्यकर्ता बच्चों की समस्याओ को हल करने के लिए अधिवक्ताओं, मनोवेज्ञानिकों, चिकित्सकों, लोक अधिकारियों के साथ मिल कर काम करते हैं। अब हम संक्षिप्त में यह देखने का प्रयास करेंगे कि विभिन्न संस्थानों में किस प्रकार समूह कार्य प्रक्रिया द्वारा समस्या के समाधान के साथ बालक को सक्षम बनाने का प्रयास किया जाता है, साथ ही बालक से संबंधित क्षेत्रो में समूह कार्य को कुछ उदाहरण के माध्यम से समझेंगे।

1. सबसे पहले बाल कल्याण एजेंसियों में समूह कार्य के उद्देश्य को हम जानेंगे-
2. बालकों में व्यक्तित्व विकास, विशेषकर आत्मविश्वास तथा आत्म प्रतिष्ठा का निर्माण करना|
3. संकट, तनाव, अव्यवस्था, मादक द्रव्य दूरूपयोग तथा कमज़ोर आपसी संबंधों से संबंधित लक्षणों के लिए उपचार करना।
4. आजीविका हेतु जीवन-यापन कौशल का प्रशिक्षण देना |
5. बच्चों के उचित मानसिक, शारीरिक, और सामाजिक विकास के लिए भूमिका तैयार करना॥
6. बालविकास को प्रोत्साहन देने के लिए अलग-अलग विभागों के बीच नीति और कार्यान्वयन के मध्यप्रभावी समन्वय स्थापित करना।
7. बच्चों के पोषाहार और स्वास्थ्य स्तर में सुधार लाना।

बच्चों से संबंधित समस्याओं को सुलझाने के लिए संस्थागत एवं असंस्थागत प्रकार की संस्थाएं काम कररही हैं जैसे–

1. बाल चिकित्सालय
2. शिशु एवं बाल विकास विद्यालय
3. बाल अपराधी सुधार गृह
4. मानसिक मंदित बालकों के लिए विद्यालय
5. शिशु पालन गृह

3.3 सारांश

आदिकाल से ही संपूर्ण विश्वमें एक-दूसरे की सहायता करने की परंपरा रही है चाहे उसका माध्यम या विधि कोई भी क्यों ना हो। समाज कार्य का आज स्वरूप बदलते जा रहा है और इसमें दिन-प्रतिदिन नए-नए आयामों के साथ कार्यविधियों में परिर्वतन देखने को मिल रहा है। इनमें से समूह कार्य भी एक प्रणाली के रूप में विकसित हुआ है, जिसके द्वारा विभिन्न स्थापनों के माध्यम से यह कार्य किया जा रहा है, जिसमें समाज कार्य के अंर्तगत आने वाले विभिन्न क्षेत्रों को शामिल किया गया है। कार्यकर्ता द्वारा अनेक समूह गतिविधियों के माध्यम से व्यक्तियों की समस्या समाधान हेतु प्रयास किए जा रहे हैं। इस विधि द्वारा सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक और मनोवैज्ञानिक संबंधी समस्याओं में व्यक्तियों को मनोरंजन प्रदान कर समस्याओं का निराकरण करके व्यक्ति का सर्वांगीण विकास किया जाता है। समूह कार्य हेतु इंग्लैंड़ अमेरिका एवं भारत में अनेक प्रयास किए गए हैं, जिसके सर्वांगीण आज समूह कार्य की विकसित रूप हमारे सामने दिखाई पड़ रहा है। व्यासायिक रूप से इसका संपूर्ण विकास अभी शेष है जो आज के व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के लिए चुनौती है।

3.4 बोध प्रश्न

1. मनोसामाजिक स्थापनों में समूह कार्य को स्पष्ट कीजिए।
2. वृद्धों के क्षेत्र में समूह कार्य किस प्रकार से कार्यों को करता है?
3. बाल कल्याण हेतु संस्थाओं द्वारा किस प्रकार के कार्य किए जाते है ?
4. विभिन्न स्थापनों में समूह कार्यकर्ता की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।
5. युवाओं के साथ समूह कार्य को परिभाषित कीजिए

3.5 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

1. कोरी एवं कोरी (1987). *ग्रुप्स प्रोसेस एंड प्रैक्टिस,* कैलीफोनिया: कोले पब्लिकेशन कंपनी।
2. सिद्दकी, एच.वाई.(2008). *ग्रुप वर्क क्योरीज एवं प्रेक्टिस,* जयपुर: रावत पब्लिशन।
3. मिश्रा, प्रयागदीन(2008). *सामाजिक सामूहिक* कार्य. लखनऊ : हिंदी संस्थान
4. सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य.* लखनऊ:हल्दानी प्रकाशन
5. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010).*समूहों के साथ कार्य करना.* दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ।
6. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010). समाज कार्य. लखनऊ : जुबली एच फाउंडेशन
7. कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।
8. सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012) सामूहिक कार्य, हल्दानी : उत्तरायन प्रकाशन ।
9. कोनोप्का, जिसेला (**1963**). सोशियल ग्रुप वर्कर ए हेल्पिंग प्रोसस नई दिल्ली: एस.जे. प्रिंटिस हाल।
10. गार्विन, चार्ल्सो दी इटीएल (**2008**). हैंड बुक ऑफ सोशल वर्क विद ग्रुप्सनई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।

इकाई- 4 शैक्षिक स्थापनों में समूह कार्य

इकाई की रूपरेखा

4.0 उद्देश्य
4.1 प्रस्तावना
4.2 स्कूल समाज कार्यकर्ता का अर्थ एवं उद्देश्य
4.3 शैक्षिक संस्थानों में समूह कार्य
4.4 संगठन एवं सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका
4.5 सारांश
4.6 बोध प्रश्न
4.7 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

4.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. शैक्षिक स्थापन में समूह कार्य के मुख्य प्रयोग के बारे में जान सकेंगे।
2. समूह कार्य में प्रयोग होने वाली विभिन्न तकनीक के प्रयोग के बारे में समझ सकेंगे।
3. शैक्षिक स्थापन, में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका को विश्लेषित कर सकेंगे।

4.1 प्रस्तावना

स्कूल समाज कार्य के इतिहास पर यदि नजर डाली जाए तो इसका प्रारंभ 20 वीं शताब्दी का पहले दशक (1901-1910) से प्रारंभ माना जाता है। मुख्य रूप से इसका प्रारंभ न्यूयार्क, बोस्टन , शिकागो और न्यू हेवन , कनेक्टिकट देशों ने एक साथ किया। अपनी स्थापना के समय, स्कूल सामाजिक कार्यकर्ताओं को अप्रवासियों के कल्याण, कमजोर वर्गों के कल्याण, सामाजिक आर्थिक वर्ग के लोगों के साथ कार्य करने वाले इत्यादि के रूप में जाना जाता था । तत्पश्चात व्यावसायिक समाज कार्य से जुडी सारी संस्थाए समूह कार्य अभ्यास के विशिष्ट अवसर प्रदान करने लगी और शैक्षिक स्थापन में समूह कार्य की आवश्यकता को ध्यान में रखकर स्कूल समाज कार्य को समूह कार्य के माध्यम से किया जाने लगा। जिसके माध्यम से सामाजिक कार्यकर्ता को समाज की विभिन्न सामूहिक समस्याओ के समाधान करने की भिन्न- भिन्न तकनीकों के बारे में बताया जाता है।

शैक्षिक स्थापन में समूह कार्य में सबसे अहम् और जरूरी तथ्य है– सामूहिक एकता यह एक ऐसी भावना है जिसके आधार पर बड़ी से बड़ी समस्या का समाधान आसानी से किया जा सकता है। इसलिए शैक्षिक संस्थाओ में सभी विद्यार्थियों को एक समूह में शिक्षा प्रदान की जाती है। किसी भी समूह में किसी कार्य को करने से समूह के सारे सदस्यों के विचारों का आदान प्रदान होता है और उन सभी में सोचने-समझने की क्षमता में वृद्धि होती है।

वर्तमान की शिक्षा प्रणाली में मूलतः ध्यान विद्यार्थियों को हर क्षेत्र से सम्बंधित जानकारी उपलब्ध कराने में दिया जाता है। जिससे विद्यार्थी व्यापक शिक्षा प्राप्त कर सके। इस तरह की शिक्षा प्रदान करने का उद्देश्य यह है कि विद्यार्थी का पूर्ण विकास हो सके,वह पूरी तरह से संतुलित रहे सामाजिक भूमिका का निर्वाह कर सके, मानवीय संबंधोंको समझ सके और उसका निर्वाह कर सके। मानव के आर्थिक, सामाजिक एवं राजनैतिक परिवर्तनों हेतू इस प्रकार के क्रियाकलापों का विकसित होना अत्यंत आवश्यक है ।

4.2 स्कूल समाज कार्यकर्ता का अर्थ एवं उद्देश्य

वर्तमान समय में अनेक ऐसे कारक समाज में विद्यमान है जिसके माध्यम से किसी-न-किसी रूप में प्रत्येक समाज को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है इनमें प्रमुख रूप से बच्चे भी शामिल हो गए है। ऐसी स्थिति में स्कूल समाज कार्यकर्ता द्वारा विद्यार्थियों को समाज में समायोजन करना सिखाया जाता है। स्कूल सामाजिक कार्य द्वारा व्यावसायिक समाज कार्यकर्ताओं के माध्यम से यह समाज कार्य का एक व्यापक क्षेत्र प्रस्तुत करता है। कुछ निम्न उद्देश्यों को ध्यान में रखकर स्कूल समाज कार्य किया जाता है

- स्कूल सामाजिक कार्यकर्ताओं द्वारा स्कूल प्रणाली और छात्र सेवाओं टीमके लिए अद्वितीय ज्ञान और कौशल लाने के लिए किया जाता है।
- स्कूल सामाजिक कार्यकर्ताओं मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों, जो मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं, व्यवहार चिंताओं, सकारात्मक व्यवहार समर्थन, शैक्षणिक और कक्षा समर्थन, शिक्षकों, अभिभावकों और प्रशासकों के साथ परामर्श के साथ सहायता कर सकते हैं और साथ ही व्यक्तिगत और समूह परामर्श/चिकित्सा उपलब्ध कराने के लिए प्रशिक्षित किया जाता है।
- स्कूल सामाजिक कार्यकर्ता स्कूली शिक्षण के माध्यम से शिक्षा के लिए एक रूपरेखा तैयार करता है,जिसने मिशन को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाईहै ।
- स्कूल सामाजिक कार्यकर्ता को जिलों में स्कूल द्वारा काम पर रखा जाता है। जिले की अपनी अकादमिक मिशन पूरा करने की क्षमता को बढ़ाने के लिए। विशेष रूप से जहां घर, स्कूल और सामुदायिक सहयोग से छात्र सफलता प्राप्त करने के लिए महत्वपूर्ण है।

4.3 शैक्षिक स्थापना में समूह कार्य

शैक्षिक स्थापनों में समूह कार्य को निम्न बिंदु ओं के माध्यम से समझा जा सकता है:

विद्यालयों में समूह कार्य- वर्तमान समय में विद्यालय समाज कार्य एक अत्यंत महत्वपूर्ण कार्य समझा जाने लगा है । विद्यालय समाज कार्य के माध्यम से छात्र-छात्राओं में व्यक्तित्व विकास जैसे पक्षों पर विशेष बल दिया जा रहा है। साथ ही साथ जो विद्यार्थी किसी अन्य समस्या से ग्रस्त रहता है समूह कार्यकर्ता के माध्यम से, शिक्षकों एवं अभिभावकों के साथ मिलकर इसे हल करने का प्रयास किया जाता है। आज के समय में विद्यार्थियों का सामंजस्य भी एक प्रमुख समस्या बनकर सामने आ रही है। विद्यार्थी कक्षा में, सहपाठियों के साथ एवं और तो और अपने परिवार में सामंजस्य स्थापित नहीं कर पाता है जिससे वह गलत रास्तों को ग्रहण कर लेता है, जिससे अनेक बाल-अपराध जैसी समस्याएँ दिनों-दिन बढती जा रही है। समूह कार्यकर्ता ऐसे बच्चों के सामंजस्य हेतु अनेक प्रकार के रचनात्मक कार्यक्रमों को इस प्रकार से आयोजित करता है कि समूह गतिविधियों के माध्यम से समूह लक्ष्य तथा इसी तरह से व्यक्तिगत लक्ष्य प्राप्त करने के लिए एक साथ मिलकर कार्य करें। समूह कार्य का मुख्य उद्देश्य छात्र-छात्राओं को अपने स्वयं के कार्यो से सीखना है इन समस्त कार्यों हेतु समूह कार्यकर्ता विद्यालयी कार्य के माध्यम से उन्हें समाज में सामंजस्य स्थापित करने हेतु सहायता करता है । सामाजिक जीवन शैली हर मनुष्य पर प्रभाव डालती है और बाहरी तनाव भी उत्पन्न करती है। कई ऐसी ही घटनाओं से किसी तथ्य के प्रति गलत या सही एक धारणा बन जाती है। हर युग में तरह -तरह की समस्याए विद्यमान रही है। आमतौर पर जो एक व्यक्ति देखता, सीखता, समझता है,वह उसी प्रकार अपनी सारी प्रतिक्रियाएं व्यक्त करता है। शैक्षिक संस्थाओ, चिकित्सालयों आदि जगहों से ऊपर दी गयी सारी समस्याओं से निपटने के लिए वर्तमान में परामर्शदाता और समाज कार्यकर्ताओं की नियुक्ति की जा रही है। वर्तमान में विद्यालयों में समूह कार्य की आवश्यकता बढ़ती जा रही है। और यह सिर्फ व्यावहारिक समस्याओं तक सीमित नहीं है, बल्कि सामाजिक समस्याओ का निवारण

करना आवश्यक हो गया है, जिसके कारण विद्यार्थी तनाव ग्रसित होते जा रहे है। विद्यार्थियों के जीवन में आने वाली कुछ अहम् समस्याओं के निवारण, और उनकी क्षमता में वृद्धि किया जा रही है। ये सभी तथ्य कहीं न कही न कहीं पाठ्यकर्म से संबंधितहै जैसे कि व्यक्तित्व विकास, जीवन कौशल, स्वास्थ्य और इत्यादि हो सकते है। समूह विभिन्न प्रकार के होते हैं जिनमें से एक है विद्यालय। समाज विभिन्न समूहों का प्रयोग विभिन्न प्रकार से करता। विद्यालय में समूह कार्य प्रयोग करने से विभिन्न लाभ है-

4. विद्यार्थी अपना काफी समय इस प्रकार समूह में बिताता है, जिससे उन्हें कार्य करने में आसानी होती है।
5. विद्यार्थी कार्य क्षेत्र के वातावरण से परिचित हो जाता है।
6. समूह में कार्य करने से परिणाम स्वरूप यह निश्चित माना जाता है, कि शिक्षक और विद्यार्थी के बीच सम्बन्ध में काफी सुधार आता है।

विद्यालय में समूह कार्य प्रयोग के करने से कुछ हानियाँभी है -

1.कभी-कभी समय के अभाव के कारण समूह कार्य के अभ्यास को रोका जा सकता है।

2. समूह के निर्माण के लिए स्थान की कमी होना।

3. ज्यादातर समूह में सभी की भागीदारी और सहयोग में वृद्धि नहीं होती जिस कारण समूह कार्य बंद हो जाता है।

4. स्टाफ की कमी होने के कारण विभिन्न कौशलों का विकास नहीं हो पाता।

विद्यालयों में पढने वाले विद्यार्थियों में कुछ समस्याएं इस प्रकार हैं –

अत्यधिक संघर्ष , अपने साथियों के साथ रहने में असमर्थता, दूसरे बच्चों को चोट पहुँचाना, विद्यालय के बच्चों की हिंसा, विद्यालय के प्रति घटिया विचारधारा, चोरी करना, हिंसा या क्रोध करना।

विद्यालयों में प्रयोग किए जाने वाले समूहों के प्रकार –

1. शैक्षिक समूह – इस समूह में शिक्षा प्रदान करने का माध्यम कहानियां, दृष्टान्त होता है। इस समूह में ऐसे विषयों और पाठयक्रमों को पढ़ाया जाता है, जो उनके पाठ्यकम में शामिल नहीं है. जैसे – जीवन कौशल, कार्य कौशल इत्यादि।
2. मनोरंजनात्मक समूह – यह समूह खेल और क्रीडा गतिविधियों को उपलब्ध करता है। इस समूह के माध्यम से कई अनुभव अर्जित किए जा सकते है।
3. व्यक्तित्व विकास समूह – इस समूह का मुख्य उद्देश्य आत्मविश्वास और आत्मप्रतिष्ठा का विकास करना है। साक्षात्कार, व्यक्तित्व तैयार करने की आदतों के कौशलों के माध्यम से सुधार किया जाता है।
4. उपचार समूहों – बच्चों में पाई जाने वाली मनो-सामाजिक समस्याओं के कारण की पहचान इस समूह के माध्यम से की जाती है। कई अध्ययन के अनुसार 10 से 13 वर्ष की आयु समूह के बच्चों को प्रशिक्षण दिया जाना चाहिए, ऐसा करने से उनमे विशिष्ट और महत्वपूर्ण परिवर्तन आते हैं।

विद्यार्थी मैत्रीपूर्ण वातावरण

समूह कार्य करने के दौरान इस बात का ध्यान रखा जाता है कि विद्यालय में विद्यार्थियों के बीच मैत्रीपूर्ण वातावरण हमेशा बना रहे। इस सन्दर्भ में कार्यकर्ता को कुछ बातों का ध्यान रखना चाहिए -

1. सभी विद्यार्थियों की भावनात्मक समस्याओं को अध्यापकों द्वारा संवेदनशीलता से समझना चाहिए।
2. अध्यापकों को भी समय-समय पर प्रशिक्षण एवं विशेष परामर्श देना चाहिए।
3. अध्यापकों को ऐसे विद्यार्थियों की पहचान करनी चाहिए जिन्हें व्यावसायिक, मानसिक स्वास्थ्य चिकित्सा की आवश्यकता हो।
4. विद्यार्थियों को यौन शिक्षा का प्रशिक्षण देना चाहिए।
5. शैक्षिक दवाबों का सामना करने के लिए विद्यार्थियों की सहायता करनी चाहिए।

बच्चों के साथ काम करते समय अनुपालन किए जाने वाले सिद्धांत :

1. गोपनीयता का ध्यान रखना बहुत ही महत्वपूर्ण है, वैयक्तिक समस्याओं को सदा गोपनीय रखना चाहिए।
2. पक्षपात कभी नहीं करना चाहिए, कभी भी किसी एक व्यक्ति का पक्ष नहीं लेना चाहिए।
3. समूह के सदस्यों को समूह के उद्देश्य और उनके लक्ष्यों को स्पष्ट किया जाए।
4. सदस्यों के विचारों को ध्यानपूर्वक सुनना चाहिए, चाहे आप उन से असहमत क्यों ना हो।
5. मनोरंजनात्मक और अन्य गतिविधियों का चयन करना चाहिए जिनसे सदस्यों को लाभ मिल सके।
6. आयु, लिंग, तथा वर्ग की शर्तो में समरूपता होनी चाहिए।

स्कूल में समूह कार्य

स्कूली संस्थाएं समूह कार्य अभ्यास के लिए विविध अवसरों को प्रदान करती है।समूह सदस्य भी पहले से ही उपस्थित रहते है तथा कभी-कभी उन्हें एकत्रित करने के लिए विशेष प्रयास की आवश्यकता नहीं होती। तथा हम यह कह सकते है कि इसमें समूह निर्माण नहीं होता, वह तो पहले से ही मौजूद रहता है। इस प्रकार की संस्थाओं में विद्यार्थी समूह स्वयं प्रवेश लेते है याकभी-कभी ये संस्था जरूरतमंद और शिक्षा से वंचित बच्चों को यहाँ दाखिल करवा कर एक स्वस्थ समूह का निर्माण करती है। विद्यार्थी समूह में अध्ययन करते है इसलिए वे स्वयं को यहाँ सहज महसूस करते हैं। साथ ही समूह के साथ विभिन्न गतिविधियों में भाग लेते है। विद्यालयों में समूह कार्य अभ्यास व्यापक सामाजिक व्यवस्था से प्रभावित होते है। स्कूली समूहों के साथ कई प्रकार से कार्य किया जा सकता है। ये सभी उस स्कूली संस्थान के प्रबंधन और लक्ष्य विचारधारा पर निर्भर करता है कि वे समूह को किस तरह के दिशा-निर्देश द्वारा मार्गदर्शित करते है । वर्तमान में अधिकांश स्कूलों में शिक्षण का अभ्यास पाठ्य सामग्री या पाठ्यक्रम पर केन्द्रित होता है इसलिए स्कूलों के पास अन्य गतिविधियों के लिए बहुत कम समय रहता है या कभी-कभी बिल्कुल भी समय नहीं रहता। ऐसी स्थिति में समूह कार्यकर्ता का यह दायित्व बनता है कि वह स्कूली प्रबंधन समेत बच्चों के माता-पिता को भी समूह कार्य की महत्ता और उससे होंने वाले लाभ से परिचित करवाएं और विभिन्न पदाधिकारियों को इस कार्य हेतु सहमत करे।

स्कूलों में समूह कार्य के लाभ

- बच्चों की झिझक मिटाने व प्रश्न पूछने के कौशल को बढावा मिलना- बच्चों की झिझक मिटाने के लिए बाल-सभा में थिएटर का अधिकाधिक प्रयोग- यहाँ स्थानीय समस्याओं और कहानियाँबालसभा में बच्चों के समूह द्वारा प्रस्तुतियाँ करवाई जाती हैं। प्रार्थना सभा में बच्चों को अलग-अलग विषय पर अपने मौलिक विचार प्रस्तुत करने एवं सवाल-जवाब का मौका दिया जाता है।
- बच्चे में सहयोग की भावना का विकास- बच्चों को प्रोजेक्ट कार्य करने के अवसर दिए जाते हैं जिनमें प्रोजेक्ट के लिए दिए जाने वाले विषय बच्चों के वास्तविक जीवन से जुड़े हुए होते हैं जैसे खेती की जानकारी,तालाब और अवशिष्ट पदार्थों से प्रदूषण आदि। ऐसे प्रोजेक्ट कार्य कराने से बच्चे उस विषय विशेष से संबंधित ज्ञान का सृजन तो करते ही हैंसाथ ही उनमें मिल-जुलकर काम करने की समझ भी बनती है।
- सृजनात्मक कार्यों के लिए अवसर प्रदान करना-बच्चों को सृजनात्मक गतिविधियों के लिए नियमित अवसर दिए जाते हैं। बच्चों द्वारा बनाए गए चित्र,लेख,कविता या कहानियों और हस्तशिल्प को अब बच्चों के पोर्टफोलियों में लगाया जाता है। बच्चों के प्रयासों को उत्साहित करने के लिए ऐसी सभी कृतियों को कक्षाओं की दीवार पर लगा दिया जाता है।

श्रम- श्रम की प्रतिष्ठा की ओर बच्चों का उन्मुखीकरण प्रति वर्ष बच्चों को कम से कम एक आयवर्धक गतिविधि का प्रशिक्षण दिया जाता है जैसे अब तक मेंहदी लगाने, कागज़ के खिलौने बनाने,राखी व ग्रीटिंग्स एवं लिफाफे बनाने का प्रशिक्षण एवं सभी बच्चे कुछ-न-कुछ बनाकर उनका उपयोग करते हैं।

नेतृत्व विकास -नेतृत्व विकास के लिए बच्चों के समूह को अलग-अलग कार्य सौंपा जाता है और कोई एक बच्चा साथियों से समन्वय करते हुए उस गतिविधि को पूरा कराता है। बारी-बारी से बच्चों को नेतृत्व के मौके सौंपे जाते हैं।

खोजी प्रवृत्ति का प्रोत्साहन/ विज्ञान शिक्षण- स्कूल में प्रयोगशाला के कुछ उपकरण रखे जाते हैं जिनका उपयोग बच्चे विज्ञान की अवधारणा व सिद्धांतों को समझने के लिए करते हैं। प्रयोग के लिए बच्चे स्थानीय सामग्री का उपयोग करते है। लौकी, करेला एवं विभिन्न सब्जियों का लिटमस परीक्षण या विभिन्न खाद्य सामग्री की घुलनशीलता,विभिन्न बर्तनों की धारिता, आयतन ज्ञात करने आदि का काम बच्चे स्वयं करते हैं। वे अनेक प्रयोग करते हैं एवं स्वयं करके सीखते हैं।

4.4 संगठन एवं सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका

स्कूल समाज कार्यकर्ता के माध्यम से छात्रों को शैक्षणिक सफलता प्राप्त करने में मदद की जाती है। कार्यकर्ता द्वारा स्कूल, घर, और समुदाय के बीच एक कड़ी का कार्य किया जाता है। स्कूल कार्यकर्ता द्वारा स्कूल प्रशासन के साथ-साथ विद्यार्थियों और उनके परिवारों के साथ सीधे काम किया जाता हैं, स्कूल की अनुशासन नीतियों, मानसिक स्वास्थ्य हस्तक्षेप, संकट प्रबंधन और सहायता सेवाओं के गठन में नेतृत्व प्रदान करते हैं।इसके अतिरिक्त कुछ अन्य संगठनों के माध्यम से शिविरों का आयोजन कर स्कूल समाज कार्य किया जाता है ।

शिविर एवं संगठन

पिछड़ी और अव्यवस्थित अस्थाई जगह पर कुछ समय के लिए आवास शिविर की स्थापना करना अत्यंत ही महत्वपूर्ण होता है। शिविर लगाने का उद्देश्य लोगों को घर से बाहर जाने का अवसर प्रदान करना और मनोरंजात्मक उद्देश्य के लिए प्राकृतिक पर्यावरण का आनंद उठाना है। अनेक संगठन शिविर युवाओं को विभिन्न कौशल प्रदान करने के लिए लगाए जाते है।

अमेरिकन कैम्पिंग एसोसिएशन के अनुसार शिविर लगाने के निम्नलिखित लाभ हैं:

सामाजिक कौशल विकास

- नेतृत्व
- संचार
- भागीदारी
- आत्मसम्मान और चरित्र निर्माण करना
- उत्तरदायित्व
- साधन संपन्न होना
- लचीलापन

सामुदायिक जीवन / सेवा कौशल

- कोचिंग
- निष्पक्षता

- नागरिकता
- निष्ठावान

भारत में बच्चों और युवा लोगों के लिए बहुत सारे शिविरों का आयोजन अनेके उद्देश्यों के लिए किया जाता है। जैसे- राष्ट्रीय समाज सेवा, नेशनल कैडेट फोरम और अन्य निजी शिविर का भी आयोजन किया जाता है।

युवा लोगों के लिए संभावित कार्यकलाप

अभिनय / खेलना:

1. बच्चों और कार्यकर्ता के बीच अभिनय एक प्राकृतिक गतिविधि कार्यकलाप है।
2. खेल के माध्यम से बच्चे और कार्यकर्ता चुस्त दुरुस्त रहते है।
3. खेल और अभिनय विद्यालय के अंदर मैत्रीपूर्ण वातावरण तैयार करता है।

गीत, नृत्य और अभ्यास

मानसिक स्वास्थ्य सुधार के लिए गीत, नृत्य और अभ्यास बहुत ही जरूरी है और व्यायाम विद्यार्थियों में संयोजन विकसित करता है।

मनोनाट्य

ह एक ऐसा साधन है जो बच्चों और किशोरों के लिए उपचार को अत्यधिक विकसित करता है। नाटक भागीदारों और समीक्षकों को शिक्षण अनुभव उपलब्ध करने में सहायता करता है।

सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका

स्कूल सामाजिक कार्य के विशेषज्ञों द्वारा 1989 में प्रकाशित एक सर्वेक्षण में मुख्यरूप से पांच प्रकार के कार्यो को बताया है:

- बच्चों और परिवारों के साथ रिश्ते और सेवाएं।
- शिक्षकों और स्कूल के कर्मचारी के साथ रिश्ते और सेवाएं।
- प्रशासनिक और व्यावसायिक कार्ये।
- अन्य स्कूल कर्मियों को सेवा।
- सामुदायिक सेवाएं।

इसके अतिरिक्त अन्य प्रकार से कार्यकर्ता अपनी भूमिका अदा करता है :

सेवाओं के माध्यम से :

- कार्यकर्ता द्वारा स्कूल में बच्चे के समायोजन को प्रभावित करने वाले कारकों के साथ कार्य किया जाता है जिससे वे समाज में समायोजन स्थापित कर पाए। इस हेतु कार्यकर्ता द्वारा घर, स्कूल और समुदाय तीनों के साथ कार्य किया जाता है।
- अन्य आवश्यकता ग्रस्त बच्चों के साथ उसके विकास हेतु कार्य करता है।
- परामर्शदाता के रूप में समूह, व्यक्तिगत और परिवार के साथ कार्य करता है ।
- बच्चे को सक्षम बनाने हेतु शैक्षिक कार्यक्रम के माध्यम से परिवार, स्कूल और समुदाय के माध्यम से उचित संसाधनों को जुटाने का प्रयास करता है।
- सकारात्मक व्यवहार हस्तक्षेप रणनीतियों को विकसित करने में सहायता करता है।

विद्यार्थियों के साथ कार्य

- संकटकालीन हस्तक्षेप प्रदान कर।

- हस्तक्षेप रणनीतियों का विकास शैक्षिक सफलता बढ़ाने के लिए।
- संघर्ष के समाधान और क्रोध प्रबंधन के साथ विद्यार्थी की सहायता करना।
- बच्चे को उचित सामाजिक बातचीत कौशल विकसित करने में मदद करना।

परिवार के साथ कार्य एवं सेवाएं

- स्कूल में बच्चे के समायोजन हेतू माता-पिता के साथ काम करना।
- परिवार के तनाव को समाप्त करना और उन्हें स्कूल की समस्त गतिविधियों में भाग लेने हेतु प्रेरित करना।
- स्कूल और सामुदायिक संसाधनों के उपयोग में माता-पिता की सहायता करना।

अन्य स्कूल कर्मियों को सेवा

- स्कूल कर्मियों को सांस्कृतिक, सामाजिक, आर्थिक, पारिवारिक, स्वास्थ्य इत्यादि आवश्यक जानकारी को उपलब्ध कराना।
- मानसिक स्वास्थ्य संबंधी चिंताओं के साथविद्यार्थियों का आकलन करना।
- विकासशील स्टाफ सेवाकालीन प्रशिक्षण कार्यक्रम को विकसित करना जिससे कर्मियों को उचित प्रशिक्षण प्रदान किया जा सके।
- व्यवहार प्रबंधन के साथ शिक्षकों की सहायता करना।
- स्टाफ के लिए प्रत्यक्ष समर्थन प्रदान करना।

अन्य प्रकार की सेवाओं हेतुकार्य :

- आवश्यकताग्रस्त एवं असाधारण बच्चों के विकास हेतु शैक्षिक कार्यक्रमों को लागू करने में सहायता करना।
- ड्रॉप-आउट (शाला त्यागी) एवं अपराधियों बच्चों हेतु वैकल्पिक कार्यक्रमों का विकास करना।
- बाल उत्पीड़न की पहचान करना उचित कार्यवाही प्रस्तुत करना।
- समस्त स्कूल नीति- नियमों एवं सरकारी प्रयासों और योजनाओं की व्याख्या प्रस्तुत करना।
- विद्यार्थियों और परिवारों की आवश्यकता को ध्यान में रखते हुए आवश्यक संसाधनों का प्रबंधनकरना।

संघों और व्यावसायिक पत्रिकाओंका निर्माण

स्कूल सामाजिक कार्यकर्ता को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से अनेक संघों और पत्रिकाओं का निर्माण राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर पर किया जा रहा है। जिसके माध्यम से विद्यार्थियों को गुणवत्ता युक्त शिक्षा और शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक बाधाओं कोदूरकर एकजुटलाने का प्रयास किया जाता है। इनमें प्रमुख रूप से निम्न संघों को लिया जाता है:

1. अमेरिकीय स्कूल सामाजिक कार्य एसोसिएशन, अमेरिका।
2. स्कूल सामाजिक कार्य के लिए अमेरिकी परिषद
3. स्कूल सामाजिक कार्यकर्ताओं और उपस्थिति सलाहकारों की कनाडा के एसोसिएशन।
4. राष्ट्रीय समाज कार्य संघ। इत्यादि

स्कूल सामाजिक कार्य पत्रिकाओं कोदुनिया भर में प्रकाशित किया गया है।जिसमें प्रमुख रूप से सबसे पुराना और सबसे बड़ा स्कूल सामाजिक कार्य जर्नल इलिनोइस है जो कि संयुक्त राज्य अमेरिका के स्कूल ऑफ समाज कार्य द्वारा प्रयोजित किया जाता है। भारत में स्कूल ऑफ सोशल वर्क जर्नल चेन्नई से प्रकाशित किया जाता है एवं (JSSW) जो कि कनाडा के स्कूल मनोविज्ञान कनाडा के जर्नल से प्रकाशन किया जाता है। इसके अतिरिक्त समाज कार्य शिक्षा के माध्यम से बी.एस.डब्ल्यू., एम.एस.डब्ल्यू. एम.फिल.,पीएच.डी तक की शिक्षा समाज कार्य के स्तर से विभिन्न देशों में प्रदान की जा रही है।

1.4 सारांश

अत: इस प्रकार से शैक्षिक स्थापन समूह कार्य में विद्यार्थियों की समस्याओं को समझा जा सकता है, उनकी सहायता की जा सकती है और उपचार भी किया जा सकता है। एक समूह कार्यकर्ता स्कूल में बच्चों के साथ समूह कार्य प्रक्रिया को करता है और स्कूली बच्चों में एक प्रोत्साहन पैदा कर उन्हें उचित गतिविधियां के माध्यम से समूह प्रक्रिया के महत्व को समझाता है। वर्तमान समय में स्कूली बच्चों के साथ एक प्रमुख समस्या देखने में नजर आ रही है जो है शाला त्यागी बच्चें (ड्राप-आउट चिड्रन)। ऐसे बच्चे जो स्कूल जाते- जाते स्कूल जाना बंद कर देते है ऐसे बच्चों को शाला त्यागी बच्चें कहते हैं। ऐसे बच्चों हेतु कार्यकर्ता बच्चों के शिक्षक,माता-पिता, पडोसियों एवं अन्य संबंधित व्यक्तियों से संपर्क कर विभिन्न तकनीकों के माध्यम से यह कार्य करता है जिससे बच्चे को पुन: स्कूल में भेजा जा सके। इस तरह भिन्न–भिन्न माध्यमों से स्कूली समूह कार्य को सम्पन्न किया जाता है। शैक्षिक संस्थानों में समूह कार्य अभ्यास को तीव्र गति प्रदान करने के लिए वर्तमान में मौजूदा संगठन जैसे की एन. एस. एस. और एन. वाई. के. का भरपूर प्रयोग किया जा सकता है।

1.5 बोध प्रश्न

1. विभिन्न शैक्षिक स्थापनों में समाज कार्य परिभाषित कीजिए।
2. शैक्षिक स्थापनों से आपका क्या तात्पर्य है ?
3. विभिन्न शैक्षिक स्थापनों में सामाजिक समूह कार्यकर्ता के कार्यो को स्पष्ट कीजिए।
4. स्कूल में समूह कार्य के लाभों को स्पष्ट कीजिए।
5. विद्यालयी समाज कार्य को समझाइए।

1.6 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

2. https://translate.google.co.in/translate?hl=hi&sl=en&u=https://en.wikipedia.org/wiki/School_social_worker&prev=search **Retrieved on 03/08/2016**
3. https://translate.google.co.in/translate?hl=hi&sl=en&u=http://www.sswaa.org/%3Fpage%3D721&prev=search **Retrieved on 03/08/2016**
4. मिश्रा, प्रयागदीन(2008). *सामाजिक सामूहिक* कार्यं. लखनऊ : हिंदी संस्थान
5. सिंह, ए.एन. एवं सिंह, ए.पी. (2008). *समाज कार्य*. लखनऊ:हल्दानी प्रकाशन।
6. इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010).*समूहों के साथ कार्य करना*. दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ।
7. तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010). *समाज कार्य*. लखनऊ : जुबली एच फान्डेशन।
8. कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।

इकाई -5 समूह कार्य में सामाजिक कार्यकर्ता की भूमिका

इकाई की रूपरेखा

5.0 उद्देश्य
5.1 प्रस्तावना
5.2 सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता
5.3 सामाजिक समूह कार्यकर्ता द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य
5.4 सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका
5.5 सारांश
5.6 बोध प्रश्न
5.7 संदर्भ एवं उपयोगी ग्रंथ

5.0 उद्देश्य

इस इकाई का अध्ययन करने के पश्चात आप -

1. समूह कार्य में कार्यकर्ता की स्थिति का वर्णन कर सकेंगे।
2. सामाजिक समूह कार्यकर्ता द्वारा किये जाने वाले महत्वपूर्ण कार्यों का वर्णन कर सकेंगे।
3. सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता की विभिन्न क्षेत्रों में भूमिका को वर्गीकृत कर सकेंगे।

5.1 प्रस्तावना

सामाजिक समूह कार्य समाज कार्य की प्राथमिक प्रणाली के रूप में जाना जाता है। जिसके माध्यम से कार्यकर्ता अपनी महती भूमिका अदा करता है। कार्यकर्ता समूह निर्माण से लेकर समूह समापन तक मुख्य भूमिका को अदा करता है। वह समूह की समस्या को ज्ञात कर प्रत्येक स्तर से समूह समस्या का हल खोजता है। कार्यकर्ता का प्रयास रहता है कि वह सदस्यों को अपनी क्षमताओं का उपयोग करने और उन्हें बढ़ाने तथा स्वयं को विकसित करने के लिए एक अवसर भी प्रदान करता है। समूह कार्यकर्ता समूह की परस्पर और कार्यक्रम संबंधी क्रियाओं को इस प्रकार कार्य करने के योग्य बनाता है, जिससे व्यक्ति का विकास और वांछित सामाजिक उद्देश्यों की प्राप्ति की जा सके। समूह कार्य के प्रारंभ होने से समापन तक कई अवस्थाओं से गुजरना पडता है जो समूह को प्रभावी बनाने के लिए आवश्यक है। इन समस्त अवस्थाओं में समूह कार्यकर्ता प्रत्येक स्तर एवं अवस्थाओं में अपनी प्रमुख स्थिति के लिए जाना जाता है। इस इकाई के माध्यम से विद्यार्थी को समूह कार्यकर्ता की विभिन्न अवस्थाओं और स्तर में महती भूमिका ज्ञात होगी।

5.2 सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता

समूह एक गतिशील प्रक्रिया है। इस प्रक्रिया में निरंतर परिवर्तन होता रहता है। कार्यकर्ता समूह-सदस्यों की इच्छाओं एवं उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कार्यक्रमों का आयोजन करता है जिससे वे उद्देश्य प्राप्त करने की दिशा में प्रयास करते हैं। योजना और समूह निर्माण के आरंभिक चरण में कार्यकर्ता द्वारा समूह निर्माण की आवश्यकता पर बल दिया जाता है और समूह निर्माण के लिए पहल की जाती है। जब समूह कार्यकर्ता समूह निर्माण की आवश्यकता की पहचान कर लेता है तो वह समूह निर्माण की योजना तैयार करता है। इसके लिए कार्यकर्ता को निम्न महत्वपूर्ण बातों को ध्यान में रखना चाहिए-

- समूह क्यों होता है? यहाँ कार्यकर्ता के लिए आवश्यक है कि वह समूह निर्माण की आवश्यकता पर ध्यान दे।
- समूह का निर्माण किसके लिए हो रहा है एवं समूह सदस्यों में योग्यता का मापदण्ड क्या है ? इस ओर ध्यान देना।
- समूह में सदस्यों की भागीदारी कैसे सुनिश्चित की जाए?
- इसके पश्चात कार्यकर्ता द्वारा योजनाओं का निर्माण किया जाता है जिससे समूह निर्माण की योजना को प्रभावी बनाया जा सके। इसलिए कार्यकर्ताओं के द्वारा निम्नलिखित आवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता होती है -
- **समूह उद्देश्य का निर्धारण** – समूह कार्यकर्ता को भली-भाँति यह ज्ञान होना चाहिए कि समूह का निर्माण किन उद्देश्यों को ध्यान में रखकर किया जा रहा है अर्थात समूह का निर्माण क्यों हो रहा है और इसका उद्देश्य क्या होगा? कार्यकर्ता को यह ध्यान में रखना चाहिए कि जिस समूह का निर्माण वह करने जा रहा है उसका अंतिम लक्ष्य समूह के सदस्यों की आवश्यकताओं की पूर्ति करना है और समूह को सक्षम बनाना है। अतः कार्यकर्ता का समूह सदस्यों के साथ मधुर संबंध स्थापित होना चाहिए जिससे समूह सदस्यों के हित अपनी भावनाओं को स्पष्ट कर सके जिससे लक्ष्य प्राप्ति में आसानी होगी। साथ ही कार्यकर्ता को यह विश्वास भी दिलाना होगा कि समूह का निर्माण कार्य क्षेत्रों की सीमा के अंदर होगा और उनके हितों और सेवाओं के विरूद्ध नहीं जाएगा।
- **समूह की बनावट -** समूह के उद्देश्य का निर्धारण करने के पश्चात यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि समूह की रचना किस प्रकार की होगी और किस रूप में होगी? क्या यह समरूप में होगा या विषम रूप में? समरूप का अर्थ हैं सदस्यों के बीच आयु, शैक्षिक पृष्ठभूमि, सामाजिक वर्ग तथा अन्य हितों में साझेदारी करना। समरूपता से समूह और अधिक शक्तिशाली बनता है। साथ ही, यह समूह निर्माण में मुख्य भूमिका अदा करती है। समूह कार्यकर्ता को समूह की आवश्यकताओं और लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए समूह की बनावट का निर्णय लेना चाहिए।
- **समूह का आकार -** समूह में कितने सदस्य होंगे? उसका आदर्श मानक क्या होगा? समूह का आकार कितना बड़ा होगा या कितना छोटा? इन संपूर्ण प्रश्नों के उत्तर समूह कार्यकर्ता के मन में होने चाहिए। समूह के आकार के संबंध में कोई निश्चित पैमाना नहीं है जिसे आधार मानकर यह निश्चित किया जा सके कि समूह का आकार क्या होगा? सामान्य तौर पर यह समूह के उद्देश्यों, उसकी प्रबंधकीय क्षमता, समय-सीमा, स्थान, धन और आवश्यक नियंत्रणों पर निर्भर करता है। अनेक विद्वानों के अनुसार आठ से पंद्रह सदस्यों के आकार वाला समूह श्रेष्ठ आकार का हो सकता है।
- **सदस्यों की भर्ती -** सदस्यों की भर्ती के संदर्भ में यह कहा जाता है कि कार्यकर्ता संभावित सदस्यों को समूह के गठन के विषय में सूचित करें। यह सूचना सम्भावित सदस्यों को सीधे ही अथवा अभिकरण के सूचनापट्ट पर सूचना चिपकाकर या समाचार-पत्रों, रेडियो, टीवी आदि संचार माध्यमों में विज्ञापन के माध्यम से दी जा सकती है और रूचिशील सदस्यों से आवेदन आमंत्रित किए जा सकते हैं। यहाँ कार्यकर्ता का दायित्व होता है कि योग्यता के स्थापित मापदण्डों के आधार पर आवेदकों की उपयुक्त जाँच करना। इन मापदण्डों में कार्यकर्ता द्वारा समूह सदस्यों हेतु आवश्यकता की सीमा का निर्धारण, हस्तक्षेप की अविलंबता, जनसांख्यिकीय विशेषताएँ, अनुभव और अन्य कौशल शामिल हैं। कार्यकर्ता

आवेदकों की उपयुक्तता सुनिश्चित करने के लिए उनसे साक्षात्कार का भी प्रबंध कर सकता है और समूह की सदस्यता लेने से संबंधित उनकी शंकाओं का निवारण भी कर सकता है।

- **बैठकों का समूह और स्थान -** समूह बैठकों हेतु कार्यकर्ता को समूह के सदस्यों के सथ मिलकर यह निर्धारित कर लेना चाहिए कि समूह में बैठकों का आयोजन किस अंतराल में और कबकब होगा। साथ ही किस स्थान पर बैठकें आयोजित की जाएंगी यह भी निर्धारित कर लेना चाहिए।
- **समूह की अवधि-**समूह मुख्य रूप से दो प्रकार के बनाए जाते हैं- दीर्घकालीन समूह और अल्पकालीन समूह यह समूह के लक्ष्य पर निर्भर करता है कि समूह दीर्घकालीन होगा या अल्पकालीन। समूह का उद्देश्य पूर्ण हो जाने के पश्चात इसे समाप्त किया जा सकता है और इसके लिए अनुमानित समय निर्धारित किया जा सकता है। फिर भी समय निर्धारित करने का निर्णय करते समय लचीलापन होना चाहिए।
- **अनुबंधन -** समूह का निर्माण करते समय समूह सदस्यों और कार्यकर्ताओं के मध्य एक अनुबंधन होना चाहिए जिसमें समूह सदस्यों और कार्यकर्ताओं के दायित्वका निर्वहन होता है, जिनमें सत्रों में नियमित रूप से और समय पर उपस्थित रहना होता है। इस अनुबंध मेंकिसी भी अनुबंधित कृत्य अथवा कार्य को पूरा करना, समूह की चर्चाओं की गोपनीयता को बनाए रखना और ऐसा कोई भी व्यवहार न करना हो, जो समूह की भलाई के विरूद्ध जाता हो आदि बातें शामिल होती हैं। अनुबंध लिखित एवं मौखिक दोनों प्रकार से हो सकता है। इस अनुबंध में यह निर्धारित किया जाता है कि समूह नियोजित तरीके से चलेगा और समूह प्रक्रमों को कारगर ढ़ंग से चलाने के लिए उपयुक्त वातावरण के निर्माण को सुगम बनाया जाएगा।
- **दिशा निर्धारण एवं प्रवेश -** इस प्रक्रिया के अंर्तगत प्रत्येक कार्यकर्ता को प्रत्येक सदस्य से अपना परिचय करना चाहिए और समूह निर्माण के उद्देश्यों को भी स्पष्ट कर देना चाहिए। सदस्यों में सहभागिता का भाव जाग्रत करते हुए उन्हें आत्मविश्वास दिलाना चाहिए जिससे वे अपना परिचय स्पष्ट रूप से दे सकें। आरंभिक सत्रों में सदस्यों को निश्चित संवेदनशीलता के साथ समूह में शामिल किया जाता है ताकि उनकी सांत्वना और सहजता की भावना का स्तर ऊँचा रखा जा सके। समूह कार्य आरंभिक प्रक्रिया में कुछ सदस्य एक-दूसरे से अपरिचित रहते हैं इस कारण से उनमें हिचकिचाहट अधिक देखने में नजर आती है अतः उनमें आपसी स्वीकारता का भाव जाग्रत करना चाहिए। ऐसा करने से समूह सदस्य अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में लग जाते है और उनमें आपसी सामंजस्य स्थापित हो जाता है और समूह में प्रवेश प्रक्रिया भी प्रारंभ हो जाती हैं।
- **सदस्यों की रूपरेखा तैयार करना-** जैसे सदस्यों की आवश्यकता एक-दूसरे के बारे में जानने की होती है उसी तरह कार्यकर्ता को भी सदस्यों के बारे में गहराई से जानना और अवलोकन करना चाहिए। कार्यकर्ता को प्रत्येक सदस्य की एक रूपरेखा बनानी चाहिए जिसमें उसकी आयु, पारिवारिक पृष्ठ भूमि, शारीरिक विशेषताएँ, आदतें, रूचियाँ शामिल हो। यदि इसे आरंभिक सत्रों में एकत्रित तथ्यों के अवलोकनों के आधार पर बनाया जाए तो यह सहायता प्रदान करेगा। यह न केवल समूह सदस्यता स्तरों को व पारस्परिक संपर्क अच्छी तरह समझने में उसकी सहायता करेगा अपितु समूह कहाँ से आरंभ किया जाए इसमें भी सहायक होगा। पुनः यह एक अवधि के बाद विकास की योजना बनाने में विशेषत मूल्यांकन की अवस्था में भी सहायता प्रदान करेगा।
- **विशिष्ट उद्देश्य निर्धारित करना-** समूह कार्य में प्रायः उद्देश्य का निर्धारण पूर्व में ही कर लिया जाता है लेकिन इसके पश्चात भी समूह सदस्यों के बीच संघर्ष की स्थिति उत्पन्न होने के पश्चात कुछ विशिष्ट उद्देश्य का निर्माण भी किया जाता है जिससे कार्यक्रम की योजना का आधार तैयार हो सके। यहाँ

कार्यकर्ता को व्यवहार या सामाजिक परिवर्तन का अभीष्टतम स्तर निर्धारित करने में समूह की सहायता करनी होती है। यद्यपि पहली अवस्था में कुछ उद्देश्यों को ध्यान में रखकर समूह की रचना की जा चुकी है तो भी इस अवस्था में लक्ष्यों को विशेष रूप से प्रस्तुत करना होता है। इस गतिविधि के माध्यम से समूह कार्यकर्ता द्वारा समूह के सदस्यों को सक्रिय भागीदार होने के लिए प्रोत्साहित करता है, और यदि सदस्यों में कुछ विशेष प्रकार की आदतें जैसे- धूम्रपान, तंबाकू खाने की आदत इत्यादि हो तो व्यवहार परिवर्तन में समूह की सहायता करता है।

- **संरचना का निर्माण-** संरचना निर्माण द्वारा सदस्यों को इस आधार पर तैयार किया जाए जिससे वे अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों को समझ सकें। इसके लिए समूह सदस्यों को प्रोत्साहित करना चाहिए। सदस्यों को उनकी क्षमताओं ओर योग्यताओं के आधार पर कार्यों का बँटवारा कर देना चाहिए और उन्हें उनकी क्षमताओं के संदर्भ में भी अवगत कराना चाहिए। समूह कार्यकर्ता का दायित्व होता है कि वह समूह सदस्यों में छुपी हुई योग्यताओं को सामने लाएँ और उन्हें प्रेरित करें। इस अवस्था में एक क्रियात्मक संगठन का उदय होना चाहिए ताकि सदस्य सक्रिय भूमिका ले सके और ज़िम्मेदारी से फैसला कर सके। स्वतंत्रता और आत्मनिर्णय के लिए अभिलाषा रखने वाले प्रत्येक समूह को अपने स्थापित सदस्यों को तरीके से व्यवस्थित करना होता है ताकि वे स्वयं को 'संगठित' कह सकें'। एक औपचारिक संगठन के साथ समूह अपने लचीलेपन और परिपक्वता के साक्ष्य देना आरंभ कर देता है। समूह को जिम्मेदारी उठाने के लिए सक्रिय करने के बाद वह अगली अवस्था में जाने के लिए तैयार हो जाता है।
- **क्रियात्मक प्रक्रिया -** इस अवस्था में समायोजन और प्रगति के लिए अवसर प्रदान करने के लिए बनाए गए कार्यक्रम, अनुभवों के प्रावधानों पर ध्यान केंद्रित किया जाता है। कार्यक्रम का आधार कार्यों पर निर्भर करता है कि कार्यक्रम दीर्घकालीन होगा या अल्पकालीन। यह अवस्था एक महत्वपूर्ण अवस्था के रूप में मानी जाती है क्योंकि इस अवस्था तक आते-आते समूह सदस्य एक-दूसरे को गंभीरता से लेने लगते हैं। कार्यों का निर्धारण सही रूप से हो जाता है और समूह सदस्य कार्यक्रमों में भागीदारी प्रारंभ कर देता है। इस चरण में गतिविधियाँ बढ़ जाती हैं क्योंकि कार्यक्रम की योजना और क्रियान्वयन में पर्याप्त समय लगाया जाता है उनका एक समूह बना दिया जाता है। समूह कार्यकर्ता उनकी गाने और अभिनय की योग्यताएँ देखने के बाद उन्हें एक संगीतमय नाटक करने के लिए प्रोत्साहित करता है। समूह प्रेरित होता है और आलेख लिखने, गीत बनाने में और नृत्य कलाएँ बनाने में लग जाता है। समुदाय के समर्थन की सहायता से समूह अपना पहला नाटक प्रदर्शित करता है और धीरे-धीरे एक स्थापित नाट्यशाला समूह बन जाता है। क्रियात्मक चरण में आलेख लिखने, गीत रचना करने तथा प्रदर्शन के लिए निरंतर तीव्र अभ्यास करने से सदस्यों का अत्यधिक समय और प्रयोग करने में वे काफी व्यस्त रह सकते हैं। अब कार्यकर्ता समूह सदस्यों को जिम्मेदारियाँ देना प्रारंभ कर देता है जिससे समूह तेजी से आगे बढने लगता है और अनेक कार्यक्रम बनना प्रारंभ हो जाते हैं। साथ ही, साथ नेतृत्व की भावना का भी विकास होना प्रारंभ हो जाता है। यह समूह कार्य प्रक्रिया का सर्वाधिक क्रियात्मक चरण होता है तथा इस चरण में अत्यधिक समय व्यतीत हो जाता है। अब समूह अपने लक्ष्य प्राप्त करने के लिए पूर्ण रूप से अपने पथ पर अग्रसर हो जाता है और कार्यक्रम की योजना विकास, उसका क्रियान्वयन करना प्रारंभ कर देता है।
- **कार्यक्रम की योजना एवं क्रियान्वयन -** समूह कार्य प्रक्रिया में कार्यक्रम एवं क्रियान्वयन एक महत्वपूर्ण विधा मानी जाती है जिसके माध्यम से सदस्य-सदस्य और कार्यकर्ताओं के मध्य आपसी समन्वय, नेतृत्व की भावना, सामूहिकता की भावना आदि का विकास हो जाता है। यह गतिविधि सदस्यों की क्षमताओं और उनकी योग्यताओं पर निर्भर रहती है यह कला और शिल्प से लेकर संगीत,

नृत्य, सामाजिक घटनाएँ तथा पिकनिक व भ्रमण तक हो सकता है। इस अवस्था में समूह के अंदर कार्यक्रम के प्रति रूचि जागृत होने की संभावना रहती है। हो सकता है प्रारंभ में समूह सदस्य इस प्रक्रिया में अत्यधिक उत्सुकता ना दिखाएँ पर जैसे-जैसे यह गतिविधि क्रियान्वित होती है सदस्यों की संख्या में भी वृद्धि होती जाती है। कार्यक्रम का विकास सरल से जटिलता की तरफ होना चाहिए जिसमें गति के साथ योग्यता और तत्परता के रूप में समूह की प्रगति के रूप में परिणाम नजर आना चाहिए।

- **कार्य समापन -** जब ऐसा प्रतीत होने लगे कि अब समूह आगे बढ़ने के लिए तत्पर है तो कार्यकर्ता को सदस्यों द्वारा विभिन्न और अपेक्षित अनुभवों की अपनी अभिलाषा जानने में मदद करनी चाहिए। जब समूह के सदस्य अपने अभावों को पूरा करने के लिए अपनी इच्छाएँ अभिव्यक्त करने लगे और अपने कार्य में सुधार कर लें तो मान लेना चाहिए कि वे अपने विकास में उन्नत बिंदु पर पहुँच गए हैं। हो सकता है जो कार्यक्रम आत्मकेंद्रित रहे हों तो उन्हें अपेक्षाकृत बड़े अभिकरण और सामुदायिक उद्देश्यों पर जोर देने के लिए परिवर्तित किया जाना चाहिए। जब समूह को अपनी क्षमताओं पर भरोसा हो जाता है तो मूल्यांकन में काफी समय लगता है।अनेक बार ऐसा होता है कि जब सदस्य कार्यक्रम करता है लक्ष्य की ओर अग्रसर होता है तो अनेक समस्याएँ समूह में आ जाती हैं जो कि समूह लक्ष्य प्राप्ति में बाधक बनती है ऐसी स्थिति में समूह कार्यकर्ता को मध्यस्थता की भूमिका अदा करनी चाहिए और समस्या के समाधान हेतु सहायता करनी चाहिए।
- **प्रगति पर नजर रखना -** जैसे-जैसे प्रक्रिया आगे बढ़ती है समूह अपने आप में सक्षम होता जाता है। अब इस स्थिति में समूह कार्यकर्ता समूह से अपने कदम पीछे करना प्रारंभ कर देता है और दूर से ही समूह पर अपनी नजर बनाए रखता है। जैसे-जैसे वह समूह लक्ष्य की ओर आगे बढ़ता जाता है कार्यकर्ता अपने को पीछे करता रहता है और समूह की तरफ अपनी नजर बनाए रखता है।
- **अभिलेखन करना -** कार्यकर्ता समूह में होने वाली महत्वपूर्ण क्रियाओं का अभिलेखन करता है। यह कार्यकर्ता की मूल्यांकन योग्यता पर निर्भर होता है कि वह किस प्रकार और कौन-कौन-सी परिस्थितियों का अभिलेखन करता है।
- **अभिलेखों का विश्लेषण -** अभिलेखों के लेखन पश्चात वह इन अभिलेखों के आधार पर व्यक्ति सदस्य के व्यवहार एवं भागीदारी का विश्लेषण करता है। समूह के प्रत्युत्तरों का अध्ययन करता है, कार्यक्रम की उपयुक्तता-अनुपयुक्तता का अध्ययन करके उनकी उपयोगिता निश्चित करता है। कार्यकर्ता स्वयं अपनी भूमिका की विवेचना करता है।
- **उद्देश्यों की प्राप्ति का स्तर -** अभिलेखों के विश्लेषण से कार्यकर्ता इस बात को जानने का प्रयास करता है कि समूह अपने कार्यकलापों के माध्यम से किस सीमा तक उद्देश्यों को प्राप्त करने में सफल हो पाया है।
- **कार्यक्रम, विषयवस्तु तथा प्रणाली का पुनरावलोकन -** कार्यकर्ता कार्यक्रमों का विश्लेषण एवं विवेचन करता है। उनकी उपयोगिता निर्धारित करता है। उनकी विषयवस्तु का निर्धारण समूह की उन्नति के अनुसार करता है। जो प्रणालियाँ या ढ़ंग कार्यक्रमों के संचालन में उपयोग में लाए गए हैं उन पर प्रकाश डालता है।
- **उद्देश्यों का संशोधन:-** उपर्युक्त क्रियाओं केपश्चात कार्यकर्ता यदि आवश्यक समझता है तो उद्देश्यों में परिवर्तन करता है। उद्देश्यों में संशोधन करना इसलिए आवश्यक हो जाता है कि समूह-अनुभव से उसकी अंतर्दृष्टि बढ़ती है जिससे लक्ष्यों का विस्तार भी होता है। इस प्रकार यह प्रक्रिया निरंतर कार्य करती रहती है।

- **समापन प्रक्रिया-** समूह कार्यकर्ता द्वारा समूह का लक्ष्य प्राप्त करने के पश्चात समूह का समापन कर दिया जाता है। इस प्रक्रिया में कार्यकर्ता को यह ध्यान देना होता है कि समूह का समापन उचित प्रकार से होना चाहिए क्योंकि समापन प्रक्रिया एक भावनात्मक प्रक्रिया होती है क्योंकि समूह के प्रत्येक सदस्य एक साथ कार्य करने के कारण एक-दूसरे के साथ भावनात्मक रूप से जुड़ जाते हैं एवं इस अवस्था में समूह के समापन होने के कारण एक-दूसरे से बिछुड़ते या अलग होते हैं। इस अवस्था में किए गए कार्यों का मूल्यांकन क्या जाता है इस अवस्था में समूह का उद्देश्य पूर्ण हो जाता है।
- इसके पश्चात कार्यकर्ता द्वारा निम्नलिखित योजनाओं का निर्माण किया जाता है जिससे समूह निर्माण की योजना को प्रभावी बनाया जा सके। इसलिए कार्यकर्ताओं के द्वारा निम्नवतआवश्यक कदम उठाने की आवश्यकता होती है -

उर्पयुक्त योजनाओं के निर्माण के पश्चात कार्यकर्ता को बड़ी ही सहजता और सजगता के साथ कार्य करना पडता है जिससे समूह अपनी मूल शक्ति को प्राप्त कर सकें। समूह विकासहेतू कार्यकर्ता को निम्नलिखित महत्त्वपूर्ण बातों का ध्यान रखना अत्यंत आवश्यक होता है -

- सदस्यों में परस्पर व्यापक संपर्क स्थापित करना।
- समूह की नियमित बैठकों का आयोजन
- सकारात्मक वार्तालाप एवं हँसी मजाक और उत्साह का वातावरण निर्माण करना।
- सहयोग और समायोजन की भावना स्थापित करना।
- प्रत्येक सदस्य की उपस्थिति की सुनिश्चित करना।
- समय का ध्यान रखना।
- निश्चित समयानुसार बैठक और उपस्थिति को अनिवार्य करना।
- औपचारिक संगठन का विकास करना।
- सदस्यों द्वारा पहल और अपनी जिम्मेदारी समझने की इच्छा का विकास करना।
- नव परिवर्तन और प्रेरणा में वृद्धि परविकास करना।
- सदस्यों की नियंत्रित व्यावहारिक क्रिया को नियोजित करना।
- उच्च भागीदारी स्तर को बढाना।
- नेतृत्व के विकास करना

'मैं' और 'मुझे' दृष्टिकोण से 'हम' और 'हमारा' में रूपांतरण करना।

इस प्रकार से कार्यकर्ता प्रारंभिक स्तर से ही सदस्यों की समस्त गतिविधयों, आवश्यकताओं, समस्याओं, कमजोरियों एवं ताकतों की ओर ध्यान देता है और सामूहिक लक्ष्यों को प्राप्त करने में सहायता करता है।

5.3 सामाजिक समूह कार्यकर्ता द्वारा महत्त्वपूर्ण कार्य

समूह कार्य प्रक्रिया में समूह कार्यकर्ता की महती भूमिका होती है कार्यकर्ता यह प्रयास करता है कि किस प्रकार से समूह के सदस्यों आपस में संबंध स्थापित कों जिससे आवश्यक समूह कार्य प्रक्रिया को संपन्न किया जा सके। इसके लिए कार्यकर्ता द्वारा निम्नांकित प्रयास किए जाते हैं -

- समूह कार्य प्रक्रिया प्रारंभ होने के पश्चात नए सदस्यों का आगमन प्रारंभ हो जाता है जिससे कार्यकर्ता समूह सदस्यों के मध्य आपसी सामंजस्य का प्रयास करता है। उसी समय कार्यकर्ता का प्रयास रहता है कि वह संस्था एवं सदस्यों की वस्तुस्थिति से सभी सदस्यों को अवगत कराए।
- कार्यकर्ता के लिए यह आवश्यक होता है कि वह व्यक्ति एवं समूह दोनों का ज्ञान रखे और नए सदस्यों के शामिल होने संबंधी तथ्यों पर सोच-विचार कर निर्णय ले। यह भी ध्यान रखें कि समूह का प्रत्येक सदस्य उसको स्वीकर करें साथ ही, समूह की आवश्यकता का ज्ञान भी कार्यकर्ता को होना चाहिए।
- कार्यकर्ता को स्पष्ट रूप से समूह के संदर्भ में संभावित उद्देश्यों को निर्धारित कर लेना चाहिए और यदि कार्यकर्ता पहले से ही निर्मित समूह के साथ कार्य करना चाहता है तो उसे चाहिए कि वह उस समूह में शामिल होने से पूर्व उसके व्यापक उद्देश्यों की जानकारी अवश्य ही प्राप्त कर लें।
- समूह कार्य का एक मुख्य उद्देश्य नेतृत्व का विकास भी करना है। नेतृत्व विकास से कार्य सदस्य एक सूत्र में बंध जाते है तथा अपनेपन की भावना का विकास होता है। कार्यकर्ता को नेतृत्व की स्थिति का उपयोग उचित प्रकार से करना चाहिए।
- कार्यकर्ता में आवश्यक कुशलताएँ होनी चाहिए। जिससे वह समूह में ऊर्जा का संचार कर सके और उचित तकनीकों का प्रयोग कर समूह भावना को विकसित कर सके।
- समूह निर्माण प्रक्रिया के दौरान कार्यकर्ता के कार्य का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा समूह से पहले संपर्क है। इस संपर्क का उद्देश्य नियोजित किए जा रहे समूह के लिए उपयुक्त सदस्यों को सुरक्षित या निश्चित करना तथा उस समूह में भागीदारी के लिए उनको तैयार करना है।
- कार्यकर्ता को संसाधनों के उपयोग का पूर्ण ज्ञान होना और साथ ही पत्र-पत्रिकाओं विज्ञापन,समाचार पत्र, संस्थानों को पत्र लिखना आदि कुशलताओं का ज्ञान होना आवश्यक होजाता है।
- कार्यकर्ता को अभिकरण द्वारा समूह की योजना बनाने के समय से समूह के उद्देश्य संरचना, सदस्यता, प्रचार का कार्य हाथ में लेना, संभावित सदस्यों का चयन और भर्ती करना इत्यादि के संबंध में एक विस्तृत रूपरेखा तैयार कर लेनी चाहिए। कार्यकर्ता को बहुत ही महत्वपूर्ण कार्यों का निष्पादन करना होता है जिनका लक्ष्यों की प्राप्ति में समूह की सफलता पर सीधा प्रभाव पड़ता है। समूह निर्माण की व्यापक प्रक्रिया की पहले ही योजना बनानी चाहिए तथा समूह की सफलता के लिए प्रथम बैठक बहुत ही व्यापक एवं महत्वपूर्ण होती है।
- कार्यकर्ता का यह भी दायित्त्व होता है कि वह समुदाय से संबंधित सामुदायिक नेताओं,स्थानीय पंचों को समूह कार्य से संबंधित उद्देश्यों से सभी को अवगत कराएँ
- समूह कार्यकर्ता के लिए अत्यंत ही आवश्यक है कि वे समूह की संरचना तथा उसके विशेष लक्षणों के संबंध में विस्तृत नियोजन के निर्णय को तैयार करें।
- कार्यकर्ता को यह निश्चित कर लेना चाहिए कि क्या प्रस्तावित समूह को आरंभ करने के लिए किसी प्राधिकारी की अनुमति की आवश्यकता होगी। ऐसे कई कार्यक्रम एवं समूह होते हैं जिनको आरंभ करने के पूर्व संभावित अधिकारियों से स्वीकृतिआवश्यक होती है।

इन सब तथ्यों के अतिरिक्त समूह कार्यकर्ता समूह को स्थापित करने तथा निर्मित करने से पहले समूह कार्य की प्रणालियों को लागू किया जाना चाहिए। व्यावसायिक समाज कार्यकर्ता को कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने चाहिए तथा उसके पश्चात निर्णय लिए जाने चाहिए -

- सामाजिक अभिकरण के क्या उद्देश्य हैं ?

- ❖ सामाजिक अभिकरण का लक्ष्य समूह कौन स्थापित करेगा ?
- ❖ क्या समूह कार्य द्वारा सामूहिक लक्ष्य को प्राप्त किया जा सकता है?
- ❖ जिन सदस्यों के समान उद्देश्य हैं उनकी पहचान करना ?
- ❖ क्या जो समय, स्थान, दिन व वातावरण का निर्धारण किया गया है वह उचित है?
- ❖ समूह का उद्देश्य कौन निर्धारित कर रहा है?
- ❖ समूह के कौन से भावी सदस्य होते हैं? किस प्रकार से उनका समूह में चयन और उन्हें सूचीबद्ध किया जाता है ?
- ❖ सदस्यों के चयन के पीछे आधार क्या होगा? क्या एक-दूसरे से परिचित व्यक्तियों के आधार पर चयन किया जाएगा? कार्यकर्ता सुविचार के तहत अपने हित-लाभ, कौशल, आवश्यकता समस्या सरोकारों को ध्यान में रखते हुए प्रस्तावित समूह के लिए परिप्रेक्ष्य सदस्यों का चयन कर सकता है?
- ❖ समूह में सदस्यों की संख्या का निर्धारण कैसे किया जाएगा?
- ❖ समूह में कौन से कार्यक्रमों का पालन किया जाएगा? चर्चा, खुली या विषम-मूलक होगी ? क्या गतिविधियाँ-खेल, कला और शिल्प कला, नाटक, भूमिका निभाना, सामुदायिक सेवा इत्यादि एक साथ होगी ?
- ❖ अनेक गैर-सामाजिक कार्य संस्थाएँ जैसे विद्यालय, अस्पताल, बन्दी-गृह, आदि में सामाजिक कार्यकर्ता को किस प्रकार के सहयोग की आवश्यकता है? इसका निर्धारण करना।
- ❖ यह निर्णय लेना कि किस प्रकार से समूह की शुरूआत की जाए इसकी पूरी अवधि में समूह की निगरानी किस प्रकार की जाए, किस प्रकार से समूह के कार्य निष्पादन तथा विकास का मूल्यांकन किया जाए और कब और कैसे समूह को समाप्त किया जाए? यह सब बातें समूह के सक्षम योजना के लिए समान रूप से महत्त्वपूर्ण है।
- ❖ अतः उपर्युक्त तथ्यों के आधार पर यह कहा जा सकता है कि व्यवासायिक समूह कार्यकर्ता को कुछ महत्त्वपूर्ण प्रश्नों के उत्तर प्राप्त करने चाहिए तथा उसके पश्चात निर्णय लिए जाने चाहिए।

5.4 सामाजिक समूह कार्य में कार्यकर्ता की भूमिका

समूह कार्य की प्रक्रिया की प्रत्येक अवस्थाओं एवं चरणों में समूह कार्यकर्ता की महती भूमिका है जिसके द्वारा कार्यकर्ता प्रत्येक अवस्था व चरण में समूह सदस्यों की सहायता करता है एवं सामूहिक लक्ष्य प्राप्ति हेतुसदस्यों को प्रेरित करता है। कार्यकर्ता सामूहिक कार्य-प्रणाली द्वारा समूह-सदस्यों के विकास, उन्नति, शिक्षा, एवं सांस्कृतिक प्रगति पर जोर देता है। कार्यकर्ता प्रत्येक स्तर पर समूह को समझने का प्रयास करता है और समूहमें उत्पन्न समस्या का निवारण प्रस्तुत करता है । समूह कार्यकर्ता के कार्यों और उसकी भूमिका को निम्नलिखित आधारों पर समझा जा सकता है-

समूह निर्माण के संबंध में- समूह निर्माण के संबंध कार्यकर्ता निम्नलिखित आधारों पर कार्यकरता है-

- ❖ कार्यकर्ता यह निर्धारित करता है कि किस प्रकार के समूह का निर्माण किया जा सकता है जैसे मनोरंजनात्मक, शिक्षात्मक, सामाजिक या मिश्रित।

1. समूह कार्य की कार्य-प्रणाली निर्धारित करता है जैसे- खेल-कूद, ड्रामा, वार्तालाप इत्यादि।
2. स्थान का चयन करता है।
3. समय का निर्धारण करता है।

4. समूह अवधि का निर्धारण करता है।
5. संसाधन का निर्धारण करता है।
6. माध्यमों का निर्धारण करता है।
7. समूह का उद्देश्य निर्धारित करता है।
8. सदस्यों का चयन निर्धारित करता है।
9. संस्था अथवा समुदाय में स्रोतों का निर्धारण करता है।

✓ **कार्यक्रम नियोजित करने में सहायता करना-** कार्यकर्ता समूह के साथ मिलकर कार्यक्रमों को नियोजित करने में समूह सदस्यों की सहायता करता है। वह कार्यक्रम को अधिक प्रभावशाली एवं रचनात्मक बनाने में समूह की सहायता करता है, जिससे अधिक से अधिक समूह की आवश्यकताओं को पूरा किया जा सके और इसके अतिरिक्त वह समूह को कार्यक्रम हेतु दिशा-निर्देश देता है।

✓ **समूह की रूचियों को खोजने में सहायक का कार्य-** कार्यकर्ता समूह सदस्यों की विभिन्न रूचियों की खोज करता है।

✓ **अंत: क्रिया का निर्देशन -** समूह कार्य प्रक्रिया में समूह सदस्यों के बीच कुछ-ना-कुछ अंतःक्रिया अवश्य होती है यही अंत: क्रिया मूल्यांकन कार्यकर्ता द्वारा किया जाता है। वह सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रत्युत्तरों को देखता है वह सफलता एवं असफलता के कारणों पर प्रकाश डालता है। ट्रेकर ने निम्नलिखित क्षेत्रों का ज्ञान कार्यकर्ता के लिए आवश्यक बताया है-

- ❖ कार्य का विवरण।
- ❖ बारंबारता- कार्यकर्ता देखता है कि सदस्य कितनी बार तथा कैसे कार्य में भाग लेते हैं।
- ❖ अवधि - सदस्यों के द्वारा कार्यक्रमों में भाग लेने की अवधि को देखता है।
- ❖ अन्तःक्रिया की दशा-दिशा की दो श्रेणियाँ होती हैं एक व्यक्ति की ओर तथा दूसरी उद्देश्य की ओर। कार्यकर्ता अंत: क्रिया की दिशा की ओर ध्यान देता है।

✓ **नेतृत्व का विकास करना-** समूह कार्यकर्ता का मुख्य उद्देश्य समूह के सदस्यों में नेतृत्व का विकास भी करना है। कार्यकर्ता द्वारा यह भी प्रयास किया जाता है कि जो सदस्यों में सकारात्मक नेतृत्व के गुण विद्यमान हैं और वे उत्तरदायित्व को ग्रहण कर सकते हैं ऐसे सदस्यों के विकास हेतु प्रयास करता है। समूह कार्यकर्ता यह जानता है कि वह समूह के साथ कुछ ही दिन रहेगा और एक निश्चित समय पश्चात उसे समूह का समापन करना पडेगा इसलिए वह कोशिश करता रहता है कि समूह के ऐसे सदस्य जिनमें नेतृत्व हेतु सकारात्मक भाव हो ऐसे लोगों के निरंतर संपर्क में रहता है और इस प्रकार से निर्देशित करता है जिससे समूह-नेता समूह का प्रिय सदस्य हो जाता है। वह समूह के प्रत्येक सदस्य को कोई जिम्मेदारी वाला कार्य सौंपता है जिससे समूह में एकता भी बनी रहे और किसी भी प्रकार उच्च-निम्न का भाव जाग्रत ना हो सके।

✓ **मूल्यांकन करना-** समूह कार्यकर्ता जैसे-जैसे कार्यक्रम प्रक्रिया को आगे बढ़ाता रहता है वह समूह व सदस्यों का मूल्यांकन करता रहता है। वह प्रत्येक सदस्यों की भूमिका का भी मूल्यांकन करता है। कार्यकर्ता का हमेशा प्रयत्न रहता है कि वह सदस्यों द्वारा क्रियान्वित किए जा रहे कार्यों का प्रत्येक स्तर पर मूल्यांकन करते रहेटेकर ने मूल्यांकन के लिए निम्नलिखित कार्यों का उल्लेख किया है-

- ❖ संस्था को ध्यान में रखकर व्यक्तियों और समूहों के उद्देश्यों कानिर्धारण करना।
- ❖ समूह व व्यक्ति के विकास व उन्नति को निश्चित करने के लिए मापदंड का ज्ञान रखना।

- ❖ तीव्र विकास एवं परिवर्तन के लिए कार्यक्रम की योजना तैयार करना।
- ❖ विकास व उन्नति के मापदण्ड के आधार पर अभिलेखों का विश्वेषण करना।
- ❖ यह निश्चित करने के लिए कि क्या समूह उद्देश्यों को प्राप्त कर रहा है, विश्लेषणात्मक आँकड़ों की व्याख्या करना।
- ❖ कार्यक्रम, विषय-वस्तु और ढंगों का पुनरावलोकन करना।
- ❖ उद्देश्यों को संशोधित करना तथा मूल्यांकन में निरन्तरता बनाए रखना।
- ❖ संस्था से संबंधित कार्यसामाजिक समूह कार्य में मुख्य रूप से तीन प्रकार के अंगों का वर्णन किया जाता है - कार्यकर्ता ,समूह एवं संस्था । सामाजिक संस्था द्वारा ही कार्यकर्ता समूह को सेवा प्रदान करता है। कार्यकर्ता संस्था के संबंध में यह जानने का प्रयास करता हैकि-
- ❖ संस्था के प्रमुख उद्देश्यों के संबंध में जानकारी एकत्रित करता है।
- ❖ संस्था की सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक व मनोसामाजिक स्थिति का पता लगाना ।
- ❖ संस्था में मुख्य रूप से उपलब्ध सुविधाओं को ज्ञात करना ।
- ❖ संस्था की कार्यप्रणाली को ज्ञात करना।
- ❖ संस्था की नीतियों का अध्ययन कर समूह को संस्था की नीतियों के अनुरूप मोड़ने का प्रयास करना ।
- ❖ संस्था की सभी गतिविधियों में भाग लेना।
- ❖ संस्था को समूह के हित में सोचने के लिए अंतर्दृष्टि देता है।

समूह कार्यकर्ता की भूमिका -

सामूहिक कार्यकर्ता समूह की आवश्यकता एवं सामूहिक स्थितियों को ध्यान में रखकर अपनी भूमिका को निभाता है। कुछ विद्वानों ने मुख्य रूप से समूह कार्यकर्ता की निम्नलिखित भूमिकाओं को स्पष्ट किया है-

सार्थकता की भूमिका (Enabler) - कार्यकर्ता का सर्वप्रथम यह प्रयास रहता है कि वह अपने समूह -सदस्यों की आवश्यकताओं एवं समस्याओं को समझे एवं उन्हें सुलझाने में सहायता करें अतः वह उन स्रोतों का पता लगाता है जिनसे आवश्यकताओं की पूर्ति हो सकती है तथा सदस्य सहयोग ले सकते हैं। वह समूह निर्माण के लिए व्यक्तियों में अपनी वर्तमान स्थिति के प्रति असंतोष उत्पन्न करता है, जिससे वे परस्पर सहयोग एवं संयुक्त प्रयास के लिए एकत्रित होते हैं कार्यकर्ता सभी के मतानुसार समूह का निर्माण करता है। वह सदस्यों में अपनी समस्याओं के समाधान हेतु सक्षमता को विकसित करता है तथा कार्यक्रम के चयन हेतु भी सदस्यों में जागरूकता पैदा करता है अतः इस आधार पर वह एक सार्थकता की भूमिका को निभाता है।

पथ-प्रदर्शक के रुप में (The Guide) - कार्यकर्ता एक पथ-प्रदर्शक की भाँति समूह को रास्ता दिखाता है। वह सदस्यों को संस्था व समुदाय की सुविधाओं एवं अन्य स्रोतों से अवगत कराता है जिनकी उन्हें आवश्यकता तो है परंतु वे जानते नहीं हैं। वह सदस्यों की अपनी भूमिका का एहसास कराता है तथा आवश्यक मुद्दों को स्पष्ट करता है। आवश्यकता पड़ने पर प्रत्यक्ष रुप से समूह की सहायता करता है। वह सामूहिक अंत क्रिया का निर्देशन करता है।

अधिवक्ता के रुप में (The Advocate) — जिस प्रकार एक अधिवक्ता अपने मुवक्किल के लिए, उसके न्याय के लिए जज के सामने अपने पक्षों को रखता है उसी प्रकार कार्यकर्ता सदस्यों

की समस्याओं को उच्च अधिकारियों के समक्ष रखता है तथा आवश्यक सेवाएँ प्रदान करने की सिफारिश करता है।

विशेषज्ञ के रुप में (The Expert) - कार्यकर्ता सदस्यों को आवश्यकता पड़ने पर एक विशेषज्ञ की भाँति सलाह देने का कार्य करता है। वह समूह-समस्या का विश्लेषण करता है तथा उसका निदान किस प्रकार से किया जाए उसका हल खोजता है। समूह को विधिवत तथा अधिक प्रभावकारी होने के लिए उपयुक्त तरीके बतलाता है। वह संस्था व समूह के कार्यक्रमों का मूल्यांकन भी करता है, जिससे कार्यक्रम को सुव्यवस्थित रूप से संपन्न किया जा सके।

चिकित्सक के रुप में (The Therapist) - जिस प्रकार एक चिकित्सक मरीज के रोगों के अध्ययन के पश्चात उचित इलाज करता है, उसी प्रकार एक कार्यकर्ता समूह की कुछ मुख्य समस्याओं को चयनित कर उनका समाधान करने में समूह की सहायता करता है। वह समूह का उन शक्तियों से परिचय करवाता है जो विघटनात्मक है तथा जिनका प्रत्यक्ष रुप से प्रभाव पड़ता है। वह समूह को इस प्रकार से प्रेरित करता है जिससे सदस्य स्वयं परिवर्तन की माँग करते हैं। वह सदस्यों के अहं को सुदृढ़ करता है।

परिवर्तक के रुप (The Changer) - कार्यकर्ता सदस्यों की आदतों में परिवर्तन लाने के लिए अनेक कार्यक्रम करता है, क्योंकि कभी-कभी आदतों के कारण ही समस्या उठ खड़ी होती है और परिवार व समाज में विघटन उत्पन्न कर देती है। कार्यकर्ता सदस्यों के कार्य करने के तरीकों में भी परिवर्तन लाने का प्रयास करता है , क्योंकि जब तक कार्य करने के ढ़ंगों में बदलाव नहीं आएगा तब तक समूह किसी भी प्रकार से विकास नहीं कर सकेगा। वह सदस्यों के मनोवृत्तियों मे भी परिवर्तन लाने के कार्यक्रम प्रस्तुत करता है जिससे की समूह को मजबूती प्रदान हो सके।

सूचना दाता के रुप में (The Imformer) - कार्यकर्ता एक सूचनादाता के रूप में समूह के साथ कार्य करता है। वह समूह को संस्था के संदर्भ में उपलब्ध सुविधाओं के अतिरिक्त समुदाय की आवश्यकताओं एवं समूह सदस्यों को प्राप्त होने वाली समस्त सुविधाओं के संदर्भ में समूह की सहायता करता है।

सहायक के रुप में (The Helper) - कार्यकर्ता समूह की सहायता लक्ष्य निर्धारण तथा लक्ष्यों को प्राप्त करने के तरीकों को निश्चित करने में करता है। वह संस्था से सहायता लेने में समूह की मदत करता है। कार्यक्रमों के निर्धारण तथा उनका चयन करने में वह सहायता करता है। समूह में सामूहिक चेतना तथा सामूहिक भावना विकसित करने के लिए समूह की सहायता करता है।

अतः उपर्युक्त आधारों पर यह कहा जा सकता है कि समूह कार्यकर्ता समूह के प्रत्येक चरण व अवस्था में प्रारंभ से समापन तक अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका को निभाता है एवं इन आधारों पखह समूह का लक्ष्य प्राप्ति हेतु सहायता करता है।

5.5 सारांश

संपूर्ण अध्ययन करने के पश्चात यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि समूह कार्य प्रक्रिया एक अत्यंत ही सावधानीपूर्वक की जाने वाली गतिविधि है जिसमें प्रत्येक अवस्था व चरण का अपना महत्व है । इस संपूर्ण प्रक्रिया में यदि एक भी चरण में कोई गलती हो जाती है तो संपूर्ण कार्य प्रक्रिया प्रभावित होती है अतः प्रत्येक चरण को बड़ी सावधानीपूर्वक संपन्न करना चाहिए । इन समस्त चरणों एवं अवस्थाओं में समूह कार्यकर्ता की महती भूमिका होती है समूह कार्यकर्ता केवल समूह सदस्योंका ही नहीं वरन उससे संबंधित अन्य व्यक्तियों,

सामाजिक अभिकरणों एवं समुदाय का भी वह ध्यान रखता है। कार्यकर्ता द्वारा यह प्रयास किया जाना चाहिए कि समूह कार्य प्रक्रिया में व्यक्ति की अंतर्निहित शक्तियों, उसके बौद्धिक स्तर ,आर्थिक स्थिति, उसका व्यक्तिव और अंत: क्रियाओं पर प्रभाव तथा उसकी संभावनाओं को भी जानना आवश्यक हैअत: अंत में कहा जा सकता है कि चाहे किसी भी कारण से, जिसके द्वारा भी और जहाँ कहीं भी कोई समूह बनाना पड़ता है, तो यह आवश्यक होता है कि वह किसी सामाजिक सामूहिक कार्यकर्ता की देख-रेख में बने। सामूहिक कार्यकर्ता की देख-रेख में बनने वाले समूह ज्यादा फलप्रद होने की संभावना रखते हैं।

5.6 बोध प्रश्न

1. सामूहिक समाज कार्य में कार्यकर्ता की स्थिति को समझाइए।
2. सामूहिक समाज कार्य में प्रक्रिया में समूह कार्यकर्ता किन-किन मुख्य बातों को रूप में ध्यान रखता है ?
3. एक चिकित्सक के रूप में कार्यकर्ता की भूमिका को सुनिश्चित कीजिए।
4. सामूहिक समाज कार्य हेतु समूह कार्यकर्ता की भूमिका को स्पष्ट कीजिए।

5.7 कुछ उपयोगी पुस्तकें

- Porter, E.H. (1947). *Community*-Newyork : Wise women's press.
- Douglas Tom (1976). *Group work. Practice* Newyork : International University press.
- मिश्रा, प्रयागदीन(2008). *सामाजिक सामूहिक* कार्य. लखनऊ : हिंदी संस्थान
- सिंह, ए.एन. एवं सिंह ए.पी. (2008). *समाज कार्य*. लखनऊ:हल्दानी प्रकाशन।
- इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय (2010).*समूहों के साथ कार्य करना.* दिल्ली : समाज कार्य विद्यापीठ।
- तेज संगीता एवं पाण्डेय तेजस्कर(2010). *समाज कार्य*. लखनऊ : जुबली एच फान्डेशन।
- कुलसचिव उत्तराखंड मुक्त विश्वविद्यालय की ओर से मुद्रित एवं प्रकाशित समूह समाज कार्य।
- सिंह, ए. एन., सिंह, नीरजा, संजय मिश्रा, सुषमा (2012) *सामूहिक कार्य, हल्दानी* : उत्तरायन प्रकाशन।
- कोनोप्का, जिसेला (1963). *सोशियल ग्रुप वर्कर ए हेल्पिंग प्रोसस* नई दिल्ली: एस.जे. प्रिंटिस हाल।
- गार्विन, चार्ल्सो दी इटीएल (2008). *हैंड बुक ऑफ सोशल वर्क विद ग्रुप्स*नई दिल्ली : रावत पब्लिकेशन।
- ट्रेक्कीर, हार्लिग बी (1955). *सोशल ग्रुप वर्क, प्रिंसिपल्सि एंड प्रैक्टिसिज* न्यूयॉर्क: एसोसिएशन प्रैस।
- सिद्दीकी एच.वाई. (2008). *ग्रुप वर्क थ्योएरिज एंड प्रैक्टिसिज* नई दिल्ली: रावत पब्लिकेशन।